Gandhi Memorial College Of Education

आधार चयन

एस.आर. हरनोट

कहानियां

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुजरी हुई सदी के अंतिम चरण और नयी सदी के पहले दशक के बीच कथाकार एस.आर. हरनोट ने समकालीन हिन्दी कहानी में अपने लिए एक विशिष्ट जगह बनाई है। इन कहानियों में ज्यादातर उन लोगों की बात की गई है जो अनेक निजी और वर्ग-जातीय कठिनाइयों के बावजूद अपने ग्रामीण मूल को नहीं भूले हैं। इनकी टुकड़ा-टुकड़ा हुई जीवनियां तहज़ीबदार इन्सानियत, पाकदामन और पर्वतीय भूगोल में निबद्ध प्रकृति से जुड़ी हैं। वे वस्तुतः जातीय, आर्थिक और असंतुलित सामाजिक हालात में घिरे अपने-अपने स्तर पर आज भी संघर्ष कर रहे हैं।

यहां महज मार्क्स की द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की दुश्वार जद्दोजहद का ही सवाल नहीं, एक ऐसे सुरमयी अहसास की बात है जिसमें सहज जीवनी शक्ति पस्त होती दिखायी देती है। कहानीकार ने पर्वतीय उपत्याकाओं में खेती/शिल्प कर रहे लोगों के अंदर रहकर अपने कथा संसार की रचना की है। उसने अपनी ठोस यथार्थपरक और रचनात्मक कहानियों से आज के आम आदमी के बीच की दरारों को तीव्रतर ढंग से दिखाया है और 'बाहर की दुनिया' के रूबरू कुछ ऐसे अहम प्रश्न खड़े किए हैं जो संवेदनशील जनमानस का ध्यान सहजता के साथ अपनी ओर खींचते हैं।

प्रस्तुत संकलन की कहानियां एस.आर. हरनोट द्वारा रचित करीब सौ-एक कहानियों में से कुछेक चुनिंदा कहानियां हैं जो दूर से सुन्दर दिखायी देने वाले हिमालय प्रांतर की पिछड़ी और अलग-थलग पड़ गई घाटियों में रह रहे शोषित समाज के जीवन-परिवेश का जायज़ा

...शेष दूसरे ब्लर्ब पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहाड़ों के सुख-दुःख
के साथ अपने शिमला
आवास में प्रिय और
परिचित कवि भाई
अग्निशेखर के लिए
मित्र प्रकाश बादल
की उपस्थिति में

प्रभात
13-5-14

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आधार चयन कहानियां

एस.आर. हरनोट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आधार चयन

एस.आर. हरनोट

कहानियां

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No.....5156
Dated.....28/12/23

आधार प्रकाशन
पंचकूला (हरियाणा)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN : 978-81-7675-371-5

मूल्य	-	300 रुपये
सर्वाधिकार	-	लेखक
प्रथम संस्करण	-	2012
प्रकाशक	-	आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड एससीएफ 267, सेक्टर-16 पंचकूला-134 113 (हरियाणा) फोन - 0172-2566952, 2520244 ई-मेल - aadhar_prakashan@yahoo.com
आवरण	-	प्रियंका
लेज़र टाइपसेटिंग	-	आधार ग्राफ़िक्स, पंचकूला (हरियाणा)
मुद्रक	-	बी.के. ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली

Aadhar Chayan Kahaniyan
by S.R. Harnot — Price : Rs 300/-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G001

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंशु और काव्य के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरनोट की कहानियों पर प्रख्यात साहित्यकारों की टिप्पणियां

- डॉ. नामवर सिंह

एस.आर. हरनोट हिमाचल के ऐसे कथाकार हैं, जिन्होंने वहां की प्रकृति और पर्यावरण के साथ–साथ जीवन और संस्कृति को भी अपनी कहानियों में जगह दी हैं। पहाड़ का जीवन जितना मनोहारी होता है, जीना उतना ही कठिन। सैलानी की नजर से देखने पर वहां के जीवन संघर्ष को नहीं समझा जा सकता। हरनोट ने संस्कृति और परंपराओं के बीच उस जीवन संघर्ष को पकड़ने की भरसक कोशिश की है और उसके माध्यम से आने वाले सामाजिक बदलावों की ओर भी संकेत किया है। हरनोट की भाषा सहज है। अनुभव संसार एकदम नया और अनूठा है। ठेठ पर्वतांचलिकता और स्थानीयता होते हुए भी सार्वभौमिक मानवीय तत्व इन कहानियों की विशेषता है। हरनोट का काम ऐतिहासिक है जिसके लिए उन्हें अलग से याद किया जाना चाहिए।

- कमलेश्वर

हरनोट का कथा साहित्य मैंने पढ़ा है। 'हिडिम्ब' तो महत्त्वपूर्ण है ही, साथ ही उनकी कहानियां उन हालात को लगातार प्रस्तुत कर रही हैं जो बदलते ही नहीं, पर समय के सरोकारों के निशाने पर आ गए हैं। हरनोट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की कहानियां अपने आंचलिक परिवेश के साथ–साथ सांस्कृतिक और सामाजिक परिवेश को इतनी खूबी से पेश कर देती हैं कि वे स्मृतियों में उलझी रहती हैं। गांव और पहाड़ की स्थानीयता को हरनोट की कहानियों ने संवेदना के व्यापक भूगोल का अनुभवपूर्ण हिस्सा बना दिया है। अच्छा है कि वे स्वानुभूति और सहानुभूति के साहित्यिक जंजाल से बचे रहे। आखिर स्वानुभूतिपरक रचना ही अंततः सह–अनुभव और सहानुभूति की भागीदार बनती है। हरनोट की कहानियां बौद्धिक बहसों का नहीं, मानवीय चेतना के उस विस्तार का हिस्सा बनती हैं, जिसे अभी तक बहुत कम देखा और पहचाना गया था। इक्कीसवीं सदी की कथा–रचना में यह उनका अप्रतिम योगदान है।

- प्रो. दूधनाथ सिंह

कहानी में सरल और सहज होना जितना कठिन है, कठिन और जटिल होना उतना ही सरल। हरनोट की कहानियां पढ़ते हुए बार–बार इसका अहसास होता है। उनके सहज कथन और शिल्प तक पहुंचना एक अजीब तरह का अनुभव देता है। प्रेमचंद के होने के एक सौ पच्चास साल बाद भी हरनोट की अनायासता की छवि एक बड़े कथाकार की सभी संभावनाओं से भरपूर है। हिन्दी कहानी अपने विकास के दौर में अजीबोगरीब प्रतीकात्मकता, अमूर्तन और नवोन्मेष की खोज से गुजरती रही है। जहां से लुम्पेनिज़्म, व्यक्तिवाद, रोमांस और अतिरंजित कथाकारों की होड़ खत्म होती है, वहीं से हरनोट की कहानियां अपने सादा लिबास में शुरू होती हैं। हरनोट के कथा–संसार में जनता की कटी–फटी, व्यक्तिवादी या 'विशिष्ट' छवि नहीं मिलती। वह एक 'व्यापक अवधारणा' है। ऐसा नहीं है कि हरनोट शोषकों को नहीं जानते, लेकिन वे उनका बंटवारा जातिगत आधार पर नहीं करते। हरनोट की शिल्प–छवि बिल्कुल अलग है। हरनोट अपनी कहानियों में ऐसा कुछ कर बैठते हैं, जिसकी हम आशा नहीं करते। हिंसा और हल्ला–बोल संघर्ष से अलग एक नये और अनूठे किस्म का संघर्ष, जिसकी छवि उनकी कहानियों में अलग तरह की चमक पैदा करती है। यहीं पर हरनोट, हरनोट हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- **डॉ. बच्चन सिंह**

हरनोट हिन्दी के जाने–माने कथाकार हैं। उनकी कहानियों के साथ हिमाचल के चीड़, देवदारू, नदियां, नीचे–ऊंचे पहाड़, मिट्टी, पानी, वर्ग–विभाजित संस्कृति बोल उठती है। हरनोट में गांधी–अंबेडकर दोनों का रचनात्मक मिश्रण है। वह प्रेमचन्द परंपरा का लेखक है यानि भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते हुए गांधीवाद का। स्मरण रखना चाहिए कि इतना सबकुछ परिवर्तित हो जाने के बावजूद गांधीवाद आज भी एक जीवंत भारतीय दर्शन है। किन्तु हरनोट अहिंसा और सत्याग्रह में यथावसर हिंसा का पुट दे देते हैं। अतः वह गांधीवादी यूटोपिया से थोड़ा भिन्न हो जाते हैं। हरनोट अपनी भाषा की अ–नवीयत के लिए गांवों का ऋणी है। उसमें गंवई भाषा का रूप–रंग सर्वत्र दिखाई पड़ता है। वह स्वयं गांव का है। अतः ग्राम–भाषा की महक से उसके बिंब महकते रहते हैं। यह गंध उसकी भाषा की खास पहचान है। जीवन की मार्मिक लीला।

- **ज्ञानरंजन**

एक जबरदस्त पराजय और बियाबान के बीच जहां साहित्य, संस्कृति विकास, व्यवस्था, सत्ता, प्रशासन सबकुछ लुप्त हो गया है और जहां मासूम बच्चे और असहाय वृद्ध ही बचे हैं, ऐसे भूखंडों में हरनोट ने अपनी रचना को केन्द्रित करने का प्रयास अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। हरनोट इन्हीं कोनों और भूखंडों से आते हुए जीवन की मार्मिक लीला रचते हैं। हरनोट की कहानियों में बार–बार डूबते संसार में बहुमूल्य को डूबने से बचाने की कोशिश होती है। उन्होंने अपनी कहानियों में जो लैंडस्केप और बस्तियां ली हैं, जो चरित्र चुने हैं, उनकी तरफ आज किसी का ध्यान नहीं है। जिस तरह संजीव और शिवमूर्ति प्रेमचंद का विकास हैं या अमरकांत और शेखर जोशी प्रेमचंद की अग्रसर होती समृद्धि हैं, उसी तरह हरनोट भी हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- रमेश उपाध्याय

हरनोट जादुई यथार्थवाद की फैशनपरस्त नकलनवीसी करने के बजाय जनजीवन के यथार्थ को समझकर उसे यथार्थवादी ढंग से अपनी कहानियों में लाते हैं। वे आज के भूमंडलीकरण से अपरिचित नहीं, बल्कि उसकी वास्तविकता को अच्छी तरह समझते हैं (और वे अपनी कहानियों के अंग्रेजी अनुवादों के जरिये देश में ही नहीं, विदेशों में भी जाने जाते हैं), फिर भी वे भूमंडलीय हो जाने के भ्रम में पड़कर अपनी स्थानीयता को नहीं छोड़ते, बल्कि वहीं से अपनी कहानियों के लिए सामग्री और शक्ति जुटाते हैं। हरनोट ने नये–नये साहित्यिक फैशनों की भेड़चाल से आतंकित हुए बिना अपनी जमीन पर मजबूती से पांव जमाकर चलते हुए कहानियां लिखी हैं। उन्होंने समय की सही समझ, बदलते हुए यथार्थ पर मजबूत पकड़ तथा अपनी साहित्यिक परंपरा में ही नया कुछ कर गुजरने वाली सृजनशीलता का परिचय दिया है। उन्हें प्रेमचंद की परंपरा का ऐसा कहानीकार कहा जा सकता है, जिसने यशपाल और 'रेणु' जैसे, मार्कण्डेय और शेखर जोशी जैसे, शैलेष मटियानी और विद्यासागर नौटियाल जैसे अपने अग्रज कथाकारों से बहुत कुछ सीखा है, लेकिन अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उनकी कहानियां हमें ग्रामीण अंचल की एक पारंपरिक दुनिया में ले जाती हैं, जो मानो सदियों से सोयी हुई, नितांत अपरिवर्तनशील दुनिया है और उसमें जीने वाले लोग अपनी सांस्कृतिक परंपराओं तथा सामाजिक परिपाटियों के अनुसार मानो हमेशा से एक खास ढर्रे पर अपनी जिंदगी जीते आए हैं और जी रहे हैं। लेकिन ज्यूं ही हम इस दुनिया को एक जानी–पहचानी पुरानी दुनिया समझने की भूल करने लगते हैं, ये कहानियां अचानक हमारे सामने एक ऐसा यथार्थ खोल देती हैं, जो गांव के शहर में बदलने की प्रक्रिया का नितांत नया यथार्थ है– जीवंत, समस्यामूलक और तेजी से बदलता हुआ। इस यथार्थ में बहुत कुछ नकारात्मक है, तो कुछ सकारात्मक भी है। समस्याएं हैं तो संभावनाएं भी हैं। इसी बदलते हुए यथार्थ को विश्वसनीयता के साथ चित्रित करना एस. आर. हरनोट की कहानी–कला की खूबी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- **चित्रा मुद्गल**

दुर्गम, जटिल शिखरों की पीठ पर बसे संघर्षमय जनजीवन की दहला देने वाली विसंगतियों, विद्रूपताओं, अभावों के लगभग स्तब्ध कर देने वाले यथार्थ की गहन संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के चितेरे हैं हरनोट! वह पाठक को प्रश्नों के घेरे में घेर उसे सोचने के लिए विवश कर देता है कि उसने चट्टानों की परतों में दबी पीड़ा के खदकते, जमते आंसुओं को अपनी संवेदना से उपेक्षित क्यूं रखा ? निश्चित ही 'दारोश' जैसी अप्रतिम कथा के लेखक हरनोट हिमाचल के भविष्य के शैलेष मटियानी हैं, जिन्हें पहाड़ का प्रेमचंद कहा जाता है...।

- **डॉ. सूरज पालीवाल**

एस.आर. हरनोट की कहानियों में पहाड़ का अकेलापन, हाड़तोड़ परिश्रम के बावजूद लगातार अभावों से जूझने की पीड़ा, स्त्री–पुरुष संबंधों में आये बदलाव, रीति–रिवाजों के नाम पर पाखंडों को तोड़ने की तथा शहर गए बच्चों का फिर लौटकर न जाने की पीड़ा आदि ऐसे दर्द हैं जिनकी कोई दवा न तो कहानीकार के पास है और न उन लोगों के पास ही जो इस विभीषिका को लगातार झेल रहे हैं। हरनोट की कहानियां पहाड़ को उसके पूरे अस्तित्व के साथ उभारती हैं लेकिन खास बात यह है कि उनमें किसी प्रकार का रूमानीपन या भावुकता नहीं है जिससे कहानी अपने पूरे प्रभाव के साथ उभरकर आती है। हर कहानी का अपना अलग संघर्ष है। ये कहानियां अपने शिल्प और प्रेषणीयता में अद्भुत हैं। ये कहानियां यह भरोसा देती हैं कि भूमंडलीकरण से अंधियाये और अघाये लोगों के बीच गांव और उसके सघन सुख–दुख आज भी जिन्दा हैं।

- **पुष्पपाल सिंह**

हरनोट की रचनाधर्मिता को एक बिरवे से भरा–पूरा छतनार वृक्ष का रूप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेते देखकर एक आत्मिक संतोष और भरपूर प्रसन्नता की अनुभूति होती है। पहाड़ – उसके दुख–दर्द, ह्रास–उल्लास, उत्सवधर्मिता, विश्वास–अंधविश्वास, धार्मिक कृत्य, रीतियां–कुरीतियां– सभी कुछ पूरी गहराई और संवेदना के साथ उनकी कहानियों और उपन्यास 'हिडिम्ब' में चित्रित है। वे पहाड़ की पीड़ा को अपनी पीठ पर ढोते वहां तेजी से आ रहे बदलाव, उपभोक्तावाद और वैश्विक ग्राम की चपेट में आती जीवन पद्धति और क्षरित होते श्रेष्ठ मूल्यों की चिंता को आखर के माध्यम से कागज पर उतारते हैं। 'बच्छिया बोली है' से लेकर 'एम.डॉटकाम' तक की कितनी ही कहानियां स्मृति में देर तक टहोके देती हैं। वे अपने परिवेश को पूरी जीवंतता से रचना में जीते हैं।

- **श्रीनिवास श्रीकांत**

पर्वतांचल को इतनी शिद्दत के साथ संभवतः बहुत कम कहानीकारों ने उठाया है। ऐसा वही कर सकता है जिसने अपने जीवन में ऐसे भौमिक समाज को न सिर्फ करीब से देखा हो बल्कि हर स्तर पर जिया–भोगा भी हो। यही कारण है कि हरनोट ने अपने अल्प कैरियर में ही राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। साहित्य की बहती हुई धाराओं में ये कहानियां एक कथाशिल्पी के हाथ से निर्मित और बहायी गई कश्तियों के समान हैं। ये हैं कुछ ऐसे संघर्षरत ग्रामजनों और धूसर पर्वतांचलों की कहानियां जिनमें 'लोक तत्व कथा के रूप में व्यवहार्य हो कर सामने आया है... देहात के आखिरी आदमी का जिया हुआ रोमांचक सत्य...'।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

बिल्लियां बतियाती हैं	15
जीनकाठी	35
मिट्टी के लोग	62
बेजुबान दोस्त	89
किन्नर	105
माफिया	125
चीखें	143
एम.डॉट कॉम	157
चश्मदीद	165
कालिख	177
मां पढ़ती है	194
लाल होता दरख्त	202

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिल्लियां बतियाती हैं

अम्मा का झगड़ा शुरू हो गया है। अपने आप से। दियासलाई की डिब्बिया से। ढिबरी से। चूल्हे में उपलों के बीच ठूंसी आग से और बाहर–भीतर दौड़ती बिल्लियों से। यही सब होता है जब अम्मा उठती है। वह चार बजे के आसपास जागती है। ओबरे में पशु भी अम्मा के साथ ही उठ जाते हैं। आंगन में चिड़िया को भी इसी समय चहकते सुना जा सकता है और बिल्लियों की भगदड़ भी अम्मा के साथ शुरू हो जाती है। यह नहीं मालूम कि अम्मा पहले जागती है या कि अम्मा की गायें या कि चिड़ियां या फिर बिल्लियां।

कई बार अम्मा उठते ही अंधेरे से लड़ पड़ती है। हाथ अंधेरे की परतों पर तैरते रहते हैं। हाथ सिरहाने के नीचे जाता है, पर दियासलाई नहीं मिलती। कई बार रात को जब अम्मा बीड़ी सुलगाती है तो दियासलाई नीचे गिर जाती है। ऊंघ में वह बीड़ी तो पी जाती है, पर दियासलाई को ऊपर उठाने की हिम्मत नहीं होती और आंख लग जाती है। जब उठती है तो अंधेरा फिर टकराता है। याद नहीं आती कि दियासलाई कहां है। अम्मा खूब गालियां बकती है। ढिबरी उसी से जलनी है। काफी देर बाद याद आता है। बिस्तर से आधी चारपाई के नीचे झुककर उंगलियों से फर्श सहलाती अम्मा के हाथ देर बाद लगती है दियासलाई। अपने को सहेजती है। एक तिल्ली निकाल डब्बी पर लगे मसाले पर रगड़ती है, पर वह नहीं जलती। चिढ़ जाती है अम्मा।

अंधेरे में धोखा खा जाती है। तिल्ली उलटी रगड़ती है। वह टूट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जाती है तो दूसरी निकालकर जलाने लगती है। फिर वैसा ही होता है। तीसरी बार अम्मा गलती नहीं करती। उंगलियों से मसाले वाले सिरे को छू लेती है। जलती है तो कमरा जगमगा जाता है। एक तिल्ली से दो काम होते हैं। रात को पीये बीड़ी के बचे टुकड़ों में से एक को जलाने के बाद उसी से ढिबरी भी जलाती है।

उठने लगती है तो कई बार बिस्तर में पसरी बिल्लियां कुरते और सलवारों के पंजों में नाखून गड़ाए रखती हैं। गुस्से से छुड़ाती है और झटके से उन्हें नीचे फेंक देती है। अम्मा कितने ही जोर से क्यों न फेंके, वे सीधी गिरती हैं। अम्मा जानती है बिल्लियों को यह वरदान भगवान ने दिया है। उनकी पीठ नहीं लगती।... फिर दो–चार गालियां...

"सालियों, तुम दूसरी बार आणा बिस्तर में। जान न निकाल दी तो बोलणा। सारी–सारी रात चूहे सिर पर दौड़े रहते हैं और तुम चुपचाप बिस्तर के ताप में खर्राटे मारती रहती हो। छि...छि...ठहरो तुम...।"

–और बिल्लियां वहीं कहीं अंधेरे की ओट में छिप जाती हैं।

मां–बेटी हैं बिल्लियां। सफेद और काले रंग की। कई बार धोखा लग जाता है कि छोटी कौन–सी है। एक का नाम काली और दूसरी का नाम निक्की। पुकारो तो नाम सुनती हैं।

कई बार अम्मा उन दोनों को पौड़े की छत पर ओडू से ऊपर धकेल देती है और नीचे से ढक्कन बंद। बहुत देर तक उसमें बैठी म्याऊं–म्याऊं करती हैं। पर मजाल कि अम्मा ढक्कन खोले। छत पर अम्मा ने मक्कियां छोलकर रखी हैं। इसके अम्मा को दो फायदे हैं। एक तो वे सूख जाती हैं और दूसरा सड़ने से बची रहती हैं। अम्मा के लिए आंगन में उन्हें सुखाना वारा नहीं खाता। भगवान का क्या पता कब बरस जाए! कब आंधी–तूफान आ जाए! अकेले बाहर–भीतर लाना–छोड़ना अम्मा के बस के बाहर है। जब अम्मा को पिसाने के लिए दाने चाहिए हों तो दस–बीस मक्कियां निकालकर बोरी में भर देती है। बोरी के मुंह में रसी बांधे उन्हें एक मोटे डंडे से तब तक पीटती रहेगी जब तक दाने और गुल्ले अलग–अलग न हो जाएं। छत पर काफी आगे अम्मा बीज के लिए भी मोटी और दानेदार मक्कियों का ढेर लगाए रहती है।

छत पर अम्मा रात को नहीं जाती। डरती है। वैसे बिल्लियों की छेड़ और उनकी बास से सांप या दूसरे किसी काटने वाले कीड़े का भय नहीं रहता, पर अम्मा का वहम कौन टाले! दूध का जला छाछ को फूंक–फूंककर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पीता है। आज भी अम्मा सुनाती है कि एक बार खपरैल की छान से भीतर काला सांप कैसे घुस आया था। जैसे ही अम्मा छत पर चढ़ी कि उसने फुंकार भर दी और अम्मा उलटे पांव पौड़े पर। कई पल सांस ही नहीं निकली। बड़ी मुश्किल से सांप को भगाया था।

मक्कियों के अलावा अम्मा कई–कुछ छत पर रखे रहती है। पीछे की तरफ पुरानी ऊन, गांठें, दो–तीन टूटी हुई लालटेनें, एक–दो टूटे छाते, खाली बोतलें, प्लास्टिक और रबड़ के पुराने जूते तथा दूसरी तरफ आठ–दस पुल्लियां शेल, उसे बाटने का कुटुआ, पशुओं के गलांवे और रस्सियां, जोच और छिकड़ियां। बीऊल के छट्टों के बंडल भी अम्मा छत पर ही रखती है। अम्मा बरसात और सर्दियों में इनके बिना आग नहीं जलाती। इसलिए गर्मियों में ही हरे छट्टों को बांधकर सूखने के बाद उन्हें दूर खड्ड में दबा देती है तथा गांव की एक–दो औरतों की ब्वारी से उन्हें तैयार होने पर फान–झाड़ लेती है। अम्मा के दो काम निपट जाते हैं। पहला छट्टे जलाने के लिए तैयार हो जाते हैं और दूसरा काफी पुल्लियां शेल निकल जाता है।

अम्मा के बिस्तर पर बड़बड़ाते ही ओबरे में गाय बोल पड़ती है। हालांकि गौशाला काफी दूर है लेकिन इन दोनों के बीच की करीबियां कितनी हैं– यह उनकी बातों से पता चलता है। गाय क्या कह रही है, क्या चाहती है, यह अम्मा बखूबी समझती है। बिस्तर से ही उसे समझाती रहती है। कई बार डांट भी देती है, "हल्ला मत मचा न चाम्बी। उठने तो दे। पहले तेरा ही सोचूंगी।"

दुधारू गाय है। जानती है अम्मा तड़के उसी को दुहेगी। रसोई में जाते ही अम्मा उसके लिए चारा–चोकर तैयार करती है। कई बार दुकान से चोकर न मिले तो आटे के खोरड़ से ही काम चलता है। कुछ छलीरा लेकर उसमें बासी रोटियां डालकर लस्सी छिड़क देती है। फिर एक मुट्ठी नमक और हाथ से उसे खूब घोल देती है। रात की बची एक–आधी रोटी भी साथ ले जाती है ताकि दूसरे पशुओं को भी टुकड़ा दे दे। गाय को चोकर या खोरड़ खाते देख भला दूसरे कहां मानेंगे!

अम्मा के ओबरे में एक जोड़ी बैल, एक बच्छिया और दो भेड़ें हैं। गाय का खूंटा दरवाजे से भीतर जाते दाईं ओर है। उसके साथ ऊपर बच्छिया बंधी रहती है। थोड़ा इधर भेड़ें और दरवाजे के बाईं ओर दोनों बैल। दीवार के साथ पीछे बांस की सीढ़ियां रखी हैं जिनसे अम्मा चांगड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में जाती है। अम्मा ओबरे के चांगड़ को हमेशा घास से भरा रखती है ताकि हारी–बीमारी या मौसम खराब होने पर पशु भूखे न रहें। घास के साथ एक ओर दो–चार किल्टे और एक–दो डालें भी रखी रहती हैं।

दूध दुहने के बाद अम्मा सीधी रसोई में आ जाती है। अब बिल्लियों और अम्मा का झगड़ा जमकर होता है। दोनों बिल्लियां घर की स्पील पर बैठी अम्मा की बाट निहारती रहती हैं। जैसे ही आंगन में अम्मा उतरेगी, वे दोनों आगे–पीछे, टांगों के बीच से भागती रहेंगी। अम्मा खूब चिढ़ती है। गालियां देती है। पर वे कहां मानने वाली! जानती हैं पहले दूध उन्हें ही मिलेगा। म्याऊं–म्याऊं से सारा घर ही जगा देती हैं। अम्मा रसोई में जाते ही पहले उन्हीं के बर्तन में बाल्टी से दूध उड़ेल देती है।

अब अम्मा को आग जलानी है। मौसम अच्छा हो या गर्मियों के दिन, अम्मा ओबरे के पास से ही हाथ में सूखी घास ले आती है। और सर्दी या बरसात में बीऊल की लकड़ी की एक–दो पांखें चूल्हे में पिछली रात दबाई आग के बीच ठूंस देती है। अम्मा सोने से पहले चूल्हे की आग को चाव से दबा देती है ताकि बुझ न जाए। अंगारे कम हों या फिर बुझने का अंदेसा हो तो अम्मा सूखे उपले को उनमें ठूंस देती है ताकि आग न बुझे। शायद ही कभी ऐसा हुआ होगा कि अम्मा के चूल्हे में आग बुझ गई हो। अम्मा कहती है घर में आग बुझना बुरा होता है।

अम्मा चिमटे से आग के अंगारों को खरोड़ती है। फिर उस पर घास या लकड़ी डालकर उनके जलने का इंतज़ार करती है। अम्मा को फूंक मारकर आग जलाना नहीं सुहाता। खांसी लगती है। भीतर इस तरह कई –कई मिनटों तक धुएं का साम्राज्य छा जाता है। धुएं ने दीवारें खूब काली कर दी हैं। बरसों से ऊपर और आर–पार जाले पड़े हैं। इनमें और अम्मा में कोई अंतर नहीं दिखता। अम्मा भी धुएं–जैसी हो गई है। कोई देखे–सुने तो कई भ्रम होने लगते हैं, जैसे यह धुआं लकड़ियों का न होकर अम्मा के भीतर जल रही किसी चीज से उठ रहा हो।

बिना घड़ी समय आंकना अम्मा को बखूबी आता है। घर में न घड़ी है और न मुर्गा, जैसे अम्मा को अंधेरे की आहटों का पूरा ज्ञान हो। चांद और तारों की छांव से समय की परख कोई अम्मा से सीखे। सूरज की चाल पर समय बताना अम्मा के दाएं हाथ का खेल है। सुबह एक ही समय उठना अम्मा की आदत है। इसलिए चिड़िया भी धोखा खा जाती हैं कि पहले वे उठती हैं कि अम्मा। चिड़ियों से अम्मा की खूब पटती है। जैसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनकी भोरें अम्मा के ही आंगन में होती हों। ओबरे और रसोई का काम निपटाने के बाद अम्मा उन्हें दाना डालना नहीं भूलती। अम्मा ने चावल का चूरा, बथ्थू, कोदा इत्यादि अलग से ही रखा होता है। घर के दोनों तरफ पेड़ की टहनियों में बहुत नीचे चिड़ियों को पौ लगाती है अम्मा। विशेषकर गर्मियों में, ताकि चिड़ियों को पानी मिलता रहे। इसके लिए कुम्हार से हर वर्ष मिट्टी की डिबड़ियां अम्मा मंगवा रखती है।

चिड़ियों को बुलाने की आवाजें गांव तक सुनाई देती हैं। भले ही वे आसपास चहक रही हों, अम्मा दाना फेंकते उन्हें जोर–जोर से बुलाया करती है, "चिड़ू आओ, चिड़िया आऽऽओ।"

दाना खाती चिड़ियों को बिल्लियां न झपटें, इसका अम्मा खास ध्यान रखती है। जब तक उनका दाना खत्म न हो जाए, वह दरवाजे की दहलीज पर बैठी बीड़ी पिया करती है या फिर रसोई में उन्हें दूध दे देती है ताकि बाहर न आएं।

•

अम्मा के अकेलेपन का विचित्र संसार है। सुबह से शाम तक अम्मा कहीं–न–कहीं किसी–न–किसी के साथ व्यस्त रहती है। अकेलेपन के अनेक सहारे पाल लिए हैं अम्मा ने। ऐसा कोई बच्चा गांव का न होगा जो अम्मा के यहां गुड़ की डली या मक्खन–रोटी न खा जाता हो, ऐसी औरत न होगी जो पानी–पनिहार, घास–लकड़ी को आते–जाते अम्मा के आंगन बैठ बीड़ी का कश न मार जाती होगी, ऐसा कुत्ता न होगा जो अम्मा के दरवाजे टुकड़ा न खा जाए और ऐसी चिड़िया न बची होगी जो अम्मा का दाना न चुग जाती होगी। पशु भी आते–जाते अम्मा का आंगन झांक ही लेते हैं।

अम्मा कभी बीमार होती है तो गांव की लड़कियां या औरतें अम्मा का काम निपटा जाती हैं। पानी–पनिहार से लेकर घास–पत्ती तक। बीमारी में अम्मा को न गाय तंग करती है, न बिल्लियां और न ही चिड़ियां। न अम्मा किसी से झगड़ती है और न कोई अम्मा को परेशान करता है। अम्मा को जुकाम अक्सर होता है। ऊपर से सिर दर्द। ऐसे में अम्मा गौशाला के आंगन में गाय के खूंटे के साथ सो जाया करती है। गाय अब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अम्मा के बालों और माथे को चाटकर सहलाती है। बिल्लियां चुपचाप आसपास या बैठ जाती हैं या फिर अम्मा के पांव या हाथ चाटती रहती हैं। चिड़ियों का दल पौ लगे पेड़ों पर चहचहाते हुए फुदकता रहता है, जैसे वह भी बेबस अम्मा के आसपास आकर रहे, पर बिल्लियों के डर से वे नहीं आतीं। ...इन सभी की दुआओं से ठीक होती होगी अम्मा!

•

पिता को गुजरे चार बरस हो गए हैं। उन दोनों के एक बेटा और एक बेटी थीं। बेटी का छोटी उम्र में ब्याह कर दिया। अम्मा बताती है कि उन दिनों बहुत छोटी उम्र में ही रिश्ते तय हो जाते थे। शादियां भी छोटी–छोटी उम्र में ही हो जाती थीं। पिता की जिद्द थी कि एक ही बेटा है, इसे अफसर नहीं बनाया तो हमारा कमाना व्यर्थ है। उसे खूब पढ़ाया–लिखाया। हजारों कर्जा सिर पर ले लिया। एक–दो खेत रेहन रख लिए। कालेज पूरा हुआ तो नौकरी भी लग गई। लेकिन उन बूढ़ों को भनक तक न लगी कि शहर के तौर–तरीकों और चटक–मटक ने उसे दोनों से बहुत दूर कर दिया और वह अपनी माटी से कटता गया। फासले बढ़ते चले गए और एक दिन जब उन दोनों को यह खबर मिली कि उसने शहर की किसी लड़की से ब्याह कर लिया तो बेचारे गांव में किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहे। दिल घायल हुए सो अलग।

कई दिनों बाद बेटा बहू को लेकर गांव आया भी, पर दो–चार दिनों बाद वापिस शहर लौट गया। बहू क्या जाने गांव का रहना! उसे तो यहां कैदखाना हो गया। मिट्टी–गोबर की बास और बूढ़ों का रहन–सहन उसे नहीं भाया। अम्मा–पिता के अरमान थे, बहू आएगी तो उनकी टहल–फाजत करेगी। अम्मा के खोये दिन लौटेंगे। खूब खेती–बाड़ी होगी। पशुओं से फिर ओबरा भर जाएगा। गांव के सरीकों के बीच इज्जत–परतीत बढ़ेगी। उनका दुख–दर्द भी देखेगी। पोतू–पोतियों को अम्मा दिनभर खिलाती रहेगी। घर–आंगन में खुशियां–ही–खुशियां। पिता ने तो बेटे की शादी के लिए कई जगह रिश्तों की बात भी चला दी थी। सोचा करते कि एक ही एक बेटा है। ऐसी शादी रचाऊंगा कि सरीक देखते रह जाएंगे। ...और वे देखते ही रहे...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अम्मा बीमारी से ठीक भी जल्दी हो जाती है। फिर वही दिनचर्या। वही कामकाज। सुबह से शाम तक कहीं–न–कहीं व्यस्त होती है अम्मा। कई बार गांव की कोई औरत या मर्द टोक दिया करता है, "देवरु काकी, क्यों अपने अंग–प्राण तुड़वा रही हो। बेटा हर महीने पांच सौ भेजता है। आराम कर।"

और अम्मा तड़ाक से जवाब दे देती है, "काम से कोई नहीं मरता रे। जब तक शरीर में प्राण है चलणा तो है ही। फिर इतणी जगह–ज़मीन, गाय–बैल बरबाद तो नहीं किए जाते न!"

कभी परधान या गांव का ठाकुर ताना कस देता, "देवरु! बेच दे जगह–ज़मीन। दे दे इन गाय–बैलों को। बहू–बेटा तो गांव आएंगे नहीं। इन्हें रखकर क्या करेगी? तेरे चला तो जाता नहीं अब।"

अम्मा इनकी चाल समझती है। जगह–ज़मीन पर इनकी नज़रें हमेशा से लगी रही हैं, पर अम्मा के आगे टिकना मुश्किल है। कह देती है, "परधान जी, इतने तो अभी और पाल सकती हूं। नौकरी–चाकरी तो चार दिनों की है। बेटे ने कमा के घर ही आना है। इसकी चिंता मैं करूंगी, तुम अपना काम निभाओ।"

अम्मा समझती है, मरने के बाद इन्हीं गिद्धों के काम आएगी यह खेती। नोच लेंगे टुकड़ा–टुकड़ा। बेटे को तो कोई परवाह है नहीं। गांव, गांव ही होता है। अपना, अपना ही। नौकरी चार दिनों की है। आदमी की इज्ज़त–परतीत तो घर से होती है।

डाकिया कई बार अम्मा को बेटे का मनीऑर्डर थमाते शहर के किस्से सुना जाता है। पिता के मरने के बाद हर माह बेटा अम्मा को पांच सौ भेजता है। पर अम्मा के अकेलेपन को वह रुपए कितना बांट पाए हैं – यह कोई अम्मा से पूछे। अम्मा का मन नहीं करता किसी से कुछ लेने का, पर गांव–बेड़ में इज्ज़त रहे, इसलिए ही पकड़ लेती है पैसे। अम्मा का खर्चा तो उसकी खेती और गाय ही दे देती है।

अम्मा को डाकिये की बातें कई बार अकेले में याद आ जाया करती हैं। वह डर जाती है। शहर में बेचैनी कितनी बढ़ गई हैं! रोज कुछ–न–कुछ घटता ही है। दंगे–फसाद होते हैं, लाठियां–गोलियां चलती हैं। इन सभी के बीच उसके बेटे–बहू कैसे रहते होंगे! पोतू स्कूल कैसे जाता होगा! इसलिए अम्मा को अपना गांव बहुत भला लगता है। कहीं कुछ नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
घटता। शांति है। चैन है। न दंगे, न फसाद। न लाठियां, न गोलियां। पर कोई क्या समझे कि अपने आपमें अम्मा कितनी आतंकित रहती है! मां का दिल है न... बेटा दूर ही क्यों न हो, बहू नफरत ही क्यों न करे, अम्मा अक्सर उन्हें याद किया करती है।

•

अम्मा साठ के करीब हो गई है। अपने शरीर की कभी परवाह नहीं की। फटे–पुराने कपड़े जब तक चिथड़े–चिथड़े न हो जाएं, उतरेंगे नहीं। बाल अनधोये बिखरे रहते हैं जिन्हें अम्मा एक फटे हुए दुपट्टे से पीछे की तरफ बांधे रखती है। कई बार सोचती भी है कि सिर नहा ले, पर समय ही कहां मिलता है! कभी–कभार गांव की कोई औरत या ससुराल से बेटी आकर धुला जाती है तो अम्मा को कई दिनों चैन रहता है।

साल–फसल के दिन तो अम्मा के लिए खूब व्यस्तता के होते हैं। अम्मा की बुवाई–गुड़ाई ब्वारी से ही चलती है। अम्मा की मदद के लिए पूरा गांव उमड़ पड़ता है। सभी जानते हैं कि अम्मा आदर–खातिर में कसर नहीं छोड़ती। कई बार छोकरे–छल्ले अम्मा से मजाक कर लेते हैं, "देख काकी। हम तो तेरी गुड़ाई या गोबराई में तभी आएंगे जब तू पौवा–शौवा पीने को देगी।"

अम्मा झट से झाड़ देती है, "मुए शर्म करो। मुंह से तो दूध की बास नहीं गई, बोतल पूरी चाहिए। पौवा–शौवा कुछ नहीं मिलेगा।"

सभी जानते हैं आज के जमाने में घी कहां मिलता है! पर अम्मा की गुड़ाई–गोबराई में यह परंपरा टूटी नहीं। खूब घी–शक्कर मिलता है ब्वारों को।

•

अम्मा को याद है जब मक्की की फसल बड़ी होती तो बड़ी गुड़ाई लगती। घर में पिता होते। बेटा और बेटी होते। ऐसी गुड़ाई कभी न लगी जब तीस –चालीस ब्वारे न आए हों। अम्मा की गुड़ाई बिना ढोल–शहनाई के कभी नहीं हुई। पिता शहनाई के माहिर थे। गांव–परगने के तकरीबन सभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ब्याह–शादियां, जातरें और गुड़ाईयां उन्हीं की शहनाई से निपटती थीं। गुड़ाई में तो अम्मा भी साथ रहती। उन्हें पिता के साथ विशेष तौर से गुड़ाई में बुलाया जाता। झूरी गाने में मजाल कि उनका मुकाबला कोई कर सके।

अपनी फसल की गुड़ाई का तो आनंद ही कुछ और रहता। पिता शहनाई बजाते। उनका जोड़ीदार ढोल और अम्मा कभी 'झूरी' तो कभी 'जुल्फिया' गाती।

अम्मा की आवाज़ मक्कियों के खेतों को चीरकर दूर घाटियों में टकरा जाती। घाटियां गूंजने लगतीं। खेत जवान हो जाते। हरी मक्कियों की डालियां जैसे मस्ती में लहलहाने लगतीं। बरसात के बादल उमड़ते–घुमड़ते हरे खेतों और घासणियों पर छाने लगते। अचानक रिमझिम–रिमझिम बारीक बरखा लग जाती और लोगों का अनूठा जोश वातावरण को नया रंग देने लगता। ढोल और शहनाई के संगीत के साथ हाथ में खिलणिया लिए मक्की के खेतों में कहीं गुम हो जाते और उनका तभी पता लगता जब पूरा खेत खत्म करके किनारे पहुंचते।

मां की झूरी के बोल खत्म होते ही पिता की दूर से आवाज़ आती, "शाबाशेऽऽऽऽऽऽ हो।"

आज भी अम्मा को गांव की औरतें अपनी गुड़ाई में मजबूर कर देती हैं कि वह एक–आध बोल झूरी के गा दे, पर अब पहले जैसा जोश कहां! हिम्मत कहां! वह मना कर देती है। कहती, "अरे पापणियो! अब तो सांस तक नी ली जाती, गाणा तो दूर।"

सांस अम्मा ले भी कैसे....! दूसरा भला जाने भी कैसे कि अम्मा भीतर ही भीतर कितनी जल रही है! पर औरतें मानेंगी कहां! अम्मा मान भी जाती है, पर गाया नहीं जाता। दबी हुई आवाज़ में बोल ऐसे निकलते हैं जैसे किसी अनजान आदमी ने कोई राग गुनगुनाना शुरू कर दिया हो। गाते–गाते खांसी के आठ–दस चक्कर, आंखें लाल जैसे अम्मा के प्राण ही निकलने लगे हों। पर अम्मा के जख्म तो हरे हो गए हैं। खांसते–खांसते उनकी आंखें पूर्व स्मृतियों से भर आती हैं। वह मुड़कर देखती है जैसे पिता हाथ में शहनाई लिए दूर से कहने लगे हों, "लाड़ी, हो जाए एक झूरी।"

पर पिता हैं कहां? चार बरसों का अंतराल, जैसे कल ही की बात हो। विश्वास ही नहीं होता पिता नहीं रहे हैं। अम्मा को उनकी यादें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अक्सर सताती हैं। रुलाती हैं। वही तो एक आसरा थे अम्मा के लिए।

रात को कई बार अम्मा को लगता है, पिता दूसरी चारपाई पर हैं। जिस कमरे में अम्मा सोया करती है, पिता की चारपाई उसी में थी। अब भी चारपाई वहीं है। अम्मा ने बदली नहीं। जैसे वह चारपाई भी उनके अकेलेपन को बांटती है। अम्मा कई बार रात को पिता के लिए तम्बाकू भरकर लाया करती। पिता का हुक्का आज तक चारपाई के सिरहाने वैसा ही पड़ा है। दूसरे–तीसरे दिन अम्मा राख से उसे अवश्य मांज लेती है। उसका पानी बदल देती है। कोई गांव का बुजुर्ग आ जाए तो उसी में तम्बाकू पिलाती है। कांसा इतना नया जैसे रेत पर चांदनी खनक रही हो।

कभी रात को अम्मा आधी नींद में उठकर धोखा खा जाती है। पिता सोये हुए अक्सर ऊपर ओढ़ी रजाई नीचे फेंक दिया करते थे। अंधेरे में अम्मा को पिता की सांसें सुन पड़ती हैं। चारपाई पर कुछ हरकतें महसूस होती हैं। वह उठकर अंधेरे में हाथ से छूती है तो वहां बिल्लियां सोई हैं। बिल्लियां कई बार ऐसा करती हैं। वे जब अम्मा के बिस्तर में नहीं जातीं तो पिता की चारपाई पर घुस जाती हैं। अम्मा उन्हें नहीं छेड़ती। चुपचाप लौटकर अपने बिस्तर में दब्ब पड़ जाती है।

अम्मा का विश्वास है पिता की अल्पमृत्यु हुई है। उन्होंने अचानक प्राण छोड़ दिए थे। कई बार सपने में आते हैं। कहते हैं, "लाड़ी! मैं अपनी मौत नहीं मरा। दुश्मन ने मूठ चलाई है। हरिद्वार–पोहा करवा ले। मेरे प्राण बीच में अटके हैं।"

अम्मा क्या करे... क्या न करे। घर से बाहर परदेस है। सोचती है, पित्तर बिगड़े तो कभी सुख–शांति नहीं होती। यह बात अम्मा को बराबर कचोटती है। भीतर–ही–भीतर सालती है। बेटे को 'पित्तरदोश' लगा है। अम्मा एक बार 'मशाण' जगाने वाले के पास गई थी। उस आदमी को पित्तरों को बुलाने में महारत हासिल थी। इतना गुणी कि सात पीढ़ियों के पित्तर बुला देता।

अम्मा ने भी पूछा तो पिता आए थे। अम्मा सुनाती है, उनकी वही जुबान, वही बोलचाल, जैसे काली चदर के नीचे मशाण जगाने वाला नहीं बल्कि खुद पिता बैठे हों। कहने लगे, "लाड़ी! तुम्हारे से कोई गिला–शिकवा नहीं। बेटे के पास मन अटका है। उसे ही भेजना।"

पर कैसे भिजवाए बेटे को! शहर ही का होकर रह गया है। उसकी बला से कुछ हो! भुगतेगा जब पानी सिर से चढ़ जाएगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आंगन में बांधे बैल चौथे–पांचवें दिन खूंटा जरूर उखाड़ देते हैं। एक दिन ऐसा ही हुआ। धूप में सोई अम्मा को भेड़ का मिमियाना सुनाई दिया तो उठ गई। भेड़ अच्छी चुगलखोर है। अम्मा को उसी के मिमियाने से बाकी पशुओं की हरकतों का पता चलता है।

अम्मा के बैल बहुत शरीफ हैं, पर कई दिनों से आपस में लड़ने लगे हैं। एक–दूसरे से दोनों को इरख हो गई है। अम्मा ने उठते ही भेड़ की तरफ देखा। वह खूंटे के चारों ओर डर के मारे घूम रही थी। रस्सी का फंदा लग गया। अम्मा के नजदीक पहुंचते ही धड़ाम से गिर पड़ी। अब बैल संभाले या भेड़। बैल को जोर से झाड़ा तो उलटा सींग मारने दौड़ आया। अम्मा के हाथ एक मोटा डंडा न लगता तो खेत में फेंक दी होती। अनर्थ। अपशकुन। जरूर किसी ने कुछ कर दिया है। वरना अम्मा के पशु मजाल कि उसकी न सुनें! पहले जैसे–कैसे डरते हुए उसे ओबरे में भगाकर बंद कर दिया। फिर भेड़ की रस्सी दराती से काट दी। कई बूंदें पानी उसके मुंह में डाला तो जान–में–जान आई।

अम्मा के लिए खूंटों की परेशानी हमेशा रहती है। खूंटा नहीं गाड़ा जाता। ओबरे के आंगन की बीड़ पर तब तक बैठी रहती है जब तक कि कोई गांव का मर्द या छोकरा–छल्ला दिख न जाए। इस बार देवता का पुजारी दिखा। जोर से हांक दी तो वह खेत से ही ऊपर चढ़ आया। नजदीक पहुंचा तो अम्मा ने माथा टेककर सुख–सांद पूछी। बैठने को पटड़ा दिया और साथ एक बीड़ी भी दे दी। पुजारी ने जितनी देर में बीड़ी सुलगाई, अम्मा भीतर से घण लेकर पहुंच गई।

"पंडजी सबसे पैले तो खूंटा गाड़ दो। इस बैल ने तो आज जान से ही मार दी थी।"

उसने कंधे से पट्टू पटड़े पर फेंक दिया और घण लेकर खूंटा ठोंकने लग गया। खूंटा लगा तो अम्मा को चैन आया। पुजारी ने आंगन में दूसरे खूंटों पर भी एक–एक ठोंक दी ताकि पक्के हो जाएं।

"ऐसा कभी नहीं हुआ था पंडजी। आप जरा कुछ खोट–दोश देख दो," अम्मा कहने लगी।

यह कहते अम्मा भीतर गई और उलटे पांव लौट आई। कांसे की थाली में कुछ कणक के दाने पुजारी को थमा दिए। वह पटड़े पर चौकड़ी मारकर बैठ गया। कांसे की थाली उलटी जमीन पर रख दी। उस पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दाने रखे। फिर उठाए और अम्मा को कहा कि फूंक मार दे। अम्मा ने वैसा ही किया। पुजारी ने दानों को कुछ देर मुट्ठी में बंद रखा। मुंह के पास ले जाकर कुछ मंत्र का जाप किया। देवी–देवताओं का नाम लिया और फिर थाली की पीठ पर डाल दिए। बारी–बारी दानों की गिनती शुरू हो गई। अम्मा सामने उकड़ूं बैठी एकटक देखती रही। मन–ही–मन देवता का नाम भी जपतीं रही।

पुजारी का चेहरा लाल हो गया जैसे देवता आ रहा हो। नीचे से तीन बार दाने उठाकर अम्मा को दिए। तीनों बार पांच–पांच आए। अम्मा जानती है चार और पांच दाने रक्षा के होते हैं जबकि छः दाने दोश–खोट के। दाने पकड़ाते पुजारी ने समझाया, "देख देवरु। कुछ गल जरूर है। कल जेठी सक्रांत है। तू कोठी के पास जरूर आना। देवता रक्षा करेगा। कुछ दाने बाहर–भीतर फेंकना और कुछ आटे की पिन्नी में बैल को खिला देना।" पुजारी यह कहते–कहते उठकर चला गया।

अम्मा ने वैसा ही किया। दूसरे दिन का इंतजार मन में बैठ गया। सोचती रही जरूर कुछ बात है। देवता की कोठी वह अवश्य जाएगी। पंची करवाएगी। अपने साथ बहू–बेटे के लिए भी पूछेगी कि उनका घर से मुंह किसने फिरवा दिया? किस दुश्मन ने भूत फेंक दिया?

•

दूसरे दिन अम्मा ने जल्दी–जल्दी घर का काम निपटाया। देवता की कोठी अम्मा के मकान से एक फर्लांग भी नहीं है। बिल्कुल दरवाजे के सामने। बाहर निकले तो सीधी नजर देवता पर जाए। इसलिए अम्मा कभी आंगन में जूठ–परीठ नहीं फेंकती। हमेशा गंगाजल या गौंच छिड़क दिया करती है। घर–गृहा पवित्र रहे तो मन को शांति रहती है। पर अम्मा के मन को शांति मिली ही कब ?

तीन बजे अम्मा रोट–धूप लिए कोठी के पास पहुंच गई। पहुंची तो दीवाल के बाहर जूते उतार दिए और जहां औरतों के बैठने की जगह थी वहां चुपचाप बैठ गई। पहले देवता को माथा टेका। फिर रोट की ठाकरी एक कारदार के पास थमा दी। कारदार ने रोट बाहर भैरों के लघु मन्दिर के पास उलटा दिया। तीन उंगली रोट उठा चारों तरफ अम्मा के नाम से देवता को फेंक दिया और पीछे से गौंच के दो–चार छींटे। फिर कुछ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चावल और एक फूल ठाकरी में डाल अम्मा को लौटा दी। अम्मा ने उन्हें माथे से वांच दिया।

चुपचाप बैठी अम्मा की नजरें कोठी के आंगन में थीं। कारदार इकट्ठे होने लगे थे। देवता का बजंतर बाहर निकाल दिया था। नगारची ने नगाड़ा, ढोलिये ने ढोल, चांबी ढोल वालों ने एक–एक चांबी, नरसिंगे वाले ने नरसिंगा और करनालची ने करनाल थाम ली थी। शहनाइया अब नहीं था। अम्मा को वह खालीपन भीतर तक काट गया। पति याद आ गए। वही देवता की हर रस्म अपने परिवार से कारदार के रूप में निभाते थे।

पति ही देवता के शहनाइए थे। हर सक्रांत को, हर जातर में और हर देवता के काम में उनकी हाजरी रहती। अम्मा को लगा कि जैसे वह अभी कहीं से आएंगे। बजंतरियों के बीच बैठने से पहले दोनों हाथों से देवता को माथा टेकेंगे और फिर थैली से शहनाई निकालकर पत्ता ठीक करने लग जाएंगे। फिर चिंचियाएंगे और उनके स्वर के साथ ढोलिया भी अपना स्वर ठीक करने लग जाएगा।

अब पति नहीं है तो कोई देवता का शहनाइया भी नहीं। अम्मा की आंखें भर गई हैं।

पंची शुरू होने लगी है। अम्मा आगे खिसक गई। पुजारी कोठी से बाहर आया तो अपने आसन पर बैठने से पहले इधर–उधर नजरें दौड़ाईं। अम्मा ने दूर से ही हाथ जोड़ दिए।

कोठी के आंगन में पूरब की तरफ़ बैठता है पुजारी। दाएं–बाएं कारदार यानि पंच। सामने तीन अलग–अलग देवता के गूर। पंचों ने एक थाली में धूप, चावल, सिंदूर और दो–तीन डलियां गुड़ की अपने पास रख लीं।

देव–बाजा शुरू हुआ। ढोल–नगाड़ा और दूसरे बाजे खनके। लोगों की नजरें केंद्रित हो गईं। अम्मा का जैसे रोआं–रोआं खड़ा हो गया। अम्मा को ऐसा ही होता है जब देवता का जंग शुरू हो जाता है। सारे वाद्य यंत्र जब एक साथ बजते हैं तो वातावरण में जैसे एक अजीब–सा जोश भर जाता है। बीच–बीच में एक कारदार रोट यानि आटे की चुटखियां उठाकर चारों तरफ फेंक देता है और पीछे से गौमूत्र के छींटे।

पुजारी में कंपकंपी होने लगी। मुख्य गूर भी पुजारी ही है। देवता आने लगा। बजंतर और भी तेज हो गया। हाथ श्रद्धा से जुड़ गए, सिर झुक गया और देवता पूरी तरह आ गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देवता आता है तो पुजारी जोर से ज़मीन पर हाथ मार देता है, "रख्खे...।"

सभी ऐसा ही कहते हैं। पंच चावल या कणक के मुट्ठी भर दाने पुजारी के कंपकंपाते हाथ में डाल देता है। पुजारी कई बार हवा में रक्षा के दाने उछालता है।

पंची–पंचायत शुरू हो गई। अम्मा का कलेजा फटा जा रहा है। हाथ रखती तो झटक जाता। कितनी बेचैनी! कितना भय! देवता ने खुद अम्मा को हांक लगाई तो वह चौंककर खड़ी हो गई, "आगे आ जा देवरु।"

एक कारदार झटपट अम्मा को नजदीक लाया। देवता जोर से खेला। खूब किल्कें दीं। कई बार लोहे का शंगल अपनी पीठ पर पटका। अम्मा इस बीच चुपचाप खड़ी रही, पर भीतर एक तूफान था। आज सबकुछ कह देगी देवता से। सबकुछ मांगेगी... कितना कुछ है अम्मा के मन में मांगने को! एक बात होती तो पूछे, अम्मा के पास तो प्रश्न–ही–प्रश्न हैं। दुख–ही–दुख हैं। सभी प्रश्न आंखों में तैर आए। छलछला गईं आंखें देवता ने पढ़ ही ली होंगी। वह तो मन की बूझता है। उसके पास भला क्या छुपाना?

"बैल ठीक है न?"

"तेरी रक्षा है देवा।"

"ये लो मेरे रक्षा के चावल। आंगन के चारों तरफ फेंकना। जा... आज के बाद तेरा बाल बांका भी न हो। कांटा भी न टूटे।"

अम्मा ने सिर झुका लिया। आंखों में तैरते हजारों प्रश्न दो बूंदों में धरती पर आ गिरे... शायद देवता ने सहेज लिए हों। देवता अम्मा को देखता रहा... अपार श्रद्धा की देवी थी अम्मा। बेजुबान पशु और देवता ही तो सहारे हैं अम्मा के। अम्मा को लगा जैसे शरीर पर से हजारों मन बोझ उतर गया हो।

•

कोठी से बाहर निकली तो कुछ औरतें दीवाल पर बैठी दिखीं। टोक दिया, "माल नजदीक है देवरु, रोज माल गाने आया करियो।"

कुछ नहीं बोली अम्मा। चुपचाप चली आई।

घर पहुंची तो औरतों का बुलाना याद आ गया। माल याद आ गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस पशुओं के त्योहार को कैसे–कैसे नहीं मनाती थी अम्मा!

पर मन नहीं करता कहीं आने–जाने को। वरना पहले कोई माल़ अम्मा के बिना नहीं गाई जाती थी। आठ दिनों पहले शुरू हो जाती। कोठी के पास कई घंटों देर रात तक औरतें गाती रहतीं। चांदनी रात में दूर–दूर तक गीतों की आवाज़ जाती। अम्मा उन्हीं के बीच रहती। माल़ गाती। तरह–तरह के हंसी–मजाक होते। ठठेलियां होतीं और आठवें दिन अम्मा के पशु सजे–संवरे पानी के पास सबसे पहले पहुंचे होते। अम्मा ने भुनी मक्कियों और अखरोटों की चन्नियों की झोली भरी होती। जो भी मिलता, उसे ही मुट्ठी भर दिए जाती।

कल और आ रही है माल़। अम्मा की माल़ तो पिछले बरस जैसी होगी। निपट अकेली। कोई नहीं गाएगा। कोई नहीं आएगा। बिल्लियां होंगी। एक गाय, दो बैल और दो भेड़ें। इन्हीं के बीच मनेगा अम्मा का यह त्योहार। अम्मा गाएगी तो आवाज़ें मन की दहलीज से बाहर न निकलेंगी, चारदीवारी से टकराकर रह जाएंगी।

मनानी तो है ही। कोई दूसरा त्योहार होता तो अम्मा टाल देती। पशुओं का त्योहार बरस बाद आया है, इसे तो मनाना ही है। अम्मा भूल गई थी कि हारों के लिए बुंगड़ी और सरतवाज के फूल भी लाने हैं। सरतवाज तो आंगन में खूब हैं, पर बुंगड़ी के फूल दूर घासनी से लाने होंगे। यही तो फूल हैं जो माल़ को पशुओं के गले में सजता है। सरतवाज के लाल और बुगड़ी के सफेद फूलों की मालाएं पशुओं के गले में सजी कितनी भली लगती हैं!

हल्के अंधेरे में ही गई थी अम्मा। सफेद फूल को चुनने में देरी ही कितनी लगी होगी। झटपट लौट आई। चांगड़ से एक पुल्ली शेल निकाला। सरतवाज के फूल तोड़े और चार–पांच हार ढिबरी की रोशनी में गूंथ दिए।

सुबह वही दिनचर्या थी। अम्मा उठी। आज का दिन तो पशुओं के नाम है। कामकाज निपटाया। पहले छोटी बच्छिया खोली। उसे खूब हरा घास खिलाया। आंगन में गोबर से लिपाई की। उसके मध्य आटे और हल्दी से छोटा–सा मंडप बनाया। फूल रखे, जूभ लाई। पिन्नियां तड़के ही बना थीं। एक कड़छी में आग के अंगारे भरे और उस पर थोड़ा घी डाल दिया। धूप तैयार। बच्छिया को खड़ा किया। उसके पांव धोये और धूप से पूजा की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर ओबरे में चली गई। हार बैलों और गाय के गले में पहना दिए। हल्दी और चावल का हल्का पीला रंग गिलास में मुंह पर लगा सभी की पीठ पर छापे लगा दिए।

सजे–धजे पशु सुंदर लग रहे थे। भेड़ों को जरूर ईर्ष्या हुई होगी। वे कनखियों से गाय–बैलों को निहार रही थीं। अम्मा ने बहुत सारी आटे की पिन्नियां बनाई हुई थीं। उन्हें भी एक–एक खिला दी। अनायास ही गीत के बोल मुंह से फूट पड़े, माल लगी गाईए... होऽऽमालो।"

गांव से भी माल गाने की आवाज़ें आ रही थीं।

यादें ताजा होने लगीं। सभी साथ होते। पिता सबसे पहले गाय पूजते। गौशाला में बारी–बारी सबके पांव धोते। पिन्नियां खिलाते जाते और गांव के पशुओं के लिए भी पिन्नियां ले जाते। शाम को खूब खाना–पीना होता। कई–कुछ पकता। आज न पति है, न बेटा। बहू के लिए माल काला अक्षर भैंस बराबर। यादों ने रुला दिया अम्मा को। अब अम्मा ऐसे ही रोया करती है उठते–बैठते, काम करते। रोटियां पकाते। सोते और जागते।

•

डाकिये ने आवाज़ दी तो अम्मा चौकस हो गई। बोला, "काकी चिट्ठी है।" गौशाला से उलटे पांव दौड़ गई।

अम्मा को भला कौन लिखेगा चिट्ठी! बेटे ने तो कभी दी नहीं। बेटी ऐसे ही किसी आने–जाने वाले के पास राजीबंदा भेज देती है। जरूर डाकिये को धोखा लगा है।

फिर भी पूछ ही लिया, "मेरी..?"

"हां काकी, तेरी ही है। देख तेरा ही नाम लिखा है, पर अम्मा कैसे पढ़े। डाकिए को ही कहती है कि पढ़कर सुना दे।

डाकिए ने ही बताया था, "काकी तुम्हारा बेटा आ रहा है..।"

चौंकी थी अम्मा, "मेरा बेटा...?"

विश्वास नहीं हो रहा था कि डाकिया सच बोल गया। हाथ में खुली चिट्ठी भगवान हो गई अम्मा के लिए। जाते डाकिये को आवाज़ देना चाहती थी कि बहू नहीं आ रही है उसके साथ। पर वह निकल गया।

कुछ मायूस हो गई। वह आएगी भी क्यों! उसकी क्या लगती हूं मैं!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह तो शहरी मेम है। गांव नहीं भाता। गोबर–मिट्टी से बास आती है। रसोई में धुआं काटता है। लस्सी, खैरू नहीं खा सकती। घास–पत्ती नहीं काट सकती। बैठने को कुर्सी नहीं है। घूमने को बाजार। खुले में पाखाना नहीं कर सकती... बेटे को भी मेम ही ब्याहणी थी। किसी शरीफ खानदान की लड़की लाता तो सुख से रहता। मत आए कोई। ज्यादा कटी, थोड़ी रही। कितने दिन जीऊंगी! फिर मर्जी करें। ज़मीन–जगह रखें चाहे बेचें, मेरी बला से। पर जब तक प्राण हैं चलाए रखूंगी। सह लूंगी सबकुछ।

•

शनीचर को देर रात आया था बेटा।

सड़क गांव से बहुत दूर है। पैदल कोई सात मील चलना पड़ता है। बड़ी आस लिए थी अम्मा। बरसों बाद मां–बेटा एक साथ खाएंगे।

बेटा आया तो पहले सीधा अपने कमरे में चला गया। घर में एक कमरा उन्हीं के लिए बंद रहता है। अम्मा ने कभी नहीं खोला। कपड़े बदलकर काफी देर बाद आया। अम्मा ने ढिबरी की लौ और तेज कर ली थी। देखेगी कितना जवान हो गया है! कैसा लगता है! कमजोर तो नहीं हो गया होगा!

कहीं पीछे चली गई है अम्मा। छोटा–सा था। स्कूल से आता... बाहर बस्ता फेंकता... और सीधा पीठ पर चढ़ जाता। हाथ भी नहीं धोता... रोटी खाने की जल्दी लगी रहती... अम्मा आधी रोटी और मक्खन देती... खाकर गोद में सो जाया करता।

अब वह बड़ा हो गया है। साहब है... आया तो पैरीपावणा करके चुपचाप चूल्हे के पास बैठ गया। अम्मा चाहती थी वह खूब गले लगे... भरी आंखों से पूछे– क्या इतने दिनों मां याद नहीं आई! कुछ नहीं हुआ ऐसा। नहीं, मां रोई नहीं। भीतर–ही–भीतर बिना आंसुओं के रोना कोई मां से सीखे।

अम्मा ने चाय दे दी। फिर हाथ धोने को पानी। वह मुकर गया। बोला, रोटी शहर से ही बांध रखी थी। बस से उतरते ही खा ली।

उसके लिए इतना कहना सीधा था। अम्मा पर क्या गुजरी होगी– कौन जाने? घुटकर रह गई मानो बिजली टूट गई हो। ऊपर कोई पहाड़ गिर गया हो। एक तूफान उठ गया भीतर। पर अम्मा आदी हो गई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन आंधियों और तूफानों का ही तो घर है।

फिर बेटे ने ही चुप्पी तोड़ी थी।

"मां, सुबह चले जाना है। बहुत काम है। नन्हें को अंग्रेजी स्कूल में दाखिला करवाना है। सिफारिश करवाई थी कुछ नहीं हुआ। अब पूरे तीस हजार डोनेशन मांगते हैं।

अम्मा की समझ में अधिक कुछ नहीं आया। पर वह भांप गई कि बेटा पैसे को आया है। फिर बोला, "मां, इस महीने पैसे नहीं दे सकूंगा।"

अम्मा ने विश्वास दिलाया, "तू फिक्र क्यों करता है! भगवान का दिया मेरे पास बहुत है बेटा। तू अपना काम कर। अब के बाद भेजना ही मत। मेरा खर्च ही क्या होता है!"

सांत्वना दे गई अम्मा। लेकिन बेटे के मन में बात कहीं चुभ गई। कुछ नहीं बोला। चुपचाप बैठा रहा। अम्मा भी कई पल चुप रही। बस चिमटे से चूल्हे में यूं ही आग खरोड़ती रही। इस चुप्पी में कई सवाल छुपे थे। तरह–तरह के। फर्क इतना था अम्मा के पास जवाब हो सकते हैं, पर बेटा तो हर तरफ से खाली है। अम्मा ने जैसे उसका चेहरा पढ़ लिया हो।

"नींद लगी होगी बेटा तुझे। बिस्तर बिछा आती हूं।"

कुछ नहीं कह पाया वह। अम्मा उठकर चली गई। बिस्तर झाड़ा, चादर बदली और नई रजाई निकाल कर रख दी। कमरे को काफी देर तक निहारती रही। आश्चर्य हुआ। अपने ही घर का कमरा कितना अजनबी–सा लगा था अम्मा को। मानो किसी अनजाने घर में पसर आई हो।

वह भी उठ गया। थका हुआ–सा। कितना मुरझाया हुआ चेहरा है उसका जैसे हजारों गम मन में घर कर गए हों। चुपचाप कमरे में चला आया... हारा हुआ–सा। मन की बात भी अम्मा से न कह पाया। पास रहते हुए भी कितना दूर हो गया है वह! सोचता रहा, कैसे जाएगा शहर! खाली हाथ लौटेगा तो पत्नी टोक देगी। मां से पैसे नहीं लाए। कैसे फीस भरेगी! वह चालाक है। जानती है बुढ़िया का खर्च कितना है! बेटा जो भेजता है उसे ऐसे ही रखती होगी। चार–पांच सालों की रकम कम नहीं होती। मिल जाए तो क्या हर्ज है!

कमरे में बहुत देर बैठा रहा था वह। बेचैन। खामोश।

अम्मा ने कुछ भी नहीं खाया। कैसे खाती? बेटा इतने दिनों बाद आया भी तो शहर से रोटियां लेकर। पकाई रोटियां उसी तरह ढंक दीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीड़ी भी नहीं सुलगाई। अम्मा की चुप्पी फिर बिल्लियां ताड़ गईं।

काली चुपचाप चूल्हे के सेंक में घुर्राने लगी और निक्की अम्मा की गोदी में चढ़कर गला चाटने लग गई। अम्मा जानती है जब उन्हें शिकार नहीं मिलता, दूध के लिए यह दुलार ऐसें ही चलता है। अम्मा ने उसे दाएं हाथ से पकड़े रखा और बाएं से बाल्टी से दूध उनके बर्तन में उड़ेल दिया। खूब सारा। दोनों छप्प–छप्प पीने लग गईं। पहले से ज्यादा दूध उड़ेल गई अम्मा।

•

आज हर तरफ अजीब–सा सन्नाटा है। अम्मा का किसी के साथ कोई झगड़ा नहीं है। बिल्लियां फिर पास आ जाती हैं। दोनों ही गोदी में चढ़ गई हैं। उन्हें अम्मा का स्नेह और चूल्हे का सेंक अपूर्व आनंद देता है। अम्मा उन्हें खूब प्यार करती है। खूब सहलाती है। आज तो जैसे स्नेह के अंबार लग गए हैं। बच्चों कीं तरह उन्हें अपनी छाती में भींच लिया है। तुतलाती जुबान में पता नहीं उन्हें क्या–क्या कहती जा रही है।... बिल्लियां समझती होंगी अम्मा की जुबान... वह जितना बड़बड़ाती है, बिल्लियां उतना ही प्यार अम्मा से करती जाती हैं। अम्मा से बतियाने लगती हैं। म्याऊं... म्याऊं... घुर्ड... घुर्ड... घुर्ड।

उधर बेटे से कमरे में रहा नहीं गया तो हिम्मत बटोरकर रसोई तक चला आया। दरवाजा बंद था। अम्मा रसोई का दरवाजा बंद कर लिया करती है। बेटे को भ्रम हुआ अम्मा के साथ कोई दूसरा आदमी बातें कर रहा है। ऐसी रात कौन हो सकता है! आगे बढ़ा और झुककर दरवाजे के पोरों में से भीतर झांका। सभी कुछ देख गया। भूल गया कि वह अम्मा से पैसे लेने आया है। उसे लगा वह यहीं गांव में रहता है। जैसे अम्मा की गोदी में बिल्लियां नहीं, वह स्वयं है। अम्मा उसें दुलार रही है। बालों को सहला रही है। उसका संपूर्ण वात्सल्य उमड़ आया। वह बचपन के क्षणों को फिर जीना चाहता है। अम्मा के पास बैठकर। अम्मा की गोदी में सिर रखकर। चाहता है पहले जैसा अम्मा उसे डांटे। झगड़ा करे। वह अपना यह अधिकार इन जानवरों को कभी नहीं देगा... कभी नहीं।

दरवाजा खोलना चाहता था, पर रुक गया। मन में एकाएक प्रश्न उठा, "क्या वह इस योग्य है? इस स्नेह के काबिल है?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तभी अम्मा ने भीतर से टोका, "सो जा बेटा... सुबह जाना है न!"

अम्मा ने आहटें पढ़ लीं। कैसे देखा इस घुप्प अंधेरे में उसे। वह तो दबे पांव आया था। वह अचंभित रह गया। कुछ कहता, उससे पहले ही अम्मा ने फिर कहा, "तेरे सिरहाने पैसे रख दिए हैं बेटा। लेते जाना। तेरे काम आएंगे।"

"पैसे...?"

अम्मा को किसने बताया कि मैं शहर से पैसे के लिए आया हूं! कैसे पढ़ ली मन की बात! पर इस समय इसका तो ख्याल भी न रहा था उसे।

मन किया जोर से चीखे। रोए। चिल्लाए। कहे कि मुझे अम्मा तुम्हारा प्यार चाहिए, पैसे नहीं। मन की चीख–पुकार मन ही में घुटकर रह गई। जुबान ही जैसे बंद हो गई हो। वह न कुछ सुन सकता है और न कुछ बोल सकता है। अंधेरे की परतों ने जैसे उसे पूरी तरह से जकड़ लिया हो। पांव जीवन में धंस गए हों। उसे नहीं पता वह ऊपर है या कि नीचे। धरती पर है या आसमान पर। खड़ा है या कि बैठा हुआ।

अम्मा फिर बिल्लियों के साथ बतियाने लगी है। जैसे उसे कुछ पता ही नहीं कि उसका बेटा दरवाजे के बाहर खड़ा है।

वह उलटे पांव लौट आया था। सिरहाने देखा एक पुराने रुमाल में चार सालों के पैसे बंधे हैं।... आंखें बरस आईं। आज हिसाब पूरा हो गया।

अम्मा की बिल्लियों से बतियाने की आवाज़ें अभी भी उसके कानों में पड़ रही थीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीनकाठी

भुण्डा : पहाड़ी समाज का एक विचित्र, अद्भुत और रोमांचक उत्सव। पुराने समय में इसे हर बारह वर्ष के बाद मनाए जाने की परंपरा प्रचलित थी लैकिन पहाड़ों में आज इसके आयोजन का कई कारणों से कोई निश्चित समय नहीं रहा है। इसमें **'बेड़ा'** नामक एक पर्वतीय दलित जाति की विशेष सहभागिता और महत्त्व होता है। इस परिवार से एक व्यक्ति का चुनाव करके उसे यज्ञोपवीत धारण करवाकर उसे अस्थायी रूप से ब्राह्मण बना दिया जाता है। उत्सव के दिन देवता और ईश्वर की तरह उसकी पूजा होती है। इस धर्माचार के तहत ऊंची पहाड़ी से नीचे की ओर एक लम्बा रस्सा बांध दिया जाता है। बेड़ा अपनी जान की बाजी लगाता हुआ जीनकाठी पर बैठकर इस रस्से पर सरकता हुआ नीचे आता है।

सहज राम उर्फ सहजू अब दलित नहीं रह गया था।

उसे ठण्डे पानी से नहलाया गया। पूजा के उपरांत सारे संस्कार ब्राह्मणों की तरह करवाए गए। विधिवत् यज्ञोपवीत धारण करवाया गया। अब वह नीच जाति का न रहकर ब्राह्मणों की तरह पवित्र हो गया था। लोग उसे देवता का रूप मानने लगे थे। एकाएक अछूत से पंडित बन गया था सहजू। अब उसे विशेष विधि–विधान का पालन भी करना था जिसमें एक समय खाना, नख और केश न काटना तथा ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करना इत्यादि शामिल था। भोजन और कपड़े उसे मन्दिर की तरफ से मिलने शुरू हो गए थे। यहां तक कि आयोजन की अवधि तक उसके पूरे परिवार का खर्चा भी देवता कमेटी को ही उठाना था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भुण्डा उत्सव के लिए अब विशेष रस्से का निर्माण किया जाना था।

लोग देवता के तमाम वाद्यों के साथ एक पहाड़ी पर सहजू को लेकर मूंज का घास काटने चले गए थे। पहले सहजू ने ही दराटी से घास काटने की परंपरा का निर्वाह किया था। इसके बाद सभी गांव वालों ने घास काटना शुरू कर दिया। जब पर्याप्त मात्रा में घास काट लिया गया तो सभी ने घास की गड्डियों को मन्दिर के प्रांगण में लाकर रख दिया। इसी घास से सहजू को भुण्डा के लिए रस्सा बनाना था। उत्सव स्थल का मुआयना किया गया तो कुल लम्बाई 500 मीटर की निकली। इतना ही लम्बा रस्सा बनना था। मजबूती के लिए उसकी मोटाई लगभग 25–30 सेंटीमीटर रखनी ज़रूरी थी।

सहजू को ब्रह्ममुहूर्त में उठकर नहाना पड़ता था। पूजा–पाठ के पश्चात् वह मूंज के घास से रस्सा बनाने में जुट जाता। यह कार्य अत्यन्त ही पवित्र माना जाता। उस समय कोई दूसरा व्यक्ति न उसके सामने आता और न ही बात करता था। कोई भी रस्से को छू तक नहीं सकता था। यदि भूल से किसी ने ऐसा कर लिया तो वह अपवित्र माना जाता। तत्काल उस पर एक भेड़ की बलि चढ़ाई जाती और नया रस्सा बनाना आरम्भ करना पड़ता। रस्सा बनाते हुए सहजू के मन में तरह–तरह के खयाल आते रहते। वह सोचता कि उसका जो बुजुर्ग बरसों पहले भुण्डा निभाते रस्से से गिरकर मर गया था, उसने भी इसी तरह तिनका–तिनका घास के रेशे से मौत को बुना होगा। वह इन्हीं ख्यालों में दिन भर खोया रहता। उसकी पत्नी दूर बैठी उसे चुपचाप निहारती रहती। कई बार निगाहें सहजू के चेहरे पर टिक जाया करतीं। उसके चेहरे पर आते–जाते भाव को पढ़ने की कोशिश करती। कभी वहां मौत की परछाई रेंगती दिखती तो कभी अपार सम्पन्नता की लकीरें बनती–बिगड़ती नजर आतीं। अपने खाविंद को एक दलित से ब्राह्मण होने के सुख को भी वह उसके चेहरे और आंखों पर तलाशने लगती। लेकिन कभी–कभी वह चेहरा अपने पति का न लगकर एक पाखंडी या करयालची के जैसा लगता जिस पर जबरन ब्राह्मण का मुखौटा चढ़ा दिया गया हो और लोगों द्वारा अपने मनोरंजन के लिए उसे 'स्वांगी' बना दिया गया हो।

जब सहजू रस्से बनाने का काम बंद करता तो गांव के लोग उनके पास आते–जाते रहते। उनसे इज्जत से बतियाते। घास कम होता देख फिर काट कर ले आते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भुण्डा जैसे महा–उत्सव का आयोजन भगवान दत्त शर्मा के दिमाग की उपज थी। तहसीलदार के पद से शर्मा जी कुछ दिनों पूर्व ही सेवानिवृत्त हुए थे।

जिस दिन वे सेवानिवृत्त हुए, उन्होंने अपने गांव में पूरे ताम–झाम के साथ एक बड़ी धाम दी थी। इस सहभोज के लिए सगे–सम्बन्धियों के अतिरिक्त गांव–बेड़ और परगने तक से लोग बुलाए गए थे। दफ्तर से तो उनके नये–पुराने साथी आए ही थे, परन्तु अपने चुनाव क्षेत्र के विधायक को भी विशेष रूप से आमन्त्रित किया था। विधायक के साथ प्रशासन के सभी अधिकारीगण पधारे थे। गांव के देवता को भी बुलाया गया था। शर्मा जी जब अपने दफ्तर से गांव पहुंचे तो साथ दस–पन्द्रह छोटी–बड़ी गाड़ियां थीं। अंग्रेजी बाजे के साथ ढोल–नगाड़ा बजाने वाली पार्टी को बुलाना भी वे नहीं भूले थे। इससे जहां उन्होंने तहसीलदारी की ठीस बरकरार रखने की कोशिश की, वहां लोगों के बीच अपनी छवि को एक धार्मिक दृष्टि देने का भी प्रयास किया था।

धाम में कई प्रकार के पकवान बनाए गए थे। कई तरह की शराबें उपलब्ध थीं। पांच बकरे भी काटे गए थे। लोगों ने इससे पहले कभी ऐसा जश्न नहीं देखा था। इसीलिए इस कार्यक्रम की चर्चा काफी दिनों तक होती रही। शर्मा जी ने इतना बड़ा आयोजन करके एक साथ कई निशाने साधे थे। लेकिन ये सब उनके मन की बातें थीं जिसकी वे किसी को भी भनक नहीं लगने देना चाहते थे। वे जानते थे कि जिस ठाठ से उन्होंने नौकरी की है, सेवानिवृत्ति के बाद वह ठसक कहां रहने वाली! सभी कुर्सी को प्रणाम करते हैं। बाद में तो कोई कुत्ता भी नहीं पूछता। बैंक बेलैंस भले ही लाखों में हो, पर जब तक कोई कुर्सी का जुगाड़ न हो तो आदमी आदमी रहता ही कहां है! वैसे भी शर्मा जी तहसीलदार के पद से रिटायर हुए थे। पैसा खूब कमाया था। इज्जत–परतीत खासी बटोरी थी। काम लोगों के बहुत किए। ऐसा नहीं कि वे दूध के धुले हुए थे, पर पैसा इस ढंग से बनाया कि अपने ऊपर कोई आंच तक न आने दी।

अट्ठावन साल की उम्र में भी भगवान दत्त शर्मा चालीस के आसपास ही लगते थे। अभी भी गाल लाल थे। झुर्रियों का कहीं नामोनिशान न था। हालांकि बाल कई बरस पहले सफेद हो चुके थे लेकिन मेंहदी से उन्हें काले किए रखते थे। माथा काफी चौड़ा था। गोल चेहरा ठोड़ी तक आते–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आते थोड़ा नुकीला था। हल्की मूंछें उन पर खूब जंचती थीं। माथे पर चंदन और कुमकुम मिश्रित टीका वे हमेशा लगाए रखते। नौकरी में उन्होंने कभी टाई और कोट पहनना नहीं छोड़ा। कोट की जेब में टाई के रंग से मिलता रूमाल वे हमेशा रखते। इसीलिए ठाठबाठ देखकर उनके वरिष्ठ अफसरों का भीतर ही भीतर फुंके रहना स्वाभाविक था। लेकिन रिटायर होने के बाद उन्होंने अपना लिबास बदल लिया था। अब फेरीदार पाजामे–कुरते के साथ वे नेहरूकट सदरी पहनते और जेब में बाहर झांकता लाल रूमाल सजा रहता। इस चमक–धमक से भी उनका व्यक्तित्व कुछ अलग हटकर ही लगता था।

शर्मा जी का परिवार गांव में सबसे सम्पन्न था। वे तीन भाई थे। तीन ही गांवों के मालिक। उन्हें बड़े जमींदार भी कहा जा सकता था। अपने परिवार में उनकी पत्नी, दो बेटे, दो बहुएं और तीन पोतू–पोतियां थे। दो लड़कियों की शादी हो चुकी थी। छोटा लड़का बी.डी.ओ. लग गया था। बड़ा कत्थे का ठेकेदार था। साथ जमींदारी भी संभालता था। पानी लगती ज़मीन थी। फसलों के साथ खूब सब्जियां होती थीं जिनसे अच्छी–खासी आमदनी थी। दो क्वालिस गाड़ियों के साथ दो ट्रक भी थे। गोरखों की एक लेबर लगातार खेती–बाड़ी के काम में लगी रहतीं।

पहला काम शर्मा जी ने देवता कमेटी में घुसने का किया था। कई दिनों तक देवता के कार्यक्रमों में आते–जाते रहे। लेकिन जब कमेटी में सरपंच के चुनाव हुए तो लोगों के पास उनसे बढ़िया विकल्प कोई नहीं था। सर्वसम्मति से सरपंच चुन लिए गए। यह उनके धार्मिक जीवन की शुरुआत थी। यहीं से वे ग्राम पंचायत की प्रधानी तक जाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने अभी से जुगाड़ भिड़ाने शुरू कर दिए थे। शर्मा जी अब कुछ ऐसा करना चाहते थे जिससे गांव–परगने में ही नहीं बल्कि दूर–दराज के इलाकों में भी उनकी साख का डंका बजना शुरू हो जाए। उनकी खूब वाहवाह हो और विधायक तथा मुख्यमन्त्री तक खूब पहुंच भी बन सके। देवता को इसका माध्यम बनाने की उन्होंने सोची थी।

उनका पूरा गांव ब्राह्मणों का था। पांच गोत्रों के ब्राह्मण वहां रहते थे। इसे एक प्राचीन सांस्कृतिक गांव भी माना जाता था। कालान्तर से यहां बारह बरस के अन्तराल के बाद निरन्तर भुण्डा महोत्सव मनाया जाता रहा। गांव में कई प्राचीन मन्दिर अभी भी मौजूद थे जिनका न केवल धार्मिक बल्कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरातात्विक महत्त्व भी था। गांव में चार–पांच परिवार दलितों के थे। उन्हीं में एक परिवार 'बेड़ा' जाति का था जो भुण्डा में मुख्य भूमिका निभाया करता। लेकिन बरसों पहले उनके परिवार का एक सदस्य भुण्डा का रस्सा टूटने से मर गया था। शर्मा जी ने अपने दादा–पड़दादाओं से इस कथा को सुन रखा था जो मन में आज भी तरोताजा थी। जब बेड़ा को जीनकाठी पर बिठाकर रस्से पर छोड़ा गया तो कुछ दूरी पर वह रुक गई। बेड़ा बेचारा न आगे खिसक पाया, न पीछे। रस्से में बाट पड़ गए थे। लोगों ने दोनों ओर से बहुत प्रयत्न किए कि बेड़ा की जीनकाठी आगे खिसक जाए लेकिन सभी प्रयत्न असफल हो गए। उन्होंने जब रस्से को जोर–जोर से लकड़ी के डंडों से पीटना शुरू किया तो रस्सा टूट गया। बेड़ा कई सौ फुट नीचे चट्टानों पर गिर पड़ा और मृत्यु हो गई। उस गांव और परगने के लिए वह दिन बड़े अनिष्ट का माना गया था। उसके बाद गांव में भयंकर महामारी फैल गई। गांव की आधी से ज्यादा जनसंख्या मौत के मुंह में चली गई। इसीलिए गांवों के ब्राह्मणों ने बेड़ा के परिवार के साथ दूसरे दलितों को भी गांव से भगा दिया और सारे अनिष्ट का ठीकरा उन्हीं के सिर फोड़ डाला।

•

अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए शर्मा जी को इससे बेहतर दूसरा कोई विकल्प नजर नहीं आ रहा था। वे जानते थे कि उस हादसे के बाद गांव में कभी भुण्डा नहीं हो पाया था। हालांकि दूसरे गांवों में कभी–कभार बीस –चौबीस बरसों के अन्तराल से ही यह आयोजन होता रहा था। अपनी तहसीलदारी के रहते उन्होंने भी कई आयोजन करवाए थे। परंपराएं उसी तरह निभाई जाती थीं लेकिन 'बेड़ा' को जितने लम्बे रस्से पर उतारा जाता, उसके नीचे उतनी ही लम्बी जाली भी बिछा दी जाती थी। बेड़ा किसी कारण गिरे भी तो उसे तत्काल बचाया जा सकता था। कई जगह 'बेड़ा' जाति का कोई व्यक्ति उपलब्ध न होने पर लोग बकरे को ही जीनकाठी पर बांधकर छोड़ते थे।

शर्मा जी ने यह बात एक दिन देवता कमेटी के सदस्यों से की। सभी को उनकी बात खूब जंची थी। देवता के गूर का विचार था कि उनके गांव पर अभी तक उस अनिष्ट का साया क़ायम है। वह तभी मिट सकता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है जब गांव में भुण्डा का आयोजन किया जाए। इससे गांव पहले जैसा सम्पन्न और खुशहाल भी हो जाएगा। लेकिन बात लाखों रुपए के व्यय की थी। आज की महंगाई में इतना बड़ा आयोजन करना नामुमकिन था। इसका समाधान भी शर्मा जी ने ही निकाल दिया था। उन्होंने तत्काल एक लाख रुपए देवता कमेटी को दान देने का वादा कर दिया। इससे सभी सदस्यों का मनोबल बढ़ गया। दूसरा विकल्प यह निकाला गया कि देवता के पास जो बरसों का सोना–चांदी पड़ा है, उसे अच्छी कीमत पर बेच दिया जाए। देवता का धन यदि देवता के ही काम आए तो इसमें बुरा भी क्या...? इस बात पर सभी की सहमति बन गई थी।

अब समस्या 'बेड़ा' को ढूंढ़ने की थी। गांव में किसी को भी पता नहीं था कि बरसों पहले निकाले जाने के बाद वे लोग कहां जाकर बस गए थे? शर्मा जी ने ही इसका समाधान भी निकाला था। उन्होंने बेड़ा को तलाश करने और गांव में लाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी। देवता कमेटी उनकी सक्रियता को देखकर बेहद प्रभावित थी। उन्हें खूब मान–प्रतिष्ठा भी मिलनी शुरू हो गई थी। देवता से लेकर गांव–परगने के कई दूसरे छोटे–बड़े काम अब उन्हीं के सलाह–मशविरे से होने लगे थे। यह सुख शर्मा जी को तहसीलदार की कुर्सी से कहीं बढ़कर लगने लगा था।

शर्मा जी मन ही मन बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने आयोजन की पूरी रूपरेखा अपने मन में तैयार कर ली थी। यह भी तय कर लिया था कि प्रदेश के मुख्यमन्त्री को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया जाए। गांव–बेड़ में जब देवता कमेटी के निर्णय का पता चला तो लोग हैरान–परेशान हो गए। इतने बड़े आयोजन के लिए वे तैयार नहीं थे। लेकिन शर्मा जी और कमेटी के अन्य सदस्यों ने उन्हें समझा–बुझा कर मना लिया था।... फिर इतने बड़े पुण्य से वंचित भी कौन रहना चाहता था?

शर्मा जी के लिए सबसे बड़ी मुश्किल 'बेड़ा' परिवार तलाशने की थी। 'बेड़ा' जाति के लोग दूर–दूर तक भी अब नहीं रहे थे। भीतर की बात यह थी कि जिस परिवार को अनिष्टकारी मानकर गांव से निकाला गया था, उसी के सदस्य को लाना ज़रूरी था। गांव के बुजुर्गों और कुल पुरोहितों का मानना था कि गांव पर उन लोगों का अभिशाप अभी तक भी बैठा है क्योंकि जो 'बेड़ा' रस्से से गिरकर मरा था, उसमें उसका तो कोई दोष नहीं था। इसलिए यदि उसी परिवार का कोई रस्से पर उतरे तो दो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम सफल हो जाएंगे। पहला कलंक और शाप से छुटकारा और दूसरा भुण्डा के सफल आयोजन से पुण्य का फल।

शर्मा जी गांव के एक–दो लोगों को लेकर पहले विधायक जी के पास पहुंचे और इस सन्दर्भ में बात की।

''देखो विधायक जी! हमारे गांव में लगभग डेढ़ सौ साल बाद भुण्डा होगा। मुख्य अतिथि तो आपको मुख्यमन्त्री जी ही लाने हैं। इससे आपका भी भला और हमारे साथ गांव का भी फायदा।''

शर्मा जी ने विनम्रतापूर्वक विधायक के आगे प्रस्ताव रखा था।

विधायक जी को तत्काल कुछ नहीं सूझ रहा था। उन्होंने भी अपने बुजुर्गों से 'बेड़ा' के रस्से पर से गिरने से हुई मौत की बात सुन रखी थी। वे खुद भी दलित वर्ग से थे। उनका चुनाव क्षेत्र आरक्षित था। सिगरेट के कश लगाते हुए काफी देर मन ही मन में बैठकें करते रहे। उनका विचार बरसों पहले घटी घटना की तरफ चला गया। उसकी आड़ में उन्होंने अपने फायदे–नुकसान का हिसाब–किताब लगाया। दलितों की वोटों की तरफ एक सरसरी नजर दौड़ाई जो उन्हें पिछले चुनाव में बहुत कम मिले थे। दूसरी सबसे बड़ी बात उन्हें इस इलेक्ट्रॉनिक युग में अपनी पुरानी परंपराओं के साथ अपने को जोड़ने की लगी। तीसरी जो मुख्य बात समझ में आई, वह थी गांव से निष्कासित 'बेड़ा' और दलित परिवारों को पुनः इस बहाने सम्मान दिलाना। यह अवसर उन्हें 'ऑल इन वन' जैसा लगा।

विधायक जी ने मन में खूब जोर का एक ठहाका लगाया, लेकिन उसका भाव चेहरे पर नहीं आने दिया। एक बनावटी मुस्कान चेहरे पर उतारते हुए कहने लगे, ''शर्मा जी! धन्य हैं आप। नौकरी करते हुए भी अपनी परंपराएं मन में बचा रखी हैं वरना रिटायरमेंट के बाद तो लोग सठिया जाते हैं। कोई तो इस गम से परेशान होकर दो साल भी नहीं निकाल पाते। आपने तो इतना बड़ा बीड़ा उठाया है। बड़ी समाज सेवा है भई। मैं तो आपके साथ हूं। मेरे लिए आप जो सेवा दें, सिर माथे।''

शर्मा जी खुश हो गए। मन में कुलदेवता को नमन किया। उसी के परताप से सब शुभ हो रहा है, पर दूसरे पल कुछ चिन्ताओं की रेखाएं अनायास चेहरे पर उमड़ीं तो विधायक जी ने टोक दिया, ''कुछ परेशान दिख रहे हैं शर्मा जी?''

''नहीं–नहीं, विधायक जी ऐसी बात नहीं है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by PKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"भई, मैं आपके साथ हूं। कुछ है तो निःसंकोच बताएं।"

साथ दूसरा व्यक्ति बैठा था। उसने पहले विधायक जी के चेहरे पर नजर दी। फिर शर्मा जी की तरफ देखा। चिन्ता का उसी ने समाधान किया था।

"परेशानी उस बेड़ा परिवार को तलाशने की है जिन्होंने गांव छोड़ दिया था।"

विधायक जी ने सुना तो आंखें लाल हो गईं। मन अपमान से तिलमिला गया जैसे बरसों पहले गांव से उन्हें ही निकाला गया हो लेकिन पल भर में सहज हो लिए।

"उनकी फिक्र आप क्यों करते हैं शर्मा जी! कागज लाईए, पता मैं बता देता हूं।... है तो बहुत दूर, लेकिन जब आप सभी ने इतने बड़े आयोजन की ठानी है तो दूरियां कैसी! हां थोड़ी–बहुत मान–मनौती तो करनी ही पड़ेगी। बात भले ही बरसों पहले की है, पर बेइज्जती के जख्म तो सदा हरे ही रहते हैं न!"

शर्मा जी और उनके साथ बैठे दोनों आदमी थोड़ा झेंप गए लेकिन शर्मा जी को सूत्र मिल गया था। झट से डायरी निकाली और विधायक जी के पास पकड़ा दी। उन्होंने सदरी की जेब से पेन निकाला और पता लिख दिया।

शर्मा जी ने डायरी वापिस पकड़ी और पता पढ़ते हुए टेलीफोन शब्द पर नजर पड़ी तो चौंक गए, "टेलीफोन भी है...?"

विधायक जी अपना आपा खोते–खोते रह गए।

"क्यों शर्मा जी, इन लोगों के पास टेलीफोन या दूसरी सुविधाएं नहीं होनी चाहिए थीं?"

बात हृदय में सुई की तरह चुभी, पर संभल गए।

"कैसी बात करते हैं विधायक जी? मेरा इरादा कोई ऐसा–वैसा थोड़े ही था। बस देखकर खुशी से चौंक गया था कि काम और आसान हो गया।"

"ऐसा मत करना शर्मा जी। फोन से बात मत करना। वरना बना–बनाया खेल बिगड़ेगा। मान–सम्मान से जाना उनके पास। कठिन काम है। अब आपकी तहसीलदारी देखनी है कि कितनी काम आती है।"

शर्मा जी को विधायक जी चुनौती देते दिखे थे लेकिन काम अपना था, चुपचाप उठे और विधायक जी को प्रणाम करके निकल आए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

•

जब दलित परिवार उस गांव से निकाले गए तो वे कई दिनों भूखे–नंगे भटकते रहे थे। उन्होंने मांग–मांग कर गुजारा किया था। कई सदस्य मर भी गए। बड़ी मशक्कत के बाद एक परिवार ने उनकी मदद की और उन्हें कुछ ज़मीन भी दे दी। मेहनत से उन्होंने अपना एक छोटा–सा गांव बसा लिया। शर्मा जी ने तो कभी उस गांव का नाम तक नहीं सुना था।

गांव लौटकर देवता कमेटी से चर्चा हुई तो सभी खुश हो गए। शर्मा जी और कमेटी के दो अन्य कारदार तत्काल 'बेड़ा' को आमन्त्रित करने चल दिए। जहां तक सड़क थी, वहां तक वे लोग गाड़ी से गए थे। लेकिन वहां से लगभग सात मील का चढ़ाई वाला रास्ता 'बेड़ा' परिवार के गांव तक पहुंचता था। शर्मा जी को पैदल चलने की कतई आदत नहीं रही थी। तहसीलदारी में तो ऐसे रास्तों के लिए पहले से ही घोड़ा उपलब्ध रहता। लेकिन इस समय तो अपने पांव से ही काम चलाना पड़ा। जैसे–कैसे शाम ढलने से पहले वे वहां पहुंच गए थे।

उसे गांव का नाम देना शर्मा जी को बेमानी लगा था। एक घाटी की ढलान की ओट में चार–पांच घर थे। अनघड़े पत्थरों से उनकी छतें छवाई गई थीं। उनमें दो–तीन घर दोमंजिला थे, लेकिन थे साफ–सुथरे। नीचे और ऊपर की तरफ छोटे–छोटे खेत थे जिनमें गेहूं और जौ की फसल लहलहा रही थी। उन घरों के आंगन से एक चौड़ा रास्ता घासणी के बीचों–बीच दूसरी तरफ कहीं गुम होता दिखाई दे रहा था। एक घर के पास पहुंचते ही दो–तीन कुत्तों ने उनका स्वागत किया। लेकिन तभी एक महिला आंगन में निकली और कुत्तों को चुप करवा दिया। उसने कुछ अपनी पहाड़ी बोली में कहा था लेकिन शर्मा जी उसे नहीं समझ सके। तभी भीतर से एक अधेड़ उम्र का आदमी निकला तो शर्मा जी ने उससे बात शुरू कर दी। वह टूटी–फूटी हिन्दी बोल लेता था। जब यहां रह रहे बेड़ा परिवार के बारे में पूछा तो उसने घासणी के मध्य से आगे निकलती पगडंडी की तरफ इशारा कर दिया। वे उधर चल दिए थे।

दूसरी तरफ पहुंचे तो उनकी नजर एक पक्के दोमंजिला मकान पर पड़ी। वे पगडंडी से नीचे उतरकर उस घर के आंगन में पहुंच गए।

एक बुजुर्ग आंगन में बैठा तम्बाकू पी रहा था। उसने हल्की काली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊन का कुरता–पाजामा पहन रखा था। सिर पर लाल रंग की गोलदार पहाड़ी टोपी थी। दाईं तरफ एक किल्टा रखा था जिसके भीतर दो बिल्ली के बच्चे खेल रहे थे। एक मेमना भीतर से भागकर आता और किल्टे में सिर की डकेल मारकर फिर भीतर भाग जाता। किल्टा रेंगकर इधर आता तो वह बुजुर्ग हल्का–सा धक्का देकर उसे दूर कर देता। सामने रखी टोकरी में कई सफेद–भूरी ऊन के फाहे रखे हुए थे। कश लेते हुए वह एक फाहा उठाता और तकली से कातने लग जाता। शर्मा जी की नजरें कुछ पल उस तकली के साथ घूमती रहीं। पास ही एक दराट भी पड़ा था। शर्मा जी की नजरें उसके कान पर पड़ीं। बड़े–बड़े सोने के बाले देखकर वह चौंक गए।

शर्मा जी कुछ पूछते, तभी एक आदमी भीतर से निकला। उसकी उम्र पैंतालीस के आसपास लग रही थी। अचानक पखलों को आंगन में देखकर ठिठक गया। शर्मा जी ने एक सांस में अपना परिचय दे दिया। गांव का नाम सुनते ही बुजुर्ग जोर से खांसा और कई पल खांसता रहा। खांसी कम हुई तो फटाफट किल्टा सीधा करके बिल्ली के बच्चों को उसके अन्दर कैद कर दिया। भीतर से खटर–पटर की आवाज़ें आती रहीं। तकली टोकरी में फेंककर पास पड़े दराट पर दायां हाथ चला गया। उसने टेढ़ी गर्दन करके उन लोगों को सिर से पांव तक देखा। आंखों में खून तैर रहा था। गुस्से से पूरा शरीर कांपने लगा था। शर्मा जी ने सरसरी नजर उसके चेहरे पर डाली, पर आंख मिलाने की हिम्मत न हुई। एक बार लगा कि वह बूढ़ा अपना हुक्का चिलम समेत उन पर फेंक देगा या दराट लेकर पीछे ही दौड़ा आएगा। उसने एक साथ कई कश हुक्के की नड़ी से खींचे। शर्मा जी इस अप्रत्याशित गुड़गुड़ाहट के बीच जैसे फंस से गए थे।

उन्होंने डरते–डरते जैसे ही भुण्डा की बात शुरू की, वह बुजुर्ग हांफता हुआ खड़ा हो गया। देखकर ऐसा लग रहा था मानो उस पर किसी देवता की छाया आ गई हो। उसने जैसे ही दराट का वार शर्मा जी पर करना चाहा, भीतर से आए आदमी ने उसका हाथ पकड़ लिया। उसे मुश्किल से संभाला और खींचते हुए भीतर ले गया। अभी भी वह टेढ़ी गर्दन से पीछे देख रहा था। शर्मा जी और उनके साथियों की पांव तले की जमीन खिसक गई। मारे भय के वे घर के पिछवाड़े हो लिए।

भीतर कुछ देर उन लोगों की आपस में बोलचाल होती रही जिसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आवाज़ें शर्मा जी के कान में गर्म तेल की तरह पड़ती रहीं। उनसे न तो वहां रुकते बन पा रहा था, न जाते। आज शर्मा जी ने अपने को इतने विवश पाया जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी। उन्हें भुण्डा के आयोजन पर पानी फिरता नजर आने लगा। एक मन किया कि वहां से तत्काल खिसक लिया जाए, लेकिन मन पर स्वार्थ की परतें इतनी गहरा गईं थीं कि पांव पीछे मुड़ने के बजाय आंगन की तरफ सरकने लगे।

वह आदमी गुस्से में बाहर निकलते ही उन पर चिल्ला पड़ा, ''यहां से चले जाएं आप लोग। क्या सोच रखा है? कैसे निकाला था हमारे बुजुर्गों को? सब जानते हैं। हम वहां दोबारा जलील होने जाएं... आप लोगों ने यह सोचा कैसे! हम बेवकूफ नहीं हैं। आज की बात होती तो बताते। हां।''

शर्मा जी एक पल के लिए सकते में आ गए, पर उसके खाली हाथ देख हिम्मत बटोरकर उसके सामने चले आए। अपनी गरज थी, दोनों हाथ जोड़ दिए, ''देखो भाई! जो कुछ आपके साथ हुआ, उसमें हमारा क्या दोष? हम उसके लिए आप सभी से माफी ही मांग सकते हैं। इसी खातिर आए भी हैं। आज जो चाहें, आप सजा दे सकते हैं। भला–बुरा बोल सकते हैं। सबकुछ सिर–माथे। हम ही नहीं, सारा गांव उसके लिए शर्मिन्दा भी है। हम चाहते हैं कि आप भुण्डा निभाएं। हमारे साथ–साथ पुण्य के भागीदार भी बनें।''

''तुम्हारे गांव के बुजुर्गों ने अच्छा नहीं किया था। सबकुछ उजाड़ दिया हमारा। आज किस मुंह से आप यहां आए! बाबा कुछ बीमार हैं। ठीक होते तो पता नहीं क्या कर देते... हे भगवान!'' यह कहते–कहते उसने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया जैसे कोई बड़ी अनहोनी टल गई हो।

शर्मा जी आगे बढ़े और आत्मीयता से उसके दोनों हाथ अपने हाथों में भर लिए। अति विनम्र और स्नेह से कहने लगे, ''भाई! मत समझो कि हम यहां अपनी मर्जी से आए हैं। यह देव आज्ञा है। हम कौन होते हैं? हमारी औकात ही क्या? सभी उस देवता – ईश्वर की मर्जी है। हम तो आपके आगे हाथ ही जोड़ सकते हैं। आपके बुजुर्ग के पांव ही पड़ सकते हैं।''

शर्मा जी को अपने काम के लिए 'गधे को मामा' बोलने वाली कहावत इस वक्त बिल्कुल उचित जान पड़ रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देवता का वास्ता सुनकर वह थोड़ा–सा सहज हुआ। कहा कुछ नहीं। उलटे पांव भीतर लौट गया। दरवाजे पर पहुंचते ही एक लड़के ने उसे पानी का बड़ा–सा डिब्बा पकड़ा दिया। उसने खड़े गले सारा पानी गटक लिया। शर्मा जी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन्हें एक पल लगा कि किए–किराए पर पानी फिर गया है। भीतर वह बुजुर्ग जोर–जोर से अपनी बोली में गालियां बक रहा था। काफी देर बाद वह आदमी जब दोबारा बाहर आया तो हाथ में तीन प्लास्टिक की कुर्सियां थीं। शर्मा जी ने देखा तो जान में जान आई। कुर्सियां आंगन में पटका दीं।

अब तक इधर–उधर से कुछ मर्द और औरतें भी आंगन के उस तरफ इकट्ठे हो गए थे। पंडितों का उनके आगे इस तरह गिड़गिड़ाना सभी को अकल्पनीय लग रहा था।

वातावरण में भरी उमस जैसे हल्की हो गई। उसने तीनों को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। वे चुपचाप बैठ गए। फिर किल्टा उठाया। बिल्ली के दोनों बच्चे भाग खड़े हुए। ऊन की टोकरी और हुक्का एक किनारे रखते हुए अपना नाम बताने लगा, ''मैं सहज राम... घर में सहजू ही बोलते हैं। वो मेरे पिता जी... सौ पार कर गए हैं।''

''सौ पार...?''

शर्मा जी और दोनों कारदार स्तब्ध रह गए। बुजुर्ग इतनी उम्र का दिखता ही नहीं था।

सहज राम की बातचीत करने के ढंग से लग रहा था कि वह कुछ पढ़ा–लिखा भी है। शर्मा जी लम्बी भूमिका नहीं बांधना चाहते थे। उन्होंने उससे सीधी बात की और पहले की घटना पर दोबारा अफसोस ही नहीं जताया बल्कि गांव और देवता की तरफ से माफी भी मांग ली थी। सहजू ने कुछ देर मन में विचार–विमर्श किया। फिर भीतर चला गया। बाहर खड़े लोग भी भीतर हो लिए। उन सभी की काफी देर खुसर–फुसर होती रही। काफी देर बाद बाहर आया और भुण्डा में आने के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। शर्मा जी और उनके साथी हाथ जोड़कर खड़े हो गए। उन सभी का आभार जताया और वहां से खिसक लिए। तीनों के चेहरे पर इसका सुख तो झलक रहा था, लेकिन मन पर पड़ी चोटें इतनी गहरी थीं कि सड़क तक किसी ने कोई बात ही नहीं की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देर रात वे गांव पहुंचे थे, पर कोई भी रात भर सो न पाया था। सुबह जब देवता कमेटी के सदस्यों और लोगों को शर्मा जी ने बताया कि 'बेड़ा' मिल गया है तो सभी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इसके बाद गांव के हर घर में भुण्डा उत्सव प्रवेश कर गया था। सभी तैयारियों में जुट गए थे। अपनी–अपनी तरह से सोचते–विचारते लोग जैसे–कैसे भी अपने खोए हुए पुण्य को फिर से कमाना चाहते थे। अपने घर–परिवार, पशु और खेती को विपत्तियों से सदा–सदा के लिए मुक्त कर देना चाहते थे।

भुण्डा उत्सव की प्रक्रियाएं प्रारम्भ हो गई थीं। सबसे पहले गांव वालों की एक सभा बुलाई गई। सभा का आयोजन मुख्य देवता के मन्दिर के प्रांगण में हुआ था। मन्दिर के मुख्य द्वार के सामने लगभग डेढ़ मीटर ऊंचाई पर स्थित चौंतड़ा था। गांव के पंच और देवता के कारदार इसी पर बैठकर ऐसे कार्यक्रमों के निर्णय लिया करते थे। इस पर पंचों के बैठने के आसन बने थे जिनके पीछे ऊंचे पत्थर लगे थे। शर्मा जी सरपंच थे इसीलिए उनका स्थान मध्य में था। चारों तरफ दूसरे कारदार और मुखिये बैठ गए। गांव के लोग चौंतड़े के चारों तरफ नीचे बैठ गए थे। देवता के गूर के साथ बैठकर पुरोहितों ने लम्बी बातचीत के बाद मुहूर्त और तिथियों को अन्तिम रूप दे दिया और सहजू को सर्वसम्मति से 'बेड़ा' नियुक्त कर लिया गया।

मुहूर्त के मुताबिक जब सहजू को शर्मा जी ने इस बारे बताया तो उसने एक शर्त यह रख दी कि रस्सा उतना ही लम्बा बनेगा जितना कि पिछले भुण्डे में उनके बुजुर्ग ने बनाया था। दूसरी शर्त यह थी कि रस्से के नीचे बचाव के लिए कोई जाली इत्यादि नहीं लगाई जाएगी। शर्मा जी के लिए यह शर्त काठ की तरह सिर पर पड़ी थी। उन्होंने तत्काल कुछ कहना ठीक नहीं समझा, लेकिन यह बात परेशानी की तो थी ही। रस्से के नीचे बिना जाली लगाए यदि दोबारा वही हादसा हो गया तो किए–किराए पर पानी फिर जाएगा। बहुत सोचने–विचारने के बाद भी जब कोई समाधान न सूझा तो सारी बात देवता के हवाले कर दी गई। पर 'बेड़ा' की शर्तें मानने के अलावा उनके पास कोई चारा भी न था।

अब सारा गांव भुण्डा की तैयारियों में जुट गया था। देवता के पंचों ने गांव के लोगों के लिए कई कार्य निर्धारित कर दिए थे। साथ ही उत्सव के आयोजन के व्यय को देखते हुए प्रत्येक परिवार को पांच सौ रुपए और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक–एक मन चावल की जोड़ भी डाल दी गई थी। इसे लोगों ने स्वीकार कर लिया था। सभी अपने–अपने घरों की लिपाई–पुताई में लग गए थे। प्रत्येक घर में से एक सदस्य देवता कमेटी के साथ सार्वजनिक कार्यों के लिए नियुक्त कर लिया गया था। पूरे गांव के रास्ते साफ होने लगे थे। कोई बर्तन इकट्ठे करता, तो कोई जंगल से पत्तों को लाकर पत्तलें बनाता तो कोई घर–घर जाकर निर्धारित जोड़ की उगराही करता रहता। शहर से रोज ही अब एक–आध ट्रक सामान का भी आ जाता जिसकी ढुलाई लोग मन्दिर तक मिलजुल कर करते।

भुण्डा के आयोजन की खबर जब इधर–उधर पहुंची तो प्रशासन के भी कान खड़े हो गए। हालांकि अभी देवता कमेटी की तरफ से कोई विधिवत् निमन्त्रण नहीं निकला था, लेकिन प्रशासन के अधिकारी और कर्मचारियों ने वहां आना–जाना शुरू कर दिया था। कभी कोई प्रशासन का आदमी, कभी कोई पुलिस वाला तो कभी विधायक के चमचे पहुंचने लगे थे। शर्मा जी इस आयोजन के दूल्हा बन गए थे। सारे काम उनकी सलाह–मशविरे से हो रहे थे। उनकी आंखों में उज्ज्वल भविष्य के सपने तैरने लगे थे। कुछ दिनों की सेवानिवृत्ति ने जो ऊंघूपन उन्हें दिया था, वह चेहरे पर बैठी रौनक ने भगा दिया था। उन्हें कुछ ऐसा महसूस होने लगा था मानो वह नए–नए तहसीलदार बन गए हों।

कार्यक्रम के अनुसार नियुक्त किए गए लोग सहजू को लाने उसके गांव चले गए थे। उसे बाजे–गाजे के साथ गांव लाया गया था। साथ उसकी पत्नी और एक बच्चा भी था। जिस दिन सहजू 'बेड़ा' को गांव लाया गया, उस दिन से छः माह बाद भुण्डा का आयोजन होना था। सहजू और उसके परिवार को मुख्य देवता के मन्दिर के एक कमरे में रखा गया था। यह सुखद आश्चर्य ही था कि जिन देवता के मन्दिर प्रांगण में आज भी किसी दलित को नहीं जाने दिया जाता, सहजू 'बेड़ा' और उसके बच्चे देवता के मन्दिर में वास करने लगे थे।

जैसे–जैसे उत्सव के दिन नजदीक आते गए, रस्सा लम्बा होता गया। जिस रोज रस्सा पूरा हुआ, सहजू और उसकी पत्नी उसे एकटक देखते रहे... मानो रस्सा पूरा न होकर जीवन ही सम्पूर्ण हो चला हो। अपने हाथों से मौत का सामान तैयार करने का दर्द उन दोनों के मन में बसा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
था। लेकिन भुण्डा जैसे कालान्तर से चले आ रहे महोत्सव में एक दलित से देवता बनने का सुख भी मौजूद था। यह सुख उस मौत के अहसास से कहीं बड़ा था। शायद उससे भी कहीं ज्यादा था बरसों से निर्वासित जीवन जीने के बाद पुनः मिलता आदर। ब्राह्मणों की बैठक और देवपंक्ति में मिला उच्च स्थान का क्षणिक अपितु अविस्मरणीय आनन्द।

रस्से को पूर्ण निर्मित देखकर देवता के कारदारों ने निर्धारित स्थान पर बने हवनकुण्ड को खोल दिया था। मुहूर्त के मुताबिक अब आग लाने की रस्म अदायगी थी। हवन जलाने के लिए आग केवल क्रौष्टु ब्राह्मण (कृष्ण गोत्र) के घर से ही लाई जानी थी। गांव में एक शास्त्री जी इस गोत्र से थे। देवता के कारदार और अन्य लोग कुछ सुनारों के साथ आधी रात को बाजा–बजंतर लिए उसके घर पहुंच गए। उनके साथ एक तांबे की अंगीठी और एक मेढा (नर भेड़) भी थे। कई विधि–विधानों के तहत् देवदार के वृक्ष की लकड़ी जलाकर आग तैयार की गई और उसे तांबे की अंगीठी में डाल दिया गया। अंगीठी को सुनारों ने मेढा के सिर पर रख दिया और उसे लेकर वापिस लौट आए।

बेचारा मेढा ढोल–नगाड़ों और पारंपरिक वाद्य संगीत के बीच कई पल अग्निवाहक बना रहा। सभी उसकी सेवा में जुटे थे। वह उस दौरान शायद सहजू की तरह अपने आपको भी ब्राह्मणों से ज्यादा सम्मानित समझ बैठा होगा। जैसे ही हवनकुण्ड के पास लोग पहुंचे तो आग की अंगीठी उसके सिर पर से उतारकर कुण्ड में रख दी गई और तत्काल उस पर उसकी बलि दे दी गई।

अग्नि प्रज्जवलित कर दी गई थी। हवनकुण्ड पर यज्ञेश्वरी देवी की प्रतिमा का निर्माण किया गया। उसकी प्राण–प्रतिष्ठता हुई मेढे की जान लेकर...। अब यहां भुण्डे के अन्तिम दिन तक हवन चलना था।

अब मुख्य देवता की मूर्ति को मन्दिर से बाहर निकाला जाना था जो कि धर्माचार का एक अहम् हिस्सा था। देवता की मूर्ति एक गुफा मन्दिर में प्रतिष्ठित रहती थी जिसे केवल भुण्डा जैसे विशाल आयोजन में ही बाहर निकाला जाता था। इसके साथ कई अन्य छोटी मूर्तियां और सामान भी होता था। दैनिक पूजा और दूसरे अनुष्ठानों एवं जातराओं इत्यादि के लिए देवता की एक अन्य मूर्ति नीचे की मंजिल में रखी होती थी। लोग जानते थे कि पिछले भुण्डा के दौरान मन्दिर के किवाड़ बंद कर दिए गए थे। इसीलिए लोगों की उत्सुकता अब कुछ ज्यादा ही दिखाई दे रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
देव मूर्ति को निकालने का कार्य हर कोई नहीं कर सकता था। विधिनुसार यह काम उस गांव के एक ब्राह्मण को तीन सुनारों के साथ करना था। इन तीनों के सिर भीतर जाने से पूर्व मूण्ड दिए गए थे और उनके मुंह में परजतने (पंचरत्न) भी डाल दिए गए थे। वस्त्र के नाम पर उनके शरीर से कफन का कपड़ा लिपटा दिया गया था। वे अन्धेरे में ही भीतर गए थे और जिसके हाथ जो मूर्ति और दूसरी सुसंगत वस्तुएं लगीं, उन्हें बाहर उठाकर ले आए थे।

देवता के गूर ने जैसे ही मूर्ति के दर्शन किए, वह सकते में पड़ गया। वह नकली मूर्ति थी। किसी सस्ती धातु की इस मूर्ति को मूल रूप दे दिया गया था। गूर के सिवाय किसी को यह पता नहीं लग पाया कि वह मूर्ति असली नहीं थी। श्रद्धा और अपार आस्था में रत लोग देवता का जयकारा कर रहे थे.... असली मूर्ति की कुछ सालों पूर्व मन्दिर से चोरी हो गई थी। देवता की वह प्रतिमा बेशक़ीमती धातु की बनी थी जिसके माथे पर एक हीरा जड़ा था। जब वह बाहर धूप में रखी होती तो उसके मुख से पसीने जैसा तरल पदार्थ निकलने लगता और नीचे रखी कटोरी भर जाती। उसे चरणामृत के रूप में लोगों में बांट दिया जाता था जिसे लोग बड़ी श्रद्धा से ग्रहण करते थे। उसकी कीमत भी करोड़ों में आंकी जाती थी। लेकिन किसी को क्या पता था कि जो मूर्ति आज उनके समक्ष मौजूद है, वह नकली है?

गूर अभी तक स्तब्ध खड़ा था। उसने पुनः उन लोगों को भीतर भेजा, लेकिन वे पुनः खाली हाथ लौट आए थे। गूर में तत्काल देवछाया ने प्रवेश कर लिया। उसकी हालत देखने वाली थी। पूरा शरीर कांप उठा था। चेहरा काला और डरावना हो गया था। आंखों में खून तैरने लगा था। इस तरह का आक्रोश पंचों ने कभी नहीं देखा था। यह किसी अनहोनी का संकेत था। लेकिन यहां 'पंचों के मुंह में परमेश्वर' की कहावत चरितार्थ होने लगी। सभी पंच, कारदार और देवता कमेटी के सदस्य हाथ जोड़ कर यही विनती कर रहे थे कि जैसे–कैसे इस आयोजन का निपटारा देवकृपा से हो जाए। बाद में देवता की जो भी आज्ञा होगी वह सिर–माथे। मुश्किल से काफी देर बाद गूर से देवछाया चली गई। सबकुछ शांत हो गया तो गूर ने केवल सरपंच शर्मा जी से ही बात की। इस बात को सुनकर वे हैरान–परेशान हो गए। उन दोनों ने इस बात की भनक किसी को भी न लगने का तत्काल निर्णय ले लिया। यदि इस बात का खुलासा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो जाता तो इतने बड़े आयोजन पर पानी फिर गया होता।

उत्सव के पहले दिन लोग वाद्यों के साथ मुख्य देवता के मन्दिर स्थल से निकले। सभी छोटे–बड़े मन्दिरों में जाकर एक–एक दिया जलाते रहे और देवी–देवताओं को उत्सव के लिए आमन्त्रित करते चले गए। बाहर से आमन्त्रित देवतागण भी पधारने शुरू हो गए थे जिनका धूमधाम से स्वागत किया गया।

दूसरे दिन सभी देवता एक स्थान पर एकत्रित हुए। देव–कलशों को गोल दायरे में रख दिया गया था। बीच में गांव की मुख्य देवी का कलश था। अब क्रौष्टू ब्राह्मण ने पुराण पढ़ना शुरू कर दिया था। उसके पास एक पुरानी हस्तलिखित पुस्तिका थी जिससे मंत्र पढ़कर वह सभी देवताओं का स्वागत कर रहा था। देवता के मन्दिर की दूसरी मंजिल पर स्थित कमरे के फर्श पर देवता के एक कारदार ने इसी बीच देवदार के वृक्ष का एक चित्र सिंदूर से बना दिया था और अब सारे कलश उस चित्र पर प्रतिष्ठित कर दिए गए थे।

तीसरा दिन जल यात्रा का था। उस दिन वरुण देवता की पूजा होनी थी। गांवों की महिलाएं पारंपरिक परिधानों में तड़के ही मन्दिर के प्रांगण में पहुंच गईं। वे वहीं से आ रही थीं जहां सहजू और उसकी पत्नी को ठहराया गया था। सभी उन्हें सिर झुकाकर प्रणाम कर रही थीं। सहजू की पत्नी के लिए यह भी एक सुखद आश्चर्य जैसा ही था। वह जानती थी कि उनकी जाति की अस्सी साल की बुढ़िया को भी ब्राह्मणों की दस साल की लड़की के पास मत्था टेकना पड़ता है, लेकिन आज उससे उलटा था। वह कई बार मन–ही–मन हंस लेती थी, लेकिन रस्से पर जैसे ही उसकी नजर जाती वह कांपने लग जाती, जैसे मौत का एक भयानक राक्षस रस्से में लिपट गया हो जो कभी भी उसके पति को झपटकर खा लेगा। कभी तो उसे रस्से के बाटों में असंख्य भेड़िए रेंगते नजर आते जैसे वह रस्सा न होकर जंगल के बीहड़ की कोई टेढ़ी–मेढ़ी पगडंडी हो और उस पर वे दौड़ते उनकी ओर चले आ रहे हों।

उन औरतों के सुन्दर पहनावे ने उसके मन में कुछ क्षणों के लिए रंगीनियां भर दी थीं। उसी पल मन्दिर से ढोल, नगारा, शहनाई, करनाल, रणसिंघा आदि वाद्य–यंत्रों के संगीत के साथ देवताओं के पुजारियों, ब्राह्मणों, गूरों और नर्तकों का जुलूस निकला। उनमें सजी–संवरी नौ ब्राह्मण कन्याएं भी थीं। उनके सिर पर लाल कलश थे। जुलूस पूर्व दिशा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की ओर एक बावड़ी की तरफ चल दिया था। वहां पहुंचकर उन कलशों को ताजा जल से भर दिया गया। विधिवत् पूजन हुआ और उन्हें यथावत् कन्याओं के सिर पर रखकर वापिस मन्दिर लाया गया।

भुण्डा के आखिरी दिन से पूर्व मूल मन्दिर और गांव को प्रेतात्माओं से सुरक्षित करना था ताकि उत्सव में कोई अपशकुन न हो। भूत–प्रेत बाधाएं उत्पन्न न कर सकें। देवताओं के गूरों ने मिलकर इस विधि–विधान को पूरा किया था। वे अपने–अपने देवता के सामने हाथों में एक विशेष पात्र लिए खड़े हो गए थे। वे पूजा करते हुए अर्धनग्न अवस्था में काफी देर मन्त्रोच्चारण करते रहे। फिर उनमें देवछाया प्रवेश कर गई थी। देवताओं के वाद्य–यन्त्र भी बजने शुरू हो गए। मुख्य देवता के गूर को लोगों ने अपने कन्धे पर उठा लिया था। उसी के दिशानिर्देश में अब सब कार्य होने लगे थे। शेष बचे गूर और लोगों का जुलूस पीछे–पीछे चल रहा था। गांव के बाहर का चक्कर काटा गया। जुलूस में कई बंदूकधारी बंदूकें चला रहे थे। जगह–जगह बकरों के सिर धड़ से अलग हो रहे थे। पगडंडियां उनके खून से सराबोर हो रही थीं। परिक्रमा पूरी हुई तो जुलूस वापिस मन्दिर लौट आया और वहां हवन शुरू हो गया। यह तांत्रिक विधि थी। देवता का गूर मन्दिर की छत पर चढ़ गया था। वह चारों दिशाओं में घूम रहा था। मन्दिर के चारों कोनों पर एक–एक मशालची तैनात था। हर कोने पर एक–एक बकरे की बलि दी गई। गूर छत से नीचे उतरा तो मेहमान देवताओं के गूर मन्त्रोच्चारण के साथ अपनी मूल अवस्था में लौट आए।

यह शिखफेर प्रक्रिया थी। सहजू ने अपनी पत्नी को बताया था।... अब यहां से सारी प्रेतात्माएं भाग गई हैं और भुण्डा के कार्य में कोई भी विघ्न नहीं डाल सकता। लेकिन वह पति के मुख की ओर कई पल टकटकी लगाए देखती रही। पता नहीं कितने प्रश्न उसके मन में जागे थे जिन्हे वह सहजू से पूछना चाहती थी... पूछना चाहती थी कि भुण्डा के बाद देवता क्यों न उन्हें ब्राह्मण ही बना रहने दें? फिर क्यों वे अछूत हो जाएं? क्यों एक अछूत को कुछ दिनों के लिए देवता की तरह पूजा जाए और यदि दुर्भाग्य से उसके पति की रस्से से गिरकर मौत हो जाए तो कौन–सा देवता जिनके नाम पर अभी–अभी असंख्य मेढों और बकरों की बलि प्रेतों और भूतों को भगाने के लिए दी गई है... उसके पति को बचा देगा...? ऐसे कितने ही प्रश्न थे जो उसके मस्तिष्क में कौंध रहे थे, लेकिन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह थी कि किसी–न–किसी तरह अपनी जिज्ञासाओं को दबाए चुपचाप बैठी रही। भय से कांपती हुई जैसे सारे भूतों और प्रेतात्माओं ने उसके भीतर घुसकर आश्रय ले लिया हो।

सहजू ने अपनी पत्नी के मन में उग रहे प्रश्नों को पढ़ लिया था, पर उनके उत्तर उसके पास नहीं थे। मन पर एक भारीपन लदा था... शायद ऐसे ही अनगिनत प्रश्नों को लेकर जिनका कोई तसल्लीबख्श जवाब नहीं था। वह उनके उत्तर भी पूछता तो किससे पूछता? कोई कारदार, देवता का गूर या खुद देवता भी शायद उनके उत्तर न दे पाते। उसे आज ये सारी की सारी क्रियाएं बिल्कुल ढोंग लगने लगी थीं।

•

रात को सहजू और उसकी पत्नी सो नहीं पाए। न एक–दूसरे से किसी ने कुछ बात की। अपनी–अपनी उधेड़बुन में दोनों लगे रहे। सहजू के मन में भय तो था ही, पर खुशी भी कम नहीं थी। अपने दादा–पड़दादाओं को वह बार–बार याद कर रहा था जो न जाने पितर–देवता बनकर कहां–कहां प्रतिष्ठापित होंगे। भुण्डा में उसका इस तरह 'बेड़ा' बनकर उतरना बरसों पहले खोए हुए मान को दोबारा हासिल करना भी था।

सुबह हुई। भुण्डा का आज अन्तिम और मुख्य दिन था। सहजू के ब्राह्मणत्व का आखिरी दिन।

दोनों तड़के–तड़के उठ गए थे। मुहूर्त के अनुसार निश्चित समय पर रस्से की विधिवत् पूजा की गई। सहजू ने अपने हाथों से रस्सा खश जाति के राजपूतों को सौंप दिया। उन्होंने रस्से को कन्धे पर अत्यन्त सावधानी से उठाया ताकि उसका कोई भाग जमीन से स्पर्श न करे। फिर बावड़ी के पास ले जाकर खूब भिगोते रहे। पूरी तरह से भीगने के पश्चात् उसे पहले ही की तरह कन्धे पर उठा लिया गया। रस्से का वजन दुगुना हो गया था। कड़ी मशक्कत के बाद खशों ने रस्से को भुण्डा–आयोजन के मूल स्थान पर पहुंचाया था। वहां ढांक के सिरे पर एक खम्भा गाड़ा गया था जिसमें रस्से का एक सिरा मजबूती से बांध दिया गया। ढांक की ऊंचाई बहुत थी। नीचे देखने पर आंखें पथरा जाती थीं। दूसरे सिरे को पहाड़ से नीचे फेंक दिया गया। नीचे खड़े लोगों ने उसे तत्काल पकड़ लिया और वहां गड़ाए दूसरे खम्भे में खींचकर बांध दिया। सहजू की रस्से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2023-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के नीचे जाली न लगाने की शर्त मान ली गई थी। फिर भी किसी दुर्घटना की आशंका से निपटने के लिए पहाड़ी के नीचे लम्बी कतार में पुलिस और होमगार्ड के जवान तैनात कर दिए गए थे।

बेड़े के रूप में सहजू का देवता की तरफ से विशेष स्नान हुआ और यज्ञोपवीत धारण करवाकर उसे शुद्ध ब्राह्मण बना दिया गया। उसे पगड़ी और एक सफेद लम्बा चोगानुमा कुर्ता पहनाया गया था। उसकी विशेष पूजा होने लगी थी। देवता ही की तरह। जैसे वह कोई मनुष्य न होकर एक घड़ी के लिए ईश्वर का अवतार बन गया हो। अब समय मुख्य उत्सव में शामिल होने का आ गया था। एक कारदार भीतर गया और अत्यन्त आदर से उसे अपनी पीठ पर उठाकर मन्दिर से बाहर ले आया।

सहजू की पत्नी को पति से अलग होना था। यह बिछोह का दर्दनाक समय था। उसे भी मन्दिर की तरफ से पहनने के लिए नए कपड़े दिए गए थे। ये वस्त्र सफेद रंग के थे... विधवा का लिबास। उसे गांव की कई औरतों ने घेर रखा था। न चाहते हुए भी उस बेचारी को पति के होते विधवा बनना पड़ा था। मन नहीं मान रहा था, लेकिन भुण्डा की रस्मों ने उसे असहाय बना दिया था। औरतों ने उसके बाल खोल दिए। कलाइयों की चूड़ियां उतार दीं। मांग से सिंदूर पोंछ दिया गया। माथे की बिंदिया भी छीन ली गई। सुहागिन से विधवा बनने तक के वे क्षण अति दुखदायी थे। जब सुहाग की प्रतीक ये चीजें उसके बदन से उतारी जा रही थीं तो उसे ऐसा लगा था जैसे कलेजे के टुकड़े किए जा रहे हों। वह बच्चे को साथ लेकर उस स्थान के लिए लोगों के साथ चल पड़ी जहां रस्से का दूसरा सिरा बांधा गया था। बच्चा यह सबकुछ विस्मित होकर देख रहा था। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है? उसके बापू को इस तरह उठाकर कहां ले जा रहे हैं?

पुरोहितों ने अब संकल्प पढ़ने शुरू कर दिए थे। ये उसी तरह थे जैसे किसी बलिदान के अवसर पर पढ़े जाते हैं। वाद्ययन्त्रों पर वही संगीत बज रहा था जो शवयात्रा पर बजाया जाता था। वातावरण में इस संगीत ने एक अजीब–सी मायूसी पैदा कर दी थी। चारों तरफ एक घड़ी के लिए घोर उदासी छा गई थी। यह नजारा कुछ–कुछ वैसा ही था जैसे किसी घर से मृत्यु ने किसी अपने को छीन लिया हो। माहौल अत्यन्त गमगीन होने लगा था। मूल स्थान तक पहुंचते–पहुंचते कई जगह सहजू पर कफन की तरह कपड़ा ओढ़ाया गया और उसके मुंह में परजतना डाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिया गया।

समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए मुख्यमन्त्री पहुंच गए थे। विधायक और प्रशासन के कई अधिकारी भी उनके साथ थे। उन सबके लिए पहाड़ की ढलान पर एक ओर मंच बनाया गया था ताकि वे सब उस संभावित नरबलि का नज़ारा ले सकें। शर्मा जी ने उनकी आवभगत में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी थी।

शर्मा जी की नजर इस बीच एक पालकी पर पड़ी। उसके साथ कुछ लोग भी चल रहे थे। पहले उनकी समझ में कुछ नहीं आया। पालकी नजदीक पहुंच गई। उसमें एक बुजुर्ग बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। शर्मा जी को पहचानते ज्यादा समय नहीं लगा। यह वही सहजू का पिता था जिसका सामना सहजू के आंगन में पहले ही हो चुका था। उसके साथ उस गांव के तमाम लोग भी थे। शर्मा जी स्तब्ध रह गए। अब पांव पीटने के अतिरिक्त उनके पास कुछ नहीं बचा था। उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि सहजू के गांव के लोग इस शान से उत्सव में पधार जाएंगे। उनके समक्ष एकाएक कई प्रश्न खड़े हो गए, पर उनके उत्तर कहां से आते? मुंह बांधकर बैठना ही उचित जान पड़ा। शर्मा जी कुछ कारदारों को साथ लेकर उनके पास गए और बनावटी अपनापन दिखाकर उन्हें उसी मंच के साथ बिठा दिया जहां मुख्यमन्त्री बैठे थे। पालकी में एक दलित का इस तरह पधारना न तो शर्मा जी पचा पा रहे थे और न ही गांव के दूसरे लोग क्योंकि पालकी में बैठने का अधिकार तो वे लोग अपना ही मानते आए हैं। शर्मा जी वहां से झटपट खिसक लिए और खम्भे के पास जाकर खड़े हो गए, जहां सहजू को भुण्डा के रस्से पर से सरकते हुए पहुंचना था।

सहजू की घरवाली चुपचाप डरी–सहमी रस्से के अन्तिम छोर के पास बैठी, एकत्र उन सभी देवताओं से अपने पति की ज़िन्दगी मांग रही थी जिन्होंने पिछली रात उस गांव को भूत–प्रेतों और दुष्ट आत्माओं से निवृत्त किया था। उसका मन विचलित होने लगा था। एक मन करता कि इस लिबास को उतारकर जला दे और पति के पास जाकर विनती करे कि हमें नहीं बनना है देवता। न बनना है भगवान। हम जैसे हैं, वैसे ही रहना चाहते हैं। हम बिना मान–प्रतिष्ठा के भी अपने छोटे से परिवार में सुखी हैं। ईश्वर न करे कि रस्सा टूट जाए... इतना भर सोचकर वह ज़मीन पर गिर पड़ी थी। पास खड़ी औरतों ने उसे न संभाला होता तो उसका सिर चट्टान से टकरा जाता। शर्मा जी उसकी स्थिति देखकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घबरा गए थे। उन्होंने तुरन्त पानी के छींटे उसके चेहरे पर मारने शुरू कर दिए। कुछ देर बाद जब उसे होश आया तो उनकी जान में जान आई। एक सुहागिन को इस पल अपने पति के जीते–जी एक विधवा होने के तीखे दर्द और अथाह वेदना से गुजरना पड़ रहा था।

सहजू जब खम्भे के पास पहुंचा तो निगाह तराईयों से उतरती अपनी पत्नी के पास चली गई। वे तमाम वेदनाएं उसने अपने भीतर महसूस कीं जिसे उसकी पत्नी सुहागिन से विधवा बनकर सह रही थी। आंखें छलछला गईं। मन में एक तीखी टीस उठी जो सुई की तरह नसों में चुभती रही। यह चुभन असहनीय थी। सहजू को एक पल लगा कि उसकी सांसें जीनकाठी पर बैठने से पूर्व ही निकल जाएंगी। जैसे–कैसे अपने को संभाला और हजारों लोगों की उमड़ती भीड़ के बीच उसका ध्यान चला गया।... हजारों आंखें उसी की ओर ताक रही थीं। उन आंखों में एक याचना थी। लालच था। उसकी ज़िन्दगी के लिए दुआएं भी थीं लेकिन उस जीवन के साथ सभी का अपना–अपना स्वार्थ निहित था। सारी प्रार्थनाएं केवल अपने लिए थीं। वे आंखें उसे अपने लिए ज़िन्दा रखना चाहती थीं ताकि उनका जीवन सुखमय हो। घर–परिवार में खुशहाली आए। ज़मीन–जायदाद और पशु–धन सलामत रहे। उन पर किसी तरह के अनिष्ट की छाया तक न पड़े। सभी का ध्यान रस्से पर से नीचे सरकते सहजू पर था। उसकी पत्नी के भीतर जो अथाह दर्द और भयानक भय पसरा था, उसका न कोई प्रतिवादी चश्मदीद गवाह था और न कोई उसके आंसुओं को पोंछने वाला... एक महान और तथाकथित जनस्वार्थ की पूर्ति का उत्सव था वह!

...एक घड़ी के लिए तो सहजू को यह भी लगा कि वह आज दुनिया का सबसे बड़ा और धनवान आदमी है जिसके आगे ब्राह्मण और ठाकुर तो क्या; देवता तक भी पुण्य की भीख मांग रहे हैं।

शर्मा जी तो आज अपने आपको सबसे प्रतिष्ठित और व्यस्त आदमी समझ रहे थे। हर जगह उन्हीं का बोलबाला था। सहजू की पत्नी के बिल्कुल साथ खड़े थे शर्मा जी। वे भी लोगों के साथ उनकी दुआओं में शामिल थे, लेकिन उनकी एक–दो दुआएं कुछ अलग ही थीं। वे दुआएं मांग रहे थे गांव के कलंक से छुटकारा पाने की और साथ अपने यश और प्रतिष्ठा की जिसके सहारे उन्हें आगामी राजनीति में प्रवेश पाना था। मन में और भी कई विचार कौंध रहे थे। उनकी इच्छा थी कि जैसे ही 'बेड़ा'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीचे सही–सलामत पहुंचे, वे उसे सबसे पहले उठाकर अपने चूल्हे के पास ले जाएं ताकि उन्हें अपने ऊपर लगे कलंक, अनिष्ट, भूत–प्रेत आदि की छाया से सबसे पहले छुटकारा मिल सके। साथ ही अपने परिवार के लिए पहला आशीर्वाद भी लेना चाहते थे। वह जानते थे कि 'बेड़ा' आज के दिन देवता और भगवान के समान होता है और उसका घर के भीतर प्रवेश अति शुभ होता है। वह सबसे पहले इस पुण्य के भागीदार बनना चाहते थे। गांव के दूसरे सवर्णों की भी यही इच्छा थी।

सहजू ने ईश्वर को प्रणाम किया। अपने ईष्ट देवता को याद किया और अपने पिता को नमन किया। उस पितर को स्मरण किया जो इसी आयोजन में वर्षों पहले रस्से से गिरकर मौत के मुंह में चला गया था। फिर रस्से को हिला दिया। अब जीनकाठी पकड़ी और टिकाकर रस्से पर बांध दी। इसे सहजू ने स्वयं बनाया था। उसके दोनों तरफ रेत की बोरियां टिका दी गई थीं ताकि भार बराबर बना रहे। सहजू के लिए वह सचमुच की घोड़ी थी जिस पर सवार होकर उसे मौत का एक लम्बा और खतरनाक सफर तय करना था। गांव का कलंक धोना था और लोगों के पुण्य का भागीदार बनना था... एक अछूत होकर नहीं बल्कि ब्राह्मण, देवता और भगवान बनकर। उसके मन में कई तरह के ख्याल आने लगे थे। वह सोच रहा था कि उसकी यह दुर्लभ 'बेड़ा' जाति एक जीनकाठी ही तो है जिसका इस्तेमाल अपनी स्वार्थपूर्ति और तमाम पुण्य के भागीदार बनने के लिए शर्मा या उस–जैसे तमाम उच्च वर्ग के लोग सदियों से करते आ रहे हैं। इसके एवज उस अछूत को क्या मिलेगा...? सिर्फ कुछ क्षणों का ब्राह्मणत्व और देवत्व... वह जोर से हंसा और जीनकाठी पर बैठकर रस्से से नीचे सरक गया... हाथ में एक सफेद रूमाल को लहराता हुआ। उसे ऐसा लग रहा था मानो वह आसमान से धरती पर उतर रहा हो। मध्य में पहुंचकर वह थोड़ा घबरा भी गया। एक बार जरा–सा संतुलन बिगड़ गया था, पर उसने अपने आपको संभाल लिया अन्यथा इतनी ऊंचाई से गिरकर वह कहां बच पाता! देवता के वाद्य पूरे जोश और ताल में बज रहे थे। वातावरण पूरी तरह देवमय हो गया था। लेकिन उन वाद्यों के बीच एक पल के लिए सहजू की पत्नी की सांसें रुक गई थीं...

सहजू जैसे ही दूसरे खम्भे के नजदीक पहुंचा, उसने चलती हुई जीनकाठी रोक दी और रस्से पर मजबूती से बैठ गया। वह ऊंचाई से जितनी तेजी से नीचे आया था, उस रफ्तार को रोकना कतई संभव नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। परन्तु उसने जिस तरह संयत रहकर अपने आपको रस्से पर रोका था, वह आश्चर्यजनक था। एक पल के लिए जैसे सबकुछ ठहर गया था। सभी उपस्थित–जनों के दिलों की धड़कनें ही रुक गई थीं। बाजा–बजंतर भी चुप हो गया था। एक गहरा सन्नाटा चारों तरफ पसर गया था। शर्मा जी के साथ सभी कारदार और लोगों के मन में किसी अनहोनी ने जन्म ले लिया। दोबारा कोई बड़ा अनिष्ट तो नहीं होने वाला! सहजू बिल्कुल सुरक्षित था, लेकिन उसकी काठी नहीं चल रही थी। देवता के कारदार और गूर शर्मा जी के साथ खम्भे के पास एकत्रित हो गए थे। शर्मा जी एकाएक जोर से चिल्लाए, ''सहजू! तुम्हारी मंजिल आ गई है। नीचे उतर जाओ।''

यही अन्य लोगों ने भी दोहराया था।

लेकिन सहजू अभी भी चुपचाप था जैसे कुछ सुना ही न हो। भीतर बहुत कुछ फूट रहा था। टूट रहा था। उस टूटन की किरचों ने उसे भीतर –ही–भीतर आहत कर दिया था। शर्मा जी ने हाथ जोड़ दिए और गिड़गिड़ाते हुए सहजू को नीचे उतर जाने का निवेदन करते रहे। सभी कारदारों और गांव के ब्राह्मणों ने भी हाथ जोड़ रखे थे लेकिन सहजू नहीं उतरा। उसके मन में बहुत बड़ा तूफान उमड़ पड़ा था। उसे लगा कि वह सहजू 'बेड़ा' नहीं, बल्कि किसी सर्कस का नर्तक भर है जिसे जैसा चाहा नचा दिया। खेल खत्म हुआ तो उसका अस्तित्व भी समाप्त। जो लोग आज उसकी जयजयकार कर रहे हैं, कल वही उसकी परछाईं से भी दूर भागेंगे। फिर न कोई सम्मान और न ही कोई इज्जत–परतीत। उसे शर्मा जी और देवता के तमाम कारदारों के साथ सारे ब्राह्मण उस पल शैतान की तरह लग रहे थे जैसे वह स्वयं उनके पल्ले पड़ गया हो और उनके हाथों की कठपुतली हो। जहां वह रस्से पर रुका था, वहीं तक सबकुछ था। देवता भी और भगवान भी। सम्मान और प्रतिष्ठा भी। इज्जत और परतीत भी। नीचे उतरते वह फिर वही दलित... नीच... अछूत। हाथ खाली के खाली। उसका मन आक्रोश से भरता जा रहा था।... उसने भीड़ में एक नजर दौड़ाई। सामने से पालकी में उसके पिता आ रहे थे। दोनों हाथ ऊपर उठाए हुए... जैसे उन्हें आज सबकुछ मिल गया हो। उसने पिता की आंखों में अपनी विजय की चकाचौंध तो देखी, लेकिन उसके पीछे छिपे दर्द और अपमान को भी सचमुच पढ़ लिया।

सहजू की नजर अब उस तरफ गई जहां दलितों के परिवार खड़े

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थे। वहीं से सबसे ज्यादा जयजयकार की आवाज़ें गूंज रही थीं। उनके मन साफ थे। मन की आवाज़ें थीं वो जिनमें सहजू को कोई स्वार्थ नजर नहीं आया। हां, उनके कपड़े फटे हुए थे। कुछ औरतों की छातियां फटे कुरतों के बीच से बाहर झांक रही थीं। उनके बाल बेतरतीबी से उलझे हुए थे। फूलदार रिब्बनों की जगह उनमें घास और पत्तियां फंसी थीं। उनके साथ उनके बच्चे भी थे। नंगी टांगें। बदन पर महज एक लम्बा–सा फटा कुरता। छालों से रिसते पांव। आंखों में अथाह दर्द।... सहजू को अपने देवत्व पर शर्म आ गई।

उसके कानों में फिर आवाज़ें गूंजीं... ''शाबाश सहजू! शाबाश! नीचे आ जाओ। तुम आज भुण्डा के सबसे बड़े देवता हो।''

इस बार वह जोर से हंस दिया।

''कैसा देवता...? कौन–सा देवता...? मैं तो एक अछूत हूं। कठपुतली मात्र हूं। सारे पुण्य तो तुम सभी के लिए हैं। अपने स्वार्थ के लिए ऊंचे लोगों ने भी क्या–क्या परपंच रचे हैं!... जानते हो शर्मा जी, मैं इस घड़ी तो सबसे बड़ा पंडित हूं, देवता हूं और सभी का ईश्वर। लेकिन नीचे उतरते ही मैं सहजू अछूत... और तुम सभी उच्च कुल के पंडित और ठाकुर। तुम्हारे जो ये देवता आज मेरी विजय पर नाच रहे हैं, मुझे भगवान मान रहे हैं, कल इन्हें मेरी परछाईं से भी दोष लगने लगेगा। अपवित्र हो जाएंगे ये!''

शर्मा की बोलती बंद हो गई थी। कभी नहीं सोचा था कि सहजू के दिमाग में कुछ और भी चल रहा है। उसकी बातें मन में सुई की तरह चुभ गईं। अब वह झटपट इस स्थिति से उबरना चाहते थे। अपने को सहज करते हुए गिड़गिड़ाए, ''ऐसा मत सोचो सहजू, तुम्हारे बिना इतना बड़ा आयोजन कैसे सम्पन्न होता! तुम आज हमारे सब कुछ हो।''

सहजू ठहाके लगाने लगा, ''केवल आज ही न शर्मा जी! कल?''

शर्मा जी सकपका गए। स्थिति भांपने में उन्हें देर नहीं लगी। सीधी बात पर आ पहुंचे।

''ऐसा मत कहो सहजू। भगवान के लिए ऐसा मत कहो। बोलो तुम्हें क्या चाहिए? आज तो वह समय है कि जिस चीज में भी तुम हाथ लगाओगे वह तुम्हारी हो जाएगी।''

''सोच लो शर्मा जी!''

''सहजू! इसमें दो राय नहीं हो सकती। आज के दिन तो तुम हमारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भगवान हो। बोलो तो...।''

''हमारी ज़मीन लौटा दो शर्मा जी। हम यहीं बसना चाहते हैं इसी गांव में, जहां से आप लोगों ने हमारे पूर्वजों को भगाया था।''

शर्मा जी को जैसे काठ मार गया। कलेजा मुंह को आने लगा। एक मन किया कि इस नीच की औलाद को इसकी असली औकात दिखा दूं कि अपने से ऊंचे लोगों से किस तरह बात की जाती है। लेकिन समय की नजाकत को भांपते हुए लहू का घूंट पी गए। रूमाल से उन्होंने माथे का पसीना कई बार पोंछा। यह ख्याल पूरे आयोजन के दौरान किसी के भी मन में नहीं आया था कि सहजू ऐसा भी कर सकता है। लेकिन आज तो कोई उसको कुछ नहीं कह सकता। वह जहां चाहे, जा सकता है। जिस वस्तु को चाहे, मांग सकता है। शर्मा जी के साथ कारदार और जो गूर खड़े थे, उन्होंने आंखों–आंखों में बातें कीं। उन्होंने सहजू को निराश करना उचित नहीं समझा। मजबूरन शर्मा जी को हां कहनी पड़ी। सहजू जानता था कि इस अवसर पर दिया धन या ज़मीन कोई दूसरा नहीं ले सकता। उसने जीनकाठी को हल्का–सा खींचा और सरकता हुआ नीचे उतर आया। चारों तरफ अब लोगों ने उसकी जयजयकार करनी शुरू कर दी थी। सभी देवताओं के वाद्य बज रहे थे। वातावरण पूरी तरह संगीतमय हो गया था।

समारोह में उपस्थित लोगों ने आज तो सचमुच महापुण्य कमा लिया, पर शर्मा जी, उनके साथी कारदार तथा उस गांव के लोगों के लिए यह उत्सव मायूसी लेकर आया था। उन्होंने कभी नहीं चाहा था कि श्रेष्ठ ब्राह्मणों के इस गांव में फिर कोई दलित पसर जाए। लेकिन अब तो सहजू को भुण्डा के अवसर पर सभी देवताओं को साक्षी मानकर ज़मीन देने की जुबान भी दे दी गई थी। उनका विश्वास था कि अपनी बात से मुकर जाना गांव और लोगों पर फिर किसी आफत के आने का बायस बन सकता है। मगर इसके बावजूद भी वे लोग इस बात को पचा नहीं पा रहे थे। सहजू बेड़ा को अपने–अपने घर ले जाने के उनके सपने भी अब टूट गए थे। सभी को जैसे सांप सूंघ गया हो।

उत्सव अब पूरे यौवन पर था। चारों तरफ का माहौल उमंगों से भर गया, पर शर्मा जी के भीतर एक सन्नाटा पसर गया था। लोग उनके पास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकर बधाई दे रहे थे। इस आयोजन की सफलता के लिए उनकी तारीफ कर रहे थे, लेकिन उनका मन विचलित था जैसे यह भुण्डा नहीं किसी विनाशोत्सव का आयोजन हुआ हो। उनकी स्थिति विचित्र हो गई थी। मानसिक संतुलन बिगड़ गया था। कोई जब पास आता तो वे हंस देते। चला जाता तो अजीब–सी हरकतें करने लगते... कभी कुछ गाने लगते तो कभी नाचना शुरू कर देते। बिल्कुल पागलों जैसी हरकतें करने लगे थे... मानो गांव से देवताओं द्वारा भगाए गए भूत–प्रेत सब–के–सब उनके भीतर नाचने लगे हों। शर्मा जी की इस हालत को देखकर देवता के कारदार, गूर और गांव के दूसरे लोग परेशान हो गए थे। उन्होंने शर्मा जी को घेर लिया था। तभी मुख्यमन्त्री और विधायक उनके पास पहुंचे। शर्मा जी की पीठ थपथपाकर कहने लगे, ''भई शर्मा जी, मान गए आपको। इतना बड़ा आयोजन तो आप ही करवा सकते थे। सांप भी मर गया और लाठी भी सलामत। आपने हमारी तो एक बड़ी दुविधा ही मिटा दी। क्या नाम था इस बेड़ा का...? हां, सहजू... सहज राम। क्यों विधायक जी, यही था न... उसने तो कमाल कर दिखाया... हमें तो लोकसभा के लिए कोई दलित मिल ही नहीं रहा था... भई शर्मा जी, कमाल कर दिया आपने।''

यह कहते हुए मुख्यमन्त्री और विधायक वहां से निकल लिए, पर शर्मा जी उनकी बात सुनकर बुत की तरह खड़े रह गए थे। काटो तो खून नहीं जैसे कोई जोर का तमाचा मुंह पर जड़कर निकल गया हो।

सहजू को लोगों ने अपने कंधे पर उठा लिया था। वह, उसकी पत्नी और परिवार के दूसरे सदस्य खुशी–खुशी लोगों से ईनाम के पैसे और जेवर इकट्ठे करने में मशगूल थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-61

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिट्टी के लोग

आज रामेशरी चाची बहुत परेशान है। उसका मन कहीं जाने को नहीं करता। जाए तो जाए भी कहां! जाने–करने को बचा भी क्या है? पहले गौशाला पशुओं और भेड़–बकरियों से भरी रहती थी। जब से उसके पति बालदू के पास कोई काम नहीं रहा, रामेशरी को एक–एक करके सभी को बेचना पड़ा। आज मुंह–मांगी कीमत भी कौन देता है! जिस गाय की कीमत कभी हजार–दो हजार होती थी, उसे पांच सौ में देना पड़ा। वैसा ही भेड़–बकरियों के साथ हुआ। एक जमाना था जब रामेशरी चाची बकरियों की बकराथा (बाल) निकालकर उनके खारचे (गर्म दरियां) बनाकर बेचा करती थी। भेड़ों की ऊन निकालकर खुद पट्टू–शालों के लिए कातती भी थी और बेच भी दिया करती थी। दाम भी बहुत अच्छे मिल जाते थे। पर आज तो मशीनों से बनी चीजों का जमाना है। भेड़–बकरियों की ऊन और बालों की कद्र अब कहां रही! खाली गौशाला में सांकल टंगी रहती है। बाहर–भीतर गड़े खूंटे जैसे उसका मजाक उड़ाते हैं। गौशाला की भीतों में जगह–जगह पाथे उपले जैसे उस पर हंसते नहीं थकते। आते–जाते कोई गांव का व्यक्ति जब आवाज लगाता है तो उसका कलेजा फट जाता है, मानो सभी उससे पूछ रहे हों कि रामेशरी चाची, अब तो मजे ही मजे। न गाय न बाच्छी, नींद आए आछी। न काम न काज। धूप सेंको और आनन्द करो। पर चाची का दिल जानता है कि वह कितने मजे में है!

दो–चार खेत थे, वे भी अच्छी तरह बाहे–जोते नहीं जाते। बैल भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं है। गांव के सरीकों की नजरें बराबर उन पर हैं; पर अपने बूते रामेशरी चाची ने उन्हें बचाए रखा है। नजर खेतों पर हो भी क्यों न, ऐसे खेत गांव में किसी के पास नहीं हैं। बालदू तो कई बार उन्हें बेचने का मन बना चुका है; पर आखरी आस चाची ने नहीं मिटने दी है। सोचती है कि यही खेत काम आएंगे। बैल न भी हो तो हाथ से खोदकर ही सही, चार दाने तो भीतर आते रहेंगे।

परिवार छोटा–सा है। तीन बच्चे हैं। एक लड़की और दो लड़के। दोनों लड़के स्कूल जाते हैं। बड़ा पांचवीं में है। छोटा तीसरी में। बिटिया अमरो पांच पढ़कर जवानी की दहलीज पर बैठी है। रिश्ते आते हैं तो सभी पूछते हैं कि बिटिया कितनी पढ़ी है ? कोई ट्रेनिंग वगैरह करवाई है या नहीं। चाची क्या जवाब दे! पांच की पढ़ाई की भी कोई गिनती है इस जमाने में। सभी पन्द्रह–बीस पढ़ी–लिखी मांगते हैं। उस पर भी सरकारी नौकरी हो तो सोने पर सुहागा, नहीं तो तीन–चार लाख का दहेज वगैरह। एक जगह रिश्ता पक्का होने की आस लगी भी थी; पर अपने घर के बर्तन खाली देख अभी तक हां नहीं की है। जवान बेटी पर गांव के लुच्चों–लफंगों की नजरें चाची के कलेजे को छननी करती रहती हैं। सोचती है, क्या जमाना आ गया! गांव–बेड़ में भी अब न कोई साक रहा, न शर्म। अपनी–अपनी डफली, अपना–अपना राग।

गरीबी की आंधी ने रामेशरी चाची को जवानी में ही बुढ़ा दिया है। पर चेहरे पर नूर अभी भी बचा है। भीतर हिम्मत खूब है। चाची जानती है औरतों से ही घर–बार होता है। इसलिए भीतर की परेशानियां सरीकों के बीच कभी मुंह पर नहीं आने देती। बेटी अमरो को भी वैसे ही संस्कार दिए हैं। खेतीबाड़ी से लेकर घर–बाहर का शायद ही ऐसा कोई काम होगा जो बेटी नहीं जानती। पराए घर जाएगी तो कामकाज की तो पक्की होनी ही चाहिए। कम पढ़ी–लिखी है तो क्या हुआ, चाची ने दूसरे भी कई हुनर उसे सिखाए हैं। अच्छे संस्कार दिए हैं। गांव का ऐसा कौन–सा घर होगा जहां चाची की बिटिया के खजूर, गेहूं की बालियों और पकी मक्की की डालियों के पत्तों के पटड़े और मंजरियां न बिछी हों! कौन–सा ऐसा बच्चा होगा जो उसके हाथ के बुने स्वेटरों को न पहनता होगा! क्रोशिए से बने कई मेजपोश और झालरों वाली चादरें कई घरों के ड्राइंगरूमों की शोभा बढ़ा रहे हैं। गजब की कला है अमरो के हाथ में। पत्तों से बनी बहुत–सी कलाकृतियां तहसील तक के स्कूलों और दफ्तरों की दीवारों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लगी हैं। जो चीज बनाती है, लगता है किसी मशीन से बनी होगी। बातें भी उसकी वैसी ही सयानी हैं। इतनी अकल और हुनर तो बीए पढ़े–लिखों में भी नहीं होता। कभी वह घर में ऐसी बातें कर बैठती है कि मां–बाप दोनों हैरान–परेशान।

•

रामेशरी चाची के पति बालदू के हाल भी अच्छे नहीं हैं। वह जैसे भीतर ही भीतर टूट गया है। एक जमाना था जब गांव–परगने में उसकी साख थी। इज्जत–परतीत थी। सभी मिस्त्री कहकर सम्मान देते थे। दूर–दूर तक उसकी मिस्त्रीगिरी मशहूर थी। जहां किसी का घर बनता, बालदू मिस्त्री पहले वहां होता। उसी गांव के चार–पांच मजदूर भी उसके साथ होते। उनकी टीम को मिट्टी के घर बनाने की महारत हासिल थी। गांव –परगने में शायद ही कोई ऐसा घर था जिसमें उन्होंने मिट्टी न कूटी हो। क्या 'मटकंधे' बनाते! क्या कुटाई करते! भीत पर भीत ऐसे चिनते मानो हाथ नहीं, कोई घर बनाने की मशीन हों। किसी के दोमंजिले मकान बनते तो किसी का एकमंजिला। सबसे बड़ा मकान इक्कीस–इक्कतीस हाथ होता। उससे छोटा इक्कीस–तेरह। और जिसका सामर्थ्य कम होता उसका एकमंजिला नौ–तेरह हाथ ही बनता। लेकिन नींव से लेकर भीतों की कुटाई और छत डालने तक का काम बालदू की टीम बखूबी करती। उनकी टीम में दो लकड़ी के मिस्त्री भी होते। घर की 'छाने' छवाने के लिए भी बालदू दक्ष था। छान चाहे घास की हो, या खपरैल की या फिर स्लेटों की; उसकी छवाई देखते ही बनती थी। मिट्टी के मटकंधों के दो–दोमंजिला मकान शायद ही तब उससे बेहतर कोई बना पाता होगा। आज बालदू बेकार है। उसके हाथ में बेशक वही हुनर है, दक्षता है, महारत है, पर काम नहीं है। चंद सालों में क्या कुछ नहीं हो गया। सबकुछ बदल गया है। जिसके दो जून रोटी के लाले हैं, वे भी अब कच्चे मकानों को गिराकर पत्थर–सीमेंट के घर चिन रहे हैं। कोई एक ही कमरा बना रहा है। बालदू जब उन मकानों की शक्लें देखता है तो उसका कलेजा मुंह को आ जाता है। पक्के मकानों के लैंटर जैसे उसे खाने को दौड़ते हैं। न कोई सूरत और न सीरत।

CC-0 Agamnigam Bibliotheca Research Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब कोई मिट्टी का घर गिराता है तो बालदू को लगता है जैसे उसी के अंग काट–काटकर अलग किए जा रहे हैं। उसके शरीर से उसकी आत्मा निकाली जा रही है। लगे भी क्यों न, आखिर उसने तपती दोपहरिया में उनकी मिट्टी कूटी है। ईमानदारी से पसीना बहाया है। कई घरों को गिराते हुए तो मजदूरों के पसीने छूट जाते। कई–कई दिन लगते, जैसे वे मिट्टी के घर न होकर लोहे के बने हों। उस वक्त बार–बार मिस्त्री याद आ जाता। बालदू की खूब बातें होतीं। उसके हुनर की तारीफें होतीं। कोई कहता– क्या भीत कूटता था बालदू! तो कोई बोलता मिट्टी का मिस्त्री बालदू जैसा दूसरा कोई नहीं था। घर बनाते भी तारीफ और अब उनको गिराते भी प्रशंसा; पर बालदू की किस्मत देखिए, हाथों को अब कोई काम नहीं। वह चाहता तो दूसरों की तरह सीमेंट का मिस्त्री बन जाता; पर उसे यह काम कभी नहीं भाया। फिर गांव में जो मिस्त्री थे भी, उन्होंने कोई दूसरा काम–धंधा पकड़ लिया। बहुत से तो शहर जाकर मेहनत–मजूरी करने लग गए।

बालदू की जो इज्जत मिस्त्री होने से बनी थी, उसने उसे घर से दूर सड़क पर काम जरूर दिला दिया। मिस्त्री का नहीं, बेलदारी का। बढ़ती महंगाई में उसका घर जैसे–कैसे चलता रहा। साठ–सत्तर रुपए ध्याड़ी से बनता भी क्या! आटा, दाल–चावल के भाव तो आसमान छूने लगे थे। दूसरी रोजमर्रा की जरूरत की चीजें भी सस्ती कहां रहीं! उस पर बच्चों की पढ़ाई का खर्चा। गरीबी में आटा उस समय गीला हो गया जब उस सड़क के काम पर भी कई किस्म की मशीनें पहुंच गईं। धीरे–धीरे मजदूरों के लिए मशीनें चुनौती बनकर खड़ी हो गईं। सरकार ने सारे का सारा काम अब ठेके पर दे दिया था। ये सारे ठेके चौधरी हरिसिंह के बेटे ने ले लिए थे। उसने गांव की सारी लेबरें हटा दीं और जो काम बीस–तीस मजदूर करते थे, उन्हें अब लम्बी–लम्बी गर्दनों वाली मशीनें करने लगी थीं। उन्हें चलाने के लिए महज एक–दो आदमी होते। वे खुदाई भी करतीं। मिट्टी–पत्थर को इकट्ठा करके खुद भरतीं और पहाड़ी से नीचे फेंक दिया करतीं। जहां मजदूरों की जरूरत थी, वहां के लिए वह शहर से ही बिहारियों और गोरखों की लेबरें लाने लगा था। इस तरह सड़क पर जो ध्याड़ी का काम था, वह भी हाथ से जाता रहा और बालदू की तरह कई घरों में रोटी के लाले पड़ गए। बालदू पर इन चीजों की मार कुछ ज्यादा ही पड़ी थी। बच्चों की फीस के लिए भी पैसे नहीं जुटते थे। फीस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by JKS MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो दूर, दो जून रोटी भी मुश्किल से जुटाई जा रही थी। उस पर जवान बेटी के ब्याह की चिंता भी उसे भीतर–ही–भीतर खाए जा रही थी।

•

चौधरी हरिसिंह न तो ज्यादा पढ़ा–लिखा था और न ही बाप–दादाओं की कोई बड़ी सम्पत्ति ही उसे विरासत में मिली थी। लेकिन गांव में सबसे ज्यादा जमीन का वही मालिक था। छोटा परिवार होने के नाते जो साल–फसल आती, उसे वह बेच दिया करता। उसी के बलबूते उसने एक छोटी–सी दूकान शुरू की और देखते–ही–देखते अपनी दूकानदारी और लालागिरी से पूरे गांव–परगने में धाक जमा ली। गरीबों को वह सौदा उधार देने के साथ–साथ ब्याज पर पैसे भी दे दिया करता और जब समय पर लोग उधार न लौटा पाते तो कोई उसे अपने घर से चांदी–सोने के छोटे–मोटे जेवर दे देते और कुछ खेत–घासणी रेहन रख देते। दो–चार सालों में जब मूल ब्याज के साथ दुगुना–चौगुना हो जाता तो मजबूरन गरीब किसान और मजदूर इन्हें उसे ही बेच दिया करते। इससे उसकी जमींदारी और साहूकारी खूब चमकने लगी थी।

इतना ही नहीं, अब जो भी बड़ा अफसर या नेता दौरे पर उस इलाके में आता तो उनकी शामें चौधरी के पास ही गुजरती थीं। वह उनकी खूब आवभगत करता था। यही वजह थी कि अब उसने अपने पांव राजनीति में भी जमाने शुरू कर दिए थे। यह क्षेत्र आरक्षित था, नहीं तो वह कभी का विधायक के चुनाव में भी कूद जाता और इसमें कोई दो राय नहीं थी कि वह जीत भी जाता। फिर भी उसका रुतबा अब राजनीति में बढ़ने लगा था।

चौधरी की उम्र भी ज्यादा नहीं थी। यही होगी कोई साठ के आसपास; पर लगता वह पचास से कम का था। पहले–पहल वह बिल्कुल सादे कपड़े पहनता था, लेकिन अब लिबास पूरी तरह बदल गया था। खद्दर के कपड़ों की जगह महंगे कपड़ों ने ले ली थी। सिल्क का सलेटी सूट और उस पर सिल्क की ही लम्बी सदरी, जिसमें एक लम्बी सोने की चेन बटनों के साथ लटकी रहती। सिर पर वह लाल पहाड़ी टोपी पहने रखता। सेहत भी अब नेताओं जैसी हो गई थी। कभी दुबला–पतला चौधरी अब काफी मोटा हो गया था। मुंह भरा हुआ था। छोटी बारीक मूंछें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे खूब जंचती थीं। पेट आगे निकल आया था। हाथों की उंगलियों पर कई महंगे नगों की सोने की अंगूठियां सजी रहतीं। जब इधर–उधर जाता तो हाथ में चमड़े का बैग और जेब में महंगा मोबाइल रहता।

उसकी चार बेटियां थीं और सबसे बाद लड़का हुआ था। तीन बेटियों की शादियां बड़े धूमधाम से की थीं। दहेज में खूब सोना–चांदी और दूसरी चीजें दी थीं। देता भी क्यों न, गरीबों का खूब खून जो चूसा था। चौथी बेटी अपंग पैदा हुई थी। उसके इलाज पर उसने बहुत खर्च किया; पर कोई फायदा न हुआ। उसकी दाईं टांग छोटी थी। यही कारण था कि उसका कहीं रिश्ता न हो सका था। लेकिन बेटी से उसने दसवीं करवा ली थी जो अब दूकान का काम संभालती थी। गांव का ही एक लड़का उनके पास नौकर था। चौधरी के लिए बेटी की अपंगता एक तरह से वरदान साबित हुई थी। इसीलिए वह निश्चिंत होकर इलाके में राजनीति करता रहता था। एक–दो बार प्रधान के चुनाव भी लड़े और दोनों बार जीत गया। तीसरे चुनाव को प्रधान की सीट आरक्षित हुई तो वह अब दूसरी पार्टी के साथ हो लिया। अब तो हर चुनाव में उस इलाके की राजनीति उसी के इर्द–गिर्द घूमती थी।

•

चौधरी हरिसिंह को यह बात कांटे की तरह खटकती थी कि कभी बालदू मिस्त्री ने न तो उससे कर्ज लिया और न उसकी औरों की तरह कभी परवाह ही की। उसकी दूकान से सौदा जब भी लिया तो नकद ही लिया। कभी–कभार थोड़ी–बहुत उधारी हुई भी तो उसे महीने–दूसरे महीने चुका दिया। बालदू की घरवाली हालांकि चौधरी की जमीन में मेहनत–मजदूरी अवश्य करती रहती; पर अपनी इज्जत पर कभी आंच न आने दी। उसके तेज–तर्रार तीखे मिजाज देखकर चौधरी ने भी कभी उसकी मजदूरी नहीं रखी। बालदू के पास जो ज़मीन थी हालांकि वह बहुत थोड़ी थी, पर थी अव्वल किस्म की। दूसरे, गांव में जहां बस अड्डा बन रहा था, उसकी एक घासणी और दो खेत उससे लगते थे। चौधरी की आंख तभी से उस ज़मीन पर गड़ी थी ज़ब से सड़क का सर्वे गांव तक हुआ था। उसने कई बार और कई तरह से बालदू को रिझाने की कोशिश भी की कि वह उस ज़मीन को बेच दे; लेकिन बालदू ने हमेशा चौधरी की बात या तो मजाक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में टाल दी या करारा जवाब दे दिया। यह बात उसे भीतर–ही–भीतर कचोटती रहती थी। इसलिए भी कि गांव तो क्या, अब तो दूर–दूर के इलाकों में भी चौधरी की बात कोई टाल नहीं पाता था और फिर बालदू जैसे छोटी जात के आदमी की भला औकात ही क्या? पर चौधरी को उसकी औकात का मालूम था। कई तरह के हथकण्डे अपनाने के प्रयास भी उसने किए थे; लेकिन परिणाम ढाक के तीन पात ही निकले। अब उसकी नजरें बालदू की जवान बेटी पर थीं कि उसकी शादी–ब्याह के लिए तो उसे चौधरी के पास ही आना पड़ेगा।

•

गांव–इलाके में चौधरी हरिसिंह के लड़के की खूब चर्चा होने लगी थी। चौधरी ने अपने लड़के की विदेश में पढ़ाई करवाई थी। वह अब लौटकर गांव आ गया था। सुना है उसने सरकारी नौकरी के बजाय शहर में करोड़ों का कर्ज लेकर एक कम्पनी खोली थी जिसमें तरह–तरह की मिट्टी खोदने और उठाने की मशीनें लाई गई थीं। मशीनें ऐसी कि बीस–बीस मजदूरों का काम एक पल में कर दें। गांव–परगने में ही नहीं, शहरों तक की सड़कों और मकानों के निर्माण के ठेके उसे ही मिलने लगे थे। उसने गांव में अपना पुराना मकान पूरी तरह गिराकर नया बना लिया था। तीन मंजिलें इस मकान में तीस से ज्यादा कमरे थे और सभी में संगमरमर बिछा था। यही नहीं, अब तकरीबन गांव और इलाके का हर सम्पन्न व्यक्ति उसी से अपना घर भी बनवाने लगा था।

गांव के लिए जो सड़क निकल रही थी, उसका ठेका भी चौधरी के लड़के को ही मिला था। वह भी कई बार बालदू की ज़मीन की बात अपने पिता से कर चुका था। वह चाहता था कि यदि यह ज़मीन उसे किसी भी कीमत पर मिल जाए तो वह वहां अपना कारोबार स्थापित कर सकता है। बालदू की एक घासणी में रोड़ी के लिए अच्छा पत्थर मौजूद था और इस पर चौधरी के लड़के की आंख लगी थी। वह किसी भी कीमत पर उसे हासिल करके वहां क्रशर (रोड़ी बनाने की मशीन) लगाना चाहता था।

चौधरी और उसके व्यवहार में रात–दिन का अंतर था। चौधरी जहां गांव के माहौल के मुताबिक ढल–पड़ जाता, वहां उसका लड़का किसी की परवाह नहीं करता था। बोलचाल में भी कोई शालीनता नहीं थी। वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जब भी गांव आता तो अपनी हेकड़ी में रहता। गांव के बड़ों को तो वह क्या सम्मान और आदर देता; पर उलटा सोचता कि बूढ़े–बुजुर्ग और उनके बीवी–बच्चों तक उसे नमस्ते करें या पांव छूएं। गांव के लोग बेचारे ऐसा करते भी थे; पर बालदू और उसके परिवार ने कभी उससे मुंह ही नहीं जोड़ा।

•

एक दिन उसने चौधरी के साथ बालदू के घर जाने की इच्छा जाहिर की। चौधरी ने उसे बहुत समझाया कि मिस्त्री अपनी ज़मीन कभी नहीं देगा; पर वह नहीं माना। मजबूरन चौधरी को उसके साथ आना पड़ा।

इतवार का दिन था। बालदू अपने आंगन में बैठा अनारदाना सुखा रहा था। रामेशरी चाची और अमरो कटे हुए दाडुओं (छोटे खट्टे अनार) से अनारदाना निकाल रही थी। अचानक चौधरी को आंगन में आते देख वे हैरान रह गए। बालदू ने चौधरी को प्रणाम किया। रामेशरी चाची ने भी उसके पांव छुए। अमरो ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया और भीतर जाकर मंजरी ले आई। चौधरी तो बैठ गया; पर उसका लड़का इधर–उधर ताक–झांक करता रहा। बालदू ने ही पूछ लिया, "चौधरी जी, इनको नहीं पैचाणा।"

चौधरी के चेहरे पर यह सुनते हंसी पसर आई जिसमें घमंड की छोंक ज्यादा थी, "बई मिस्त्री, तू कैसे पैचानता? मेरी–तेरी तरह ये गोबर–मिट्टी में रहा ही कहां है! छोटा–सा था तो अपनी मासी के पास शहर पढ़ने चला गया। अंग्रेजी स्कूल में पढ़ा। फिर मैंने विदेश इंजीनियरिंग करने भेज दिया। मेरा बेटा सुमेर चौधरी है बई। आज लाखों–करोड़ों का कारोबार है इसका।"

बालदू तारीफ सुनकर हल्का–सा हंस दिया और कुछ पल उसको देखता रहा। वह अभी भी गर्दन ताने खड़ा था। बालदू को कुछ अटपटा लगा। कुछ बोलता तभी अमरो भीतर से एक छोटी–सी दरी ले आई और मंजरी पर बिछाते हुए बोल पड़ी, "यहां बैठ जाओ छोटे चौधरी। अब म्हारे घर मेज–कुर्सी तो है नहीं। गोबर–मिट्टी के लोग हैं। रहते–बसते भी इसी के बीच हैं।"

यह कहकर वह भीतर चली गई; पर उसकी बातें छोटे चौधरी को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ज्यादा ही चुभ गईं। वह जूते समेत उस दरी पर धंस गया; पर नजरें अमरो का पीछा भीतर तक करती रहीं।

दरी मंजरी पर बिछाते छोटे चौधरी के मुंह से शराब की बास का एक भभका इस तरह अमरो के नाक में घुसा कि वह भीतर जल्दी न जाती तो वहीं उलटी कर देती। बालदू ने भी ताड़ लिया था कि वह शराब पीए हुए है। वह मन ही मन सोचता रहा कि चौधरी ने अच्छे संस्कार दिए हैं अपने लड़के को कि बाप की भी लिहाज नहीं रही।

बालदू ने पहल की, "कैसे आणा हुआ चौधरी जी आज?"

"बई बालदू! तेरे से एक विनती करने आए हैं। पहले भी कई बार बात की; पर तू नी माना। देख बालदू, गरीबी बुरी चीज होती है। अपणा घर देख, कितणा पुराणा हो गया है। ऊपर अब घास भी नहीं रही। अब तो जमाना पक्के मकानों का है। है किसी का घास का घर गांव में? उस पर जवान बेटी ब्याहणे को। जमाना बुरा है मिस्त्री। ऊपर से इतणी महंगाई। मेरा बेटा चाहता है कि तू सड़क के साथ लगती अगर अपणी घासणी बेच दे तो मुंहमांगी कीमत दे देंगे।"

बालदू की समझ में सारी बात आ गई थी; पर अमरो को ये बातें मन को लग गईं। बालदू कुछ बोलता, अमरो ने दरवाजे पर से टोक दिया, "चौधरी चाचा! रोटी और बेटी इतनी बुरी बी नी होती कि उनके लिए ज़मीन ही बेच दी जाए। भगवान ने जब दो हाथ दिए हों तो न कोई गरीब रहता है, न मरता ही है। जिनके खेत और घासणियां आपने अपणे करवा लिए वे कौण से साहूकार हो गए?"

अमरो की बातें चौधरी और उसके बेटे पर तमाचे की तरह पड़ीं। चौधरी के अब कुछ बोलते नहीं बन रहा था। उसके बेटे के मुंह और आंखों में खून तैरने लगा था। वह एकदम ऐसे खड़ा हुआ मानो किसी कीड़े ने काट दिया हो। खड़े होते ही उसने मिस्त्री को कालर से पकड़ लिया, "ओए मिस्त्री! तेरी ये लड़की क्या सोचती है कि मेरे बाप ने लोगों की ज़मीनें उनसे छीनी हैं। अरे खुद दरवाजे पर आकर दे गए वो... नहीं तो जेल में सड़ते रहते। तू अपनी बात कर बे ओ मिस्त्री। मेरे को घासणी चाहिए किसी भी कीमत पर। बोल कितने लाख दूं तेरे को। बोल... अभी तेरे मुंह पर पांच–दस लाख मार दूंगा।"

बालदू ने कभी सोचा भी न था कि चौधरी का लड़का इतना बेशर्म और बिगड़ैल होगा। वह उसकी हरकत से भौंचक्क रह गया। भीतर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रामेशरी चाची और अमरो की समझ में भी कुछ नहीं आ रहा था। चाची का हाथ अचानक दराट पर पड़ा; पर अमरो ने रोक दिया।

छोटे चौधरी ने अभी भी बालदू की कमीज का कालर पकड़ा हुआ था। अब बालदू से रहा नहीं गया। पानी गले तक ही हो तो अच्छा है, सिर से ऊपर चढ़े तो... एक ही झटके में छोटा चौधरी आंगन की मुंडेर पर धड़ाम से गिर गया। पास बालदू का हुक्का पड़ा था। उसके हाथ वही लगा और उसे हाथ में उठाकर मार ही देता अगर चौधरी हाथ न पकड़ता। उसने खुद भी न सोचा था कि बात यहां तक बढ़ जाएगी।

"मिस्त्री, क्या करता है यार! जवानी का खून है बई। रहणे दे। मत दे तू ज़मीन। हमारे लिए कहां कमी है। अपणे पास रख। उजड़ रहने दे। तू भूखा–नंगा मरे या जीए, म्हारे को क्या! तेरे भले की बात थी। हमारा कौन सा तेरी ज़मीन या घासणी के बगैर कारोबार बंद हो जाएगा?"

छोटा चौधरी अभी भी पूरी तरह संभल नहीं पाया था। न इस काबिल रह गया था कि पीछे हटकर कुछ बकता या हाथ चलाता। चौधरी हरिसिंह ने ही उसे संभाला था। उन्होंने अब वहां से निकलना ही ठीक समझा। पर आर–पार के घरों के लोगों को इसकी भनक लग गई थी कि बालदू के आंगन में कुछ हुआ जरूर है। दो–चार तो आंगन तक पहुंच भी गए थे; पर इस घटना पर किसी ने मुंह नहीं खोला। गांव–इलाके में यह पहली घटना होगी जब किसी ने चौधरी हरिसिंह को अपने आंगन में इतना करारा जवाब दिया था।

चौधरी का गुस्सा अपने लाल पर ही फूट पड़ा था। वह जोर–जोर से उसे कुछ कहते हुए चला जा रहा था। उसके पीछे लड़खड़ाते हुए उसका बेटा था। चौधरी शायद इस बात को लेकर शर्मिंदा था कि आज उसका नाम कहां तक पहुंचा है; पर इस दो टके के मिस्त्री ने बेटे पर हाथ उठा दिया। दूसरे पल वह यह भी सोच रहा था कि बेटे की ही गलती थी। कोई ऐसे भी किसी के गिरेबान तक पहुंच सकता है! लड़का तो पहले ही नशे में था। अब ऊल–जुलूल बके जा रहा था।

बालदू को खुद भी पता नहीं रहा कि यह सब कैसे हो गया ? मन में डर भी बैठ गया कि कहीं चौधरी पुलिस न बुला दे। पर उसने ऐसा किया ही क्या था? पहल तो चौधरी के लड़के ने ही की थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामेशरी चाची ने अब पहले से ज्यादा काम करना शुरू कर दिया था। वह कई जमींदारों की जमीन में काम करने लगी थी। अमरो भी उसके साथ काम करती। कई बार वे दोनों अलग–अलग जगहों पर होतीं; पर जमींदारों से इतना भी न मिलता कि बच्चों की पढ़ाई के साथ–साथ अच्छी रोटी भी मिल जाए। वे जिन घरों में घास कटाई या साल–फसल इकट्ठी करने का काम किया करतीं, वहां के मर्द अब पहले जैसे नहीं रहे थे। न तो काम के हिसाब से पैसे ही मिलते और न ही कोई इज्जत। एक दिन तो हद ही हो गई जब चौधरी हरिसिंह के छोटे भाई ने फसल को भीतर भरते चाची की बांह पकड़ ली और छाती पर हाथ मार दिया। रामेशरी का खून खौल गया और उसने सिर पर उठाया अनाज का बोरा नीचे पटककर उलटे हाथ का तमाचा जड़ दिया। वह किसी को कुछ नहीं बोल पाया कि उसके साथ क्या कुछ घटा था। रामेशरी के लिए किसी के घर–बार काम करने का वह आखिरी दिन था। उसने यह बात किसी को नहीं बताई थी। बालदू को भी नहीं। सोचती कि इज्जत जितनी ढकी रहे उतनी अच्छी।

इतना ही नहीं, उसकी बेटी के साथ भी वैसा ही कुछ हुआ था। अमरो भी इधर–उधर गांव में काम करने जाती रहती थी। एक दिन चौधरी के बड़े भाई के लड़के ने, जो जिला परिषद् का सदस्य था और उसी के पास रहता था, गौशाला के पास घास छोड़ती अमरो से छेड़छाड़ कर ली। शाम ढल रही थी। उसने खूब शराब पी रखी थी। उसके साथ पार्टी के दो–तीन मुश्टंडे भी थे। अमरो पहले चुप रही; लेकिन जब उसने अमरो को पकड़कर गौशाला के भीतर ही खींचना चाहा तो उसके सब्र का बांध टूट गया। उलटी दराटी का ऐसा वार किया कि लड़के के दो दांत ही जाते रहे। अमरो घबराई–सी घर पहुंची तो रामेशरी चाची के होश उड़ गए। उसके हाल देखकर वह हक्की–बक्की रह गई। हाथापाई में अमरो का कुर्ता छाती पर से नीचे तक उधड़ गया था। बहुत देर तक वह मां के गले लगकर रोती रही। फिर रूंधे स्वर में विनती करने लगी, "अम्मा! मुझे नहीं करना है इन लफंगों के घर काम। इससे तो अच्छा है मैं ढांक से छलांग लगाकर मर जाऊं।"

चाची का हृदय जैसे चीर गया। बेटी को जैसे–कैसे संभाला; पर अपने गुस्से पर कैसे काबू रखती? दराट उठाकर जैसे ही बाहर निकलने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लगी, बेटी ने रोक दिया।

"अम्मा! किस–किससे लड़ते रहेंगे हम? लोग गरीबों को ही कसूरवार मानते हैं। पर मैंने उसके किए की उसको सजा तो दे दी है न! तू मत जा।"

पर रामेशरी चाची कहां मानने वाली थी? उसका पति घर में होता तो भी बात बन जाती। उस दिन वह भी वहां नहीं था। आग–बबूली, पगलाई वह जब चौधरी के आंगन पहुंची तो सबसे पहले उस बदमिजाज लड़के से ही सामना हुआ। वह चाची को देख गीदड़ की तरह भीतर भाग गया और घर का दरवाजा बंद कर दिया। उसको देख चाची का पारा सातवें आसमान पर। आंगन में गरज गई रामेशरी, "चौधरी! अपने इस हरामी को बाहर कर। देखती हूं इसकी मां ने कितणा दूध पिलाया है इस लफंगे को। अमरो ने तो इसके दो दांत ही तोड़े हैं, मैंने इसकी गर्दन न काट दी तो रामेशरी न बोलियो। हम गरीब जरूर हैं चौधरी, पर इज्जत नी बेची है। मेहनत का खाते–कमाते हैं। भीख नी मांगते किसी से। तेरे घर का काम इसलिए नहीं करते रे चौधरी कि उसके बदले तुम म्हारी गांव की बहू–बेटियों की भी परवा भी न करो। काहे की परधानी है रे तेरी और काहे को इस कपूत को सिर पर चढ़ा दिया। क्या यही करता है रे लोगों की सेवा तेरा लाल! निकाल इसको बाहर, फिर देख इसकी मैं क्या गत बणाती हूं।"

चौधरी घर की खिड़की से रामेशरी चाची के तेवर देखकर डर गया। वह पूरी चंडी लग रही थी। घर के बाकी लोग कहीं भीतर दुबक गए थे। चाची के चीखने की आवाजें जब दूसरे घरों ने सुनीं तो कई आंगन–पिछवाड़े से झांकने लग गए। बात बिगड़ती देख चौधरी ने हिम्मत जुटाई और आंगन में आकर रामेशरी चाची के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया, "लड़के से गलती हो गई रे रामेशरी। गलती हो गई। आज की औलाद छोटा–बड़ा, गांव–बेड़ कहां देखते हैं? नहीं देखते। लाट साहब बणे फिरते हैं। देख रामेशरी, मेरी टोपी की इज्जत रख दे। तेरे पांव पड़ता हूं। मेरे को माफ कर।"

चौधरी का लड़का भी उस समय वहीं पर था; पर चुपचाप भीतर दुबका रहा। आज उसे अपने ऊपर ही शर्म आ रही थी कि इतने पैसे–धेले वाले होते हुए भी वह दो टके की एक औरत से जलील हो रहे हैं। पहले इस औरत के घर वाले से जलील हुए और अब यह आंगन में ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by CICS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आ धमकी। उसे पहली बार अपनी कम्पनी, अपनी विदेशी पढ़ाई–लिखाई, हजारों–लाखों के बैंकखाते दो पैसे के भी न लगे थे। रामेशरी की गालियां उसके कानों में गर्म सलाखों की तरह पड़ रही थीं। एक मन करता कि अपने छोटे भाई को गोली से उड़ा दे; पर इससे ज्यादा गुस्सा उसे उस औरत पर आ रहा था। चौधरी के हाल भी कुछ ऐसे ही थे। अपनी इज्जत बचाने के लिए उसने चाची से दिखावे की माफी तो मांग ली; पर भीतर–ही–भीतर जलता–भुनता रहा।

अब चौधरी जैसा बड़ा इज्जतदार आदमी हाथ ही जोड़ दे तो चाची कैसे न माने! मानना पड़ा। कहां चौधरी और कहां चाची का परिवार! पर गलत तो गलत ही है न! चाची ने अब वहां से लौटना ही ठीक समझा। चली तो आई; पर मन में खुशी भी कम नहीं थी। भीतर अपने साथ हुई बदतमीजी की आग भी कई दिनों से जल रही थी।

चौधरी का कलेजा इस अपमान से भभक उठा था। उसकी रातें यही सोचकर कटतीं कि इन नीचों और हरामियों का क्या किया जाए? चाची के मन में भी एक बड़ा डर घर कर गया था। इसी वजह से अब चाची ने बेटी को कहीं काम पर भेजना बंद कर दिया था।

चौधरी के लड़के ने बालदू को काम न देने के लिए गांव के मजदूरों को भी अपने पास काम नहीं करने दिया। उसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से परेशान करने की कोशिशें करता रहा। इतना ही नहीं, रामेशरी चाची और अमरो के साथ जो बदतमीजी हुई, उसमें भी उसी का हाथ था। लेकिन वह कभी सामने नहीं आया और इन कामों को दूसरों के कंधों पर अंजाम देता रहा; पर हर बार मुंह की खानी पड़ी।

•

कई दिनों से घर पर बैठी देख बालदू ने रामेशरी चाची को टोक ही दिया, "लाड़ी! क्या बात है बई, आजकल राणी बण के बैठी रहती है। खुद तो क्या कमाणा, पर अपणी इस लाडली को भी कहीं आणे–जाणे नहीं देती। क्या कोई सरकारी नौकरी लग गई है दोनों की?"

पहली बार काम के लिए अपने पति से ऐसी बात सुनी थी रामेशरी ने। ताने तीर की तरह कलेजे में चुभ गए; पर वह खून का घूंट पीकर रह गई। उसकी चुप्पी ने बालदू का गुस्सा और बढ़ा दिया। गुस्सा तो कुछ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
और था। वह भी कहां काम पर जाता था। पर आज भीतर का गुस्सा पत्नी पर ही फूट पड़ा था। रामेशरी को भनक तक न लगी कि उसके बाएं गाल पर कब बालदू का भारी–भरकम हाथ पड़ गया। वह हक्की–बक्की रह गई। ऊपर से गंदी–गंदी गालियां, "रांड, महाराणी बन के बैठी रहती है। न खुद कुछ करती है, न अपनी इस लाडली को कुछ कमाणे देती। गांव में जमींदारों का इतणा काम पड़ा है उसको करते अब तुम्हारे को शर्म आने लगी है। मेरे से नी होता अब कुछ कि तुम्हारे को बैठ के खिलाया करूं। रंडी निकल जा यहां से और इन अपणे जायों को भी साथ ले जा।"

रामेशरी जब से इस घर में ब्याही है, शायद ही कभी पति से जुबान लड़ाई हो। यहां तक कि कभी सिर उठाकर आंख न मिलाई। पर आज तो जैसे उम्र का कमाया चूल्हे में चला गया। बालदू ने जैसे ही दूसरा चांटा मारना चाहा, रामेशरी ने हाथ पकड़ लिया। फिर इतने जोर का झटका मारा कि वह दहलीज पर चपाट जा गिरा। इस अप्रत्याशित वार के लिए वह कतई तैयार न था। इससे पहले कि वह संभल पाता, रामेशरी ने चूल्हे की पठाई से एक लकड़ी उठा ली और बुरी तरह बिफर गई, "तू क्या चाहता है रे तेरी औरत और जवान बेटी गांव के इन कमीणे पंडतों–ठाकुरों के घर अपना पसीना भी बहाएं और उनके बिस्तर भी तपाती रहें। सुण ले तू! हमारे से ये काम नी होता। मैं भूखी मर जाऊंगी, पर किसी के घर न आज के बाद खुद काम करूंगी और न अमरो को भेजूंगी। तेरे से हम नी सहन होते तो बहुत ढांक–ढंकार हैं गांव में, छलांग लगाकर खुद भी मरूंगी और इन तेरे बच्चों को भी मार दूंगी। सुणा तैने।"

और इसके साथ ही वह बुरी तरह बिलख पड़ी थी। अमरो ने ही बात संभाली थी। मुश्किल से मां का गुस्सा ठंड़ा किया था।

बालदू के कानों में पत्नी की बात गर्म तेल की तरह पड़ी। कलेजे में जैसे किसी ने नश्तर मार दिया हो। वह जैसे दहलीज के पास पड़ा था, वैसे ही अधमरा–सा हो गया। उसकी सारी की सारी मर्दानगी जाती रही। उसने बांहों के घेरे में सिर रखकर दहलीज पर टिका दिया। एक पल के लिए आंखों के पास अंधेरा छा गया। कुछ नहीं सूझ रहा था। फिर अचानक लगा कि उसके आंगन में पीछे से वे लंबी गर्दनों वाली मशीनें रेंगती चली आ रही हैं। एक मशीन ने उसे अपने जबड़ों में भरकर आंगन से नीचे फेंक दिया है। फिर उसे लगा कि उसकी औरत और बेटी के पीछे गांव–परगने के मुश्टंडे भाग रहे हैं। कुछ मनचलों ने उसकी जवान बेटी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
के कपड़े तक फाड़ दिए हैं। वह जोर–जोर से चिल्लाने लगा है। अपना सिर दहलीज पर पटक रहा है। यह देखकर रामेशरी चाची घबरा गई थी। अमरो, जो कहीं बाहर थी, पिता के पास पहुंची तो देखकर हैरान रह गई कि माथे से खून बह रहा है। वह और उसकी मां बालदू को मुश्किल से उठाकर चूल्हे के पास ले आईं। वह सुबक–सुबककर बच्चों की तरह रोते हुए कह रहा था, "रामेशरी! मुझे माफी दे दे। मेरी वजह से तुमको दूसरों की चौखट पर काम करना पड़ा। मेरी जवान बेटी को भी। तुम आज के बाद कहीं काम पर नहीं जाना। मैं करूंगा सबकुछ। जैसे भी होगा।"

रामेशरी चाची को अपने किए पर पछतावा हो रहा था कि क्यों उसने अपने पति को खरी–खोटी सुनाई। पर और चारा भी क्या था उसके पास! मां–बेटी दोनों ने बालदू को संभाला था। उसे ढांढ़स बंधाया था। वह उठकर चूल्हे के पास भीत का ढांसना लगा बैठ गया और सिर घुटनों के बीच ठूंस दिया। कई विचार मन में आने–जाने लगे। एक मन किया कि इस गरीबी से मरकर ही छुटकारा ले लें। उसके सामने कई ऐसी घटनाएं घूमने लगी थीं।

•

उसी के पंचायत के एक कुम्हार ने अपने दो बच्चों और बीवी को तीन महीने पहले जहर देकर मार दिया और खुद भी खाकर जान दे दी थी। उसकी चार परगनों में खूब साख थी। इज्जत–परतीत थी। उसकी तरह मिट्टी के बर्तन कोई नहीं बना सकता था। चौधरी ने किसी बैंक से उसे कामकाज बढ़ाने के लिए एक लाख रुपए का कर्ज दिलवाया था। लेकिन मिट्टी के जितने बर्तन उसने बनाए, घर में धरे के धरे रह गए। किसी ने नहीं खरीदे। अब मिट्टी के बर्तन लेता भी कौन है? कुम्हार न अपना हुनर बेच पाया, न ही बैंक की किश्तें समय पर दे सका। दो साल बाद वही रुपया दुगुना हो गया। एक दिन ज़मीन–जायदाद की कुड़की का नोटिस बैंक वाले दरवाजे पर चिपका गए। कुम्हार के ऊपर जैसे बिजली गिर गई। कईयों के दरवाजे गया कि कुछ पैसा ही उधार मिल जाए। चौधरी ने भी मदद नहीं की। वह करता भी क्यों, उसी का किया–धरा था सब।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बस, अपने समेत पूरे परिवार को खत्म करने का ही रास्ता सूझा था कुम्हार को। यह ऐसी घटना थी जिसने पूरे इलाके को हिलाकर रख दिया था, लेकिन चौधरी की तो जैसे लाटरी लग गई थी। उसने कुड़की का सारा पैसा चुकाकर कुम्हार का घर और ज़मीन अपने नाम करवा ली थी।

बालदू के मन में भी यही विचार कौंधा था। सोच रहा था कि कैसा बुरा वक्त उन पर आ बैठा है। न कामकाज है, न हाथ के हुनर की कद्र है और न गांव–बेड़ अपना रहा है। कितना कुछ बदल गया है! जो गांव कभी साक–सबंधों, प्यार–प्रेम, एक–दूसरे की मदद के लिए जाना जाता था; उस पर किसी की बुरी नजर लग गई है। जहां न किसी के साक–संबंध रहे, न किसी की इज्जत–परतीत! पर क्या मुसीबतों से भागना अच्छी बात है ? उसके पास भले ही थोड़ी–सी ज़मीन है; पर है सड़क के साथ लगती। आज चौधरी जैसे कईयों की आंख उस पर है। मुंहमांगी कीमत देंगे उसकी।... यह सोचकर वह कुछ पल के लिए मन–ही–मन अमीर हो गया था।

वह अपने हाथों को देखने लगा था जिनमें न जाने कितना हुनर कभी हुआ करता था। पर बिना काम के वह जाता रहा। उसने दोबारा मिस्त्री का काम ढूंढ़ने का प्रयास किया; पर सफलता नहीं मिली। गांव–परगने में चौधरी के लड़के के सारे काम चल रहे थे। वहां तो बालदू को काम मिलने से रहा था। पर एक–दो जगह दूसरे परगने में बाहर से आए कुछ ठेकेदार और सीमेंट के मिस्त्री काम कर रहे थे। यह काम उन जमींदारों के घरों का था जिनसे चौधरी परिवार की पटती नहीं थी। वह उनके पास जाकर बेलदारी का काम करने लगा था। उसने अपने मन से यह बात निकाल दी थी कि वह कभी इतना बड़ा मिस्त्री भी हुआ करता था। अब सवाल दो जून रोटी का था। चौधरी और उसके लड़के जैसे कमीनों से अपना घर–बार बचाने का था। उसने रात–दिन काम करना शुरू कर दिया। दस से पांच तक के काम के बाद जितने घंटे लगते, उसे उसके भी पैसे मिल जाते थे। इसलिए वह देर रात तक काम करता और वहीं रह जाता। कुछ दिनों की मशक्कत के बाद घर ठीक चलने लगा था।

रामेशरी और अमरो भी कहां चुप बैठने वाली थीं। बालदू के काम करने से उनकी हिम्मत भी बढ़ गई और उन्होंने भी इधर–उधर काम करना शुरू कर दिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बालदू ने अपने दो कमरों के घर को कभी करीब से देखा ही नहीं था। एकाएक उसे चौधरी की बात याद आ गई। आज तीनों आंगन में खड़े होकर उसके मटकंधों को देखने लगे तो हैरान रह गए। उसकी एक दीवार गिरने के कगार पर थी। ऊपर से घास की छान भी गलने लगी थी। पानी की रिसाई भीतों को पीछे की तरफ से गीला करने लगी थी। कई जगह से पलस्तर उखड़ गया था। सिर ढकने के लिए एक घर था, वह भी जाता रहेगा यदि समय रहते मरम्मत नहीं हुई तो। आगे बरसात आने वाली है, फिर उसमें घर कहां बचने वाला! वे तीनों कई पल बुत–से बने खड़े रहे। बालदू भूल गया था कि पटवारी घर के लिए पैसे देने की भी कोई बात कर गया था। अमरो ने ही समाधान किया था, "अरे पिता! ऐसे क्या देखते हो? दीवार को मत देखो, अपने हाथों को देखो जिसमें आज भी वह कारीगर छिपा है। हम धीरे–धीरे खुद घर बनाएंगे और वह भी मिट्टी का। बिल्कुल धीरे–धीरे। देखना वह सबसे न्यारा बंगला होगा। फिर पटवारी अंकल पैसे देने की बात तो कर ही गए हैं।"

बेटी की बात सुनकर वह कुछ पल चुप रहा। फिर एक नजर पत्नी के चेहरे पर दी और दूसरी बेटी पर। वे दोनों मुस्करा रही थीं जैसे मां–बेटी ने पहले से ही यह योजना बनाई हो। बालदू को उनकी आंखों में खूब विश्वास भरा दिखा था। उसने दोनों हाथ सामने ऐसे किए जैसे किसी चीज के लिए अंजुरी भर रहा हो। हथेलियों पर जगह–जगह छालों के काले निशान थे, जो अब पक्के होकर स्थायी हो गए थे। उन निशानों में बरसों की मेहनत छिपी थी। एक मिस्त्री की कारीगरी छिपी थी। उसके भीतर अनायास ही इतनी हिम्मत जुट गई कि वह अभी से घर का काम शुरू कर दे।

वे तीनों आंगन के साथ सटे खलिहान की मुंडेर पर बैठ गए थे। बालदू ने अपने घर की तरफ देखा तो दाईं तरफ चिड़िया का घोंसला दिखाई दिया। तभी बाहर से एक चिड़िया चोंच में कुछ लेकर आई और घोंसले के पास पहुंचते ही भीतर से कई चोंचें बाहर निकल पड़ीं। वह पंछियों के इस परिवार को काफी देर तक देखता रहा। फिर नजरें दोनों बच्चों की तरफ गईं जो खलिहान के दूसरे छोर पर बैठे स्कूल का काम कर रहे थे। उनके आसपास बिल्लियों के तीन बच्चे उछल–कूद कर रहे थे। बच्चों का ध्यान किताबों पर कम और उनकी शरारतों पर ज्यादा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनायास ही बालदू की आंखें भीग आईं।

रामेशरी चाची दूर–पार आसमान को छूती धार को देख रही थी जो कई छोटी–बड़ी घाटियों से गुंथी थी। इसी धार से घास पकने पर रामेशरी और उसकी बेटी कभी घास काटकर पशुओं के लिए लाती थीं। यह एक सरकारी घासणी थी। जब यह खुलती तो कई गांव की औरतें और मर्द इससे घास काटते थे। रामेशरी ने एक नजर गौशाला की तरफ दी और दूसरी उस धार पर। हल्के भूरे रंग की घास से भरी उस धार पर ढलते सूरज की रोशनी चमक रही थी, जैसे रामेशरी और उसकी बेटी को अपने पास बुला रही हो। रामेशरी उठी और भीतर कुछ टटोलने लगी। कुछ देर में वह बाहर आई और हाथ में दो दराटियां थीं। बेटी समझ गई कि कल से घास काटने जाना है।

दूसरे दिन तड़के ही मां–बेटी सबसे पहले घासणी में पहुंच गईं। गांव की दूसरी औरतें उन दोनों को देखकर हैरान हो गईं; लेकिन उन्होंने मन की बात किसी को नहीं बताई। ...और महीने भर घास काटने और ढोने पर उन दोनों ने अपने घर के सामने वाले दो पेड़ों पर लम्बी–लम्बी घास की कई गडेढ़ें लगा दीं। एक दिन पशुओं का व्यापारी घास खरीदने आया तो एक–एक गडेढ़ तीन–तीन हजार की बिकी।

•

बालदू ने अब अपना घर बनाने की योजना बना ली थी। अमरो ने पिता से घर के बारे में खूब चर्चा की थी और अपने हाथ से इसका नक्शा भी तैयार कर लिया था। वह पिता को समझाती कि हमारा घर भले ही छोटा हो; लेकिन हो सबसे न्यारा। ऐसा कि सब देखते रह जाएं।

वे तीनों धीरे–धीरे घर बनाने में जुट गए। इस बार उन्होंने अपने नए घर की नींव बिना मुहूर्त निकाले और बिना पंडित बुलाए ही रख दी। नींव के लिए कुदाली से 'खणाही' जिस रोज करनी थी, बालदू सपरिवार ऐन तड़के तैयार हो गया। रामेशरी, अमरो और दोनों बच्चे भी नहा–धोकर इस शुभ अवसर पर साथ थे। अमरो ने ही यह सारी योजना सुझाई थी। वह इस हक में नहीं थी कि घर के लिए पहले पंडितों के चक्कर काटो और फिर वास्तु का पत्थर ढूंढ़कर पूजा–पाठ पर पैसा बर्बाद करो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बालदू ने बेटी के हाथ से ही इस शुभ काम को अंजाम दिया। सूरज की पहली किरण के साथ ही अमरो ने जैसे ही पहली कुदाली ज़मीन पर मारी, सभी ने उसको स्पर्श किया। इसी भाव से कि वे इस काम को मिलकर कर रहे हैं। उन्होंने सूरज को साक्षी माना कि उनका काम सिरे चढ़ जाए। और इस तरह उनके घर का काम शुरू हो गया। गांव के लोगों के लिए यह बात हैरत वाली थी कि बिना मुहूर्त और पूजा–पाठ के बालदू मिस्त्री ने घर का काम लगा दिया। गांव का एक सयाना पंडित मणिराम सबसे पहले बालदू के काम पर आ धमका और धर्म–संस्कार समझाने लगा, "भई बालदू, तू तो बड़ा मिस्त्री है रे। बीसियों घर बनाए हैं तैने। क्या कोई बिना साइत–मुहूर्त के भी नींव रखता है। ये तेरे परिवार के लिए अच्छा नहीं है कि हम पंडतों–पुरोहितों की तौहीन हो। गांव–बेड़ से लेकर परगने तक चर्चा हो रही है कि क्या उस गांव में कोई बड़ा–बुजुर्ग नहीं है जो बालदू को समझाता। तैने ठीक नी किया बालदू।"

वह कुछ इस तरह नाराजगी जता रहा था जैसे उसके पंडित होने के साथ कोई बड़ी नाइंसाफी हुई हो। इससे पहले बालदू कुछ कहता, अमरो पंडित के सामने आई और कहने लगी, "दादा! घर हम बना रहे हैं और तौहीन आप लोगों की हुई है। ये बात जंची नहीं कुछ। रही साइत–मुहूर्त की बात, तो दादा आप तो बड़े पंडत हैं। जरा बताना तो कि आज तक जिन भगवानों और देवताओं की आप पूजा करते–करवाते आए हैं, उन्हें आपने कितनी बार देखा है?"

मणिराम ने सोचा भी न था कि बालदू की बेटी इतने तीखे तर्कों से उसे चित्त कर देगी। प्रश्न ऐसा था कि मणिराम के कुछ बोलते ही नहीं बना; पर भीतर–ही–भीतर पूरी तरह जल–भुन गया। इतने में कई और लोग भी वहां चले आए।

अमरो ने अपनी बात शिष्टता से जारी रखी, "दादा! ऐसा भी नहीं है कि हमने बिना मुहूर्त और पूजा वगैरह के ही घर का काम शुरू कर दिया। पहली बात तो दादा यह है कि हम ठहरे गरीब लोग। साइत–मुहूर्त होते हैं बड़ी हवेलियों के जहां बीस–तीस कमरे हों और फिर घर भी पक्का हो। हमारा तो मिट्टी का मटकंधा है दादा। बस यूं समझ लो कि सिर ढकने के लिए छोटी–सी छत। इसके लिए क्या पूजा और क्या पाठ! पर हमने तो उस देवता–भगवान को अपने काम के लिए साक्षी बनाया है जो हमारी मेहनत की कद्र करता है और सदा हमारे साथ रहता है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इस बात पर गांव के सभी जमा हुए तमाशबीन अमरो का मुंह ताकते रह गए। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

"इस तरह हैरान होने की बात नहीं है! आप भी तो सूरज को देवता और भगवान मानते हो न। उसके लिए न कोई नीच है और न ऊंच। न अमीर है न गरीब। वह बिना हिचक सभी के पास आता–जाता है। सोचो तो जरा, अगर सूरज न हो तो न दुनिया में हम रहेंगे, न वे देवता–भगवान जिनकी आप पूजा करते रहते हैं। बस, हमने उसे ही साक्षी मानकर सुबह की शुभ बेला में काम लगा दिया।"

बालदू की बेटी की बात में कईयों को खूब दम लगा। खासकर ऐसे लोगों को जो अपनी मेहनत की खाते थे। सचमुच जंच गई उन्हें अमरो की ये बात। पर मणिराम पंडित जल–भुनकर चलता बना। पता नहीं जाते–जाते क्या–कुछ बड़बड़ा रहा था!

•

बालदू ने अपनी हैसियत के मुताबिक उन्नीस–तेरह हाथ घर की नींव रखी। और बाद में उसके साथ एक रसोई के लिए जगह निर्धारित कर दी। चारों तरफ रस्सी से नपाई की और सूत डाल दिया। अब नींव की चिनाई–भराई शुरू हो गई। बालदू नींव खोदता और बाकी के सदस्य बांस के ओडलों में मिट्टी उठाकर फेंकते। फिर पत्थर ढोकर बालदू को देते। देखते–ही देखते दो–तीन दिन में नींवों की भराई–चिनाई पूरी हो गई।

अब मटकंधों का काम शुरू होना था। बालदू ने पुराने घर के निचली तरफ अपने खेत के किनारे मिट्टी के लिए गड्ढा खोद दिया। यह मिट्टी उसे घर के लिए उम्दा लगी। इसमें हल्की चिकनाई भी थी जो कूट में ठीक बैठने के लिए अच्छी थी। अब भीत की कुटाई के लिए सामान की जरूरत पड़ी। बालदू के पास सारा सामान था, लेकिन कई सालों से वह छत पर कहीं लावारिस की तरह पड़ा था। आज उस सामान की अपने घर के लिए जरूरत थी। वह छत पर गया और सामान को ढूंढ़ने लगा। पहले लकड़ी की मुंगरियां निकालीं। उनकी लकड़ी और धार का मुआयना किया। वे बिल्कुल ठीक थीं। उन्हीं के साथ दो फले (तख्ते), एक धड़ा, बांस की पांच देवलियां और पांच ही शर रखे थे। उसने उन्हें निकाला,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झाड़ा और गौर से देखा। वह हैरान था कि उनमें किसी तरह का कीड़ा या दीमक नहीं लगा था। बांस की 'देवलों' (तीन छेदों वाली बांस की लकड़ी) के छेद भी ठीक थे। उसने छत पर ही एक देवल के छेद में शर को डालकर परखा तो वह फिट बैठ गया। सारे का सारा सामान एक–एक करके वह छत से नीचे पकड़ाता रहा। उसने बहुत पहले से ही पुराने घर की मरम्मत के लिए कुछ सामान जोड़ रखा था। उसमें चीड़ और चूली की कड़ियां और कातियां थीं। कुछ खैर के पेड़ों की लकड़ी भी थी जो खिड़कियों के ऊपर शल्दर लगाने के काम आ सकती थी।

खिड़की–दरवाजे बनाने के लिए लकड़ी की अभी भी जरूरत थी। उसने अपने एक पुराने साथी मिस्त्री से इस बाबत बात की तो वह इन चीजों को बनाने–देने के लिए राजी हो गया। होता भी क्यों न, बालदू ने ही उसे लकड़ी का मिस्त्री बनाया था और दोनों कितने ही दिनों साथ–साथ काम करते रहे थे। उस मिस्त्री ने अब गांव के बस अड्डे पर ही एक छोटा आरा लगा लिया था और मिस्त्री के काम का सारा आधुनिक सामान रख लिया था। इसलिए उसका धंधा खूब फल–फूल रहा था। बालदू के लिए वह सचमुच भगवान की तरह प्रकट हुआ था। उसने हालांकि कभी ऐसी उम्मीद नहीं की थी कि कोई उसकी इतने खुलेदिल से सहायता कर देगा।

अब भीत की भराई–कुटाई शुरू हो गई। बालदू ने पांच हाथ लम्बे दोनों तख्तों के एक सिरे पर मिट्टी की रोक के लिए धड़ा लगाया। नींव के ऊपर तख्तों के नीचे से लकड़ी की देवलियां लगाकर ऊपर से भी उतनी ही डाल दीं। उसके बाद दोनों तरफ से उनके छेदों में शरों को डालकर तख्तों को अच्छी तरह कस दिया। अमरो मिट्टी खोदती और चाची तथा दोनों बच्चे ढुलाई का काम करते। जैसे ही पहला टोकरा तख्तों के बीच रामेशरी ने गिराया, बालदू ने सूर्य देवता और अपनी कुलदेवी को माथा टेककर पहली मुंगरी मिट्टी में जोर से मारी। धम्म की आवाज हुई और फिर रामेशरी ने भी मुंगरी संभालकर कुटाई शुरू कर दी। देखते–ही–देखते पहला मिट्टी का भीत कूटकर तैयार हो गया। बालदू ने तख्तों को खोला तो मिट्टी के उस भीत की सफाई देखता ही रह गया। बहुत अच्छा बना था।

पहले दिन वे सभी अकेले ही काम करते रहे; लेकिन दूसरे दिन जैसे ही काम शुरू हुआ तो गांव की दो–तीन औरतें हाथ में मुंगरियां लेकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उनके पास पहुंच गई। बालदू और रामेशरी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्हें पुराने दिन याद आ गए थे। जब किसी का मिट्टी का घर बनता तो बारी–बारी गांव के सभी लोग मिट्टी कूटने, ब्वारी (मदद) करने आ पहुंचते। पता भी न चलता कि कब मटकंधे कूटकर छवाई के लिए तैयार हो जाते। आज कुछ ऐसा ही आभास बालदू को हुआ था। उसकी आंखों में अनायास पानी भर आया। इसलिए भी कि उसने आज के इस समय में इस तरह के सहयोग की कतई उम्मीद नहीं की थी। सोचा कि शायद कुछ अपनापन गांव में बचा है। या फिर बालदू और उसके परिवार ने जो कुछ सहायता दूसरों की की थी, उसकी कमाई का ही यह फल था।

•

बालदू के घर के भीत जब जमीन से ऊपर उठने लगे तो चौधरी हरिसिंह और उसके बेटे के कान खड़े हो गए। कहां तो वे उसको बर्बाद करने के मनसूबे तैयार कर रहे थे और कहां उसने आज उनकी छाती पर मूंग दलने का काम कर दिया! बालदू का घर चौधरी की बेड़ से काफी दूर था; पर आंगन–दरवाजे से वह सामने दिखाई देता था। भीत कूटने और मिट्टी–पत्थर की आवाजें सीधी आकर चौधरी के कानों में टकरा जाती थीं। उसे लगता था कि मिट्टी की मुंगरियां उसकी छाती पर पड़ रही हैं।

बालदू के घर और वहां हो रहे काम की पल–पल की खबर रोज कोई–न–कोई चौधरी को दे देता था। एक दिन चौधरी से रहा नहीं गया और सीधा बालदू के घर पहुंच गया। उसका पूरा परिवार घर के काम में व्यस्त था। खलिहान की मुंडेर पर बैठे–बैठे चौधरी ने बालदू पर ताना कसा, "मान गए रे मिस्त्री तेरे को! दो जून रोटी के लाले पड़े हैं। बेटी बांस की तरह ऊंची हो रही है और तेरे को महल बनाने की सूझ रही। क्या बात है बई मिस्त्री...!"

यह कहते हुए चौधरी ने खुद ही जोर का ठहाका लगा दिया। चौधरी को बैठे देख अब दो–चार चमचे भी उसके इधर–उधर खड़े हो गए। किसी के हाथ में दराट था जो घास–पत्ती को जा रहा था, किसी की पीठ पर किल्टा था जो अपने खेत में गोबर फेंककर आ रहा था तो कोई कंधे पर पट्टू की बुक्कल मारे ऐसे ही मजा लेने चला आया था। चौधरी की अब हिम्मत बढ़ गई थी; पर बालदू और रामेशरी का रोम–रोम गुस्से से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कांप रहा था। एक मन किया कि मुंगरी से चौधरी की खूब कुटाई कर दे; पर मुश्किल से अपने मन को संयत किया। इसमें भी अमरो का ज्यादा हाथ था। उसने अपने साथ मां और पिता को भी शांत रहने के लिए कहा था।

चौधरी ने फिर मन की भड़ास निकाली, "अरे मिस्त्री! ये मिट्टी–विट्टी के घर तो पुराने जमाने की बातें हैं। मेरे को बोलता तो सरिया–सीमेंट के ढेर लगा देता। तू तो जानता है मेरा लड़का इंजीनियर है। विदेश से पढ़–लिखकर आया है। बीसियों मकान बना दिए हैं उसने। फिर तेरा तो एक–आध कमरे का था। बोलता तो रात–रात को चिण–चुण के किनारे कर देता। भई रही पैसे की बात, तो तेरे से पैसे थोड़े ही लेने थे। गांव–बेड़ में इतणा मान तो होता ही है। बस बदले में रामेशरी और अमरो को म्हारे खेत–खलियाण में काम करने लगाए रखता।"

इस पर बालदू ने आपा खो दिया था और किसी को पता नहीं चला कि मिट्टी कूटने की मुंगरी कब उसने चौधरी पर फेंक दी। किस्मत अच्छी थी कि चौधरी के सिर पर नहीं लगी। लगती तो वहीं ढेर हो जाता। मुंगरी चौधरी के साथ एक पेड़ में टकराई और खेत में गिर गई।

चौधरी ने कभी सोचा भी न था कि ऐसा कुछ घट जाएगा। जितने में बालदू नीचे उतरता, चौधरी के साथ उसके चमचे भी वहां से छू–मंत्र हो लिए। अमरो और रामेशरी ने मुश्किल से बालदू का गुस्सा शांत किया था। वह अभी भी आंगन में हांफ रहा था। अमरो ने झटपट भीतर से पानी का लोटा लेकर उसे दिया तो वह खड़े गले पूरा गटक गया। थोड़ा सहज हुआ तो बेटी ने समझाना शुरू कर दिया, "देख बापू! इतना गुस्सा नी करते। ये हरामी तो चाहता ही है कि हमारे काम में कुछ–न–कुछ अड़चन पड़े। सोच बापू! कहीं उसके सिर पर मुंगरी लग गई होती तो लेने के देने पड़ जाते। कुत्ते हैं साले, भौंकते रहते हैं। चल ऊपर चल, काम बहुत है करने को।"

बिटिया की सलाह उसके मन को छू गई थी। उसे अहसास होने लगा था कि कहीं सच में कुछ बुरा घट जाता तो वह कहीं का नहीं रहता। क्या करते उसके बच्चे?

इस बात की चर्चा पूरे गांव में हो रही थी। यह तीसरा अवसर था जब चौधरी जैसे नामी–गिरामी आदमी को बालदू के परिवार से फटकार मिली हो। पहले रामेशरी ने उसकी ऐसी–तैसी की थी और आज बालदू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ने रही–सही कसर खो दी। चौधरी तो पागल–सा हो गया था। उसने बहुत कोशिश की कि बालदू के काम पर कोई ब्वारी करने न जाए; पर इसका उलटा असर गांव में देखने को हुआ। पहले दो–तीन औरतें सहायता के लिए आया करतीं; पर अब तो हर घर से बारी–बारी रोज कोई–न–कोई चला आता और देखते–ही–देखते काम निपटता रहता।

•

बालदू ने इस घर को पहले बने मकानों की तरह नहीं बनाया। इसका जो आकार बना, वह कलात्मक था। उसने उसके लिए मिट्टी के खपरे तैयार करने के लिए खूब लकड़ियां इकट्ठी कीं और घर की छत के मुताबिक जब सांचे में मिट्टी के खपरे तैयार हुए तो उन्हें भट्टी में पकाने रख दिया। पूरे पन्द्रह दिन बालदू के घर के पिछवाड़े भट्टी जलती रही। जब आंवा ठंडा हुआ तो खपरे पक गए। बाहर निकाले तो उसकी पत्नी और बेटी हैरान रह गए। उन्होंने इतनी कारीगरी से बने खपरे पहले कहीं देखे ही नहीं थे। बालदू ने जंगली जड़ी–बूटियों को इकट्ठा कर खपरों के लिए एक हल्के गेरूई रंग का घोल तैयार किया और उससे उन्हें रंग दिया जिससे उनकी शक्ल ही संवर गई। आंगन में खपरों की कतारें देखकर अब रोज गांव–परगने से कोई–न–कोई वहां आता और पूछता कि बालदू ने इन्हें कहां से खरीदा है! तो वे सभी हंस देते।

बांस बालदू के अपने खेत में था। उसने उनकी कनातें काटीं और तैयार कर लीं। पुराने घर के छत से भी काफी लकड़ियां निकली थीं जिनका घर की छवाई के लिए बांस के साथ उपयोग किया गया। बांस–लकड़ी की कड़ियों और बत्तों से जब बारीक छत गूंथा गया तो उस पर खपरों की छवाई का काम शुरू हो गया। यह काफी बारीक और मेहनत का काम था जिसे तीन–चार दिनों में पूरा कर लिया गया।

बालदू की बिरादरी का एक आदमी था जिसकी उम्र तकरीबन पचहत्तर साल की थी; लेकिन चेहरे पर नूर ऐसा था मानो अभी पचपन–साठ का होगा। एक जमाने में वह बांस का ऊंचे दर्जे का कारीगर था जिसके पास गांव–परगने से तो लोग बांस की टोकरियां, किल्टे, अनाज के लिए भलोटियां इत्यादि बनवाने आते ही थे, दूरदराज के इलाकों से भी लोग उसके पास आया करते थे। लेकिन समय के साथ न बांस के बर्तनों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की लोगों को जरूरत रही और न ही उसकी कारीगरी काम आई। अमरो उसका बहुत आदर करती थी और दादा कहकर पुकारती थी। बालदू को इस बात का इल्म ही नहीं हुआ कि वह कब आंगन में आकर बांस का काम करने लग पड़ा। अमरो ने जब उसके पास घर के लिए नए तरीके से लोहे की जालियों की जगह बारीक बांस से जालियां बनाने का प्रस्ताव रखा तो उसकी खुशी का पारावार न रहा। नए मकानों में लोग अक्सर पल्लों वाली खिड़कियों के बाहर मक्खी–मच्छर के बचाव के लिए जालीदार पल्ले लगाते थे, इसलिए अमरो ने यह नई तरकीब निकाली थी। छज्जे के लिए लकड़ी नहीं थी और इतने पैसे भी नहीं थे कि लोहे की चादर खरीदी जाती। घर के चारों ओर बने छज्जे में लकड़ी व टीन की चादर के बजाय बांस का छज्जा बनाया गया जिसने घर को चार चांद लगा दिए। घर के भीतर भी जो छतें कमरों में डाली गईं, वह भी बांस की ही कारीगरी से बनाई गई थीं।

बालदू ने अब लेवी–पलस्तर का काम शुरू कर दिया था। बारीक मिट्टी छानकर उसमें मूंज नामक एक विशेष तरह की घास बारीक काटकर मिलाई थी जो मिट्टी के गारे की पकड़ को कई गुना बढ़ा देती थी। बाहर–भीतर के मटकंधे उससे इतनी सफाई से तैयार हुए जिसके आगे सीमेंट के पलस्तर के मायने भी कुछ नहीं रह गए थे। अमरो ने भी अपनी कलाकारी खूब दिखाई थी। उसने लकड़ी के मिस्त्री से घर के खिड़की–दरवाजों पर बांस का गजब का काम करवाया था। आंगन में चारों तरफ फूल की क्यारियां अमरो ने खुद बनाई थीं। वह कल्पना करने लगी कि जब इनमें फूल खिलेंगे तो इस घर की शोभा और भी बढ़ जाएगी।

इसी बीच शहर से आकर एक–दो पत्रकार भी बालदू का घर देख गए थे और उसके चित्र भी खींचे थे। बालदू और उसके परिवार की समझ में यह नहीं आया था कि वे यहां कैसे पहुंच गए और उन्होंने घर के फोटो क्यों खींचे थे? उन्होंने अमरो से भी लम्बी बातचीत की थी। एक फोटो उसका और साथ बालदू का भी खींचा था।

आज घर बनकर पूरी तरह तैयार हो गया था। वे सभी देर रात तक काम करते रहे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

•

सुबह होते ही गांव में दो बातें हुईं। पहली यह कि भोर का सूरज जैसे बालदू के घर पर ठहर गया हो। दूसरी यह कि बालदू के घर का फोटो अखबार के पहले पन्ने पर छपा था। दिन की बस खराब होने के कारण गांव में अखबार दोपहर को नहीं पहुंची थी। रात की बस में अखबारें थीं। इसलिए छोटे चौधरी की अखबार ऐन तड़के एक लड़का दे गया था। वह अखबार लेकर भीतर से आंगन में आया तो उसकी नजर खेतों के बीच बालदू के मकान पर पड़ी। उसकी आंखें चौंधिया गईं। लगा जैसे कांच की हजारों बारीक किरचें आंखों में घुस गई हों। उसने कंधे पर रखे तौलिए से आंखें मलीं और कई बार झपकाईं। फिर हाथ में पकड़े अखबार को सामने किया और भौंचक्क रह गया। पहले ही पृष्ठ पर बालदू के घर का फोटो देखकर हैरान–परेशान! जैसे अंधा और बहरा हो गया हो। दिमाग ने सोचना–समझना बंद कर दिया। बस यही बात परेशान करती रही कि खेतों के बीच से बालदू का घर अखबार पर कैसे चिपक गया!

चौधरी ने अपने लड़के को आंगन के बीच ठूंठ की तरह खड़े देखा तो उसका सिर भन्नाया। भागकर पास आया तो उसकी शक्ल देखकर परेशान हो गया। चेहरा पसीने से भीगा हुआ था और आंखों में ढलती शाम की लालिमा उतर आई थी। वह एकटक सूरज की तरफ देख रहा था। पसीने की बूंदें गालों और मुंह पर उगी हल्की काली दाढ़ी के बीच इस तरह चू रही थीं मानो चूल्हे पर रखे तम्बिये से पानी उबलकर नीचे सरक रहा हो। दाएं हाथ की मुट्ठी में बुरी तरह भींचा अखबार ऐसे लग रहा था जैसे सांप ने चूहे को अपने जबड़े में दबा रखा हो। चौधरी को उसके पूरे शरीर में इस तरह की कम्पन महसूस हुई जैसे किसी देव पंचायत के दौरान मुख्य गूर के शरीर में देवता का प्रवेश हो रहा हो। उसने छोटे चौधरी को कई बार झिंझोड़ा। फिर ठिठक गया। दोबारा चेहरे पर नजर डाली तो सोचा कि वह बाबा रामदेव का कोई सूरज वाला प्राणायाम कर रहा है।

चौधरी ने ध्यान से सामने देखा और हतप्रभ रह गया। बालदू का नया बना घर चमक रहा था। उसे लगा जैसे आज का सूरज पूर्व की पहाड़ियों से नहीं; बल्कि बालदू की खपरैल के बीच से उग रहा हो। वह भी उसी मुद्रा में जड़ हो गया। उन दोनों को इस तरह आंगन में बुत की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तरह खड़े देख एक–एक करके परिवार के सदस्य उनके पास पहुंचे और उन जैसे हो गए। कुछ देर बाद बाप–बेटा जैसे नींद से जागे। दोनों ने अपनी आलीशान कोठी की तरफ देखा... फिर दूर–दूर तक छोटे चौधरी ने अपने बनाए मकानों को याद किया... उस मिट्टी–गोबर और खपरैल से बने बालदू के घर के आगे वे सभी बौने लग रहे थे। उसके गुस्से और अपमान की कोई इंतिहा नहीं रही। उसने अखबार को दोनों हाथों के बीच पूरे जोर से मसला और लाइटर से आग लगा दी, मानो बालदू के घर को जला दिया हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेजुबान दोस्त

किशन एक पहाड़ी लड़के का नाम

किशन की आदतें समझ से परे हो गई हैं।

उसके अम्मा–बापू और दादू उसको लेकर काफी परेशान रहते हैं। वह घर का इकलौता बेटा है। उसकी ऊल–जुलूल हरकतों से घर के ही नहीं, गांव–परगने तक के लोग परेशान रहते हैं। इसी वजह से उसकी पढ़ाई–लिखाई भी नहीं हो पाई है। जब वह दूसरी कक्षा में था तो उसकी क्लास के एक बच्चे ने गुलेल से एक चिड़िया मार दी थी। बस फिर क्या था! किशन पगला गया। उसने बच्चे को खूब पीटा और फिर उसी की गुलेल से उसकी एक आंख फोड़ दी। किशन को खूब मार तो पड़ी ही, स्कूल से भी निकाल दिया गया। गांव के बच्चे भी उस घटना के बाद उसके साथ कभी नहीं खेले। इस अकेलेपन ने उसे कई दिनों तक निराश –हताश किए रखा। लेकिन धीरे–धीरे उसका लगाव पशुओं और पक्षियों से होने लगा। मौसमों से होने लगा। बादलों से होने लगा। पेड़ों और झाड़ियों से होने लगा। घाटियों और धारों से होने लगा। तितलियों से होने लगा।

किशन अब नौ बरस का हो गया है। पर उसका जिस तरह का पहनावा है, उससे उसकी उम्र का अंदाजा लगाना मुश्किल है। मां–बाप ने शायद ही कभी नया कपड़ा उसे सिलाया होगा। वैसे अब उसे कपड़े देने की जरूरत भी नहीं पड़ती। गांव का कोई–न–कोई आदमी उसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ–न– कुछ दे दिया करता है। इसलिए कभी उसके बदन पर उसके नाम का कपड़ा नहीं होता। वह हमेशा लम्बा बंद गले का कुरता पहने रहता है। उसके ऊपर एक पुरानी सदरी। नीचे फटी–पुरानी जीन की पेंट। एक झोला भी वह हमेशा कंधे पर टांगे रहता है। उसके बाल बेतरतीब से माथे और आंखों पर बिखरे रहते हैं। बालों में भीतर तक धंसे–फंसे चील के नुकीले चिलारू बाहर आने को बेताब। लम्बे बालों के नीचे कानों का कोई अता–पता नहीं। गोल–मटोल मुंह और छोटी नुकीली–सी ठोड़ी। नाक माथे की तरफ हल्का–सा तना हुआ। उसका ऊपर वाला होंठ दाएं तरफ से कटा हुआ है जिससे आगे के दो दांत हमेशा बाहर झांकते रहते हैं। कई लोग इसी कारण उसे खंडु कहकर भी पुकारते हैं। उसके होंठों पर हमेशा एक हल्की–सी मुस्कान तैरती रहती है। उसके मन में जो कुछ चलता रहता होगा, शायद यह उसी की चमक है जिसका नूर उसके चेहरे पर कोई भी देख सकता है। सदरी और कुरते की जेबों में कुछ–न–कुछ भरा रहता है। किसी मैं नमक तो किसी में बासी रोटियों के टुकड़े। किसी जेब में चावल तो किसी में जंगल के करूंदु–बेर। पांव में कभी एक तरह के जूते नहीं होंगे। एक में चप्पल तो दूसरे में प्लास्टिक का जूता। कभी वह नंगे पांव ही चला रहता है।

किशन तो जनम का चरवाहा था

स्कूल से हटने के बाद किशन कई दिनों तक घर पड़ा रहा। कुछ दिनों के बाद उसे घर वालों ने पशुओं को चुगाने का काम दे दिया। धीरे–धीरे गांव के कुछ और लोगों ने भी उसे यह जिम्मा सौंप दिया था। एक साल के भीतर ही वह पशु चुगाने में पारंगत हो गया। उनके साथ उसका खूब मन भी लगने लगा था।

गांव के किसानों के कई गाय–बैल इतने बिगड़ैल थे कि खूंटे से खुलते ही पखले को सींग से मारने उनके पीछे भाग जाते। पर मजाल है कि किशन के साथ कभी ऐसा हुआ हो। कोई बैल या दूसरा पशु कितना ही सींगमार क्यों न होता, किशन को देखकर ऐसे सहज हो जाता जैसे वह उसी का पाला हो। यही नहीं, गांव के खूंखार किन्नौरी कुत्ते जो हमेशा काटने के डर से बंधे रहते, किशन को देख उनकी आंखों में प्यार–सा उमड़ पड़ता। अब तो वह जिस बैल, कुत्ते, भेड़–बकरी या बिल्ली तक को प्यार से बुलाता, वे उसके पास चले आते और किशन उनसे बतियाता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहता। उसके घर में दो बैल, तीन गाय और कुछ भेड़–बकरियां थीं। उनका तो वह जैसे सगा हो गया था। गाय कभी दूध न देती और बिगड़ जाती तो उसकी अम्मा किशन को बुला लिया करती। किशन जैसे ही गौशाला की दहलीज पर जाता, गाय चुपचाप दूध देने लग जाती। घर वालों को उसकी हरकतों पर कई बार अचरज भी होता। गांव के बच्चे और बड़े अब घर–बाहर या खेत–खलिहान में यह ध्यान रखते कि किसी जानवर या पक्षी को किशन के सामने न भगाए या मारे। यदि किशन ने ऐसा करते देख लिया तो उसकी खैर नहीं। वह किसी को कुछ भी कर सकता था। यहां तक कि उसके सामने अपने पशुओं या कुत्ते तक को कोई फटकार नहीं लगा सकता था।

घर के आंगन में जितने भी पेड़ थे, उन सभी पर किशन ने छोटे –छोटे पौ लगा रखे थे। जंगल में वह जहां पशुओं को चुगाने जाता, वहां भी कई पेड़ों की टहनियों पर उसने कुछ–न–कुछ टांगा होता जिनमें वह रोज पानी डाल दिया करता। देर–सवेर सभी पक्षी उनसे पानी पीते। वह खुद बावड़ी और नल से पानी लाता और पौ में भरता रहता। छत पर उनको बासी रोटियां डालता। जौ डालता। चावल डालता। अब तो वह किसी भी घर में मांगने भी चला जाता था। जानता था कि कुत्ते या पक्षियों का रोटी–दाना उसके घर में ज्यादा नहीं होता, इसलिए वह गांव में घूमता और लोग उसके झोले में रात की बची रोटियां डाल देते। कुछ दाने डालते तो कुछ चावल डाल देते। पहले गांव वालों को भी उसकी आदतें समझ नहीं आती थीं, लेकिन धीरे–धीरे उसके बावलेपन से उन्हें प्यार होने लगा और उसे अनाज देना उन्हें अब अच्छा लगने लगा था।

इतना ही नहीं, जब वह अपने पशुओं को लेकर जंगल जाता तो दूसरे पशु भी उसके झुण्ड में चले आते; जबकि गांव के पशु एक–दूसरे से इतनी इरख रखते कि देखते ही लड़ जाया करते। पर किशन को देखते वे ऐसा नहीं करते। पशु जब चरते रहते तो वह तितलियों के पीछे भागने लगता। तितलियां भी उसके चारों तरफ इकट्ठी हो जातीं, जैसे वह किशन न होकर कोई वनफूल हो। कई बार तो छोटे–छोटे हिरनों और खरगोशों को भी लोगों ने उसके आसपास मंडराते देखा था। पता नहीं उसके पास ऐसा क्या जादू था! कोई नहीं जानता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'नयातोड़' की ज़मीन और फैक्ट्री का लगना

किशन का परिवार बहुत गरीब था। सरकार की तरफ से बड़ी मुश्किल से उन्हें पांच बीघे का नयातोड़ तो मिला था; पर उसके साथ सीमेंट फैक्ट्री लगने के बाद उस ज़मीन पर खतरे के बादल मंडराने लगे थे। इस नयातोड़ की ज़मीन भी फैक्ट्री की हदों में गिनी जाने लगी थी जो सरकार ने कम्पनी को लीज़ पर दे दी थी। इसके साथ कम्पनी ने कई दूसरे जमींदारों की ज़मीनें भी खरीदनी शुरू कर दी थीं। पहले सभी ने पुरजोर विरोध किया था; लेकिन धीरे–धीरे सब ठंडा होता चला गया। कारण, पंचायतों के कुछ प्रधान और बड़े जमींदार थे, जिन्होंने चुपके–चुपके कम्पनी वालों से समझौता कर लिया था और अपनी थोड़ी–थोड़ी ज़मीनों का करोड़ों रुपए वसूला था। कम्पनी के लिए यह पैसा देना इसलिए नहीं दुखा कि इसी बहाने वे पंचायतों में बसे गांव–गांव तक पहुंचने शुरू हो गए थे। जिन किसानों के पास थोड़ी ज़मीन थी और रोजी–रोटी के कोई बड़े साधन नहीं थे, उनके लिए कम्पनी का विरोध करना सूरज के सामने दीया जलाना था। इसलिए मजबूरन उन्हें भी अपनी ज़मीनें देनी पड़ी थीं। इनमें कुछ ऐसे भी सिरफिरे थे जिन्होंने अपने बाप–दादाओं की ज़मीनें बेच दी थीं। ये बिचौलिए किस्म के लोग थे। पहले–पहल मेहनत–मजदूरी किया करते थे; लेकिन जमीन बेचकर पैसे मिलने का ऐसा चस्का पड़ा कि अपने पास सिर ढकने तक जगह न बची। ऐसा नहीं था कि उन्हें पैसा अच्छा नहीं मिला था; पर वे कम्पनी और बड़े जमींदारों के मायाजाल में फंसते चले गए और किसी को कानों–कान भनक तक न लगी थी। उनकी ज़मीनों और घासणियों को बिकवाने का काम बिचौलियों ने ही किया था। उन लोगों ने अपनी ज़मीनों के तो अच्छे पैसे वसूले ही थे; पर साथ जिन्हें ज़मीन बिकवाने के लिए राजी किया था उसके एवज में भी कम्पनी से लाखों की कमीशन खा गए थे।

जो लोग समझदार थे, उन्होंने कम्पनी से मिले पैसों से अच्छे मकान बना लिए और दूसरी जगहों पर ज़मीनें भी खरीद ली थीं। परन्तु कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्हें बैठकर पैसा बरबाद करने की आदत पड़ गई थी। वे या तो जुए में पैसे गंवा देते या दिन–रात शराब पीकर मस्त रहते। बसों में बैठते तो पैसों की ठीस मारकर दूसरे यात्रियों को परेशान करते। दूकानों में हुड़दंग मचाते। घरों में बच्चों–बीवियों को मारते–पीटते रहते। काम कुछ नहीं करते थे। सारा–सारा दिन किसी घर के लैंटर या किसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दूकान के बरामदे में बैठकर दारू छकते रहते और ताश की चौकड़ियां भी लगी रहतीं। यानी देखते–ही–देखते फैक्ट्री के साथ लगी पंचायतों के गांव का माहौल ही बदल गया था। कुछ गिने–चुने लोग जो ज़मीन से मिले पैसे से तरक्की करना चाहते थे, वे भी कुछ दिनों में नंगे हो गए थे। उन्हें कम्पनी के अफसरों ने कई तरह के लालच में फंसा दिया था। कम्पनी की तरफ से अच्छा–खासा कर्ज देकर उनसे ट्रक खरीदवाए थे। व्यापार का ज्यादा अनुभव न होने की वजह से वे बेचारे कर्जे की किश्तें भी पूरी नहीं लौटा पाए। जो ट्रक उन्होंने लिए थे, वे भी एक ऐसी कम्पनी से लिए गए जिनमें पुराने और सैकेंड हैंड पुर्जे थे। इसलिए वे दो–चार चक्कर लगाकर हर कहीं खड़े हो जाते। फिर उनकी मरम्मत भी कम्पनी के द्वारा बताई वर्कशॉपों पर होती रहती। दूसरे, उनमें रखे ड्राइवर और कंडक्टर ही ज्यादा पैसा खा जाते और मालिकों को हमेशा घाटा ही बताते। इस तरह कईयों के तो दीवाले निकल गए थे; लेकिन कम्पनी का काम दिनों–दिन बढ़ रहा था।

कम्पनी के पीछे सरकार थी। उनके मन्त्री थे। बड़े अफसर थे। इसलिए जब कभी कहीं भी विरोध के स्वर उठते तो वे बिना सुनवाई के दब जाते। इलाके के थाने उनके थे। प्रधान, सैक्रेट्री उनके थे। इंसपेक्टर उनके थे। पटवारी–तहसीलदार उनके थे। यहां तक कि इलाके का विधायक भी कम्पनी का होकर रह गया था।

जिन किसानों ने ज़मीनें नहीं दी थीं, उनकी मुसीबत भी कम नहीं थी। सीमेंट के लिए जिस पहाड़ी से पत्थर जाता, वहां दिन–रात ब्लास्ट होते रहते। उनसे कई मकानों में दरारें आ गई थीं। कुछ मकान तो गिर ही गए थे। मुआवजे के नाम पर किसानों को आधी रकम भी नहीं मिल पाती थी। कईयों के तो चक्कर लगते रहते और उतने में मकान गिर जाता था। लोग रात को सो नहीं सकते थे। दिन को खेतों में काम नहीं होता था। कभी दिन को भी ब्लास्ट होते तो खेतों को बाहते–बाहते बैल खोलने पड़ते थे। औरतों को घास काटते–काटते खाली लौटना पड़ता था। आसपास के स्कूलों में बच्चों का पढ़ना दूभर हो गया था।

सरकार यह दावा भी करती नहीं थकती थी कि उस सीमेंट फैक्ट्री में अधिकतर कामगर स्थानीय ही हैं; लेकिन सच्चाई यह थी कि किसी भी बड़े काम में वहां का कोई व्यक्ति नहीं था। जो कुछ गिने–चुने थे, वे पत्थरों की खानों में मजदूर का काम करते थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस छोटी–सी नदी का गुम होना

उधर कम्पनी ने अपनी एक अलग तरह की छवि बना ली थी। साथ की पंचायतों में वे खूब दान करते। कई परिवारों की बेटियों के ब्याह तक के खर्च स्वयं वहन करते। स्कूल के भवनों को बनवाते। जगह–जगह पानी के नल और हैंडपम्प लगवा देते। मन्दिरों की मरम्मत करवाते। सराय बनवाते। देवताओं की जातरा और मेले करवाते। यानी ऐसे तमाम कार्य जिनसे उनकी छवि धर्मात्मा, समाज–सुधारक की बनी रहे; वे निरंतर करते रहते। यहां तक कि शहरों में बड़े–बड़े सांस्कृतिक आयोजनों को वे ही पैसा देते। उन्हें स्पांसर करवाते। पर्यावरण दिवस पर तो वे ज्यादा ही सक्रिय रहते। करोड़ों रुपए खर्च कर देते क्योंकि वे जानते थे कि फैक्ट्री लगाने से पहले पूरे प्रदेश में पर्यावरण प्रदूषित होने के डर से उनका विरोध होता रहा था। इसी मुद्दे के चलते उन्हें कई सालों तक स्वीकृति नहीं मिली थी। लेकिन जैसे–कैसे उन्होंने उसे हासिल कर लिया था। इसलिए इस दिवस को वे विशेष तौर पर मनाते। इस दिन सारे कार्यक्रमों पर खर्च कम्पनी ही करती। वे हजारों सफेद–हरी टोपियां और टी–शर्ट्स बनवाते और लोगों के साथ सभी बच्चों को भी बांट देते।

भीतर की बात यह थी कि जिस इलाके में फैक्ट्री लगी थी, उसके आसपास धूल–मिट्टी से लोगों का जीना दूभर हो गया था। खेतों में फसलें पहले जैसी नहीं उगतीं। घर–आंगन धूल से सने रहते। दिन को फैक्ट्री की चिमनियां खामोश रहतीं; पर आधी रात के बाद वे धुआं उगलना शुरू कर देतीं और चार बजे सुबह तक आसमान धुएं के बादल से घिर जाता। लोगों की समझ में यही आता कि आसमान में बादल छाए हैं। जिसे पता भी होता, वह भी क्या कर लेता!

फैक्ट्री के साथ नीचे एक पहाड़ी नदी बहती थी, जिसमें बारह महीने पानी रहता था। उससे कई पंचायतों के घरों को पानी जाता था। कई सौ बीघे ज़मीनें सींची जाती थीं। अधिकतर क्यार उसी के किनारे थे, जिनमें लोग धान और हरी सब्जियां उगाया करते। लेकिन देखते–ही–देखते वह नदी ही गायब हो गई थी। लोगों की आंखों में धूल झोंकने के लिए कम्पनी की तरफ से कई विशेषज्ञ बुलाए गए लेकिन उन्होंने प्राकृतिक रूप से नदी सूखने के ही तर्क दिए। लोगों के पास विश्वास करने के सिवा चारा भी क्या था! लेकिन सच्चाई यह थी कि लगातार ब्लास्टों से नदी के स्रोत ही नीचे धंस गए थे। फिर जो लम्बी सुरंग कम्पनी फैक्ट्री तक पत्थरों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
की सप्लाई के लिए खोद रही थी, उस नदी का बहाव उन्होंने भीतर–ही–भीतर उसकी तरफ मोड़ लिया था। हालांकि उसमें पहले जैसा पानी नहीं रहा था; लेकिन गुजारे लायक तो था ही।

सुरंग और अनुष्ठान की तैयारी

कम्पनी ने जहां फैक्ट्री लगाई थी, उससे पत्थर की खानें बहुत दूर थीं। इसलिए वहां तक पत्थर–मिट्टी पहुंचाने के लिए एक लम्बी सुरंग बनाना जरूरी था।

सुरंग की खुदाई का जब काम शुरू हुआ तो कम्पनी के नाक में दम भर गया। उनके मजदूर जितना मलबा खोदते, उससे दुगुना हर सुबह वहां पड़ा मिलता। सुरंग के निर्माण में कोई भी स्थानीय मजदूर नहीं था। एक दिन मलबे के नीचे कई मजदूर दबकर मर गए थे; पर किसी को कानों–कान खबर नहीं हुई। कम्पनी के अफसरों ने उनकी लाशों को भी इतनी सफाई से ठिकाने लगाया कि किसी को कोई अता–पता नहीं लगा। इसलिए सुरंग का काम सुचारू रूप से चले, उनके एक ज्योतिषी ने काम का दोबारा शुभारम्भ पांच जीव बलियों से करने का उपाय सुझाया था। इस महा बलि–अनुष्ठान में एक बच्चा, एक बकरा, एक मुर्गा, एक भैंसा और एक मोर चाहिए था। हालांकि यह बात खुले तौर पर किसी को भी पता नहीं थी; लेकिन उन्हीं में से एक मजदूर ने कहीं शराब पीकर यह उगल दिया था। बच्चा लाना बहुत कठिन था। इसलिए कम्पनी वालों को यह बड़ी मुसीबत खड़ी हो गई थी। वे उसके लिए कोई भी कीमत दे सकते थे। यह बात उन्होंने अपने विश्वासपात्र पंडित मणिराम को बताई थी और साथ लाखों रुपए देने का भी लालच दे दिया।

कम्पनी जब भी कोई धार्मिक आयोजन या पूजा–पाठ करती तो पंडित मणिराम को ही बुलाया करती थी। उसे पैसा भी अच्छा–खासा मिल जाया करता। वह उनका बेहद विश्वसनीय आदमी बन गया था। देखते–ही–देखते उसका दोमंजिला पक्का मकान बन गया था। उसके बड़े बेटे के पास दो छोटी गाड़ियां और एक ट्रक भी आ गया था। जिस घर में कभी रोटी के लाले पड़े रहते, वह रात–रात में इतनी तरक्की कर जाए, इसका तो भगवान ही मालिक! उसके कम्पनी के अफसरों से संबंधों की खूब चर्चा रहती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंडित कई दिनों तक इसी पसोपेश में रहा कि क्या किया जाए? अचानक उसे किशन का ख्याल आया। वह अकेला ही सारा–सारा दिन पशुओं के पास रहता था। पंडित मणिराम ने यह कार्य किशन के गांव के एक विश्वासपात्र बिचौलिए को सौंपा था ताकि उसे किसी अनहोनी की भनक तक न लगे। किशन को दिलासा दिया गया था कि उसे पूजा में बैठना है जिसके लिए उसे खूब रुपए दिए जाएंगे। उसे यह भी समझाया गया कि वह इस बात को किसी को न बताए। किशन को बड़ी मुश्किल से मनाया गया था। वह सुबह जैसे ही पशुओं के पास गया, वह आदमी उसे अपने साथ ले गया। उसे नए कपड़े दिए गए। नहलाया–धुलाया गया और एक ऐसी जगह रखा गया जो निपट अंधेरी थी। किशन वहां अकेला नहीं था। उस जगह एक मोर, एक मुर्गा, एक बिल्ली भी बांधकर रखे गए थे। किशन उनको देखकर हैरान–सा रह गया। उसे देखकर वे आजादी के लिए छटपटाने लगे थे। उसे वहां अब कुछ अजीब–सा लगने लगा था। उसने वहां रखी नंगी तलवारें भी देखीं जिन पर खून के निशान पहले से मौजूद थे। उनमें सिंदूर और मौली बंधी थी। किशन अब घबरा गया था। वह भागना चाहता था और साथ ही उन जानवरों और पक्षियों को भी आजाद करवाना चाहता था।

देर रात जब उसे लेने लोग आए तो वहां न किशन था और न दूसरे जानवर। पंडित मणिराम को तो जैसे काठ मार गया। कम्पनी के अफसरों में भी हड़कम्प मच गया था। उन्होंने बहुत पीछा किया; लेकिन जंगली रास्तों का वह अच्छा–खासा वाकिफ था जिससे वह बच गया। दूर आकर उसने वह रात एक अंधेरी गुफा में काटी थी। उसका गांव वहां से दूर था इसलिए दूसरे दिन शाम तक भी वह गांव नहीं लौटा था। दूसरे, उसे कम्पनी के लोगों का भय भी था कि वे उसे पकड़कर दोबारा न ले जाएं।

किशन के गायब होने की खबर चारों तरफ आग की तरह फैल गई थी। देर रात जब किशन घर न लौटा और न किसी के पशु गांव लौटे तो उसके घर वालों ने गांव वालों के साथ मिलकर उसकी तलाश शुरू कर दी थी। वह जिस जंगल में पशुओं के साथ दिन भर गुजारता, जब वे वहां गए तो देखकर दंग रह गए कि सारे पशु एक जगह जमा हैं। उनके साथ भेड़–बकरियां भी हैं और दो–चार कुत्ते भी। पर किशन का कहीं अता–पता नहीं है। जैसे–कैसे लोगों ने पशुओं को गांव तक पहुंचाया और दूर–दूर तक जंगलों में किशन को रात भर तलाशते रहे;

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परन्तु उसकी कहीं सार–खबर नहीं मिली। कई तरह की शंकाएं लोगों और उसके घर वालों को खाए जा रही थीं।

किशन घर में कुछ न बताए, इसलिए कम्पनी के एक अफसर के साथ दो–तीन दूसरे कर्मचारी भोर होने से पहले ही गांव में पहुंच गए थे। वे लगातार उसके घरवालों को सांत्वना देते रहे। उन्होंने जंगल और गांव के आसपास अपने कई लोग तैनात कर दिए थे कि किशन सबसे पहले उनकी पकड़ में आए ताकि उसे ढूंढ़ने का श्रेय उन्हें ही मिले। उन्हें यह भी विश्वास था कि किशन अगर कोई ऐसी–वैसी बात बताएगा तो लोग उस सिरफिरे का आसानी से यकीन नहीं करेंगे। फिर जिस तरह की हमदर्दी वे जता रहे थे, उससे तो उन पर कतई शक नहीं हो सकता। वह जैसे ही जंगल के बीहड़ों से सुबह निकला, कम्पनी के लोगों के साथ गांव के लोगों ने उस पकड़ लिया। वह सहमा हुआ तो था ही; लेकिन गांव के अपनों को देखकर उसकी हिम्मत लौट आई थी। सबसे पहले कम्पनी के अफसरों ने ही उससे पूछताछ शुरू की थी कि वह अपने गुम होने का रहस्य बताए। लेकिन उनके चेहरे तो उसने पहले ही देखे हुए थे इसलिए मारे डर के वह चुप रहा। यहां तक कि अपने पिता व दादू के पूछने पर भी उसने कुछ नहीं बताया।

इसके बाद किशन के व्यवहार में कई तरह के बदलाव हो गए थे। वह घर में सहमा–सहमा रहता। उसकी आंखों को कोई पढ़ता तो जान पाता कि उनमें कितना भय भरा पड़ा है! अब वह गांव के बच्चों को कहीं भी पकड़ लेता और बताता कि वे कम्पनी के लोगों से बचकर रहें। इतना ही नहीं, वह धीरे–धीरे किसी भी गांव के आदमी को रोक लेता और कहता कि वे अपने बच्चों, मुर्गों और बिल्ली को बचाकर रखें, नहीं तो उन्हें कम्पनी के लोग पकड़कर ले जाएंगे। कभी वह कहने लगता कि उस पार जंगल में जो मोर कूहकता है, उसकी जान खतरे में है। इस तरह की बातों का लोग मजाक उड़ाते और हंसकर टाल दिया करते।

'नयातोड़', बकरा और मुर्गियों का गुम होना

किशन के पिता के साथ जो घट रहा था, वह आश्चर्यजनक था। उनकी सारी फसल तबाह हो गई थी। उनका नयातोड़ कम्पनी की खानों के नीचे था। इसलिए अधिकांश मलबा उसी में फेंका जा रहा था। किशन के बापू ने न जाने किस–किस के दरवाजे खड़काए; परन्तु किसी ने कोई मदद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं की। अब उसने कोर्ट जाने की सोची थी। एक दिन पटवारी के पास अपने नयातोड़ के कागजात लेने गया तो यह सुनकर हक्का–बक्का रह गया कि वह नयातोड़ उसके नाम है ही नहीं। वह तो सरकारी ज़मीन है। उसने आज तक अवैध रूप से कब्जा किया हुआ है। किशन के बापू के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। वह गिड़गिड़ाया, बहुत अर्ज–विनती की कि वह नयातोड़ उसी का है, पर पटवारी ने एक नहीं सुनी। वह तहसीलदार के पास शिकायत लेकर भी गया, वहां से भी टका–सा वही जवाब मिला। विधायक के पास भी गया; पर सिवाय कोरे आश्वासनों के उसे कुछ नहीं मिला।

सच्चाई यह थी कि कम्पनी के लिए वह ज़मीन यानी नयातोड़ सोने की खान था। कम्पनी के अफसरों ने पटवारी के साथ मिलीभगत से इसे लीज़ वाली जगह के साथ ही शामिल करवा लिया था। पटवारी ने सारे कागज बदल दिए थे। इस काम के लिए पटवारी, तहसीलदार, गांव के प्रधान व विधायक तक को अच्छी–खासी रकम दी गई थी।

किशन के परिवार वालों के लिए यह बात मरने जैसी थी। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था कि वे क्या करें। फिर किशन का भी झमेला था। उसके गुम होने का रहस्य बरकरार था। ऊपर से उसकी बातें समझ से परे हो रही थीं। उसकी फिक्र भी लगी रहती। उसने अब अपना कोट भी गंवा दिया था। कल कुछ और कर लेगा। क्या भरोसा! एक दिन किशन ने बकरा ही गुम कर दिया था। उस दिन उसे खूब मार भी पड़ी। दिन भर वह पशुओं और भेड़–बकरियों के साथ चरता रहा; लेकिन दिन ढलते ही ऐसे गायब हुआ कि कहीं अता–पता ही नहीं चला। उसने खुद भी देर रात तक बकरे को ढूंढ़ा था। फिर थक–हारकर घर आकर बता दिया। उसके बापू ने गांव के एक–दो साथियों के साथ आधी रात तक उसे तलाश किया; पर वह कहीं नहीं मिला। फिर यह सोचकर घर चले आए कि हो न हो बाघ खा गया हो। दूसरे दिन किसी ने बताया कि उसे कम्पनी के दो लोग घसीटकर गाड़ी में ले गए। उन्होंने जरूर उसे रात को ही काटकर खा लिया होगा।

इतना ही नहीं, दूसरी जगहों से भी मेमने और यहां तक कि घर के आंगन से मुर्गे तक गुम होने लगे थे। पर यह पता आज तक नहीं लग सका कि वे जाते कहां थे? शक कम्पनी के लोगों पर होता था; परन्तु उनके खिलाफ कोई जुबान तक नहीं खोल सकता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीड़ों के जंगल और पेड़ों की निशानदेही

किशन जिस जंगल में पशु चुगाता, वह बड़ा जंगल था। उसमें चीड़ का घना वन था। लगभग एक हजार पेड़ होंगे। उसे सरकार ने संरक्षित वनक्षेत्र घोषित किया हुआ था। उसमें कोई भी व्यक्ति किसी तरह के हथियार मसलन दराट–कुल्हाड़ी नहीं ले जा सकता था; पर पशु चुगाने पर पाबंदी नहीं थी। लेकिन कम्पनी के लिए वह वन कागजों में सामान्य दर्शाकर उसे भी लीज़ पर दे दिया गया था। लोगों ने बहुत विरोध किया। मीडिया ने इस मुद्दे को खूब उछाला, पर परिणाम वही ढाक के तीन पात। उस जंगल के भीतर चूने का पत्थर मौजूद था, जिसकी कम्पनी को सख्त जरूरत थी। अब धीरे–धीरे चीड़ के पेड़ कटने लगे थे।

सात सौ पेड़ों के कटने का समाचार जब गांव वालों ने सुना तो हक्के–बक्के रह गए। यह जंगल उनके लिए महज जंगल नहीं था, एक बुजुर्ग के साये की तरह था। वहां लोगों के पशु दिन भर चरते। भेड़–बकरियां पलतीं। औरतें घास–पत्ती उसी में करतीं। दोपहरिया चीड़ों के पेड़ों के नीचे गुजरती। तरह–तरह के जानवर और पक्षी उसमें वास करते। मोरों की कूहकें दूर–दूर तक सुनाई देतीं। यानी वह चीड़ों का जंगल आदमियों के साथ जानवरों और पक्षियों का घर भी था। रोजी–रोटी थी। बसेरा था। किशन के लिए तो वह स्वर्ग के बराबर था।

किशन जंगल कटने से बेहद परेशान था। वह कई दिनों से देख रहा था कि कम्पनी के लोगों के साथ उसके इलाके का पटवारी और गार्ड एक–एक चीड़ के पेड़ के पास जा–जाकर उनके तने छीलते और काली स्याही से उस पर नम्बर लिख दिया करते। ऐसा जब उसने पहली बार देखा था तो एक आदमी से पूछ लिया था, "भाई, तुम पेड़ों को काट–छीलकर इन पर क्या लिखते हो?"

उसने बजाय इसका उत्तर देने के उलटा उसे ही डांट दिया था, "ओए छोरे! तू इन डंगरों को लेकर अब यहां मत आया कर। ये जंगल अब कम्पनी का हो गया है। सारा कट जाएगा।" वह इतना कहकर कुल्हाड़ी से फिर दूसरे पेड़ का तना छील देता और दूसरा आदमी झटपट उस पर फिर एक नम्बर लिख देता। किशन को यह सब पसंद नहीं था। कम्पनी के लोग पहले दिन जितने पेड़ों के तने छीलकर नम्बर लगाते, दूसरे दिन वे नम्बर मिटे होते। किशन का एक काम और बढ़ गया था। पांच बजे जब कामगर छुट्टी करते तो किशन का काम शुरू हो जाता। वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हर पेड़ के पास जाता। उनके तने से कटा छिलका उठाता और नम्बर पर चिपका देता। दूसरे दिन वह इतना चिपक जाता कि कई बार तो पता ही नहीं चलता कि कहीं किसी पेड़ में कोई नम्बर भी लगा था। लेकिन एक दिन जब किशन की इस हरकत का कम्पनी वालों को पता चला तो उसकी शिकायत उसके मां–बाप से करके अब उस जंगल में उसका आना–जाना पशुओं समेत बंद कर दिया गया था।

किशन को उन चीड़ के पेड़ों से बेहद प्यार था। वह दिन भर उनकी छांव में बैठा रहता। कभी किसी पेड़ की टहनी पर चढ़ जाता और वहीं से पशुओं और भेड़–बकरियों की जुगाली करता रहता। कभी किसी पक्षी ने झाड़ियों में कोई घोंसला बनाया होता तो छुपकर घोंसले में बड़े होते बच्चों को देखा करता। उनकी मां दूर–दूर से अपनी चोंच में कभी कुछ लाती तो कभी कुछ। बच्चे मां के आने की आहट भर से चौकस हो जाते और चहचहाने लगते। घोंसलों से कई चोंचें एक साथ बाहर निकलतीं जिनमें चिड़िया मां बारी–बारी कुछ डालती रहती। फिर उन बच्चों को अपने पंखों में छुपा लेती और सोई रहती। किशन दबे पांव चलता ताकि चीड़ के पत्तों की सरसराहट से आवाज न आए और चिड़िया के बच्चों की नींद न टूटे।

इतना ही नहीं, उसने जंगल में कई जगह जानवरों के थांव देखे थे। एक जगह तो एक हिरनी ने कई बच्चे जाये थे। वह एक छोटी–सी गुफा थी। किशन उस गुफा के पास भी जाया करता। कई बार वे बच्चे अकेले होते। किशन के पांव की आहट सुनकर वे चौंकते। चिंचियाते। किशन कुछ बड़बड़ा देता, फिर वे चुप हो जाते। कहीं से हिरनी आती और उस गुफा में चली जाती। उन्हें दूध पिलाती। हैरानी की बात थी कि किशन की उपस्थिति हिरनी को नहीं खलती। यहां तक कि किशन के साथ जो कुत्ते होते, वे भी कभी किसी जानवर पर वार नहीं करते।

किशन ने सुन रखा था कि जैसे ही पेड़ों की निशानदेही पूरी हो जाएगी इनका कटना शुरू हो जाएगा। वह इस बाबत भी सबसे बात करता रहता। कभी किसी से गुहार लगाता तो कभी किसी से। उसका पिता उसे समझाता, "किशन, क्यों तू इन फिजूल की बातों में जाता है। देख किशन, मत इन कम्पनी के लोगों से पंगा लिया कर। ये खतरनाक लोग हैं। कुछ भी कर सकते हैं। हम तो गरीब हैं। क्या कर लेंगे? अपना काम किया कर।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किशन पिता की बात एक कान से सुनता और दूसरे से निकाल देता। दूर घाटी में जहां वह पशु चुगाया करता, वहां से भी घर लौटते या सुबह जाते वह जंगल में घुस जाता और दस–बीस पेड़ों के छिलके वापिस कटी हुई जगहों पर चिपका देता। कम्पनी के लोगों को फिर से दोबारा मेहनत करनी पड़ती। वे खूब चिढ़ते। किशन ने देखा था कि अब पंछियों ने वहां घोंसले बनाने भी बंद कर दिए थे। कोई जानवर भी कम्पनी के आदमियों क़े डर से उस जंगल में नहीं जाता था। उसने झाड़ियों के नीचे कई घोंसले बिखरे–टूटे हुए देखे थे। कई जगहों पर तो पक्षियों के छोटे–छोटे अंग भी टूटे पड़े थे। इतना ही नहीं, चिड़ियाओं के छोटे–छोटे बच्चे भी पेड़ों के नीचे मरे हुए किशन ने देखे थे। वह इन सभी को देखकर परेशान हो गया था। उसे न भूख लगती न प्यास। पशुओं के पास दिन भर वह उस जंगल को ही निहारता रहता। किसी ऊंचे टीले पर बैठकर ये सब देखता रहता। उस जंगल के जानवर भी अब नंगी घाटियों में पनाह ढूंढ़ते रहते। पक्षियों को भी कहीं घोंसला बनाने तक की जगह नहीं रही थी। कुछ बेचारे तो पत्थर की खानों में कम्पनी द्वारा किए गए ब्लास्टों से ऐसे ही मर जाया करते।

पुराने कोट कहां गुम गए?

किशन आज जब दिन भर पशु चुगाकर लौटा तो उसके पास दादा का पुराना कोट नहीं था। पहले दिन उसने झूठ बोला था कि वह जंगल में ही भूल आया है। लेकिन दूसरे दिन भी जब कोट उसके पास नहीं था तो बारी–बारी घर के सब लोगों ने इस बाबत उसकी अच्छी–खासी तफ्तीश की थी; पर किशन ने अपनी जुबान तक नहीं खोली। किशन के पिता ने उस कोट को चार बरस पहले गांव में आए एक किन्नौरे दर्जी से सिलवाया था। अपनी भेड़ की ऊन थी। कितनी मेहनत से सर्दियों के दिनों में उस कोट की पट्टी, ऊन कात–कातकर बुनी थी। और उसके बाद एक साल तक वह जुलाहे के पास अनबुनी पड़ी रही। कोट बनने पर चार साल तक किशन के दादा उसे लगातार पहनते रहे थे। मैला होने पर पिछले साल किशन की मां ने रीठे और राख से उसे धोकर साफ तो कर लिया; लेकिन उसकी थोड़ी लम्बाई घट गई थी। किशन कभी–कभार उसे पहनकर जंगल जाया करता था।

किशन से उसका परिवार ज्यादा सख्ती भी नहीं करता था। वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उनका इकलौता बेटा था इसलिए ज्यादा डांट–डपट नहीं हुई थी; पर पूछ रोज होती रहती। किशन कभी चुप रहता और कभी बात टालकर आंगन में चला जाता। इसी सप्ताह गांव के बुधराम का कोट गुम हो गया। फिर उससे अगले सप्ताह माठू चाचा का। फिर तेलीराम लुहार भी कहीं अपना कोट गंवा बैठा। हद उस दिन हुई जब आंगन की रस्सी में सुखाने डाला पुजारी मणिराम का कोट जाता रहा। कोटों का इस तरह गुम होना गांव में अब एक रहस्य बन गया था। लोग चुपके–चुपके दूर–दूर तक कोटों की तलाश करते; पर कहीं भनक नहीं लगती। कुछेक ने तो कम्पनी के मजदूरों के बीच भी गोपनीय तरीके से तलाश की; पर वहां भी अता–पता न लगा। गांव वालों की समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि कोटों के सिवा उनकी कोई दूसरी चीज कभी गुम नहीं हुई।

किशन–कन्हैया की फौज

किशन ने तड़के ही अपने पशु खोल दिए थे। साथ ही गांव वालों के भी। अब गांव के सारे पशुओं का जिम्मा किशन का होता। गांव की चाची–ताईयां जहां उसे अपने किशन–कन्हैया नाम से पुकारतीं, वहां लड़कियां गोपियां बनकर उसकी लाडली हो गई थीं। यह इसलिए भी था कि गांव की औरतों और लड़कियों का ज्यादातर समय पशुओं को चुगाने में ही जाया होता था। इसके लिए उन्हें किशन के रूप में एक बढ़िया ग्वालू मिल गया था। इसकी भनक मीडिया को भी लग गई थी कि एक गंवई लड़का पूरे गांव के पशुओं को एक साथ चुगाता रहता है और उसको जानवरों और पक्षियों से बहुत प्यार है। कुछ अखबारों ने तो उसके बड़े–बड़े लेख भी छापे थे। एक स्थानीय चैनल ने उसे पशुओं को चराते बढ़–चढ़कर दिखाया था।

किशन स्वयं सभी की गौशालाओं में जाता और पशुओं को ले जाता। उस दिन उसने सारे पशु सड़क में एक जगह खड़े कर दिए थे। साथ दर्जनों भेड़–बकरियां थीं। गांव के कुत्ते थे। दिन कोई खास नहीं था; पर किशन को पता चल गया था कि कम्पनी के कई ट्रक आज आएंगे और जंगल का कटान शुरू हो जाएगा। इसलिए किशन सुबह से ही वहां डट गया। लोगों को इस बात की भनक तब लगी जब गांव की साढ़े सात बजे वाली बस सड़क पर रुक गई। ड्राईवर को किशन के बारे कुछ भी मालूम नहीं था। इसलिए वह सुबह ही उससे भिड़ गया। बात हाथापाई तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पहुंची; लेकिन किशन के साथ कुत्तों को देखकर वह चुपचाप बस में बैठ गया। इस घटना को देखकर गांव के लोग भी वहां पहुंच गए थे। किशन के पिता ने उसे डांटा; लेकिन उस पर कुछ असर नहीं हुआ। लोगों ने अपने–अपने पशुओं को वापिस घर लाना चाहा; पर उन्होंने भी किसी की बात नहीं सुनी और धीरे–धीरे सड़क पर आगे सरकते रहे। फिर हाथ जोड़कर किशन की मां ने पूछा था, "किशन! मेरे बच्चुआ! ये सब क्या है? क्यों तैने सड़क को रोक दिया है। देख बचुआ! इन डंगरों को ऊपर घाटी में चुगाने ले जा। मत रोक रास्ता। नहीं तो ये लोग पुलिस को बुला लेंगे और तेरे को परेशान करेंगे।"

पहली बार किशन ने खामोशी तोड़ी थी। वह जोर से चीखा था, "अम्मा! मैं नी ले जाता डंगरों को यहां से। तू नी जानती ये कम्पनी के लोग आज जंगल को काट देंगे। देख, कितने ट्रक वहां पार से आ रहे हैं!"

लोगों की नजर जब उधर गई तो हैरान–परेशान रह गए। खुले ट्रकों में मजदूर खड़े थे। सभी के हाथों में आधुनिक किस्म की कुल्हाड़ियां थीं। आरे थे। आज जंगल कटना था। लोगों को किशन का विरोध समझ आ गया; लेकिन उन्हें पता था कि डंगर–पशु, भेड़–बकरियां और कुत्ते इन आधुनिक औजारों का विरोध नहीं कर पाएंगे। हालांकि पूरा गांव वहां था। एक बड़ा जनसमूह। परन्तु उस वक्त वह जनसमूह किशन और उसके पशुओं के सामने निहत्था, असहाय लग रहा था। तभी उन ट्रकों के पीछे कई नीली–पीली गाड़ियां आती दिखाई दीं। उनके रुकते ही बंदूकों और लाठियों से लैस पुलिस उतरी। उन्होंने पहले लोगों को चेताया। उसके बाद लाठियां बरसीं। फिर जैसे ही बदूंकें उन पर तनीं, वे बदहवास से भाग खड़े हुए। यहां तक कि उनके साथ भीड़ में किशन का बापू और दादा भी भाग लिए। कई पल बंदूकें चलने की आवाजें उनका पीछा करती रहीं। सामने किशन था। उसके पशु थे। कुत्ते थे। ...और रोती–बिलखती किशन की अम्मा थी। उन पर कोई असर न देखकर पुलिस वालों और कम्पनी के लोगों का कहर उन पर फिर टूटा। लाठियों से उन्हें मारते–पीटते रहे; पर वे आगे बढ़ते चले गए। किशन की मां अपने बेटे के लिए परेशान थी। पता नहीं कब उसके सिर पर लाठी लगी और वह वहीं ढेर हो गई। एक लाठी किशन के सिर पर भी लगी थी; लेकिन वह उसी तरह अपनी बेजुबान फौज के साथ आगे बढ़ता रहा। कुछ देर बाद वह बेहोश होकर गिर पड़ा। उसके साथ कई पशु भी लाठियों की मार से घायल होकर गिर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पड़े और कुछ मर गए थे। इसके बावजूद भी उनके लिए पशुओं का सामना करना मुश्किल हो गया था। यह घटना आग की तरह गांव से होती हुई परगने तक फैल गई थी। किशन और उसके पशुओं का यह अनोखा विरोध उन्हें समझ आ गया था। कुछ ही देर में वहां लोगों का सैलाब उमड़ पड़ा।

किशन और उसकी अम्मा को उसी दिन बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुंचा दिया गया था। वे दोनों जिन्दगी और मौत की जंग लड़ रहे थे। सड़क में मरे हुए गाय और बैलों को देखकर लोग भड़क उठे थे। मामला अब गौहत्या का हो गया था जिसे न तो कम्पनी वालों के लिए और न अब सरकार के लिए संभालना आसान था। धीरे–धीरे इस मामले ने नया मोड़ ले लिया था जिसकी लपेट में अब पूरा प्रदेश आने लगा था।

किशन–कन्हैया गायब और कोट की जेबों में घोंसले

कोई भी पशु उसके बाद अपने ओबरे (गौशाला) नहीं लौटा। न भेड़–बकरियां और न कुत्ते ही। पशु जंगलों, घासणियों और घाटियों में आज भी रंभाते रहते हैं। भेड़–बकरियां जगह–जगह मिमियाती रहती हैं और कुत्ते कम्पनी के लोगों को पहचानकर उनके पीछे भौंकते हुए दौड़ने लगते हैं। जंगल की चिड़ियाएं पेड़ों की टहनियों पर उदास–उदास बैठी रहती हैं। प्यास लगती है तो किशन के लगाए पौ में पानी तलाशती हैं; पर अब कहीं कुछ नहीं मिलता। बरसों से सजा–बसा हरा–भरा जंगल सूना–सूना सा लगता है। गीदड़ जंगल में दिन–दिहाड़े बदहवास से हूंकने लगते हैं। उनकी हुंकारें सुनकर भी कोई कुत्ता चूं तक नहीं करता। कौओं के दल पगलाए से गांव के घरों, खेतों और खलिहानों की मुंडेरों पर कुड़कुड़ाते रहते हैं।

एक दिन गांव के कुछ लोग उस धार पर अपने पशुओं को ढूंढ़ते हुए निकले जहां किशन उन्हें चुगाया करता था। वहां पहुंचे तो एक पहाड़ी के नीचे का दृश्य देखकर दंग रह गए। वहां झाड़ियों में जगह–जगह लोगों के गुम हुए पुराने कोट लटके थे। लोगों की आहट पाकर जेबों से कई चिड़ियाएं बाहर निकली थीं और अजीब तरह से चहचहाना शुरू कर दिया था। तकरीबन हर जेब में उन्होंने एक घोंसला बना लिया था। वे शायद डर गई थीं। तभी जेबों में से उनके कुछ जवान होते बच्चों ने अपनी चोंचें बाहर निकाल दी थीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किन्नर

1. हिमाचल के जनजातीय जिला किन्नौर को कालान्तर में 'किन्नर देश' से जाना जाता था। इसके निवासी 'किन्नर' कहलाते थे। आजादी के बाद हिमाचल प्रदेश का जब पुनर्गठन हुआ तो यह प्रदेश का स्वतन्त्र जिला बना और इसी आधार पर इसका नामकरण हुआ 'किन्नौर'। यहां रहने वाली जनजाति आज भी 'किन्नर और किन्नौरा' से जानी जाती है जिसे 1956 में भारतीय संविधान की अनुसूची में शामिल किया गया। फिर 'हिजड़ा समुदाय' को प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, फिल्म जगत और कुछ तथाकथित लेखकों द्वारा 'किन्नर' कहना इस जाति का अपमान नहीं...?
2. 'तोशिम किम' किन्नौर का एक सांस्कृतिक त्यौहार है जिसे सर्दियों के दिनों में वहां के युवा और युवतियां किसी अकेले घर को चुनकर साथ रहकर मनाते हैं। इसे स्नेह और आदर का प्रतीक भी माना जाता है।

सर्दियों के दिन थे। किन्नर कैलाश पर हल्की बर्फबारी हुई थी। अब कभी भी पूरा 'किन्नर देश' बर्फ की चादर ओढ़ सकता था। इसलिए गांव के लोग अपने–अपने घरों में राशन, लकड़ियां और पशुओं के लिए घास–पत्ती जुटाने में व्यस्त थे। लोगों ने अंगूरी शराब का स्टॉक भी जमा कर लिया था। हर घर में दो–चार बकरे मांस के लिए पहले से ही मौजूद थे। बर्फ गिरते ही उनका 'देश' बाकी दुनिया से कुछ महीनों के लिए कट जाएगा। युवा लड़कों और लड़कियों में गजब का जोश था। उन्हें 'तोशिम किम' त्यौहार का इंतजार था।

बेलीराम किन्नर जिला परिषद् का सदस्य हो गया था। यह पहली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बार था जब किसी युवा ने राजनीति में प्रवेश करके और वह भी बिना किसी पार्टी के समर्थन के इलेक्शन जीता था। सत्ता और विपक्ष से जो उम्मीदवार खड़े हुए थे, उनकी जमानत तक न बची थी। उसके घर में त्यौहार जैसा माहौल था। दिन भर लोग अपने–अपने काम में लगे रहते और शाम ढलते ही बेलीराम के घर जुट जाते थे। खूब महफिल जमती। शराब चलती। बकरा कटता। खाने–पीने के बाद रात भर नाटी लगी रहती। सभी मिलकर गाते–बजाते और नाचते–झूमते। बेलीराम को भी नाचना पड़ता। उसे भीतर से खींच–खींचकर लोग ले आते और नाटी (माला नृत्य) में शामिल कर लेते। वह उनकी बांहों में बांहें डालकर झूमने लगता। उसके पांव ढोल, नगाड़ों, शहनाई और करनाल के संगीत के साथ थिरकने लग जाते। गांव की ज्यादातर लड़कियां और लड़के पारंपरिक पहनावों में नृत्य में शामिल होते। उनकी टोली में धीरे–धीरे लोग शामिल होने लगते। आंगन में लम्बी माला बन जाती मानो कूंजनें आसमान में उड़ रही हों।

बेलीराम का पिता कई सालों तक पंचायत का प्रधान रहा था। इलाके में बड़ा रुतबा था। कोई भी सलाह–मशविरा उसके बगैर पूरा नहीं होता था। साठ साल में भी वह काफी चुस्त–दुरुस्त था। कद छः फुट के करीब। सिर के बाल बिल्कुल काले। चौड़ा माथा, लम्बी नाक और भरा हुआ चेहरा। सामने का एक दांत हल्का–सा होंठों के बीच से बाहर निकला दिखाई देता रहता। बिल्कुल उसी तरह जैसे कोई बच्चा दरवाजे की ओट से झांक रहा हो। उस दांत के मध्य रोपी छोटी–सी सोने की तिल्ली रोशनी पड़ते ही ऐसे चमकने लगती जैसे भोर की कोई किरण जमी हुई बर्फ से टकराकर चौंध जाती हो। चेहरे पर झुर्रियां तो उग आईं थीं; पर वे परधानी की ठीस और बड़े जमींदार की सम्पन्नता की ओट में ढलतीं। उम्र का जरा भी अहसास नहीं होने देतीं। कानों में सोने के गोल रिंग पहने होते जो उभरे हुए मांसीली चमड़ी की परतों में भीतर को धंसते चले जा रहे थे। ऊनी लम्बे कुरते पर कमर में बंधी गाची खूब जंचती। सिर की हरी टोपी में हमेशा सफेद फूल सजे रहते।

भारी वोटों से बेटे की जीत की खुशी ने आंखों की चमक और भी तेज कर दी थी, पर भीतर हल्का–सा यह मलाल भी था कि जिस कांग्रेस पार्टी की बरसों सेवा की, उससे बेलीराम ने इलेक्शन नहीं लड़ा। यह कुछ–कुछ पार्टी के खिलाफ बगावत जैसा भी था। बेलीराम किन्नर की दो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बहनें थीं। एक की शादी हो गई थी। दूसरी अभी दसवीं में पढ़ रही थी। बड़ी बहन भी इन दिनों मायके आई थी। मां के साथ दोनों कामकाज में हाथ बंटाया करतीं।

बेलीराम के पिता ने अपने लम्बे–चौड़े आंगन में खूब रोशनी की थी। घर के ऊपर बड़े बल्ब लगाए थे। घर बहुत बड़ा था। इस दोमंजिले मकान में सोलह कमरे और दो बड़े हॉल थे। सामने बरामदा था। सलेटों की छवाई वाले इस घर की शोभा देखते ही बनती थी। अब चारों तरफ झमझमाती बिजली की रंग–बिरंगी लड़ियों ने तो इसमें चार चांद लगा दिए थे। घर के पिछवाड़े अस्थायी रसोई बनाई गई थी जहां पुश्तैनी कामकाजी रसोइए धाम पकाने में मशगूल रहते। आंगन के एक ओर लकड़ियों का बड़ा धूना जलता रहता; पर उसके पास कोई नहीं बैठता। संगीत और शराब के नशे की गर्मी में सराबोर सभी नाचते रहते।

इस 'देश' की यही रीत थी। परंपराएं और खासियत भी थी कि जब कोई खुशी आती तो लोग मिल–जुलकर उसे बांटा करते। वे जितनी मेहनत करते, उतना ही मनोरंजन भी होता। जैसे संगीत यहां के लोगों की नस–नस में भरा हो। लोग जब इकट्ठे होकर नाचते–गाते तो लगता ही नहीं कि कहीं कोई बैर भी रहा होगा। सभी एक परिवार, एक गांव और एक परगना हो जाते थे।

बेलीराम किन्नर को अपनी जीत के साथ 'तोशिम' का इंतजार भी था। पिछले 'तोशिम' में उसका एक लड़की सुनम से प्रेम हो गया था। सुनम ने बी.ए. के बाद लॉ किया था और उसका सपना एक अच्छा वकील बनने का था। शहर में दोनों कभी–कभार एक–दूसरे से मिलते–जुलते तो थे, पर प्रेम जैसी कोई चीज उनमें कभी नहीं रही। इस बार सितम्बर में हुई किन्नर–कैलाश यात्रा में भी वे साथ गए थे। पर सुनम को अपनी सहेलियों से ही फुर्सत नहीं मिलती थी। इस कठिन और रोमांचकारी यात्रा के रात्रि–पड़ाव में यात्रियों सहित बेलीराम और सुनम के दल इकट्ठे होकर नाटी डालते थे। इस तरह कभी–कभार उनकी आंखें जरूर दो–चार हो जाया करतीं।

यह यात्रा 'किन्नर देश' की बड़ी धार्मिक यात्रा मानी जाती थी जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपार श्रद्धा और आस्था से किया करता था, इसलिए किसी के मन में भी कोई उलटे–सीधे ख्यालात नहीं आते। बेलीराम किन्नर और सुनम हालांकि मन–ही–मन एक–दूसरे को चाहने लगे थे, लेकिन इसका

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इजहार इस यात्रा में वे कभी नहीं कर पाए थे। किन्नर–कैलाश पर पहुंचकर जब उन्होंने विशाल शिवलिंग और शिव–पार्वती के निवास स्थान के दर्शन किए तो वे अगाध स्नेह और श्रद्धा से आच्छादित हो गए। वह यात्रा तो समाप्त हो गई थी, परन्तु उन दोनों के भीतर एक दूसरी ही यात्रा शुरू हो गई जिसे जाने–अनजाने वे दोनों अपनी–अपनी तरह से महसूस करने लगे थे। इसके बाद बेलीराम को किसी काम से शहर जाना पड़ा और फिर चुनाव के दिनों में ही आना हुआ था। हालांकि एक–दो बार उस लड़की से मुलाकात तो हुई, पर खुलकर बातें न हो सकीं। इसका उन दोनों को ही मलाल था।

•

'तोशिम' शुरू होते ही गांव की लड़कियां एक खाली घर में इकट्ठी हो गई थीं। पहले दिन सभी ने मिलकर वहीं खाना बनाया और खाकर पूरी रात नाटी में झूमती रही थीं। दूसरे दिन उन्होंने गांव के सभी लड़कों को खाने पर आमन्त्रित किया था। अब यह सिलसिला तकरीबन पन्द्रह–बीस दिनों तक चलता रहेगा। लड़कियां अपने मेहमान लड़कों को तरह–तरह के पकवान बनाकर खिलाया करेंगी। इनमें पोल्टू, रोटे, चिल्टे, सुतराले, रल, स्कन और सुनपोले के विशिष्ट व्यंजन होंगे। खूब शराब पिलाएंगी। सभी साथ–साथ रहेंगे। गप्प–शप्प करेंगे। नाचेंगे। गाएंगे। एक–दूसरे को कथा–कहानियां सुनाएंगे। पहेलियां बुझाएंगे। हंसी–मजाक करेंगे। और इसी तरह आपस में कई जोड़ों के प्रेम संबंध भी बन जाएंगे।

लड़कियां दिन को अपने–अपने घरों में काम करतीं और सांझ होते ही उस खाली घर में इकट्ठी हो जाया करतीं। हालांकि इसमें विवाहित महिला तथा पुरुष बहुत कम आते; लेकिन विधुर तथा विधवाओं को अवश्य आमन्त्रित किया जाता।

बेलीराम किन्नर को 'तोशिम' की परंपरा कुछ अच्छी नहीं लगती थी। वह इस हक में नहीं था कि घर की बेटियां किसी पराए घर में साथ रहें और फिर लड़कों को बुलाकर उनसे ठिठोलियां करें। प्रेम संबंध बढ़ाएं। इसके पीछे एक कारण यह भी था कि उसके गांव की एक लड़की का पिछले 'तोशिम' में एक लड़के से प्रेम हो गया था। वे पूरे तोशिम में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
साथ–साथ रहे। कसमें–वादे हुए। जीवन भर साथ जीने–मरने की कसमें हुईं, लेकिन जब विवाह की बारी आई तो लड़के ने मना कर दिया। यह बात न केवल उनके मां–बाप को ही परेशान कर गई, बल्कि गांव और परगने के लोगों ने भी इसका कड़ा नोटिस लिया। बात देवता समिति के पास गई। इससे पहले कि देवता लड़के को दंडित करता, वह घर से रफू–चक्कर हो गया। बारी आई उसके मां–बाप की। एक बकरा और बीस बोतलें शराब तथा पांच सौ एक रुपए जुर्माना भरना पड़ा। गांव–परगने में बेचारे मुंह दिखाने लायक न रहे। ऐसी औलाद से तो नाऔलाद ही भले! बात यहीं निपटती तो ठीक था; लड़की को कलंक ऊपर से और लग गया। वह गर्भवती हो गई थी। जब उसे पता चला तो चुपचाप सतलुज में छलांग लगाकर किस्सा ही खत्म कर दिया।

जब बेलीराम किन्नर को खुद प्रेम का अहसास हुआ तो उसे 'तोशिम' अच्छा लगने लगा था। उनके गांव–इलाके में सरेआम लड़का–लड़की का मिलना अच्छा नहीं माना जाता था। पर 'तोशिम' या दूसरे त्यौहारों में इस तरह के मेल–जोल पर कोई पाबंदी नहीं होती थी। इस दौरान यदि किसी लड़के का किसी लड़की से प्रेम हो जाता तो उन्हें शादी भी करनी पड़ती। इसके लिए दोनों पक्षों के घर वाले अपनी परंपराओं के अनुसार उनका विवाह करवा देते। तोशिम का एक लाभ यह भी होता कि बर्फ के दिनों में चार–पांच महीनों तक लोग घरों से बाहर नहीं निकल पाते। जीवन चार चौखटों में सिमटकर रह जाता। बड़े–बुजुर्ग तो घरों में ऊन कातकर, मांस–शराब खा–पीकर और ताश खेलकर समय व्यतीत कर लेते, पर जवान युवक–युवतियों के लिए तो ये दिन गुजारने कठिन हो जाते। इसलिए 'तोशिम' में जब सभी साथ रहते तो समय भी आराम से कट जाया करता और साल भर कड़ी मेहनत के बाद आराम भी मिल जाता था। पता ही नहीं लगता था कि सर्दियों के दिन कैसे कट गए।

बेलीराम किन्नर का मन हालांकि 'तोशिम' में शामिल होने का नहीं था, परन्तु सुनम जब उसे बुलाने आई तो वह जाने से नहीं रह पाया। उसने वादा किया कि वह जरूर आएगा। अब चुनाव जीतने के साथ अपनी दोस्त लड़की से मिलने की खुशी भी कम नहीं थी। वह जानता था कि सर्दियों के दिनों में काम भी अधिक नहीं होगा और 'तोशिम' में वह आराम से उस लड़की के साथ रह भी पाएगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेलीराम एक होनहार लड़का था। उम्र छब्बीस से ज्यादा नहीं थी। उसने पिछले साल ही पोलिटिकल साईंस में पी–एच.डी. की थी। कक्षा में वह हमेशा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता था। यह ऐसा रिकॉर्ड था जिसे उसने एम.ए. तक बरकरार रखा। राजनीति में उसका शौक पहले से ही था। कॉलेज और विश्वविद्यालय में वह स्टूडेंट एसोसिएशन का प्रधान रह चुका था; परन्तु उसे किसी पार्टी विशेष की राजनीति कभी भी पसंद नहीं आई। विद्यार्थियों के हितों को ही उसने हमेशा तरजीह दी। बेलीराम की लोकप्रियता उसके व्यवहार और जनहित के काम से पहले ही बन चुकी थी जिसने उसे आज जिला परिषद् तक पहुंचा दिया था। पिता उसे राजनीति में नहीं लाना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि बेटा आई.ए.एस बने, परन्तु बेटे की सोच के आगे उन्हें नतमस्तक होना पड़ा।

बेलीराम का जिला परिषद् का चुनाव लड़ने के पीछे एक बड़ा मकसद यह भी था कि वह अपने पिछड़े व जनजातीय क्षेत्र के लिए कुछ करना चाहता था क्योंकि आजादी के बरसों बाद भी उनके इलाके के अधिकतर गांव जन–सुविधाओं से वंचित थे। उसके पिता लम्बे अर्से तक उस क्षेत्र के प्रधान तो रहे, पर विकास के नाम पर वही ढाक के तीन पात। न अभी तक सड़कें वहां थीं, न अस्पताल। यहां तक कि कई जगह तो बच्चे पांचवीं के बाद आगे की पढ़ाई तक नहीं कर सकते थे। लड़कियों को तो गिने–चुने परिवार ही पढ़ाते थे। इसके साथ उसका रूझान अपने क्षेत्र की दुर्लभ ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत को बचाने की तरफ भी था। एक समय था जब उसका यह 'किन्नर देश' बाहरी दखलंदाजी से बिल्कुल अछूता था। यहां तक कि बिना इन्नरलाइन परमिट के अपने लोग भी वहां आ–जा नहीं सकते थे। विदेशी पर्यटकों का आना तो मुमकिन ही नहीं था। लेकिन सरकार ने बंदिशें क्या खत्म कीं कि पिछले दस सालों में उसके देखते–देखते इतने परिवर्तन हुए कि कोई भी दांतों तले उंगली दबा ले। सरकार ने यहां की नदियों पर कई बिजली के प्रोजेक्ट लगाने के लिए विदेशी कम्पनियों को कार्य सौंप दिया था। अब बाहरी और विदेशी लोगों के लिए उसके इलाके के पहाड़ और पानी दोनों सोना थे। उनका मतलब केवल अपने काम से था। पहाड़ों और नदियों से उनका कोई लेना–देना नहीं था। प्रकृति उनके लिए मात्र आकर्षण की चीज नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रही थी। वह रुपए छापने की मशीन की तरह हो गई थी। अपने प्रोजेक्टों की आड़ में बाहरी लोग न केवल उस 'देश' की संस्कृति को नुकसान पहुंचा रहे थे, बल्कि पर्यावरण भी नष्ट कर रहे थे। विकास के नाम पर इन परियोजनाओं का लगना किसानों को तरह–तरह से परेशान किए जा रहा था। बेलीराम किन्नर उन्हीं के बीच पहुंच कर इस विनाश के प्रति लड़ना चाहता था। यह काम वह जनता के प्रतिनिधि के रूप में ज्यादा अच्छा कर सकता था। उसके इस 'देश' में दो ही चुनाव क्षेत्र थे और वहां से कभी भी एक ही पार्टी के उम्मीदवार नहीं जीतते थे। इसलिए विकास के नाम पर खूब राजनीति चलती रहती थी।

•

पिछले दिनों बेलीराम के घर में रंगीन टीवी आया था। अब उनके गांव में केबल भी शुरू हो गया था। इसलिए उसका अधिक समय समाचार देखने में गुजरता था। आज जैसे ही उसने समाचार सुनने के लिए टीवी ऑन किया तो उसके कानों में आवाज गूंजी कि 'राणी मौसी लोकसभा सदस्य का चुनाव जीत गई है और किन्नरों का चार दिवसीय महासम्मेलन शुरू हो गया है।' ...किन्नरों का इतना बड़ा आयोजन हो और उसे पता तक नहीं! ऐसा कैसे हो सकता है? लेकिन जब पूरे समाचार देखे तो दंग रह गया। सारे हिजड़े तरह–तरह के लटकों–झटकों के साथ अपनी–अपनी टोलियों में सम्मेलन में भाग लेने आए थे। जो हिजड़ा लोकसभा चुनाव जीता था उसे राणी मौसी नाम से पुकारा जा रहा था।

पहले तो उसकी समझ में कुछ नहीं आया, लेकिन थोड़ी देर बाद समझ गया कि यह सम्मेलन हिजड़ों का है न कि किन्नरों का। हिजड़ों को 'किन्नरों' से सम्बोधित करना उसे अचंभित कर गया। हक्का–बक्का सा वह कुछ देर टीवी पर नजरें गड़ाए रहा। उसकी समझ में कुछ नहीं आया। एक पल के लिए तो उसे अपने होने पर ही शक हो गया। वह दौड़ता हुआ अपने कमरे में गया और शीशे में काफी देर तक अपनी शक्ल देखता रहा। चेहरे को बार–बार छूता रहा। सिर पर पहनी हरी मखमली पट्टी वाली किन्नौरी टोपी को कई बार उतारता और पहनता रहा। अपनी छोटी–छोटी मूंछों पर हाथ फेरता रहा। अपने सेबनुमा गोल–मटोल सुन्दर गालों को थपथपाता रहा। यही नहीं, उसने अकेले कमरे में कई बार कुछ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
नाटियों के बोल भी बड़बड़ाए। उसे जब विश्वास हो गया कि वह सचमुच एक भरा–पूरा आदमी है तो कमरे से बाहर चला आया। टीवी में उसी सम्मेलन की चर्चा चल रही थी कि... एक हिजड़े (जिसे किन्नर कहकर सम्बोधित किया जा रहा था) का लोकसभा चुनाव जीतना सचमुच उन नेताओं के मुंह पर करारा तमाचा था जो उस क्षेत्र में पिछले कई सालों से चुनाव जीत चुके थे और इस बार उस हिजड़े के कारण उनकी जमानत भी न बची थी।

बेलीराम किन्नर ने कई दूसरे चैनल लगाए तो उनमें भी इसी की चर्चा थी। पर उसकी समझ में अभी भी नहीं आ रहा था कि हिजड़े 'किन्नर' कैसे हो सकते हैं ? हिजड़ों को किन्नर शब्द से अलंकृत करना उसे भीतर तक कचोट गया। उसे एकाएक कई पुस्तकें स्मरण होने लगीं जिनमें किन्नरों और किन्नर देश का इतिहास दिया गया था।... तो क्या ये सभी हिजड़ों पर लिखी गई हैं...? वह यही कुछ सोचता–विचारता बाहर निकला और आंगन की मुंडेर पर खड़ा हो गया। उसे लगा था कि गांव–परगने के सभी लोग इस समाचार को सुनकर सकते में आ गए होंगे; लेकिन ऐसा कुछ भी उसे नहीं दिखा। वह पगलाया–सा जब 'तोशिम किम' में गया तो वहां पहले से ही लड़के–लड़कियां नाटी में झूम रहे थे। उसे देखकर सभी ने एक जोरदार नारा लगाया– 'बेलीराम किन्नर – जिन्दाबाद'। इस नारे की आवाज में 'किन्नर' शब्द अधिक गूंजा था। वह शब्द पहले हवा में झूलता रहा फिर आस–पास की पहाड़ियों से टकरा कर सीधा बेलीराम के कानों में गर्म तेल की तरह पड़ा और दिल में चुभ गया। उसने एक पल के लिए अपने कान उंगलियों से बंद कर लिए। लेकिन उसे किसी ने ऐसा करते नहीं देखा। सभी वाद्यों के संगीत में मशगूल नाटी में नाच रहे थे।

तभी बेलीराम की नजर सुनम पर पड़ी। वह हाथ में चिलगोजे की माला लेकर धीरे–धीरे लजाती–शर्माती बेलीराम की तरफ चली आ रही थी। उसने पारंपरिक श्रृंगार किया हुआ था। सिर पर चमचमाती रेशमी हरी पट्टी की टोपी। उस पर सफेद और लाल वनफूलों के झूलते लच्छे। टोपी के नीचे से पीछे की ओर नीचे लटकी पहाड़ी झरने जैसी डुलडुलाती लम्बी चोटी। माथे पर चांदी के गहने मानो कंडे के फूलों पर असंख्य तितलियां मंडरा रही हों। कानों से गालों तक लटके लम्बे झुमके। गले में चांदी और सोने की लम्बी कंठियां जो झूलकर बाहर उभरीं उसकी गोल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
–गोल छातियों को सहला रही थीं। ऊनी पहनावे पर लाल किनारी वाली हरी सदरी और पतली कमर में बारीक ऊन की रस्सी की गाची... वह अपनी सम्पूर्णता में किन्नरी लग रही थी... देवलोक की एक परी जैसी अप्सरा। एक पल के लिए बेलीराम ठिठक गया। उसके अनुपम सौन्दर्य में भावविभोर वह कई पल उसे देखता रहा। उसके जहन में एकाएक कुमारसम्भव और मेघदूत घूमने लगे।

सुनम के मन में भी कुछ इसी तरह के रेशमी रोमांच उठ रहे थे। वह उन मीठे अहसासों को ओढ़ती उसके सामने पहुंची और झटपट चिलगोजे की माला बेलीराम के गले में डाल दी। यह इस बात का प्रतीक था कि तोशिम में एक खास मेहमान आया है। सुनम आंगन में नाटी की मालाओं में गुंथे युवक–युवतियों के समूह में सबसे आगे नाचने लग पड़ी। उसके पैरों में चांदी की भारी–भरकम पायजेबें थीं। उनका संगीत नाटी के संगीत से अलग–सा जान पड़ा जो धीरे–धीरे बेलीराम के कानों से भीतर जाकर पूरे शरीर में फैल गया। पल भर में उसने उसे रोमांचित कर दिया और उसके पैर स्वतः ही नाटी की धुन में थिरकने लग पड़े। वह भी नाचने लगा। सुनम ने बेलीराम को अपने साथ नृत्यमाला के समूह में गूंथ दिया। पता नहीं कितनी देर वे नाचते रहे थे। उन दोनों के भीतर की वह रुकी यात्रा फिर से चल पड़ी थी। फर्क इतना था कि इस बार घाटियों और पर्वतों की कंदराओं में कैलाश की तरफ जाते टेढ़े–मेढ़े कठिन रास्ते नहीं थे।

बेलीराम किन्नर काफी देर नाटी में झूमता रहा। उस रोमांच और प्रसन्नता भरे माहौल में वह भूल गया कि घर में टीवी पर उसने कोई समाचार भी देखा था। गत वर्ष इन्हीं दिनों जो प्रेम के बीज उसके भीतर उस किन्नरी ने बोए थे, वे एकाएक तोशिम की रात की बरसात में अंकुरित हो गए थे। उन अंकुरों के कोमल स्पर्श के बीच कुछ देर के लिए उसका वीरान मन उसी तरह भर गया जैसे किन्नर–कैलाश की चोटियां बर्फबारी से आच्छादित हो जाती हैं। काफी देर नाचते–नाचते उसकी आंखों के आगे अनायास हिजड़ों का वह सम्मेलन कौंध गया। राणी मौसी और उसके साथी–संगी आ गए। उसका माथा ठनका। वह नाटी के समूह से अलग छिटक गया। सुनम उसके व्यवहार को देखकर स्तब्ध रह गई। वह भी समूह से निकल आई। बेलीराम किन्नर अजीबोगरीब हरकतें कर रहा था, बिल्कुल वैसी जैसी सम्मेलन में वे हिजड़े कर रहे थे। कभी वह अजीब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तरीके से अपनी कमर मटकाता तो कभी दोनों हाथों को आगे करके तालियां बजाता। हाय, मर गई, सदके जावां, मेरी जां... सदके जावां इत्यादि इत्यादि शब्दों को जोर–जोर से बोलता और ठहाका लगाकर जेब से नोट निकालकर सुनम के सिर पर वार कर बजंतरियों को दे देता। उसकी हरकतें समझ से परे थीं। इस हंसी–खुशी के माहौल में सब हैरान थे कि बेली को यह क्या हो रहा है?

•

तोशिम चलता रहा लेकिन बेलीराम किन्नर दोबारा वहां नहीं गया। सुनम उसकी बाट रोज निहारती रहती। उसके लिए खाना बनाकर रखती। अंगूरी शराब लाती, रात भर मायूस बैठी रहती; पर वह नहीं आया। दूसरे युवक–युवतियां मस्ती में झूमते रहते। प्यार की बातें करते। हंसते–खेलते। नाचते–गाते। सुनम चुपचाप बैठी ही रात गुजार देती। उस अकेली के पास चाहकर भी दूसरा कोई युवक न आता। सभी जानते थे कि तोशिम में बेलीराम ने इसे चुना है। वही इसका सहारा है। वही इसका युवक है और वही उसका किन्नर है। पर बेलीराम को उस किन्नरी की जैसे अब कोई चिन्ता ही न रही थी।

बेलीराम को समाचारों से ही पता चला कि कुछ दूसरे स्थानों पर भी दो–चार हिजड़े चुनाव जीत गए हैं। उनकी खबरें मीडिया इतनी बढ़ा–चढ़ा कर बता और दिखा रहे थे जैसे अमेरिका का राष्ट्रपति भारत आया हो। हिजड़ों के लिए जब 'किन्नर' बोला जाता तो बेलीराम बौखला जाता। उसे लगता जैसे उसके कलेजे को किसी तेज धारदार चीज़ से चीर दिया हो। मन करता कि टेलीविजन को उठाकर नाले में फेंक दे लेकिन यह तो कोई समाधान नहीं था। उसने इस पर ठंडे दिमाग से सोचना शुरू किया। लेकिन वह हैरान इस बात पर था कि किसी ने भी इतने दिनों में इस पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की थी।

बेलीराम किन्नर इस बात को लेकर बहुत परेशान था। उसका न परिवार में मन लगता, न समांजसेवा में। लोगों ने उसकी ईमानदारी और समाजसेवा को देखकर ही उसे जिला परिषद् का सदस्य चुना था। बारह से पन्द्रह पंचायतों का छोटा विधायक था वह। उसका जिला एक ऐसा जनजातीय जिला था, जहां काम करने की बहुत आवश्यकता थी। उसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बचाने की जरूरत थी। वहां पहाड़ आसमान को छूते और नदियां पाताल में उतरती थीं। वहां बादल नहीं, अपितु पहाड़ बरसते थे। कंदराओं में बसे छोटे–छोटे गांव के अनेकों दुख–दर्द थे। अनेकों समस्याएं थीं। भौगोलिक परिस्थितियां ऐसी कि सड़क से कई पंचायतें कोसों दूर। वहां देवता ही सबकुछ थे। लोगों के डाक्टर देवता। वैद्य देवता। अच्छे–बुरे के साथी देवता। गाय–भैंस के रखवाले देवता। आदमियों के रखवाले देवता। साल –फसल के जुगाले देवता। अब देवता के बाद बेलीराम किन्नर था जिसके कन्धों पर बड़ा बोझ था। इस अंधविश्वास के मायाजाल से लोगों को बाहर निकालने की बड़ी चुनौती; पर उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह किस बोझ को अपनी पीठ से पहले उतारे।

उसे अजीबोगरीब सपने आने लगे थे। सपनों में कई मर्द जनाना कपड़े पहन उसके आंगन में डेरा डाल देते। अजीबोगरीब ढंग से नाचते। तालियां पीटते। कमर मटकाते। अपना घाघरा जब वे कूल्हे से नीचे सरका देते तो बेलीराम की नींद ऐसे टूटती जैसे वह घाघरा उसके मुंह पर उतर गया हो। अंधेरे में वह बौखला जाता। बिजली का स्विच नहीं मिलता तो सिरहाने रखी माचिस उठाता। मुश्किल से तिल्ली निकालकर जलाता तो और डर जाता। भीतर घुप्प अंधेरे में दियासिलाई की रोशनी जुगनू की तरह टिमटिमाती जिसमें चीजें वैसी दिखतीं मानो आंगन में नाच रहे सारे जनाना मर्द भीतर कोने–कोने में तालियां पीट रहे हों। जब बिजली जलती तो भीतर रोशनी का एकाधिकार हो जाता। चीजें पूर्ववत् अपनी–अपनी जगह पर होतीं। कोनों में अनाज के रखे खुंद और बांस की पेड़ियां। लकड़ी की दरोठियां। कीलों पर टंगी उसकी दो–चार टोपियां। तीन ऊन की सदरियां। दो–तीन कमीजें और एक–दो ऊन के पायजामें। उनके पीछे एक पेंट। सामने मेज पर पड़ा रंगीन टीवी। उसके साथ रखे कुछ अखबार, पत्रिकाएं और दो–चार किताबें। इनमें राहुल जी की किन्नर देश के साथ कई दूसरी किताबें ऐसी लगतीं कि उसे चिढ़ा रही हों। वह फिर कई बार अपने नाम को मन ही मन दोहराता– बेलीराम किन्नर। 'किन्नर' शब्द पर वह कुछ ज्यादा ही जोर देता तो उसके दांत ऐसे कटकटाने लगते मानो टीन की छत पर ओले गिर रहे हों।

जब बेलीराम किन्नर तोशिम में नहीं आया तो एक दिन वह किन्नरी खुद उसके घर आ गई। उसने देखा कि बेलीराम अपने कमरे में गहरी चिन्ता में डूबा था। उसके सामने कई समाचार पत्र पड़े थे। बहुत से फर्श

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर बिखरे हुए थे जिनसे कई कतरनें काटी गई थीं। वह कई पल उन कतरनों को सहेजती रही। सभी समाचार हिजड़ों के सम्मेलनों और उनके चुनाव जीतने के थे जिसमें उन्हें किन्नर नाम से सम्बोधित किया गया था। सुनम समझ गई कि युवक–युवतियां तो तोशिम में आते–जाते रहे; लेकिन बेलीराम किन्नर ने तो घर बैठे ही इसके खिलाफ अभियान छेड़ रखा है। बेलीराम ने इस बीच कई किताबें देखीं–पढ़ीं। वेद देखे–समझे। संविधान पढ़ा और फिर विरोध में एक आलेख तैयार करके सभी अखबारों को भेजा था। वह छप भी गया... कई जगह... लेकिन उस पर कोई खास प्रतिक्रिया नहीं हुई।

•

उसे पता नहीं चला कि सुनम कब आकर उसके पास खड़ी हो गई थी। उसने सारी कतरनें पढ़ ली थीं और सारी बात समझ भी गई थी। बेलीराम ने देखा तो चौंक गया, "आप कब आईं?"

वह हल्की सी झेंप गई, "जब आपने देखा।"

"बैठिए न...।"

वह खड़ा हो गया और पास पड़ी कुर्सी को सुनम की तरफ खिसका दिया।

वह बैठ गई। उसके हाथ में बेलीराम का हाल ही में छपा एक आलेख भी था। नजरें उस पर गड़ी थीं।

कमरे में कुछ पल गहरा सन्नाटा छाया रहा। उस सुनम ने ही चुप्पी तोड़ी थी, "तो इसलिए आप नहीं आए तोशिम में।"

बेलीराम का मौन ही उसका उत्तर था।

"मैंने आपके लेख पढ़े हैं। यह सचमुच हमारा अपमान है। संविधान का भी, जिसमें हमारी जनजाति किन्नौरा और किन्नर से दर्ज है।"

वह लड़की की बातें सुनकर विस्मित था। भूल गया था कि कॉलेज में उसका विषय इतिहास था और इसी में उसने एम.ए. किया था।

"राहुल की किताब 'किन्नर देश' फिर क्या 'हिजड़ों का देश' से जानी जाएगी? शब्दकोशों में जो किन्नर के अर्थ दर्ज हैं, क्या वे झुठला दिए जाएंगे? वेदों–पुराणों में किन्नर–गंधर्व क्या हिजड़ा समुदायों से पहचाने जाया करेंगे?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनम की बातें सुनकर बेलीराम का चेहरा सुबह की धूप से भर गया। वह कई पल टकटकी लगाए उसे देखता रहा। उस रोज तोशिम में पारंपरिक गहनों में लदी वह किन्नरी लग रही थी; लेकिन आज उसने कोई भी गहना नहीं पहना था। उसके बाल घुटनों तक लटक रहे थे। तिरछी पहनी हरी टोपी बहुत सुन्दर लग रही थी। उससे भी प्यारे उस पर लटके सफेद फूल जिन्हें तकरीबन सभी अपनी हरी टोपियों में लगाया करते थे। उसका सेब की तरह गोल–मटोल चेहरा था। गाल अतिरिक्त लाल। वेदों–पुराणों और दूसरी पुस्तकों में उसने किन्नरियों का जो वर्णन पढ़ा था, वह आज सुनम के रूप में साक्षात् उसके सामने था। उसने कभी अपने ही 'देश' का यह सौन्दर्य इतने करीब से महसूस ही नहीं किया था। अपने संस्कारों के सम्मान और लज्जा ने हमेशा उसकी आंखें झुकाए रखी थीं। तोशिम में भी जहां लड़कियों से खुली बातचीत और प्यार करने की छूट होती है; पर बेलीराम किन्नर हमेशा अपनी हदों में रहता था।

सुनम ने बातों–बातों में उसका हाथ पकड़ लिया था। यह एक ऐसा स्पर्श था जिसमें प्यार का अहसास छिपा था। एक पल के लिए उसका रोम–रोम रोमांचित हो गया। वह उस सौन्दर्य के सागर में डूबता चला गया। वही हाल सुनम के भी थे। उन दोनों के चेहरों पर पहले स्पर्श का अतीव सुख और रोमांच के साथ एक लज्जा भी थी। तभी आंगन में खड़खड़ाहट हुई तो दोनों एक–दूसरे के इस अहसास से छिटक गए। कुछ लोग आए थे। वह उठा और बाहर चला आया।

•

वह उन लोगों से जब मिला तो सोचता रहा कि उनमें से भी कोई इस बात से चिन्तित होगा। उनमें पंचायतों के एक–दो प्रधान भी थे। बुजुर्ग और घाघ किस्म के नेता, जो अपनी–अपनी पंचायतों में कभी हारे ही नहीं। उसने उन्हें बैठक में चलने को कहा। वे वहां बैठ गए। घर में उस समय वह अकेला था। सुनम भीतर कोई पुस्तक पढ़ने लग पड़ी। बेलीराम ने उसे ही चाय बनाने के लिए कहा था।

उनमें से कुछ लोग भीतर चले गए; लेकिन दो लोग दरवाजे के पास बैठे रहे। बेलीराम ने जब उन्हें देखा तो भीतर जाने के लिए कहा। परन्तु उन्होंने यह कहकर भीतर जाने से मना कर दिया कि वे बाहर की जाति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के हैं। उसने उनकी नहीं सुनी और बाजू से पकड़कर भीतर ले गया। इस पर भीतर बैठे लोगों में मौन प्रतिक्रिया हुई, हरकत हुई जो इस बात का प्रमाण थी कि बैठक में ऊंची जाति के लोग ही बैठते हैं; पर बेलीराम के आगे वे कुछ नहीं बोल पाए।

लड़की ने सभी को चाय पिलाई और अपने घर चली गई। तभी बेलीराम के पिता आ गए थे। वह जैसे ही बैठक में गए, बाहर की जाति के लोगों को देखकर आग–बबूला हो गए। भीतर एक नजर डाली। बेलीराम की तरफ देखा और उसकी गलती सुधारी, "बेली, इनकी जगह यहां नहीं है। तू जरा नीच–ऊंच का खयाल रखा कर।"

वाक्य पूरा होने से पहले ही वे दोनों अपमानित से उठे, लेकिन बेलीराम ने उन्हें रोक दिया।

"बापू! इन लोगों की तकरीबन दो सौ वोटें पड़ी हैं मुझे। अगर कहीं और चली जातीं तो... ? और फिर ये बातें पुरानी हो गई हैं। हम कब तक इन रूढ़ियों को ढोते रहेंगे?"

पिता सकपका गए। समझ नहीं आया कि इसका उत्तर क्या दें।

"और फिर अब तो हम हिजड़े हो गए हैं... हिजड़े। इन बेचारों की फिर भी कोई जाति तो है ही!"

यह कहते हुए वह फिर अजीब तरीके से कमर मटकाता हुआ कुर्सी से उठा, दो–तीन तालियां बजाईं और बैठ गया।

ऐसा उसने इसलिए भी किया था कि जो घाघ प्रधान भीतर बैठे थे, उनकी उम्र राजनीति में गुजरी थी। शायद उन्होंने भी हिजड़ों का वह सम्मेलन अपने टीवी पर जरूर देखा या उसका लेख जो अखबारों में छपा, उसे पढ़ा होगा। उनके हाथों में अखबार तो थी, पर समझ में कुछ नहीं आ रहा था। कोई प्रतिक्रिया न देखकर वह चुपचाप कुर्सी पर बैठ गया – आहत और मायूस। यह सोचते हुए कि इन पुराने नेताओं ने सरकारी पैसे पर अपने घर बनाए। बच्चों की ब्याह–शादियां कीं। रास्ते को पैसा आया, उसे हड़प गए। बावड़ी को आया, उसे खा लिया। पानी की स्कीमें कागजों में रहीं। विधवा पेंशनें उनकी औरतों को लगीं। क्या कुछ नहीं किया सरकारी पैसों पर इन लोगों ने! साले... कुत्ते कहीं के...! जुबान पर एक तीखी गाली आई, पर भीतर–ही–भीतर दब गई। उसने एक नजर उन दो अकुलीनों पर दी जिनकी पीठ पर अभी भी उन प्रधानों के झोले टंगे थे। वे चुपचाप अपमानित से बैठक की दीवार से पीठ सटाए, सिर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
झुकाए बैठे थे। बेलीराम उन्हें आदर से अपने घर के भीतर लाया था। मन–ही–मन उस युवा नेता के लिए भले ही वे खुश थे, पर सदियों से चली आ रही परंपरा और अपने आप को कुलीनों के मन्दिरों–घरों के आंगन के बाहर बैठने की आदत से मजबूर वे बेचारे करते भी क्या?

एक प्रधान ने अपने हाथ के लिफाफे से एक केसरिया पट्टी वाली टोपी निकाली और बेलीराम किन्नर के हाथ में थमाते हुए कहा, "बेली ले लो। तुमको हमारी पार्टी कार्यालय से भेजी है। अब तुमको केसरिया टोपी की पार्टी में आ जाना चाहिए। यह समय हमारा है। हमारी सरकार है। हरी टोपी के जमाने लद गए। तुमने तो देखा होगा हमारे इलाके में भी बी. डी.सी. और पंचायतों के कितने ही लोग जीते हैं!"

बेलीराम हक्का–बक्का सा रह गया। उसने उन सभी के सिर की तरफ देखा। किसी ने भी हरी टोपी नहीं लगाई थी। उसने वह पकड़ तो ली, लेकिन पहनी नहीं।

"घर–गांव में जरूरी नहीं कि इसे पहनो। पर जब पार्टी के दफ्तर आओ या अपने नेताओं के बीच उठो–बैठो तो इसे जरूर पहनना। पहचान है बई हमारी पार्टी की।"

दूसरे प्रधान ने भीतर की बात बताई, "बेली! मैं तो बई अब दो–दो रखता हूं। टैम देखकर पहनता हूं। इतणी पहचान तो होणी ही चाहिए कि कब हरी पैहनणी है और कब केसरिया।"

बेलीराम किन्नर का उस बैठक में सांस घुट रहा था। वह बिना कुछ कहे उठा और बाहर आ गया। उसके उठते ही भीतर बैठे ऊंची जात के लोगों ने उन दो बाहर के लोगों को ऐसे देखा जैसे साहब के कुत्ते सड़कछाप कुत्तों को देखते हैं। वे दोनों अब बाहर उठकर आ गए थे। बेलीराम के कानों में पिता की आवाज पड़ी थी, "अरे प्रधान, इस हरी टोपी ने बरसों राज किया है। लोगों की तो मति मारी गई जो उधर हो लिए। पर देखना नया नौ दिन और पुराना सौ दिन। लगता नहीं कि तुम्हारी सरकार राम के आसरे ज्यादा चल पड़े। इसलिए ही तो तुम्हारे नेता अब हिजड़ों से भी हारने लग गए हैं।"

इस समय किसी ने कुछ नहीं कहा, पर बेलीराम को पिता की बातें भीतर तक चुभ गईं। बिजली की तरह एक विचार मन में कौंधा कि इन नेताओं से तो ये हिजड़े ही अच्छे जिन्होंने इतनी मेहनत से अनेक उपेक्षाओं के रहते–चलते राजनीति के दरवाजे पर दस्तक दी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस बार खूब बर्फ गिरी थी। रास्ते बंद हो गए थे। उनका 'देश' दूसरी जगहों से पूरी तरह कट गया था। उनके घर के नीचे से एक छोटी–सी नदी बहती थी जो दूर जाकर सतलुज में मिल जाती थी। वह पूरी तरह जम गई थी। दूर से देखने पर लगता कि कोई बड़ा अजगर घाटियों की तलहटी में सोया है। पानी के नल भी जम गए थे। बेलीराम का काम इन दिनों आंगन और छत के ऊपर से बाल्टी में बर्फ ला–लाकर उसे गर्म करके अपने पीने–नहाने के लिए पानी जुटाना होता था। उसका पिता और बहन दोघरी में चले गए थे। वहां उनके काफी पशु और भेड़–बकरियां थे। वहां से गांव आना नामुमकिन था। पूरे सप्ताह तो कोई आंगन से दूसरे आंगन नहीं जा सका था।

एक महीने तक ऐसी ही स्थिति बनी रही लेकिन अब आसमान साफ हो गया था और बर्फ पिघलनी शुरू हो गई थी। इस बीच कभी–कभी बेलीराम सुनम से मिलने भी जाया करता और कभी वह उसके घर आ जाती। उन दोनों में खूब बातें होतीं। ज्यादातर वे किन्नर को लेकर ही बातें करते। उस लड़की ने भी बेलीराम को दो–तीन ऐसी किताबें दी थीं जिनमें किन्नर देश का इतिहास था। उससे भी उसे अपने आलेख तैयार करने में काफी मदद मिली थी।

मौसम खुला तो बेलीराम किन्नर शहर चला गया। वहां उसने देखा कि केसरिया और हरी टोपियों की एक खास संस्कृति बन गई है। किसके सिर पर कौन–सी टोपी होगी– यह अब राजनीति तय करने लगी है। इसी से लोगों का वजूद है। ये टोपियां नए–पुराने क्षेत्र की प्रतीक भी बन गई हैं। एक विशेष समुदाय का संबल न होकर एक राजनीतिक संबल। लोग मौका देखकर इन्हें पहनते हैं। समय देखकर बदलते हैं। आदमी और नेता देखकर पहनते हैं। टोपियों में बंटी यह राजनीति बेलीराम किन्नर की समझ से परे है। चीजों के इतने मायने भी हो सकते हैं! पहचान हो सकती है! उसे लोगों की अंधता पर गुस्सा आ रहा था। साथ ही ऐसे राजनेताओं पर भी जिनके लिए न इतिहास, न संस्कृति और न समुदायों से कुछ लेना–देना है। अपने–अपने स्वार्थ हैं। अपनी–अपनी सोच है। ये टोपियां बीच में कहां से आ गईं? वह उस घड़ी को कोसता है जब उसने नौकरी न करके राजनीति में आने का फैसला लिया था। लेकिन राजनीति के मायने इतने घटिया और बेसोचे होंगे– इतना उसने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कभी नहीं सोचा। वह छात्र राजनीति में भी हमेशा अपने बलबूते पर रहा। किसी के हाथों की कठपुतली नहीं बना। यहां तो किसी को किसी से मोह नहीं है। दफ्तर, मंत्रालय और विधानसभाओं तक सब–की–सब आरामगाहें हैं। उसका मन उन लोगों की सोच पर सलाम ठोंकने का हुआ जिन्होंने हिजड़े जिताए हैं; लेकिन यह तो कोई विकल्प नहीं हुआ। भ्रष्ट राजनीति पर यह एक तमाचा तो हो सकता है, विकल्प नहीं।

•

बेलीराम ने इस तरफ सोचना ही छोड़ दिया। उसे तो अपने काम से काम था। वह जहां अपने इलाके को विकास से जोड़ने के लिए आतुर था, वहां पूरे किन्नर समुदाय पर आए संकट के लिए भी लड़ना था। शहर जहां हर घर में टीवी थे, अनेक समाचार पत्रों का मायाजाल था, वहां तो इस बात को लेकर अवश्य ही बवाल मचा होगा। कितने ही इस क्षेत्र के लोग वहां बसे हैं। वहीं क्यों, देश के कोने–कोने में रह रहे हैं। उसके अपने लोग उसका साथ देंगे। चाहे हरी टोपी वाले हों या केसरिया टोपी वाले– यह सवाल सभी का है। अपने इतिहास और संस्कृति का है। वह इसी आशा से सबसे पहले उन अफसरों से मिला जो सरकार में ऊंचे पदों पर काबिज थे।

लेकिन जिनसे भी वह मिलता, उसे मायूसी ही हाथ लगती। किसी को कोई चिन्ता नहीं थी कि हिजड़े किन्नर नाम से जाने जाने लगे हैं। उसे पता चला कि हिजड़ों ने किन्नर राजनीतिक दल से एक स्वतंत्र पार्टी का गठन कर लिया है और चुनाव आयोग को मामला भेज दिया है। बेलीराम कई बड़े अधिकारियों से मिला, लेकिन किसी तरफ से उसे कोई सहायता नहीं मिली।

एक दिन तो हद ही हो गई जब वह एक उच्च अधिकारी के पास मिलने गया। वह अधिकारी शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय देख रहा था। उसने अपने नाम की पर्ची दी तो एक घड़ी के लिए वह अधिकारी सन्न रह गया। उसे नौकरी में इतनी उम्र हो गई, पर कोई 'किन्नर' उसे मिलने नहीं आया। उसने अपनी याद्दाश्त पर जोर दिया तो स्मरण हुआ कि पिछले चुनाव में कई हिजड़े जीते हैं। हो न हो, उन्हीं में से कोई हो। पर उनके राज्य में तो ऐसा नहीं हुआ कि कोई हिजड़ा किसी पद पर जीता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो। उसने जब उसे बुलाया तो देखकर फिर हैरान हुआ कि 'किन्नर' इतने सुन्दर और शुद्ध आदमी भी होते हैं। बेलीराम ने अपना परिचय दिया कि वह जिला परिषद् का सदस्य है। इस पर वह अधिकारी अपनी स्मरण शक्ति को कोसता रहा था। उसने अपनी मेज की दराज में रखी विजयी उम्मीदवारों की सूची निकालकर कई बार देखी भी। उसमें यही नाम दर्ज था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह सचमुच का आदमी है या किन्नर। आश्चर्य की बात यह भी थी कि बेलीराम ने इतने लेख इसके विरोध में लिखे थे; लेकिन उस अधिकारी की नजर उस पर नहीं पड़ी थी।

बेलीराम किन्नर ने तफसील देकर उस अधिकारी को समझाने का प्रयास किया था कि किन्नरों के साथ क्या–कुछ गुजर रहा है। उनके समुदाय पर संकट के बादल हैं। यह संविधान की तौहीन है। संस्कृति और साहित्य का अपमान है। वेदों और पुराणों में वर्णित किन्नर जाति की खिल्ली है। फिर उस संविधान की भी जिसमें इस समुदाय को इसी आधार पर जनजाति का दर्जा मिला है। मीडिया के लोगों की बेवकूफी से किन्नर देश संकट में है। यानी विस्तार से उसने बातें तो की ही, अपना एक आवेदन पत्र भी उस अधिकारी को पकड़ा दिया। वह अधिकारी सुनता रहा और सारी बातें हां–हूं में टाल गया। बेलीराम बाहर निकलने को हुआ तो उस अधिकारी ने पीछे से टोका, "देखो भई, तुम यंग हो। नए –नए राजनीति में आए हो। तुमको बहुत आगे जाना है। इसलिए एक मशविरा है, तुम जो अपने नाम के साथ ये 'किन्नर' लिखते हो न, इसे हटा दो। भई कुछ 'नेगी–शेगी' लिखा करो। वास्तव में हम नेगी ही हैं।" यह कहते हुए उस अधिकारी ने ऐसा मुंह बनाया मानो कोई कड़वी चीज खा ली हो।

बेलीराम प्रतिवाद करना चाहता था। उसे समझाना चाहता था कि वह जिस स्थान में जन्मे हैं, वह कालान्तर से किन्नर देश कहा जाता है जहां किन्नर, किरात, गंधर्व जैसी पौराणिक जातियां रही हैं। अपने नाम के साथ अपने क्षेत्र के उपनाम लगाने से अपनी एक पहचान बनती है। मिट्टी से जुड़ाव की गंध आती है। कितने ही लोग हैं जो अपने नाम के साथ अपने क्षेत्र–विशेष का उपनाम जोड़ते हैं! लेकिन उसका मन उचाट हो गया था। उसने सोचा भैंस के आगे बीन बजाने से क्या लाभ! बेलीराम ने उस अधिकारी से ऐसी अपेक्षा कदापि न की थी। उसने जो पांच मिनट का भाषण इसी विषय पर उसको दिया, क्या उसे इस अफसर ने सुना ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
नहीं... एक मन किया कि उसको गर्दन से पकड़कर किन्नर का मतलब समझाया जाए। फिर अपनी हदें याद आ गईं। जोश में होश कहां तक खोया जाए!

वह बाहर ऐसे निकला जैसे कहीं से चोरी करके आया हो। बचते–बचाते। बाहर आकर एक पल के लिए सचमुच लगा कि उसके नाम के साथ जो 'किन्नर' शब्द फंसा है, वह कोई खतरनाक चीज है। इसी अपमान के बोझ तले दबा वह अपने मकान तक आया। कॉलेज टाइम से लेकर ही उसके पास एक अच्छा–खासा मकान था, जिसका किराया भी बहुत कम था। वह वहीं आ गया।

इतना ही नहीं, जब वह और जगह भी जाता तो लोग उसको हिजड़ा ही समझते। कभी तो सचमुच उसे अपने नाम पर ही शर्म आने लगती; लेकिन उसने हार नहीं मानी। अपने सारे आलेख, पुस्तकों के सन्दर्भ और शब्दकोशों के अर्थ की प्रतियां तैयार करके वह अपने क्षेत्र के विधायक के पास चला गया। इस समय उसे टोपी का अवश्य ख्याल आया। लेकिन उसने टोपी और क्षेत्रवाद के इस झंझट से दूर रहने में ही बेहतरी समझी। भले ही कोई कुछ भी कहे। हरी टोपी किसी पार्टी विशेष की पहचान नहीं है बल्कि यह तो उसके 'देश' का ताज है। पहचान है। परंपरा है और संस्कृति है। फिर इन्हें हम राजनीतिक चक्रव्यूह में क्यों फंसाएं? विधायक उसे जानता था। बेलीराम ने विस्तार से अपनी बात उसके सामने रखी और निवेदन किया कि विधानसभा में यह मुद्दा उठाया जाए। हालांकि विधायक महोदय को भी इस बात में कोई दमखम नजर नहीं आया, परन्तु उसे एक नया मुद्दा तो मिल ही गया था। वह राजी हो गया कि वह इस मामले को विधानसभा में जरूर उठाएगा।

...और सचमुच विधानसभा में यह मामला लग गया था। जिस दिन इस पर बहस होनी थी, उस दिन बेलीराम किन्नर भी वहां चला गया था। सारे दिन दूसरी बातों पर बहस होती रही। अन्तिम प्रश्न 'किन्नर' का था। सभी के लिए नया मामला था। विपक्षी चाह रहे थे कि इस पर जरूर बहस होनी चाहिए; नहीं तो लोग उनकी हरी टोपी को ही 'किन्नर' कहना शुरू कर देंगे। बहस आरम्भ हुई तो बीच–बीच में ठहाके लगते रहे। केसरिया टोपी पहने कुछ नेताओं ने इस बहस को मजाक में ही उड़ा दिया। अब बहस मुद्दे से पिछड़ कर मजाक में तबदील हो गई थी। एक मजाकिया विधायक ने विपक्ष की तरफ एक खास अंदाज में कमर मटकाते हुए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ठहाका लगाया, "अरे किन्नरो! उठो अब। लंच हो गया है।"

इस मजाक पर जोर से ठहाके लगे और पूरी सदन गूंज गई। भीतर बैठे अधिकारी और अन्य लोगों के साथ प्रेस गैलरी में बैठे कुछ मीडिया के लोग भी इन ठहाकों में शामिल थे। बेलीराम किन्नर सकपका गया। वह भौंचक्क–सा यह सब देखता रहा। सदन और प्रेस गैलरी में गूंजे ठहाके उसके कानों में कनखजूरे की तरह घुसे। उसे लगा जैसे उसके असंख्य पैर उसके मस्तिष्क में पसर गए हैं और उसका सिर चकरा गया है। पसीने से तर–ब–तर वह उठा और बाहर चला आया। उसने सोचा था कि गेट पर उसके इलाके के बहुत से लोग खड़े होंगे; लेकिन वहां कोई नहीं था। वह बेसुध–बेजान और बौखलाया हुआ–सा सड़क तक पहुंचा। उसे चलते हुए लगा कि एक भीड़ उसके पीछे चल रही है। उसी तरह जैसे गडरियों के पीछे भेड़–बकरियों के रेवड़ चले आ रहे हों। दूसरे पल उसे लगा कि हिजड़ों की पूरी बारात उसके पीछे चिमटे, ढोलकियां लेकर कमर मटकाते आ रही हो। उसके कदम तेज हो गए। कुछ देर बाद उसे महसूस होने लगा कि उसके पीछे हिजड़े नहीं बल्कि तमाम किन्नर, किरात, गंधर्व और यक्षों के समूह भाग रहे हों और उससे पूछ रहे हों कि तुम हमसे भागकर कहां जा सकते हो....?

उसने अपने को इस समय निपट अकेला और असहाय पाया। वह भीतर से पूरी तरह जैसे टूट गया था। उसका सिर चकरा गया। कदम आगे बढ़ाता तो पीछे लौट आते। लड़खड़ाने लगते। इससे पहले कि वह सड़क के बीचों–बीच गिर जाता, किसी ने उसे संभाल लिया। इस अप्रत्याशित सहारे ने मानो उसे नया जीवन दे दिया। कोमल हाथों के स्पर्श की मिठास ने भीतर एक रोमांच पैदा किया और उसे लगा कि वह तोशिम किम में सुनम की बांहों में हो। धीरे–धीरे वह अपने वर्तमान में लौटने लगा। आंखें खुलीं तो सामने सचमुच सुनम थी... अपने पारंपरिक पहनावे में नहीं, बल्कि सफेद सूट के ऊपर काला कोट पहने हुए। बेलीराम किन्नर ने अपार स्नेह के साथ अपना सर्वस्व उसकी आंखों में भर दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माफिया

चुन्नी को बापू और चिड़िया एक–जैसे लगते हैं। दोनों धोखेबाज हैं। बापू का वह कुछ नहीं कर सकता, पर चिड़िया को वह आंगन में नहीं बैठने देता। उसका पीछा करता है। पत्थर मारता है। यह सिलसिला उस वक्त तक चलता है जब तक चिड़िया धान के क्यारों को लांघती घाटी के बीहड़ों में न चली जाए। चुन्नी थका–हारा लौटता है। हांफता हुआ। बदन पसीने से तर–बतर। आंखों में आग और चेहरा लाल–लाल। बाल बिखरे हुए मानो किसी से खूब झगड़कर आया है। दादी जानती है उसका झगड़ा चिड़िया से है। पर उसे समझाए कौन? मनाए कौन? वह तो उसकी दुश्मन हो गई है। चिड़िया न हुई बाघ की मौसी हो गई।

दादी पछताती है। उसने चुन्नी को मोर की कहानी क्यों सुनाई। पर बापू को कुछ अता–पता नहीं रहता। न चुन्नी की अम्मा कुछ जानती है। अम्मा को घर–बाहर के कामों से फुर्सत नहीं मिलती और बापू तो कंडे के जंगलों का होकर रह गया है। न दिन जानता है, न रात समझता है। चुन्नी के लिए बापू का काम–धंधा मास्टर की टोपी है। पूछे कौन?

चुन्नी कई बार अपनी उम्र को कोसता है। वह झटपट बापू जैसा गबरू क्यों नहीं हो जाता! यह बात उसे तब अखरती है जब बापू की दुनाली बंदूक उससे नहीं संभलती। जब बापू घर नहीं होता, या बंदूक साथ नहीं ले जाता, चुन्नी उसको बार–बार छूता है। तुनकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीचे–ऊपर रखता उठाता है। पर भारी इतनी कि संभलती नहीं। वरना उस चिड़िया की क्या मजाल कि वह मोर के पांव न लौटाए? उसका मन करता है कि वह उसे मारकर उसके पांव नोच ले और मोर–मोरनी को दे आए। वह अपनी अक्षमता पर कुढ़ता है। भीतर–ही–भीतर जलता है। चिड़िया चौकस इतनी कि चुन्नी के आंगन निकलने से पहले ही रफू–चक्कर हो लेती है। वही नहीं, सभी, जो उसकी बिरादरी की हैं।

•

चुन्नी और दादी की खूब पटती है। वे दोनों रात–दिन साथ रहते हैं। चुन्नी दादी के पास ही सोता है। रात को स्कूल का काम करने के बाद वह कहानी सुनना नहीं भूलता। ऊन कातते–ठेरते जब तक कि दादी ऊंघ न जाए। मोर की कहानी दादी ने ही उसे सुनाई थी।

दादी जानती है कि चुन्नी अक्सर दरिया कंडे की मोरनी धार में रोज जाया करता है। लकड़ी लानी हो तो मोरनी धार। घास–पत्ती लानी हो फिर मोरनी धार। खेल–कूद करना हो तो उसके लिए भी मोरनी धार। कई बार वह दादी को भी वहां ले जाता है और मोर–मोरनी के साथ खोया रहता है।

एक रात चुन्नी ने पूछा था, "दादी! दादी! मोर के पैर भद्दे क्यों होते हैं?"

"बेटा, मोर को एक चिड़िया ने ठगा था ना!"

"चिड़िया ने दादी?" चुन्नी ने आश्चर्य से पूछा था।

"हां बेटे... फिर उस चिड़िया ने उसके पैर नहीं लौटाए।"

चुन्नी ने अपनी कापियां–किताबें बस्ते में भरीं। उसे एक तरफ फेंका और दादी की पालथी में सिर सटाकर मुंह की तरफ सो गया।

दादी उस समय ऊन कात रही थी, तकली छोड़नी पड़ी। बांस की छोटी टोकरी में ऊन और तकली रखकर दादी हाथ से चुन्नी के बाल सहलाती कहानी सुनाने लगी थी, "एक दिन वह चिड़िया मोर के घर गई थी। कहने लगी कि उसे एक मेले में जाना है, पर उसके पांव भद्दे हैं इसलिए जा नहीं सकती। उसने मोर से विनती की कि यदि वह उसे एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रोज के लिए अपने पांव उधार दे दे तो वह मेले में जा सकेगी। मोर को तरस आ गया। उसने अपने पांव चिड़िया को दे दिए और उसके अपने पास रख लिए।"

"चिड़िया क्या आई नहीं तब?"

"आई बेटे, पर मोर के साथ धोखा कर गई। पांव नहीं लौटाए।" दादी ने उदास होकर बताया।

"मोर ने मांगे भी नहीं दादी?"

"मांगे होंगे बेटा। पर चिड़िया चालाक थी न! बेईमानी तो बुरी होती है। नहीं दिए।"

"मोर को गुस्सा नहीं आया होगा!"

"मोर तो गऊ है गऊ। उसे गुस्सा कहां आता है? देखता नहीं तू। कितना भोला है! कितना ठगड़ा है! शरीफ!"

चुन्नी तत्काल उठ गया। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था। दादी ने देखा तो लगा जैसे पांव मोर के नहीं, चुन्नी के चिड़िया ले गई हो।

दादी आगे कुछ कहती, चुन्नी ने फिर पूछा, "वह चिड़िया अब नहीं रही दादी?"

"क्यों नहीं चुन्नी, तू रोज तो आंगन में उनको देखता रहता है।"

"आंगन में?"

चुन्नी ने हैरानी से दादी की तरफ देखा और एकदम उठ गया।

दादी ने बाजू से पकड़कर फिर बिठा दिया, "इस वक्त रात है। वे तो कहीं अपने घोंसले में होंगी। सो जा... सुबह देख लेना।"

दादी के लिए वह कहानी होगी, पर चुन्नी के लिए हकीकत बन गई थी।

•

चुन्नी को जब भी दादी या घर के दूसरे लोग ढूंढ़ते तो वह मोरनी धार पर ही मिलता। झाड़ियों की ओट में दुबका वह कई घंटों मोर–मोरनी को देखता रहता। पहले–पहले तो उनका जोड़ा बीहड़ों में छिप जाता। चुन्नी से डरकर भाग जाता। पर अब तो मोर–मोरनी चुन्नी के घर–जैसे हो गए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थे। कई बार उसके बिल्कुल नजदीक आ जाया करते। वह उनके मखमली पंखों को अपनी उंगलियों से छूना चाहता, पर चुपचाप दुबका रहता। यही सोचा करता कि कहीं ये भाग न जाएं।

चुन्नी की आंखों में अब मोर–मोरनी बस गए थे। उसके मन में वही दोनों घर कर गए थे जैसे उसका वह परिवार हो गया हो। चुन्नी उनके ही साथ एक पक्षी हो। मोर हो। उसे मोर की भूरी आंखें बहुत भातीं। वह उन्हें देखकर उन्हीं में खोया रहता। उनकी चमकीली हल्की पीली–सफ़ेद चोंच उसे उतनी ही प्यारी थी जितनी कि सुलेख लिखने वाली उसकी कलम। गर्दन को आगे–पीछे हिलाते, झुरमुटों में आहिस्ता–आहिस्ता चलते या खाली पहाड़ी की ज़मीन के साथ चोंच से अपना शिकार तलाशते तो चुन्नी को उनकी चोंच के बीच खुलता मुंह भी खूब भाता। जब वे एक–दूसरे की चोंच के साथ चोंच मिलाते, कूदते, प्यार में झगड़ते और चोंचों को आपस में सटा लेते तो चुन्नी का चेहरा अजीब से रोमांच से पुलक जाता।

मोरनी की बनिस्बत मोर काफी बड़ा था। उसके सिर पर छोटे, हरे और चमकते रोंये बहुत प्यारे थे। चुन्नी का मन करता कि उसे गोद में भरकर उसी तरह सहलाए जैसे वह अपनी बिल्ली को बिस्तर में सहलाया करता है। पर उसे पकड़े कैसे? दादी की सीख याद आ जाती कि मोर–मोरनी को दूर से ही देखना चाहिए, उन्हें तंग नहीं करते, डराते नहीं, ऐसा करने पर वह दूर देश चले जाते हैं।

मोर की गर्दन का चमकीलापन और उस पर मखमली गहरे नीले बाल तो उसे बहुत पसंद थे। चुन्नी को कई बार लगता कि मोर की तीन आंखें हैं। पर दादी ने समझाया कि वह आंख नहीं बल्कि चंद्रमा जैसा एक चिह्न गले में होता है। चुन्नी को उसके पंख बहुत प्यारे लगते थे। पता नहीं चुन्नी ने अपने कमरे में कितने सांज लिए थे! वह जब भी मोरनी धार जाता तो झाड़ियों में उसे कई पंख मिलते और उन्हें उठाकर वह सांजता रहता। कई बार मोर–मोरनी दोनों क्यारों और खेतों में चलते–चलते उसके घर की पिछवाड़ी तक आ जाते थे, पर ऐसा बहुत कम होता था। गांव में कुत्ते और बिल्लियां थीं जो उन्हें भगा देती थीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

•

जब आसमान में बादल आते तो चुन्नी पत्तों की झूम सिर पर लिए घर से भाग जाता। उसे पता होता कि मोर नाचेगा। जब कभी ऐसा हुआ तो चुन्नी को मानो स्वर्ग मिल गया हो। मोर का नाच उसे रोमांचित कर देता। पंखों का मायावी संसार मोरनी धार में बस जाता जैसे गहरा नीला आकाश धरती पर उतर आया हो। मोरनी पंखों के नीचे झूमती रहती। मोर अपने पंखों से मोरनी को ढक लेता मानो वह आकाश में उमड़ते–घुमड़ते बादलों की परछाई उस पर नहीं पड़ने दे रहा हो। उसका बदन बूंदों से नहीं भीगने देना चाहता हो। वह बस पंखों के नीचे रहे। उनकी परिसीमाओं को न लांघे। नाचते हुए मोर मधुर आवाज में कुहकता। बोलता। इस मीठी केंओं–केंओं से आर–पार की घाटियां गूंजने लगतीं। उसकी कुहक चुन्नी के रोम–रोम में रच–बस जाती, जैसे मोर नहीं वही नाच रहा हो।

नाचते–नाचते मोर की जब नज़र अचानक अपने पांव पर पड़ती तो वह मायूस हो जाता। कुछ देर पहले की वह चंचलता–चपलता कहीं भाग जाती। उसकी कुहक रूआंसी हो जाती। आंखों से छप–छप आंसुओं की बूंदें गिरने लगतीं। मोरनी अब निरंतर मोर के मुंह की तरफ चोंच किए रहती। उसके लिए ये क्षण अति नाजुक होते। उस चिड़िया की वादाखिलाफी से मोर की आंखों से झरते आंसुओं को मोरनी ज़मीन पर पड़ने से पहले ही पी जाती। फिर वे दोनों चुपचाप एक जगह मायूस से एक–दूसरे से सटे रहते।

चुन्नी को दादी ने बताया था कि मोर के आंसू पीने से मोरनी मां बन जाती है। पर पांच–छः बरसों में चुन्नी ने न तो उनके अंडे देखे और न ही कोई बच्चा। उसे विश्वास है कि जरूर कोई–न–कोई चीज उन्हें निगल जाती है। कभी–कभी चुन्नी को मोरनी अपनी अम्मा जैसी दुःखी लगती है, पर वह दोनों के दुःख में अंतर नहीं कर पाता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

•

चुन्नी की अम्मा को बहुत काम रहते हैं। दादी तो बहुत बूढ़ी है। अधिक कुछ नहीं कर सकती। बापू अम्मा की कुछ मदद नहीं करता, उलटे अम्मा को डांटता रहता है। चुन्नी की समझ में नहीं आता कि बापू इस तरह हर–कभी क्यों बिगड़ जाता है। दादी की बगल में सोये–सोये उसने कई बार उनकी नोक–झोंक सुनी है। उसने देखा है कि अम्मा ऐन रात तक बापू का चूल्हे के पास बैठी–ऊंघती इंतजार करती रहती है। वह रोटियां बापू से पहले नहीं खाती। दादी कई बार समझाती भी है कि खा लिया कर। पर अम्मा के लिए पति परमेश्वर है। दादी इसलिए ही बहू को खूब चाहती है। संस्कारी मानती है। काश! बेटा भी ऐसा होता। यह भी नहीं कि कुछ कमाता नहीं है, लेकिन उसका दिन–रात का यह धधा दादी की समझ से परे है। बहू जानती होगी, पर मन की मन ही में रखती है। ढकी मुट्ठी लाख की। पति जो करे वह सिर–माथे।

•

कई बार जंगलायत के लोग घर चले आते हैं। उनका थड़ा आधी रात तक जमा रहता है। चुन्नी की अम्मा को दोबारा रोटियां बनानी पड़ती हैं। दादी भी दया कर उठ जाती है, परंतु बहू कुछ नहीं करने देती। बाजू से पकड़कर बिस्तर पर लिटा आती है। चुन्नी इस शोर–शराबे में नहीं सो पाता। वह दादी की बगल में दुबका सबकुछ सुनता रहता है। वह जानता है बापू के साथ आए लोग खूब शराब पीएंगे। ऊल–जलूल बतियाएंगे। मां को कनखियों से देखते जाएंगे, पर मजाल कि कुछ इधर–उधर की कर जाएं। यह डर बापू के रोबदार शरीर का है। उस पर मां भी हर वक्त ऐसे लोगों से चौकस रहती है। खूब रोटियां गटकेंगे। फिर उसी के घर सो जाएंगे।

शराब पीकर चुन्नी का बापू आपे से बाहर हो जाता है। चुन्नी को अच्छा नहीं लगता। शराब पीकर वह चुन्नी की अम्मा को बिन वजह बकने लगता है तो चुन्नी घबराकर कांपने लगता है। मन करता है कि रसोई में मां के पास चला जाए। जानता है, बापू उसे भी पीट देगा। कई बार ऐसा हुआ है। अब वह उनके झगड़े के बीच नहीं जाता। सब सहता है। सुनता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। मां को कुछ कहे। कुछ बोले। मारे–पीटे। पर कलेजा तो जलता जाता है। दादी को चुन्नी अवश्य उठा दिया करता है यह कहकर कि बापू को समझाए। दादी को गुस्सा कम आता है। कभी आता है तो दादी अंधेरे में गिरती–लड़खड़ाती चूल्हे के पास चली जाती है। बापू दादी का मान रख लेता है और कुछ नहीं कहता। दूसरे लोग भी होंठ सी लेते हैं, पर बहू दादी को कुछ बोलने नहीं देती।

•

चुन्नी का बापू पिछले सात सालों से जंगलायत महकमे में काम करता है। वह अक्सर कंडे में दरिया के साथ बनी गार्ड हट में ही रहने लगा है। जंगलायत महकमे के टूर पर आते–जाते अफसरों की आवभगत के साथ रेंज दफ्तर तक डाक ले जाने–आने का काम उसी के जिम्मे है। उसका नाम परसिया है। जंगलायत के अफसरों से खूब मेल है। यह गार्ड की बदौलत है। गार्ड पिछले दस–बारह सालों से यहीं जमा है। अब महकमे के बड़े अफसर तक गार्ड हट के बजाय परसिये के घर ही रुकते हैं। उनका घर गांव की हद से थोड़ा ऊपर है। बड़ा गांव है। इसी गांव से पंचायत का परधान भी है। परसिया और परधान एक ही बिरादरी से हैं। एक टब्बर है। इसलिए दोनों की खूब पटती है।

घर से कोई आधा किलोमीटर कंडे की तरफ दोमंजिली गौशाला है जहां उनकी बकरियां रहती हैं। बकरियों के कमरे के साथ दूसरी मंजिल के कमरों में लकड़ियां भरी हैं। जब परसिया कई बार देर से घर आता है तो चुन्नी की अम्मा अपने घर की खिड़की से बार–बार नीचे झांकती रहती है। चुन्नी भी कभी–कभार ऐसा करता है। उसने इस गौशाला के पास बहुत बार रात को रोशनी देखी है। टार्चें लेकर इधर–उधर भागते हुए लोग देखे हैं। वह जानता है कि यहां उसका बापू, परधान और गार्ड देर रात तक होते हैं।

चुन्नी ने दाव लगाकर एक बार गौशाला के इन कमरों को खोला था। उस दिन उसका बापू डाक लेकर रेंज दफ्तर गया था और मां कंडे में दरिया के पार कहीं खजूर लाने गई थी। चुन्नी के हाथ चाभी लग गई। उसने दादी को भी नहीं बताया। जब कमरे में गया तो उसकी घिग्घी बंध गई। घबराकर दरवाजे पर ही मौन खड़ा रहा। फिर धीरे से भीतर चला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गया। वहां भालू, खरगोश, बाघ और कई छोटे जानवरों की खालें रखी थीं। कुछ बड़े लकड़ी के बक्से में होंगी। उसकी चाभी चुन्नी को नहीं पता। उसने उन खालों को अपने हाथ से सहलाया। देखने के बाद उसने कमरा बंद कर दिया। फिर दूसरा खोला। वह ऊपरी मंजिल का बड़ा हाल था। इसी के नीचे बकरियां थीं। इस कमरे में देवदार, खैर, चीड़ और कई दूसरी लकड़ियों के तख्ते, कड़ियां और मोटे स्लीपर थे। बहुत–सी लकड़ियों के चुन्नी नाम नहीं जानता था। वह नहीं समझ पाया कि यह बापू क्यों करता है।

•

दादी सबकुछ जानती होगी। अम्मा को भी पता होगा। पर चुन्नी उन दोनों से कैसे पूछे! दादी ने तो परसिये का पल–पल गिना है। परखा है। उसे कई बार समझाया है, पर वह नहीं मानता। उलटा बिगड़ता है। घर की बात घर रहे – दादी यही सोच–समझकर अब कुछ नहीं कहती। चुन्नी की अम्मा भी दादी हो गई है। खसम कैसा हो, भगवान है। सबकुछ सहना है। पर दादी भीतर–ही–भीतर डरी रहती है कि इस काले काम–धंधे में बहू न बिगड़ जाए। चुन्नी ने जब से यह सबकुछ देखा है, वह चौकस हो गया है। दादी से एक बार चुन्नी ने पूछा था, "दादी! गौशाला में जो खरगोश की खाल है न, मैं उसे ले लूं?"

दादी सुनकर दंग रह गई जैसे जुबान ही न रही हो। गूंगी हो गई दादी। चुन्नी ने बाजू से झिंझोड़ा था, "बहरी हो गई हो दादी! ले लूं न एक?"

दादी समझ गई कि चुन्नी वहां गया होगा। थोड़ा गुस्साई भी। यह सोचकर कि चुन्नी के पेट में दाढ़ी उग गई है; वह सहज हो गई। बच्चा है चुन्नी; दादी जानती है, समझती है। घर में जो कुछ होगा उसका असर बच्चे पर पड़ेगा। फिर दूसरे बच्चों की तरह नहीं है। खूब चुस्त है। समझदार है। दादी ने हल्का–सा डांटा था, "पाजी कहीं का! तेरे को किसने चाभी दी रे?"

चुन्नी जैसे अपनी बहादुरी पर खुश हो गया। "अम्मा की दरोठी से ली।"

दादी सचमुच नाराज हो गई थी जिसका कारण चुन्नी नहीं समझ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाया। दादी ने हल्के से डपटा था, "तू अब चोरी भी करने लग गया। आने दे तेरे बापू को घर। सबकुछ बताऊंगी।"

चुन्नी घबरा गया। वह बापू से बहुत डरता था। दादी की पीठ पर चढ़कर आगे बाजू झुलाते कहने लगा, "गलती हो गई दादी। अब नहीं करूंगा।"

दादी चुप रही। चुन्नी पीठ से उतरा और बाहर जाते हुए कहने लगा, "मैं खुद खरगोश को पकड़कर मारूंगा। फिर देखना मेरे पास बापू से अच्छी खाल होगी।"

दादी चीखी थी। चुन्नी जहां खड़ा था वहीं बुत की तरह हो गया। न पीछे देख पाया, न आगे चल सका। दादी ने बाजू से पकड़कर अपने पास बिठा लिया। आंखें भर आईं थीं दादी की। रुंधी–सी बोलने लगी, "ऐसा अनर्थ मत करना चुन्नी... मत करना। यह पाप है। फिर बाहर पता लगे न तो पुलस पकड़कर ले जाती है।"

चुन्नी आश्चर्य और उत्सुकता से दादी की तरफ देखने लगा, "सच दादी...।"

दादी ने उसे अपनी गोद में ले लिया था। हालांकि चुन्नी दस–ग्यारह बरस का था, पर दादी चुन्नी के साथ दो बरस के बच्चे जैसा ही व्यवहार किया करती।

"हां चुन्नी... यह गलत काम होता है। गलत।"

"पर बापू क्यों करता है दादी? उसे पुलस क्यों नहीं पकड़ती?"

भीतर खामोशी छाई रही। दादी की आंखों से अचानक आंसू बहने लगे थे। चुन्नी को दादी मोरनी जैसी लगी, जैसे वह मोर के पांव देखकर मायूस हो जाती है।

चुन्नी को चिड़िया याद आ गई।

•

परसिया जब भी जंगल जाता तो अपने साथ दुनाली ले जाया करता था। गांव से दूर नीचे कंडे के उधर दरिया बहता था। रास्ता इतना संकरा और बीहड़ों में से जाता कि दिन को भी डर लगता था। पर परसिया, गार्ड और परधान के लिए तो आम था। वह रात को भी नहीं डरते थे। कभी–कभार परधान के पास भी बंदूक होती। चुन्नी ने उसे कई बार देखा है। वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education, Baniyab Jammu
हल्की और एक नीली की थी। उसने कई बार सोचा कि परधान चाचू से उसे मांग ले। फिर उस चिड़िया को मारे। पर बापू के डर से कभी नहीं मांग पाया।

जब जंगलात के अफसर गांव आते तो खूब रौनक चुन्नी के घर लगी रहती। उस दिन परसिया और परधान दिन–दिहाड़े कोई–न–कोई छोटा जानवर मारकर ले आते, पर किसी को पता नहीं चलता था। परसिये के पास किल्टा होता। उसमें जंगली तीतर, मुर्गा या खरगोश मारा हुआ रखा रहता और ऊपर लकड़ियों के छोटे टुकड़े। बहाना होता कि जलाने के लिए लकड़ियां लाया है या पतलियां बनाने के लिए पत्ते। उस रात खूब मांस पकता। चुन्नी जागता रहता। उसे भी खूब मिलता। पर जब से चुन्नी ने गौशाला में खालें देखी हैं, वह मांस नहीं खाता। छोड़ दिया है। खाना खाने के बाद जब सब फारिग हो जाते तो गौशाला के आसपास फिर आधी रात को टार्च की रोशनियां चलती–फिरती नजर आतीं। चुन्नी बाहर पेशाब जाने के बहाने निकल जाया करता और देखता रहता।

चुन्नी चोरी–छिपे कई बार बिस्तर से उठ जाता। दरवाजे की ओट से चूल्हे के पास बैठी अम्मा को निहारता। बापू उसके कानों में कुछ बुदबुदाता रहता। फिर जेब से नोटों की गड्डी निकालकर अम्मा के पास थमाता। अम्मा उन्हें माथे से वांचती और अपनी दरोठी में रखकर ताला लगा देती। चुन्नी को वह दरोठी नोटों से भरी लगती थी, पर उसके हाथ कभी उसकी चाभी नहीं आई वरना उसे पता चल पाता कि गौशाला की तरह इस दरोठी में और क्या–क्या है।

•

कई दिनों तक ऐसा चलता रहा। चुन्नी को अपने ही घर में डर–सा लगा रहता। पर आदत–सी होने लगी थी। वह दादी से अब कहानी सुनने की जिद भी नहीं करता था। अपना काम मन लगाकर किया करता। इसलिए ही वह तीसरी से लेकर चौथी तक अपनी कक्षा में प्रथम आया था। इस बार मास्टर जी ने उसे बताया था कि यदि वह पूरे जिले में प्रथम आता है तो उसे आगे पढ़ने के लिए वजीफा भी मिल सकता है और उसका फोटो अखबार में भी छपेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे स्कूल में बहुत अच्छा लगता था। मास्टर जी जब कक्षा में कभी जंगलों के बारे में बताते, पर्यावरण के बारे में लिखाते या पशु–पक्षियों के बारे में पढ़ाते तो वह मन लगाकर सुनता रहता। एक बार उसने अपने बापू से पूछा था, "बापू... बापू! मास्टर जी बताते हैं कि पेड़ काटना अपराध है। पाप होता है। फिर तू क्यों काटता है?"

उसका बापू खूब हंसा था। सहजता से बोला, "चुन्नी, हम तो जंगलायत वाले हैं। इनसे पैसा आता है। तुझे पढ़ाना–लिखाना है। बड़ा अफसर बनाना है।"

चुन्नी चुप हो जाता। अफसर कैसे होते हैं– यह दादी ने ही उसे बताया था। जब कोई जंगलायत से वहां आता, चुन्नी को बापू की बात याद आ जाती। वह अफसरों को गौर से देखता और चिढ़ जाता। शराब पीकर वे लोग हर कहीं गिर जाते या उलटा–सीधा बकने लगते। वह दादी को झट से कहता, "मैं अफसर–उफसर नहीं बनूंगा दादी, नहीं।"

यह कहकर वह चुपचाप या तो मोरनी धार भाग जाता था या फिर बिस्तर में दुबक जाया करता।

•

गांव में इलेक्शनों की चहल–पहल समाप्त हो गई थी। परसिया परधान के साथ खूब व्यस्त रहा। चुन्नी ने पांचवीं का इम्तहान देकर पूरे जिले में पहला दर्जा हासिल कर लिया था। जिस पार्टी के साथ परसिया और परधान थे, वही जीती थी और क्षेत्र का पिछला एम.एल.ए. ही दोबारा चुना गया था। इस बार वह राज्य वनमन्त्री भी बन गया।

इतना कुछ होने के बाद चुन्नी और मोर का साथ नहीं छूटा। और गहरा हो गया था। क्योंकि चुन्नी को छुट्टियां थीं इसलिए वह ज्यादातर मोरनी धार पर ही खेलता–कूदता रहता। कुछ और बच्चे भी उसके साथ होते।

एक दिन उसने सुना था कि गांव में मन्त्री आ रहे हैं। उसके लिए यह महत्त्वपूर्ण हो या न हो, पर उसके बापू के लिए काम बढ़ गया था। फिर बात अपने महकमे की थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2023-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

•

इसी बीच एक दिन एक गोरा साहब कुछ जंगलायत के अफसरों के साथ गांव आया था। चुन्नी ने ऐसा सुंदर व्यक्ति पहली बार देखा था। शायद गांव वालों ने भी। वह उनके घर ही ठहरा था। परसिया उसकी बोली नहीं समझता था, पर उसके साथ जो रेंज अफसर था वही उससे बात करके परसिये या गार्ड को आगे काम समझाता था। जितने दिन वह गांव रहा, परसिया, परधान, गार्ड और दूसरे लोग रात–रात भर कंडे के साथ वाली गार्ड हट और गौशाला में आते–जाते रहे। जिस दिन वे लौटे थे, चुन्नी ने दरवाजे की ओट से झांककर फिर भीतर देखा था। उस दिन गार्ड भी वहीं था। परसिये ने जेब से नोटों की गड्डी निकालकर गिनी थी। उसमें से कई नोट गार्ड को दिए थे और बाकी बचे हुए चुन्नी की मां ने दरोठी में रख लिए थे। उसके कानों में बस इतनी ही आवाज पड़ी थी कि इस बार खालें अच्छे भाव गई हैं।

•

पूरे का पूरा जंगलायत महकमा गांव पहुंच गया था। उनमें से ज्यादातर लोग चुन्नी के ही घर रहे। परधान भी वहीं चला आता। मन्त्री के दौरे का कार्यक्रम बनता रहता। अफसरों को चिंता यह थी कि जीतने के बाद वनमन्त्री बनकर एम.एल.ए. साहब यहां आ रहे हैं, विशेष क्या किया जाए! रेंजर ने ही सलाह दी थी कि क्यों न मोरनी धार को नेशनल पार्क का नाम दे दिया जाए। मन्त्री जी से उद्घाटन करवा देंगे। उसके बाद सारी औपचारिकताएं पूरी हो जाएंगी। वन अधिकारी और अन्य लोगों को यह बात बहुत पसंद आई थी। नेशनल पार्क में दूसरे जानवर या पक्षी भले ही न हों, पर मोर–मोरनी तो हैं ही।

दूसरे दिन से मोरनी धार के लिए रास्ता बनना शुरू हो गया था। चुन्नी के लिए अब उस तरफ जाना दूभर हो गया था। पर वह दूर–पार से झाड़ियों के बीच मोर–मोरनी तक पहुंच ही जाता था। लोगों का शोर सुनकर उनका जोड़ा काफी नीचे उतर गया था। मोरनी धार तक दो–तीन दिनों में रास्ता बन गया। चुन्नी के लिए गिनना मुश्किल था कि घनी झाड़ियों के बीचों–बीच कितने छोटे–बड़े पेट काटकर रास्ता बना होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उसका बापू रोज शाम को कई–कई मन के बोझ पीठ पर उठाकर ले आता था।

•

चुन्नी के स्कूल में भी चहल–पहल हो गई थी। कई सालों बाद बाहर–भीतर की दीवारें लीपी जा रही थीं। उनमें चूना लीपा जा रहा था। टूटा हुआ बरामदा ठीक किया जा रहा था। बरामदे के खम्भे में रंग हो रहा था। स्कूल के लिए कुछ नई टाटें–दरियां भी आ गई थीं। मास्टर जी ने जिन कुर्सियों को एक पुराना ब्लैकबोर्ड तोड़कर बैठने लायक बनाया था, उनकी जगह नई कुर्सियां पहुंच गई थीं। यानि चुन्नी को लग रहा था कि उसका स्कूल बिल्कुल नया हो गया है। उसने कभी इस तरह अपना स्कूल सजा –संवरा नहीं देखा था। मास्टर जी ने बच्चों का कार्यक्रम भी तैयार करवाया था। चुन्नी को राष्ट्रीय पक्षी मोर पर प्रस्ताव याद करना था। मास्टर जी ने कई किताबें पढ़कर प्रस्ताव बनाया था। चुन्नी उस प्रस्ताव को मोर को देख–देखकर झाड़ियों के बीच ही याद करता रहता और पहले जैसा उनसे बतियाता जाता। उन्हें छेड़ता और जहां कहीं भी पंख मिलते, उन्हें सांजता रहता।

•

मन्त्री जी के खाने की चिंता पहली थी। रेंजर साहब कई बार चुन्नी के घर वन अधिकारी, परधान और गार्ड से सलाह–मशवरा कर चुके थे कि उनके लिए क्या–कुछ विशेष बनाया जाए। एम.एल.ए. रहते हुए वे उनकी आदतों और शौकीनियों से बखूबी वाकिफ थे। इसलिए गार्ड और परसिये को यह काम सौंपा गया कि वे मन्त्री जी के लिए अच्छे शिकार का प्रबंध करेंगे। अब उनके लिए यह बाएं हाथ का खेल था। पर गार्ड की सलाह थी कि पिछले कई बरसों से मन्त्री जी ने इस क्षेत्र की सेवा करते हुए बटेर, तीतर, घुरल, कक्कड़, मुर्गे इत्यादि सभी खाए हैं। इस बार तो कुछ नया होना चाहिए। परसिया समझ गया था। वह अपने काम में लग गया।

परधान इलाके में लोगों को जलसे में इकट्ठा करने के लिए भाग–दौड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bhattalai Kathua

में था। लोगों की बरेखी उसकी स्तेज से पर थी। उसकी बात जैसे सभी अनसुनी कर देते। न कोई उत्सुकता थी, न मन्त्री के गांव आने पर कोई अतिरिक्त खुशी। लोग अपने–अपने कार्यों में व्यस्त थे। उनका कहना था कि अब तक तो विधायक रहते हुए उन्होंने कुछ किया नहीं, अब कौन–सा पहाड़ तोड़ देंगे। लेकिन परधान ने हौसला नहीं छोड़ा और गांव–गांव घूमता रहा। भीड़ इकट्ठी करने के उद्देश्य से सभी ने मिलकर यह तय किया कि धाम का आयोजन किया जाए। इसका सारा खर्चा जंगलायत महकमा उठाएगा।

जंगलायत के अफसरों के लिए इस मौके पर कुछ भी असंभव नहीं था। उनके सिर पड़ी थी। इज्जत से निभ जाए बस! इसलिए गांव–परगने में यह ऐलान हो गया कि उस दिन जलसा तो होगा ही, लोगों को भरपेट खाना भी खिलाया जाएगा। यह भोजन मन्त्री जी और जंगलायत महकमे की ओर से देवता के नाम पर होगा। देवता पर तो लोगों की आस्था थी ही, वे भला देवता के प्रसाद को कैसे ठुकराएं! इसलिए जलसा भरने की उम्मीदें बढ़ गई थीं।

चुन्नी का बापू परसिया जरूरत से ज्यादा व्यस्त हो गया था। चुन्नी को प्रस्ताव याद करना था। परधान, जंगलायत के अफसरों और कर्मचारियों को मन्त्री की आवभगत की चिंता थी। दूर–दूर से लेबरें गांव पहुंच रही थीं। जहां से मन्त्री जी ने पैदल गांव आना था, वहां तक का रास्ता चौड़ा बनाया गया था। यानि बरसों बाद जिस तरह गांव की सफाई और छोटे–मोटे काम हो रहे थे, वे कभी विधायक होने पर नहीं हुए। नेशनल पार्क को उद्घाटन के लिए तैयार कर लिया गया था।

•

चुन्नी की आंखों में कई सपने बस गए थे। एक तो वह जिले में प्रथम आया था। दूसरे, पहली बार उसने जलसे में प्रस्ताव सुनाना था; वह भी मन्त्री के सामने। उसने कई बार दादी को प्रस्ताव सुना भी दिया था। दादी भी खुश थी। चुन्नी की अम्मा के लिए तो दिन–रात एक हो गया था।

जलसे की शाम ऐन रात तक चुन्नी मोर और मोरनी की केंओं–केंओं सुनता रहा। लेकिन उसकी सुबह उनकी मीठी आवाज... कुहक के साथ नहीं सुनाई दी थी। शायद ही ऐसी कोई सुबह रही होगी जब चुन्नी की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सुबह मोर की कुआं–कुआं के बीच न हुई हो। बिस्तर से आंखें मलता हुआ वह बाहर खिड़की में कई पल खड़ा रहा। मोरनी धार की तरफ देखता रहा। उसे केवल चौड़ा रास्ता और बीच–बीच में चूना लगा ही दिखा। स्कूल के पास अवश्य ही कुछ बोलने की आवाजें आ रही थीं। हल्का काला धुआं भी आसमान की तरफ उड़ रहा था। चुन्नी समझ गया कि लोग देर रात से ही स्कूल के पास तैयारी करने में जुटे हैं। तभी उसे अपना बापू दिखाई दिया। वह खिड़की की ओट में खड़ा हो गया। बापू भीतर आकर रसोई में गया। चुन्नी भी बिल्ली के पांव आगे खिसक लिया। उसकी अम्मा रसोई में थी। उसने भीतर बापू और अम्मा के बीच खुसर–फुसर सुनी। अम्मा ने उठकर साथ वाले कमरे से ढकी कोई चीज बापू को दी। बापू पट्टू की बुक्कल डालकर आंगन और स्कूल के पास चला गया। पट्टू के बीच कोई चीज छिपाकर बापू ले जा रहा था... चुन्नी को शक हुआ।

बापू आंखों से ओझल हुआ तो चुन्नी पुनः मोरनी धार की तरफ टकटकी लगाए खड़ा हो गया। उसे मोरनी की कुहक सुनाई दी। वह खुशी से उछला, पर ठिठक गया। वह मोर और मोरनी की आवाज पहचानता था। पुनः मोरनी झाड़ियों के बीच कुहकी... चुन्नी घबरा गया। वह जानता था कि सुबह मोरनी पहले कभी नहीं बोलती थी। कुहकती थी। चुन्नी को आवाज घबराई हुई लगी। उसमें गहरी पीड़ा थी। वेदना थी। अनुनय था। जैसे चुन्नी को वह अपने पास बुला रही हो। चुन्नी बाहर निकला और मोरनी धार की तरफ भाग लिया। झाड़ियों के बीच उसे कहीं भी मोर और मोरनी नहीं दिखे। उसका दिल घबरा रहा था। किसी अनहोनी घटना की पदचापें अनायास ही उसके कानों में कदमताल करने लगी थीं। वह बहुत आगे चला गया। उसके आश्चर्य की सीमा न रही जब उसने मोरनी को एक झाड़ी की ओट में दुबके देखा। वह खुश तो हुआ, पर दूसरे पल डर गया। मोर कहां है? पागलों की तरह झाड़ियों के बीच भागता रहा। कांटों ने उसकी कमीज और पायजामा भी फाड़ दिए थे। हाथों में कई जगह खरोंचें पड़ गई थीं, पर यह दर्द भीतर के दर्द से कहीं कम था।

चुन्नी को देख या उसकी भागने की आवाज सुन मोरनी झाड़ियों की ओट से बाहर आ गई थी। वह कुहकी... चुन्नी का मन जैसे इस गहरी, दर्दनाक पीड़ा भरी आवाज से बिंध गया हो। उसे लगा जैसे मोरनी उससे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
निवेदन कर रही हो कि मोर को ढूंढ़े। वह उसके बिना कैसे जीएगी? कैसे रहेगी? वह रात से अकेली है। मोर पता नहीं कहां चला गया! जैसे चुन्नी ने उसकी भाषा समझ ली हो... या फिर कहीं उसके मन में व्यर्थ ही मोर को वहां न देखकर यह भय तो नहीं भर आया। वह एक पल चुपचाप खड़ा रहा। दूर से मोरनी को देखता रहा। कुछ दूर ज़मीन पर नजरें पड़ीं तो पांव के नीचे से जमीन खिसक गई... वहां नीले, भूरे रोंये बिखरे थे। कुछ मिट्टी उखड़ी थी जैसे कोई चीज वहां देर तक छटपटाती रही हो। वह बैठ गया। उन रोंओं को समेटता रहा। दो मन हो गए। एक कहता यह तो यूं ही गिरे होंगे। दूसरा कहता नहीं कुछ हुआ है। वह मोरनी की तरफ बढ़ा। चाहता था उसे पकड़कर अपनी गोद में ले ले। पूछें कि मोर कहां है। वह तो हमेशा साथ रहे हैं। उसे अवश्य पता होगा। पर वह कैसे बोलेगी? बोल तो रही है, पर चुन्नी के लिए वह भाषा दो अर्थों में है। उसमें अनिश्चितता है। सत्य को खोज पाना उसके बस में नहीं। वह मोरनी की दर्दीली आवाज और झाड़ियों के बीच दुबकने को अनहोनी नहीं मान सकता। वह आगे बढ़ा। मोरनी घबरा गई। वह झाड़ियों के बीच ऐसे भागी जैसे कभी बिल्ली को देख दोनों भाग जाया करते थे। उसे पकड़ना चुन्नी के लिए संभव नहीं था। मन किया कि वहां से चला आए। उसे कुछ लोग उस तरफ आते दिखाई दिए। वह दूसरे रास्ते से घर वापिस चला आया। दादी उठ गई थी।

•

चूल्हे के पास अम्मा बैठी थी। दादी भी वहां चली गई। वह घबराया भीतर गया। उसकी सांस फूल रही थी। बोला, "दादी! दादी! वहां मोर नहीं है।" दादी ने कुछ नहीं कहा। चिमटा उठाकर चूल्हे में आग खरोड़ने लग गई। उसकी मां अवश्य इस प्रश्न से चौंकी थी। उसने अम्मा की तरफ देखा। वह चुन्नी को अपराधिनी–सी लगी। मोरनी की तरह असहाय–सी। प्रश्न कुछ देर रसोई के भीतर गूंजता रहा। दादी ने बात संभाली, "चुन्नी, तू सुबह–सुबह कहां चला गया था? ले चाय पी ले। मोर वहीं होगा। पक्षी है। एक जगह तो बैठे नहीं रहेंगे। इतना बड़ा जंगल है। आर–पार कहीं चला गया होगा।"

उसे थोड़ा–सा विश्वास तो हुआ, पर मन नहीं माना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन्त्री जी पहुंच गए। जलसा भर गया था। कई स्कूलों के बच्चे भी आए थे। उसे प्रस्ताव सुनाना था। मोर के चक्कर में वह उसे एक–दो बार देखना भी भूल गया था। वह तैयार होकर जलसे में जाने लगा तो मन हुआ कि एक बार मोर को देख आए। इस बार उसे नए रास्ते से जाना पड़ा। जंगलायत के लोग यहां चारों तरफ थे। नया बोर्ड लग गया था जिस पर नेशनल पार्क लिखा था और मन्त्री जी द्वारा उद्घाटन का विवरण। ऊपर मोर–मोरनी के चित्र थे। वह मन–ही–मन खुश हुआ। अचानक उसकी नजर काफी दूर हरी झाड़ियों की ओट में पड़ी। यहां तक रास्ता कठिन था। यानि ऐसी जगह जहां आम व्यक्ति का जाना संभव नहीं। महज वह जगह देखी जा सकती थी। उसे मोर की धुंधली–सी आकृति नजर आई। झाड़ियों के बीच काफी पंख दिखाई दे रहे थे। कुछ–कुछ पंख फैलाने जैसी आकृति। उसने ध्यान से देखा। साथ एक सिपाही खड़ा था। चुन्नी ने उससे पूछा, "अंकल, वो क्या है?"

"मोर।" बीड़ी का कश मारते उसने जवाब दिया।

"पर यह हिलता क्यों नहीं?"

"बीमार है।"

"बीमार है!" चुन्नी ने आश्चर्य से उसकी तरफ देखा। वह हंस रहा था। उसका उत्तर कुछ दूसरे जंगलायत के कर्मचारियों ने भी सुन लिया था। उन्होंने ठहाका लगाया। चुन्नी परेशान था। उसने एक नजर मोर की तरफ दी। मोरनी कहीं नहीं दिखी। उलटे पांव मुड़ा। स्कूल के पास मन्त्री जी पहुंच गए थे। नारों की आवाजें आ रही थीं– "म्हारे वनमन्त्री... जिंदाबाद।"

लेकिन चुन्नी के कानों में नारों की अपेक्षा पुलिस वाले और दूसरे कर्मचारियों के ठहाके ही गूंज रहे थे। उसे बापू और गार्ड की बात अचानक याद आ गई, "भई परसिया, इस बार मांस बढ़िया होना चाहिए और वह भी नई चीज का।" वह भीतर से जैसे टूट गया। टांगें मर–सी गई थीं। उसे याद आ रहा था कि गांव का लुहार कुछ रंग–बिरंगी लकड़ियां लिए पिछले दिन बापू के साथ था। चुन्नी ने कई बार लुहार को गांव–परगने में ब्याह–शादियों में वेदी बनाते देखा था। उन पर चिड़ियां और मोर सजाते देखा था। उसने हिम्मत बांधी, घर चला आया। भीतर गया और बरसों से सांजे हुए मोर के पंखों को ढूंढ़ने लगा। पगला गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वहां एक भी पंख नहीं था। बौखला गया... आंगन में उतरकर पिछवाड़े गया। वहां उसने कई बार अपने बापू को शिकार के लिए मारकर लाए पक्षियों और जानवरों की खालें निकालते देखा था।

वहां भूरे और नीले रंग के रोंये थे। एक–आध पंख भी। वह इन्हें देखकर सन्न रह गया। अचानक उसकी नजर नीचे पड़े कटे हुए दो कुरूप पंजों पर पड़ी। कलेजा निकल गया। तभी आंगन के पेड़ पर चिड़िया के चहचहाने की आवाजें सुनाई दीं। वह धीरे–धीरे कमरे में गया जहां बापू बंदूक रखता था। उसे उठाया। देखा। एक फायर शेष थी। बाहर निकलकर उसे खिड़की की ओट में टिका दिया। निशाना पेड़ पर चहचहा रही चिड़िया की तरफ साधा। चांप उठाया। उंगली टाइगर पर कसी। उसे पता नहीं चला कब फायर हो गई। कुछ देर बाद संभला तो पीछे गिरा था। छाती के एक ओर काफी दर्द महसूस हुई।

लड़खड़ाता हुआ बाहर आया। चिड़िया के पंख आंगन में बिखरे थे। खेत में नजर गई। चिड़िया मरी पड़ी थी। गहरी सांस ली। मन हल्का–सा लगा। नजरें उसके पांव पर टिक गई थीं। आंखें भर आईं। वह रो रहा था सोचकर कि अब पांव किसे दे।

मन्त्री ने शायद नेशनल पार्क के उद्घाटन का रिबन काटा था। नारों का शोर चुन्नी के कानों में इस तरह पसर रहा था मानो हजारों मधुमक्खियां उसके आसपास मंडराने लगी हों। उसका मन फिर से विचलित हो गया था। वह भूल गया कि उसे स्कूल में मन्त्री के सामने राष्ट्रीय पक्षी पर कोई प्रस्ताव भी सुनाना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीखें

रामकी उर्फ रामो मुश्किल से आज अपनी गौशाला के दरवाजे तक आई थी। उसने दरवाजा खोला तो लेटे हुए पशु और बकरियां खड़े हो गए। उन्होंने कई दिनों बाद अपनी मालकिन को देखा था। रामो के हाथ में बासी रोटियां और कच्चे आटे की पिन्नियां थीं। उसने पहले गाय और बैलों को पिन्नियां खिलाईं और उसके बाद रोटियां तोड़कर उसके टुकड़े बकरियों और मेमनों को खिलाने लगी। एक–दो मेमने मिमियाते उसकी टांगों के बीच ही उलझ गए थे। वह गिरते–गिरते बची थी। पति की हिदायतों का ख्याल आया तो संभल गई। रामो का महीने भर से इधर–उधर आना–जाना बंद था, पर आज रहा नहीं गया। पशुओं को देखे और बतियाये कितने दिन बीत गए थे। उसका पति कितना ख्याल रखता है उसका! उसने अपने आठ महीने के पेट पर हाथ फिराया और हल्की–सी मुस्करा दी। उसके हाथ अब खाली थे और सभी पशु उसी की तरफ झांक रहे थे। वह अचानक शरमा गई जैसे उसके पेट के आठ महीने के बच्चे को उन्होंने देख लिया हो। वह बाहर आने लगी तो नजर पूर्व की तरफ के खाली कोने में पड़ी। वहां दो गायें बंधी रहती थीं जिन्हें अब गांव की चाची को कुछ दिनों के लिए दे दिया था। वहां दो खूंटे अभी भी गड़े थे। उनके साथ की जगह हल्की–सी साफ–सुथरी थी। इतनी भर कि वह बच्चा होने पर वहां आराम से सो और उठ–बैठ सके। वह जानती थी कि बच्चा जनने के लिए उसे यहीं आना है और जब तक हवन से घर की शुद्धि नहीं हो जाती, उसका यही ठिकाना रहेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस इलाके में जब किसी औरत के बच्चा होता तो उसे घर से गौशाला में शिफ्ट कर दिया जाता। जब तक बच्चे की 'छोत' दूर करने के लिए हवन न होता, उन्हें वहीं पशुओं के बीच रहना पड़ता था। उसे यह रिवाज बुरी लगती थी। उसके मायके में तो ऐसा नहीं होता था। जिस किसी के बच्चा होता था, उसे बड़े सम्मान के साथ मुख्य घर में ही साफ–सुथरे कमरे में रखा जाता था। बस इस बात का ध्यान रखा जाता कि हवन होने तक न तो परिवार का कोई सदस्य कुलदेवी के कमरे में जाएगा और न ही देवी–देवता को धूप जलाएगा। गांव के मन्दिरों में भी उस दौरान कोई नहीं जाता था। वह परिवार ही नहीं, बल्कि उस टब्बर के लोग भी इन चीजों का परहेज करते थे। पर रामो की ससुराल की तो परंपराएं ही निराली थीं। उसे यह सोचकर ही चक्कर आने लगा कि कुछ दिनों बाद उसे भी इन खूटों से बंधना होगा... पशु की तरह ही।

यह उसका दूसरा बच्चा था। पहली बेटी हुई थी, लेकिन घर और गांव में बेटी होने की कोई खुशी किसी को नहीं हुई थी। उसे यह बात इसलिए अखरी थी कि जिस कन्या का जन्म घरों में पहले लक्ष्मी रूप माना जाता था, अब उसी का जन्म अपशकुन जैसा कुछ माना जाने लगा था। इसलिए इस बार सभी को विश्वास था कि रामो के बेटा ही होगा।

•

उनका गरीब परिवार था। उसके ससुर का नाम बरफू राम था। गांव–घर में उसे बरफू नाम से ही पुकारते थे। उस समय गांव–परगने में कोई टेक –टिप्पड़ा नहीं बनाता था। न ही समय देखने के लिए घड़ियां ही होती थीं। इसीलिए सबकुछ मौसम पर निर्भर रहता। जब वह पैदा हुआ तो बाहर बर्फ गिर रही थी। बस उसी से उसका नाम बरफू राम पड़ गया। उसकी उम्र सत्रह पार हो गई थी, लेकिन लगता काफी तगड़ा था। अच्छी सेहत थी। लम्बे कद और चौड़े माथे के साथ उसकी लम्बी–घनी मूंछें खूब जंचती थीं। वह पढ़ा–लिखा नहीं था, पर टूटी–फूटी हिन्दी जरूर बोल लिया करता। यह उसने घर–गांव से बाहर पहाड़ों में काम करते हुए सीखी थी। उसकी घरवाली को लोग ताई कहकर पुकारते थे। उसके एक बेटा और सात लड़कियां थीं। कमाई का कोई साधन नहीं था। ज़मीन अब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बहुत कम रह गई थी। आधी से ज्यादा ज़मीन और घासणी पांच लड़कियों के शादी–ब्याह में निकल गई थीं। दो अभी भी अनब्याही थीं। उनकी उम्र भी निकलती जा रही थी।

बरफू के एक ही लड़का था जो सबके बाद पैदा हुआ। माघ महीने में पैदा होने के कारण उसका नाम माघी राम पड़ा जो घर–बेड़ में अब माघू हो गया था। लड़के का इंतजार करते–करते सात बेटियां हो गईं। माघू भी तीस पार हो चला था। उसके अरमान थे कि वह अपनी शादी धूमधाम से करेगा, लेकिन गरीबी के कारण ऐसा नहीं हुआ। उसका पिता शादी के लिए इसलिए राजी नहीं होता कि घर में अभी उसकी दो बहनें अनब्याही हैं और उसकी शादी तो तभी हो सकती है जब उनकी डोलियां घर से उठ जाएं। किस्मत बरफू की कि सभी लड़कियां निहायत शरीफ निकलीं। नहीं तो जैसी उस इलाके में रिवाज थी, वे किसी जवान गबरू चिरानी या जंगल गार्ड के साथ आंख–मट्टका करके भाग जाया करतीं। पर ऐसा कभी कुछ नहीं हुआ।

उसके बेटे माघी राम को जवानी ने जरूर परेशान किए रखा था। एक दिन उसने पहाड़ के एक गांव के मेले से एक सुन्दर–सलोनी लड़की उठाकर अपने लिए ला ही दी। पिता की तरह वह भी लकड़ी के चरानियों के साथ काम किया करता था। वहीं आते–जाते उसकी आंखें उस लड़की से दो–चार हो गईं। इसलिए चुपके–चुपके यह तय हुआ कि मेले वाले दिन माघी राम उसे भगा के ले उड़े। उसका साथ उसके साथियों ने भी बखूबी निभाया। पहाड़ के इन छोटे–छोटे गांवों में कहीं–कहीं इस तरह की रस्में आज भी थीं कि यदि कोई लड़की पसंद आ जाती तो उसे भगाकर पत्नी बना लिया जाता था। उसके पिता और मां–बहनों ने इस बात का कतई बुरा नहीं मनाया था। जवान बेटा कुंवारा भी कब तक बैठा रहता! उन्होंने बहू को सिर–माथे बिठा लिया। इंतजार करते रहे कि उसके मां–बाप कभी–न–कभी तो समझौता करेंगे। पर जब उन्हें पता लगा कि बरफू राम की जाति उनकी जाति से एक कद छोटी है तो उन्होंने आना उचित नहीं समझा। जब कोई नहीं आया तो बरफू ने एक दिन घर में सत्यनारायण की कथा करवाई। देवता को बकरा चढ़ाया और धाम जोड़ करके गांव वालों को खूब खिलाया–पिलाया। इस तरह बेटे की शादी हो गई और माघू का कुंवारापन भी चला गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

•

स्कूल गांव से कोई दस–बारह मील होगा। इसलिए अपने बच्चों को बरफू नहीं पढ़ा सका। बेटियों को पढ़ाने की कोई रिवाज गांव में इसलिए नहीं थी कि वे तो पराया धन होती हैं। जब दूसरों के घर ही जाना है तो पढ़ाई –लिखाई किस काम की! बस खेती–बाड़ी और चूल्हे–चौके में पारंगत होना ही बेटियों की सबसे बड़ी पढ़ाई मानी जाती थी। बेटे को पढ़ाने की बहुत इच्छा थी, पर अपनी गरीबी आड़े आती रही। वह साल के पांच–छः महीने घर से बाहर ही रहता था। उसने चरान का काम सीखा था और बर्फ पड़ने तक वह पहाड़ों के गांव में जमींदारों की लकड़ियों की चिराई किया करता था। उन दिनों बर्फ भी खूब गिरती थी। उनका अपना गांव ही दूसरे गांव और शहर से पांच–छः महीनों तक कटा रहता। इसलिए इन दिनों का राशन, लकड़ी और पशुओं के लिए घास–पत्ती पहले से ही जमा करके रखना पड़ता था। उसके पास जो दो–चार खेत थे, उनमें थोड़ा–बहुत गेहूं–जौ तो हो जाता, पर मक्की की फसल न के बराबर होती। होती थी तो उसे बंदरों और भालुओं से बचाना मुश्किल हो जाता। आलू की बिजाई भी वे नहीं कर सकते थे। करते तो उन्हें जंगली सुअर उखाड़–उखाड़कर खाते रहते। इसलिए घर की रोटी चिराई के काम पर ही निर्भर थी।

•

घर से दूर न रहना पड़े, इसलिए बरफू के लड़के माघू ने खच्चरों की जोड़ी रख ली थी। पहले वह भी पिता के साथ कुल्हाड़ा उठाकर पहाड़ों में चरान के लिए जाता था, पर शादी के बाद उसने घर रहना ही बेहतर समझा। उनके गांव तक अभी भी सड़क आने के कोई आसार नजर नहीं आते थे। सारा कामकाज खच्चरों और घोड़ों पर ही होता था। इसीलिए माघू का काम ठीक चल पड़ा था। गांव में अब कई तरह के बदलाव आने लगे थे। कच्चे मकान पक्के बनने लगे थे। राशन–पानी ढोने के साथ ज्यादा काम ईंटों और रेत–बजरी की ढुलाई का होता था।

उनका गांव पहाड़ों की काफी ऊंचाई पर था। जहां से उसकी खच्चरें सामान ढोतीं, वह एक छोटा–सा पहाड़ी शहर था जहां से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दुस्तान–तिब्बत रोड़ सतलुज के साथ–साथ आगे निकल जाता था। नीचे उतरने के लिए जितनी तीखी उतराई थी, लौटने के लिए उतनी ही खड़ी चढ़ाई लगती थी। पिछले दो सालों से उनके इलाके के लिए एक सड़क तो निकल रही थी, पर वह भी गांव से कोई सात मील की दूरी तक ही पहुंची थी। उसमें छोटी गाड़ियां आने लगी थीं। उनके गांव में कोई सुविधा नहीं थी। नेता लोग वोट मांगने के समय ही वहां दिखाई देते थे। उसके बाद ग्रामीणों की कोई सुध नहीं लेता था। सारी जरूरतें उसी पहाड़ी शहर से पूरी होती थीं। वहीं दुकानें थीं। वहीं डाकखाना, स्कूल और अस्पताल थे। इस पहाड़ी शहर में पहुंचने के लिए पहले नदी पर एक झूला पुल था। पर कुछ महीनों पहले बड़ा पुल बनने से आर–पार जाने की सुविधा हो गई थी।

माधी राम खच्चरों के साथ घर की चढ़ाई चढ़ते कभी बहुत परेशान होता और अपने पिता को खूब गालियां बकता। सोचता कि अगर पिता ने एक–दो बच्चे ही जने होते तो आज उनकी यह हालत न होती। पिता उसे शहर में क्वार्टर लेकर पढ़ा सकते थे। पर वह तो बेटियों की शादी–ब्याह के चक्करों में ही उलझे रहे। वह ऐसा कभी नहीं दुहराएगा। उसके बस दो ही बच्चे होंगे जिन्हें वह खूब पढ़ाएगा। उनके गांव से कुछ दूर पांचवीं तक का स्कूल तो खुल गया था, लेकिन आगे की पढ़ाई अभी भी उस छोटे से पहाड़ी शहर में ही पूरी करनी पड़ती थी। इसलिए वह चाहता था कि अब उसके बेटा हो और वह उसे खूब पढ़ाकर नौकरी पर लगाए। लेकिन वह यह भी सोचता कि बेटा होना तो उसकी इच्छा पर निर्भर नहीं है। अगर बेटियां ही होती रहीं तो वह क्या करेगा? यह सोचकर वह घबरा जाता और गुस्से में अपने लम्बे–लम्बे बालों को नोचने लगता। खच्चरों पर खूब डंडा बरसाता और अपनी भड़ास उन्हें कई भद्दी गालियां देकर उतार देता। फिर उसे सूझता कि वह बेटे के जन्म के लिए रात–दिन एक कर देगा। कुलदेवी से मन्नतें मांगेगा। गांव के देवता के पास अर्ज–विनती करेगा। उसे दो बकरे चढ़ा देगा। घर में कथा करवाएगा। देवता की जातर भी करवा देगा। यह सोच उसके भीतर यह विश्वास पैदा कर देती कि इस बार उसके लड़का ही होगा।

खच्चरों के लिए उसने जो कर्ज ले रखा था, उसकी किश्तें भी वह समय पर अदा नहीं कर पाता था और इस वजह से भी परेशान हो जाता था। जो कमाता था उससे घर–बार चलाना पड़ता था जिससे कभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
किश्तों लायक पैसे बचते ही नहीं थे। अपने मन की परेशानी को वह खच्चरों पर डंडे बरसाकर उतारने का प्रयास करता। उन्हें खूब भगाता कि एक फेरी के बजाय दो लग जाएं तो कुछ ज्यादा पैसे मिलें। पर इतनी चढाई में वे बेचारी कैसे भागतीं? दो–चार कदम तेज–तेज देतीं तो उनकी सांस फूलने लगती। टांगें लड़खड़ा जातीं। मुंह से पतली झाग निकलती और आंखों से पानी की धार बहने लगती। खुद भी भागते हुए माघू की सांस फूल जाती। उसके हाल भी खच्चरों की तरह होने लगते। वह हांफता हुआ रास्ते में खड़ा हो जाता। तब उसका दिल पसीज जाता। वह उन्हें चढ़ाई में किसी छांवदार पेड़ के नीचे खड़ी करके सहलाने लगता। उनसे अपनी बेवकूफी की माफी मांगता और उनकी गर्दन में बांहें डालकर उन्हें प्यार करने लग जाता। यहां तक कि उनकी आंखों से जो पानी बहता, उसे वह चादर से पोंछ देता। खच्चरें चुपचाप खड़ी होकर उसे देखती रहतीं। फिर कभी उसके बाल चाटतीं तो कभी पीठ चाटने लग जातीं। आदमी और पशु का यह रिश्ता एक ऐसी इंसानियत में बदल जाता जो इस जमाने में मिलना मुश्किल होने लगा था।

उस चढ़ाई में तीन–चार जगह कुदरती पानी की बांवड़ियां थीं। इन बांवड़ियों को लोगों ने अच्छी तरह साफ–सुथरा रखा था। आते–जाते मुसाफिर और पशुओं के लिए इन कंदराओं में पानी अमृत की तरह था। वह बांवड़ी के पास खच्चरों को खड़ा करके उन्हें पानी पिलाता और फिर हरी–हरी पत्तियां तोड़कर उनके पास रख खुद कुछ देर सो जाया करता। गर्मियों के दिनों में तो बांवड़ियों के आसपास की जगह इतनी ठंडी होती मानो कोई वातानुकूलित जगह बनी हो। वह थोड़ी देर सोकर उठता तो खच्चरों की आंखों में झांकने लगता। उसे उनकी आंखों में अपने लिए खूब इज्जत और प्यार महसूस होता। उसके उठने से पहले ही दोनों खच्चरें रास्ता नापने लगतीं जैसे माघू और खच्चरों की थकान उस पानी की शीतल बांवड़ी ने अपने भीतर समेट ली हो।

•

वह कभी नहीं चाहता था कि उसकी हालत पिता की तरह हो। बेटियों के ब्याह–कारज के चक्कर में गांव में उसका पिता सबसे गरीब रह गया था। हालांकि खच्चरों का कर्ज चुकाते उसे पूरा साल लग गया, लेकिन आई–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चलाई चलती रही। वह अपने घर में अब कोई लड़की नहीं चाहता था। इसलिए बेटा होने की उधेड़बुन में ही लगा रहता था। सप्ताह में वह एक–दो चक्कर इसीलिए कभी देवता की कोठी में पुजारी और गूर के पास लगा आता, तो कभी किसी ज्योतिषी के घर और कभी किसी डाऊ–चेले के पास जाकर धागा–जंतर अपनी घरवाली के लिए ले आता।

अपने हमउम्र दोस्तों–रिश्तेदारों को वह देखता तो उनके घर में भी एक या दो बच्चे ही थे। उनमें भी लड़कियां बहुत कम थीं। वह सुना करता कि जैसे ही किसी की पत्नी पेट से होती तो उसे झटपट शहर प्राइवेट अस्पताल में ले जाकर पता लगा लिया जाता कि उसके पेट में लड़का है या लड़की। लड़की होती तो दवाईयां खिलाकर उसे मार दिया जाता। उसने यहां तक सुना था कि कई मां–बाप तो लड़कियों को पैदा होते ही या तो किसी कूड़े–कचरे के ढेर में डाल देते या नदी में फेंक दिया करते। माघीराम को इन बातों को सुनकर अचरज भी होता कि पेट के भीतर कैसे लड़का–लड़की का पता चलता होगा! वह जब किसी से पूछता तो वह उसे समझाता कि इसके लिए शहर के कई प्राइवेट अस्पतालों में पूरी व्यवस्था होती है और वहां ऐसा करने के हजारों रुपए लिए जाते हैं। लेकिन ऐसे काम चोरी–चुपके करवाने पड़ते थे। कई बार उसे उन लोगों से घिन आने लगती जो इस तरह के काम करवाते। उसका पिता और मां जब कभी घर में इन बातों पर चर्चा करते तो अक्सर कहते कि ऐसा करना महापाप है। बेटा या बेटी होना तो ईश्वर के हाथ में है। घर में लड़की का जन्म तो लक्ष्मी का रूप होता है, लेकिन इस बात पर माघी राम चिढ़ जाता। हालांकि वह माता–पिता से बहसबाजी नहीं करता, पर मन–ही–मन यह अवश्य सोचता कि पिता के घर तो एक नहीं, सात–सात लक्ष्मियां पैदा हुईं लेकिन उनका परिवार दिनों–दिन कंगाल ही होता चला गया। जो कुछ खेत थे, वह भी इन लक्ष्मियों के चक्कर में जाते रहे।

इसलिए माघी राम ने बेटे होने की उम्मीद में कुछ दूसरे सहारे लेने शुरू कर दिए। सबसे पहले उसने गांव के देवता के पास फरियाद की कि लड़का होने पर वह देवता की जातर देगा। उसमें दो बकरे चढ़ाएगा। इलाके की अधिष्ठात्री देवी को एक भैंसा चढ़ाएगा। क्योंकि वह साल में एक बार अवश्य नवरात्रों के दिन परिवार सहित देवी के मन्दिर जाता था। वहां कई भैंसों की बलि दी जाती। लोग दूर–दूर से भैंसे लेकर आते और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेदर्दी से उन्हें देवी के नाम से चढ़ाया जाता। हालांकि उसे यह सब अच्छा नहीं लगता, लेकिन आज अपने स्वार्थ के लिए ऐसी मन्नत करते हुए उसे तनिक भी ग्लानि नहीं आई। उसने इसके साथ ही सत्यनारायण की कथा भी मान ली थी कि जिस दिन हवन होगा, उसी दिन वह कथा भी करवाएगा और पंडित को एक सौ एक रुपए चढ़ावा देगा।

•

उसकी घरवाली रामो खूब सुरमी थी। वह घर का सारा काम संभालती। सास–ससुर और पति की खूब सेवा करती। मेहमानों की खातिरदारी करती। उसके पास एक बैल जोड़ी, तीन गायें और सात–आठ भेड़–बकरियां थीं जिन्हें उसने खूब पाला था। लेकिन जब उसे पता चला कि उसे बेटा होने के लिए पति ने भैंसे तक की मन्नत मांगी है तो वह चिढ़ गई थी। रोज इस मन्नत को उलटाने की वह बात किया करती। कई बार इस बात को लेकर उनमें खूब झगड़ा भी होता और वे दोनों कई–कई दिनों तक एक–दूसरे से नहीं बोलते, लेकिन परिणाम कुछ नहीं होता। फिर उसका पति यह कहकर उसको मनाने की कोशिश करता कि देवी के लिए की गई मन्नत कैसे पलट सकती है? ऐसा करने से तो और भी विनाश होगा। उसकी पत्नी सुनकर चुप रह जाती और मन–ही–मन सोचती कि इससे अच्छा तो औलाद ही नहीं हो।

कुछ महीनों में रामो का जैसे ही पैर भारी हुआ, घर में खूब खुशियां मनाई गईं। देवता की पंचायत में गूर ने विश्वास दिलाया कि उनके घर पुत्र ही होगा। यह सुनकर माघी राम ने कुछ दिनों में एक छोटे से भैंस के बच्चे का भी प्रबन्ध कर लिया। बकरे तो घर में ही थे। उनमें से दो बकरे छांटकर उनकी पीठ पर लाल रंग लगा दिया गया। लेकिन उसे अपने दोस्तों और रिश्तेदारों की बातों का ध्यान आया तो वह सोचने लगा कि क्यों न शहर जाकर लड़का या लड़की होने का पता ही लगा लिया जाए। वह अभी पैसे जोड़ ही रहा था कि उसका पिता बीमार पड़ गया। कई दिनों उसका इलाज चला और जोड़े हुए पैसे खत्म हो गए। दिनों–दिन पत्नी का पेट बढ़ने लगा। उसे देखकर वह कभी खुश होता और कभी गहरी चिन्ताओं में खो जाता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामो का अब नौवां महीना चल रहा था। लेकिन घर में जिस तरह की परिस्थितियां थीं, उसे बच्चा होने की कोई खुशी नहीं थी। वह दोनों तरह से परेशान थी कि यदि बेटा होता है तो बेवजह पशुओं की बलियां दी जाएंगी और बेटी होती है तो उसे कहीं अपने पति का ही प्यार न खोना पड़े। उसके बाद उसका ससुराल में कैसा मान रहेगा! सोच–सोचकर उसके आंसू बहने लगते और वह गौशाला में अपने लिए बनाई जगह पर चुपके–चुपके आकर बैठ जाती और रोती रहती।

•

गांव में एक–दो औरतें थीं जो दाई का काम करती थीं। इनमें माघी राम की मां भी पारंगत थी। एक रात जब बहू को दर्द हुआ तो सभी परेशान हो गए। मां जानकार थी इसलिए उसने बहू को तत्काल अस्पताल ले जाने के लिए कहा। माघी राम परेशान हो गया। जोड़–जकड़कर दो हजार रुपए जुटाए। गांव से एक पालकी की। उनके साथ चार सौ तय हुआ। उन्होंने सुबह तक बहू को नजदीक के स्वास्थ्य केंद्र में पहुंचा दिया, लेकिन उस दिन वहां कोई भी डाक्टर नहीं था। किसी ने बताया कि वे शहर किसी समारोह में गए हैं। वहां से अब शहर आना था। बहू को बस में भी नहीं लाया जा सकता था। इसलिए टैक्सी करनी पड़ी। टैक्सी वाले ने बड़े अस्पताल तक पहुंचाने के दो हजार मांगे, पर बात पन्द्रह सौ में बन गई। वे दोनों क्या करते? दूसरा विकल्प कुछ भी नहीं था।

जैसे–कैसे दोपहर से पहले टैक्सी वाले ने उन्हें शहर के बड़े सरकारी अस्पताल में पहुंचा दिया। इमरजेंसी वार्ड में केवल एक नर्स थी। वहां भी कोई डाक्टर नहीं था। माघी राम ने नर्स से हाथ जोड़कर विनती की कि वह डाक्टर को बुलाकर घरवाली को दाखिल करवा दे, लेकिन उसने भी वही दोहराया कि डाक्टर समारोह में गए हैं। इस पर उसने जब पूछा कि कैसा समारोह है जिसमें सारे डाक्टर गए हैं। नर्स ने समझाया कि आज स्वास्थ्य दिवस है और केंद्र का स्वास्थ्य मन्त्री यहां आकर मुख्यमन्त्री को सम्मानित कर रहा है। यह इसलिए कि हमारा प्रदेश बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए देश में पहले स्थान पर आया है। नर्स यह समझाकर मुस्कराती हुई कहीं गुम हो गई। नर्स की इस बात को सुनकर बाप–बेटा सोचने लगे कि एक मरीज कितनी मुश्किलों से यहां तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पहुंचाया गया है और इतने बड़े अस्पताल में भी एक डाक्टर तक नहीं! वह यह सुनकर बहुत परेशान हो गए। तभी कहीं से एक डाक्टर आया। उसने रामो की चीखें सुनीं तो उसे लकड़ी की बेंच पर ही देखा। सलाह दी कि इस मरीज को जल्दी महिला अस्पताल ले जाएं। यह कहकर वह चला गया। उन्हें महिला अस्पताल का पता नहीं था। पास खड़े एक मरीज के सहयोगी ने रास्ता समझाया।

माघी राम ने जब अपनी जेब टटोली तो पास मात्र एक सौ रुपए और पांच–दस के एक–दो नोट थे। पिता के पास भी पैसे नहीं थे। जो सड़क महिला अस्पताल जाती थी, उस पर केवल रोगीवाहन ही चलते थे। बहुत कोशिश करने पर भी उन्हें रोगीवाहन उपलब्ध नहीं हो पाई। नर्स से विनती की। उसने एक–दो फोन तो लगाए, पर वहां से उत्तर मिलता रहा कि कोई भी वाहन उपलब्ध नहीं है। अब बहू को इतनी दूर उठाकर नहीं ले जाया जा सकता था। वह दर्द के मारे कराह रही थी।

माघी राम पागलों की तरह अस्पताल में भागता रहा। किसी ने सलाह दी की इमरजेंसी वार्ड के साथ रेडक्रॉस सोसाइटी है, वहां से एक ट्राली लेकर मरीज को महिला अस्पताल ले जाए। वह दौड़ता हुआ सोसाइटी के कमरे में गया। वहां बैठी दो सुन्दर महिलाएं जो उस दौरान अपने–अपने मोबाइलों में वीडियो गेम्ज़ खेल रही थीं, माघी राम को देखकर भौंचक्क रह गईं। उसकी शक्ल ही परेशानी से डरावनी हो गई थी। चेहरा पसीने से भीगा हुआ था। आंखों में खून तैर रहा था। बढ़ी हुई दाढ़ी के बीच पसीने की बूंदें ऐसी चू रही थीं जैसे सूखी धरती पर किसी ने एक गिलास पानी उंड़ेल दिया हो। अस्त–व्यस्त बाल उसके चेहरे को और भी भयावह बनाए हुए थे। महिलाओं को लगा कि वह कोई चोर–उचक्का है जिसके पीछे पुलिस लगी है। या कोई शातिर बदमाश है जो उन्हें अभी दबोच लेगा। उन दोनों की चीखें निकलते–निकलते रह गईं। उसने विनम्रता से हाथ जोड़ दिए और रोते हुए एक ट्राली देने की गुहार लगाई। दोनों औरतों की सांस में सांस आई। एक के मुंह से निकला, "हाउ इडियट ही ईज़ न मैडम! मैं तो, हाय राम, डर ही गई थी। बास्टर कहीं का!"

दूसरी औरत ने लिपस्टिक सने होंठ उंगलियों के पोरों से हल्के–हल्के दबाए और कई गालियां अंग्रेजी में बड़बड़ाईं। फिर ऐसे बोल पड़ी जैसे कोई गुड़िया रिमोट दबाकर हरकत करने लगी हो, "किसलिए चाहिए?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यहां नहीं मिलती। बाहर पता करो।"

वह फिर गिड़गिड़ाया, "वह मर जाएगी। बच्चा भी मर जाएगा। उसे महिला अस्पताल जे जाना है।"

तभी बाहर बेंच पर अधमरी–सी लेटी रामो जोर से चीखी। यह चीख वार्ड से होती हुई रेडक्रॉस सोसाइटी के कमरे में खड़ी महिलाओं के कानों में घुसी तो एक बाहर भागी। बौखलाया–सा माघी राम पहले ही उसके पास पहुंच गया था।

"यह है तुम्हारी मरीज। लाओ, सौ रुपए जमा करो।"

उसने अपने चपड़ासी को आवाज लगाई, "शुभीराम! इसे एक स्ट्रेचर दे दो। चैक करके देना और इस आदमी से सौ रुपए ले लो।"

माघी राम ने झटपट जेब से सौ का नोट निकाला और उस चपड़ासी के हाथ में धर दिया।

उसने भीतर जाकर स्ट्रेचर खींचा। बाहर निकालते उसकी अजीबोगरीब टनटनाहट होती रही। उसके ऊपर खून के धब्बे थे। उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। दो–चार बार फर्श पर पटका कि इसकी टांगें और पहिए दुरूस्त तो हैं। आश्वस्त होकर उनके आगे पटक दिया। जेब में हाथ डालकर नोट को एक–दो बार उंगलियों से छुआ और पास पड़े बेंच पर बैठकर हाथ में गुटका निकाल उसे मलने लगा।

बाप–बेटों ने जैसे–कैसे रामो को उठाया। स्ट्रेचर पर रखते ही उसकी फिर चीख निकली। वह अस्पताल की दीवारों से होती हुई कहीं वार्ड में गुम हो गई।

तभी रेडक्रॉस सोसाइटी में बैठी एक मैडम ने चपड़ासी को आवाज लगाई, "शुभी! दो कॉफी, दो गुलाब जामुन और दो समोसे..."

शुभी ने सुनी–अनसुनी की तो मैडम ने अपनी गलती सुधारी, "नॉटी ब्यॉय... तीन–तीन कर लेना।"

चपड़ासी ने अभी–अभी लिया नोट पेंट की जेब में दो–तीन बार फिर छुआ और कैंटीन के लिए हो लिया।

•

वे दोनों स्ट्रेचर खींच रहे थे। आगे बेटा था तो पीछे बाप। जल्दी दोनों को थी। बाप की टांगें जवाब देने लगी थीं। उम्र का तकाजा था। बेटे की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बराबरी तो नहीं हो सकती थी। वह स्ट्रेचर के पीछे ऐसे लम्बाता चला जा रहा था मानो उसे उसके साथ बांधकर खींचा जा रहा हो। थकावट से उन दोनों के बुरे हाल थे। दोपहरिया इतनी तपी थी जैसे सारी गर्मी आज ही होनी हो। कभी–कभार एक–दो बादल के काले थक्के कहीं से आकर सूरज को ढकते तो उन दोनों को ऐसा लगता जैसे चूल्हे पर रखे गर्म तवे पर किसी ने ठंडा पानी गिरा दिया हो। वे हटते तो फिर वही लू तपने लगती। हवा का कहीं नामोनिशान नहीं था। पर उत्तर की दिशा से काले –डरावने बादल अवश्य तेजी से शहर की ओर भाग रहे थे जैसे सारी हवा आसमान में बादलों को खदेड़ने में लगी हो।

सड़क पर स्ट्रेचर और उस पर बिलखती–चीखती–छटपटाती रामो एक जिंदा लाश जैसी लग रही थी। उबड़–खाबड़ सड़क के बीच उनका स्ट्रेचर इतने जोर की टनटनाहट कर रहा था जैसे भयंकर तूफान से किसी घर की टीन की छत उड़ गई हो। या बजरी पीसने वाली मशीन जोर–जोर से दहाड़ रही हो। या किसी टूटी–फूटी सड़क पर कोई पुराना–सा ट्रक भाग रहा हो। यह ऐसा शोर था जिसने राह चलते इंसानों को आश्चर्यचकित कर दिया और गलियों से कुत्तों तक को भौंकने पर मजबूर कर दिया था। कुत्ते भागते सड़क पर आते और उस दर्दनाक दृश्य को देखकर उनकी भौंकनी बंद हो जाती। एक–दो कुत्ते तो उनके पीछे ही दौड़ने लगे थे। एक जगह बेबस होकर बरफू सड़क पर गिर पड़ा था। इससे पहले कि कोई उसकी मदद करता वह जैसे–कैसे उठा और बदहवास–सा फिर स्ट्रेचर के पीछे ऐसे चिपक गया जैसे चुंबक लोहे को अपने में चिपका लेता है। इस भागमभाग में उसके पांव का एक चमड़े का जूता खुलकर गिर गया था। लेकिन अचरज तब हुआ जब पीछे भागते एक कुत्ते ने उसे उठा लिया और मुंह में दबाए उनके पीछे भागता रहा। इस दृश्य को जो भी देखता, उसकी चीख निकल जाती। कलेजा मुंह को आ जाता, पर मदद के नाम पर कोई कुछ नहीं करता।

वे दोनों भाग रहे थे। बदहवास। विचलित। पसीने से तर–बतर। रामो बुरी तरह चीख रही थी। उसकी कराहटें आसपास के लोग सुनते तो सन्न रह जाते। दर्द ज्यादा होता तो अपने हाथ की उंगलियां मुंह में डाल लेती। दांतों से भींचती। एक उंगली तो उसके दांतो से बुरी तरह कट गई थी जिससे बहुत खून बहने लगा था। वह उसके पूरे मुंह पर फैल गया था जिससे वह और भी डरावनी लग रही थी। बरफू के होश उड़ने लगे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थे। वह जोर–जोर से हांफने लगा था। बाप–बेटा इस वक्त अपने–अपने हिसाब से भगवान और अपने देवताओं को मना रहे थे। बरफू अपनी बहू की सलामती के लिए मन्नतें मांग रहा था तो बेटा माघी राम बेटा होने के लिए भगवान और देवताओं को की गई मन्नतों की याद दिला रहा था। रामो की चीखें जितनी तेज निकलतीं, वह उतना ही देवताओं को याद दिलाता, "देवा, तेरे को दो बकरे... एक जात। देवी महाराणी.. तेरे को एक भैंसा... भगवान तेरी कथा... सत्यनारायण की कथा... हे देवा, हे भगवान, बस बेटा ही देणा देवा... बेटा ही...।"

•

महिला अस्पताल के पार खुले मैदान में स्वास्थ्य दिवस समारोह मनाया जा रहा था। वे रामो को लेकर जैसे ही अस्पताल के गेट से भीतर घुसे स्ट्रेचर की खड़खड़ाहटें, रामो की चीखें और बाप–बेटे की हांफती सांसें नारों की आवाजों में खो गईं – केंद्रीय स्वास्थ्य मन्त्री... जिंदाबाद। मुख्यमन्त्री... जिंदाबाद। बेहतर सेवाएं देने के लिए प्रथम पुरस्कार... जिंदाबाद।

उन्होंने रामो को सीधे अस्पताल के वार्ड के भीतर पहुंचाया तो माघी राम डाक्टरों को ढूंढ़ने इधर–उधर भागने लगा। वहां की स्थिति भी कुछ ऐसी ही थी। पर कहीं से एक नर्स निकली। उसने रामो की हालत देखी तो सीधे लेबररूम में उसे लाने को कहा। वहां एक महिला डाक्टर थीं। उसनें झटपट रामो को इंजेक्शन लगा दिया। थोड़ी देर में उसकी कराहटें बंद हुईं तो बाहर बेंच पर बैठे बाप–बेटे ने चैन की सांस ली। माघी राम की धड़कनें बढ़ने लगी थीं। वह बेटे को देखने के लिए उतावला हो रहा था। एक डर दोनों को यह सताए जा रहा था कि कहीं डाक्टर ने दवाईयां मंगाईं तो वे क्या करेंगे। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। बिना सिजेरियन के रामो की डिलीवरी हो गई। बच्चे की एक किलकारी उसके कानों में पड़ी। रामो का हृदय पसीज गया। प्रसव की वेदनाएं जो उसके शरीर को तोड़ रही थीं, वे उस मीठी किलकारी में खो गईं और अपने शरीर में उसने एक स्फूर्ति महसूस की। उसने उतावलेपन में नर्स से पूछा, "बहिन क्या जमा है?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नर्स ने बच्चे को मां की तरफ बढ़ा दिया, "बीबी! बेटी हुई है। सचमुच चांद–सी बेटी।"

"बेटी..." रामो की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह नर्स को कुछ देना चाहती थी, पर उसके पास कुछ नहीं था। उसका हाथ गले में बंधे मंगलसूत्र पर पड़ा। एक पल के लिए पति का ख्याल आया और साथ बेटे जनने की उसकी हजारों मन्नतें। झटके से निकालकर उसे नर्स के हाथ में थमाया और बच्ची को झपटकर अपने सीने से लगा लिया। वह यह भी भूल गई कि मंगलसूत्र कोई इस तरह दिया जाता है!

नर्स रामो की इस हरकत से हक्की–बक्की रह गई। वह कभी उसका चेहरा देखती तो कभी अपने हाथ में पकड़ा मंगलसूत्र।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एम.डॉटकॉम

मां ने आज तड़के कोई काम नहीं किया। न चूल्हे में आग जलाई, न आटा–छलीरा घोलकर गाय के लिए 'खोरड़' ही बनाया। न बिल्ली की कटोरी में लस्सी उंड़ेली, न बाहर आंगन के पेड़ पर लगाए 'पौ' में चिड़ियों को पानी ही डाला। अपनी बैटरी ली और बाहर निकलते–निकलते बीड़ी सुलगा ली। दराट लेना मां नहीं भूली थी। दरवाजा बंद किया और ताला लगाकर सीधी गौशाला के पास चली गई।

सुबह का समय मां के लिए ज्यादा व्यस्तताओं का हुआ करता था। जैसे ही उठतीं, आंगन में चिड़ियां चहचहाने लगतीं। बिल्ली दूध–लस्सी के लिए बावली हो जाती। गौशाला में पशु रंभाने लगते और मां रसोई से ही उनसे बतियाती रहती। परन्तु आज ऐसा कुछ नहीं था। खामोशी का सिलसिला दहलीज के भीतर से ही शुरू हो गया था। मां इन दिनों नए भजनों के क़ैसेट 'कबीर अमृतवाणी' अपने टेपरिकॉर्डर में खूब सुना करती, लेकिन आज वह भी चुप था। बिल्ली ने भी मां को पहले जैसा तंग नहीं किया, चुपचाप एक कोने मे दुबकी रही। आंगन के पेड़ों पर एक भी चिड़िया नहीं थी। सभी पौ के इर्द–गिर्द चुपचाप बैठी थीं।

•

मां ने गौशाला का दरवाजा खोला तो सिहर उठी। जैसे भीतर अंधेरे के सिवा कुछ भी न हो। बैटरी की रोशनी में इधर–उधर झांका। पशु उदास–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
खामोश खड़े थे। उनकी आंखें भीगी हुई थीं। मां ने कोने में मरी पड़ी ताजा सुई भैंस पर रोशनी डाली तो कलेजा जैसे मुंह को आ गया। आंखें छलछला आईं। अपने चादरू से आंखें पोंछती वह बाहर आ गई और दरवाजा ओट दिया।

आंगन से पूरब की तरफ देखा। धूरें हल्की रोशनी से भरने लगी थीं। सर्दियों की सुबह वैसे भी देर से होती है। मां ने अंदाजा लगाया... सात बज रहे होंगे। बैटरी की जरूरत नहीं समझी। उसे दरवाजे के ऊपर खाली जगह में रख दिया।

गांव में भैंस के अचानक मरने की खबर नहीं पहुंची थी, वरना इस वक्त तक गांव की औरतें अफसोस करने पहुंच जातीं। मां ने किसी को भी नहीं बताया। वह चाहती तो गांव के किसी छोकरे को भी कहकर चमार को हांक लगवा लेती, लेकिन इस बार उसने खुद जाना बेहतर समझा। जानती थी कि यदि किसी को भेज भी दिया तो वह सामने कुछ नहीं बोलेगा, पर मन में सौ गालियां देता रहेगा। अब पहले जैसा समय कहां रह गया है? गांव में शरम–लिहाज तो नाम को बची है। जो कुछ है भी, वह दिखावे भर की! नई नस्ल के छोकरे–छल्ले तो मुंह पर ही बोल देते हैं। बड़े–बूढ़ों की लिहाज तक नहीं रखते। वैसे अब बुजुर्ग बचे ही कितने हैं! मां अपने घर के भीतर ही झांकने लगती है... वह खुद कितने बरसों से अकेली घर–बार चला रही है! इतना बड़ा बारदाना! खेती बिन बांही अच्छी नहीं लगती। फिर सरीकों का गांव है, तरह–तरह की बातें बनाएंगे। भले ही उसने ब्वारी–मजदूरी से ही चला रखी है, पर मजाल कि कोई उंगली उठा सके। पांच–सात पशु भी ओबरे में बंधे ही हैं। कोई बोल नहीं सकता कि फलाणी विधुआ के अब घर–बार खत्म होने लगा है।

दो बेटे हैं। खूब पढ़ाए–लिखाए। अब दोनों ने गांव छोड़ दिया। दूर–पार नौकरी करते हैं। वहीं शादियां कर लीं। वहीं बाल–बच्चे भी हो गए। बहुएं तो गांव–घर की तरफ देखती तक नहीं। आकर करेंगी भी क्या, मिट्टी–गोबर की बास लगती है। बेटे साल में एक–आध बार खबर–सार ले लेते हैं। वैसे मां के लिए उन्होंने सारी सुविधाएं जुटा रखी है। टेलीफोन है। रंगीन टेलीविजन है। गैस है। दूध बिलाने की मशीन है। टेपरिकॉर्डर है।... यह सोचती–सोचती मां गांव के बस अड्डे तक पहुंच गई थी। शुक्र है कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कोई मिला नहीं। नहीं तो सभी पूछते रहते कि आज तड़के–तड़के फलाणी कहां चली है।

•

अड्डे पर बस घरघरा रही थी। मां ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। पर वहां का नजारा देखकर दंग रह गई। सबकुछ कितनी जल्दी बदल गया था! मां को याद है कि जहां आज बस अड्डा बना है, वहां कभी पानी की एक बड़ी कुफर (पोखर) हुआ करती थी। मां ही क्यों, गांव के दूसरे लोग भी अपने पशुओं को चराकर यहीं पानी पिलाते। स्कूल के बच्चे उसके चारों तरफ बैठकर तख्तियां धोया करते। जगह–जगह गाजणी के टुकड़े पड़े होते। दवात–कलम रखे होते। किसी की कॉपी–किताब भूली रहती। नीली स्याही की कलमें गाद में कई जगह ठूंसी रहतीं। जिसने स्कूल भी न देखा हो, उसे भी पता चल जाता कि गांव का स्कूल यहीं कहीं पास होगा। सामने एक पत्थरों की दीवार थी, जो पश्चिम का पानी रोक देती थी। उस पर बणे के छोटे–छोटे पेड़ लगे थे। उनके बीच दीवाल में खाली जगह थी, जिसमें देवताओं की पत्थर की प्रतिमाएं रखी होतीं। मां ने कितनी बार यहां आकर पूजा की होगी! पित्तरों की मूर्तियां बनाकर रखी होंगी! पर आज सबकुछ नदारद है, जैसे वक्त ने उसे लील लिया हो।

अब बस एक बड़ा–सा मैदान है, जिस पर गाड़ियों के टायरों की अनगिनत रेखाएं हैं। यहां न अब पानी है, न बच्चों की चहल–पहल। न कोई पशु ही भूला–भटका इस तरफ आता है। रेत, बजरी, सरिया और सीमेंट के कितने ही ट्रक यहां उतरे हैं, जिन्होंने इसे गर्द का अंबार बना दिया है।

मां पहले बस से आगे निकल गई थी। अचानक ठिठक गई। परसा चमार के घर का रास्ता सड़क से भी तो जाता है। सोचा कि लोग क्या कहेंगे... यही न कि फलाणी मुंह के पास बस होते हुए भी पैदल जा रही है... या उसके बेटे उसको पैसे ही न देते होंगे... फिर समय भी तो बच जाएगा। जब तक मरी भैंस ओबरे से बाहर नहीं निकाली, न मां खुद रोटी खाएगी, न पशुओं को ही घास–चारा डालेगी। चमार के हाथ से उसकी गति जितनी जल्दी हो उतना ही पुन्न। यह ख्याल आते वह मुड़ गई। फिर रुकी। कुरते की जेब में हाथ डाला, तीन–चार रुपए की चेंज थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पीछे आकर बस में बैठ गई।

कुछ मिनटों बाद ही बस चल पड़ी थी।

•

पलक झपकते ही वह जगह आ गई जहां मां को उतरना था। खेतों से नीचे उतरी तो घर दिख गया। सोचा कि यहीं से हांक दे दे।... पर क्या पता कोई हांक सुने भी कि नहीं – यह ख्याल करते हुए वह नीचे उतर गई। कई बरसों पहले मां का एक बैल मरा था। शायद तब खुद ही आई थी। मां को अब यह भी याद नहीं कि परसा चमार उनके घर कब छमाही लेने आया था। पति जिंदा थे तो वह महीने में एक–आध चक्कर लगा लिया करता। वहीं रह जाता। रात भर गप्पें चलती रहतीं। खूब बातें होतीं। वह मां और पिता के जूते भी गांठकर ले आता। पर अब तो पता नहीं कितने बरस हो गए, मां ने कभी जूते नहीं गंठवाए। जरूरत भी नहीं पड़ी। अब तो प्लास्टिक का जमाना है। बीस–तीस रुपए में जूते मिल जाते हैं। आसान काम। इस मशीनी जमाने ने तो आदमी को आदमी से ही दूर कर दिया है। सोचती–विचारती मां परसे के घर के आंगन में पहुंच गई थी। घर देखा तो हैरान रह गई। पहले तो कच्चा मकान था– मटकंधों का बना हुआ। छत पर बेढंगे से छवाए खपरे हुआ करते थे। खेतों–खलिहानों तक चमड़े की बास पसरी होती। आज तो यहां वैसा कुछ भी नहीं था। लगा कि वह कहीं गलत मकान में न आ गई हो! अभी सोच ही रही थी कि एक छोटी–सी लड़की बाहर निकली। मां को देखकर ठिठक गई। मां ने पूछ लिया, "मुन्नी! परसे रा घर यई है?"

उसने कोई जवाब नहीं दिया। शरमाकर उलटे पांव भीतर चली गई।

कुछ देर बाद एक बुजुर्ग ने दहलीज पर से गर्दन निकाली और बाहर झांकने लगा। पट्टू की बुक्कल के बीच से उसका कूब निकल आया था। चेहरे पर घनी झुर्रियां... जैसे किसी ने बिन बाच के सूखे खेत में हल की फाटें दे रखी हों। मां को देखते ही पहचान गया, "अरे भाभी तू?"

कितनी आत्मीयता थी इस सम्बोधन में। मां का धीरज बढ़ गया था। मन भी पसीज गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खड़े–खड़े ही राजी–खुशी हुई। परसा कहने लगा, "आ जा... अंदर को चल, आज तो बड़ी ठंड है। म्हारे तो धूप बारह बजे से पैले नी आती।"

यह कहते–कहते परसा अभी पीछे मुड़ा ही था कि मां ने रोक दिया, "बैठणा नी है परसा। मेरी ताजी सुई हुई भैंस मर गई। पहला ही सू था।"

गला भर आया था मां का। आंखों से पानी टपकने लगा।

क्षण भर खड़ा रहा परसा। फिर भीतर चला गया। मां को तसल्ली हुई कि वह भीतर जाएगा, छुरी निकाल किल्टे में डालकर बाहर आएगा और चल पड़ेगा। लेकिन जब वह दोबारा बाहर आया तो उसके एक हाथ में पटड़ा और दूसरे में आग भरी अंगीठी थी। मां को पटड़ा पकड़ाया और अंगीठी सामने रख दी। खुद भी उसी के पास बैठ गया। जेब से बीड़ी निकाली। एक मां को दी, दूसरी अंगीठी की आग में ठूंसकर सुलगा ली। मां ने भी ऐसा ही किया। दोनों पीने लग गए। कुछ देर गहरे कश लेते रहे। मां ने ही चुप्पी तोड़ी, "तेरा बी कदी गांव की तरफ चक्कर ही नी लगा?"

"अब कहां चला जाता है भाभी? चढ़ाई में चलते दम फूलणे लगता है। फिर टांगें बी जबाब देणे लगी हैं अब।"

"पर साल–फसल पर बी तो नी आया तू। म्हारे पास ही कितणे सालों की छमाही हो गयी होगी!"

परसे ने एक गहरी सांस ली। खांसता भी गया। चेहरे पर दर्द उतर आया था।

"जाणे दे भाभी! पुराणी गलां। तैने रखी होगी इतणी ल्याहज, पर दूसरे तो सब नाक चिढ़ाते हैं। तुम्हारे जैसे थोड़े ही हैं सब। बामणों–कनैतों का गांव है। ...बड़ी साल पइले गया था। उस टेम जब भाई मरा था। लगे हाथ छमाही भी मांगणे चला गया। बामणों ने तो मना ही कर दिया। कहणे लगे कि परसा, अब जूते कौन बनाता–गंठाता है। बणे–बणाए मिल जाते हैं दूकानों में। तू तो जाणती है भाभी, काम के साथ ही आदमी की गरज होती है। फिर मुए को नी पूछता कोई!"

यह कहते हुए उसने अंगीठी की आग को उंगलियों से ठीक किया। मां की बेचैनी बढ़ती चली गई। वह इस जल्दी में थी कि परसा बात मुकाए और चल दे। पर वह बोलता गया, "पैहले पुराणा वक्त था। दूकानें नी थी। सड़क नी थी। तब परसा बड़ा आदमी था। शादी–ब्याह म्हारे कंधों पर। शादी की पटियारी और भात के लिए पतली म्हारे जिम्मे। बूट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो परसे के ही होणे चाहिए। अब तो न कहार, न चमार। टैम–टैम की बातें हैं भाभी।"

चेहरे पर आक्रोश और खीज भर गई थी। मां चुपचाप देखती रही। पूछना चाहती थी कि इन बामणों–कनैतों के पशु कौन फेंकता है, पर पूछ ही न पाई। वह परसे से एक बार फिर चलने का अनुरोध करने को हुई कि परसा फिर कहने लगा, "माफ करियो भाभी, तू तो म्हारी आपणी घर की है। कोई बामण–कनैत आया होता तो आंगण में खड़े बी नी होणे देता।... अब म्हारे घर में न कोई बूट–जोड़ा गांठता है, न पशु फेंकता है। बच्चे नी मानते। बड़ा तो शिमला में अफसर बण गया है। छोटा बस टेशन पर दूकान करता है। तेरे को कैसे नी पता भाभी। ...मैं तो अब कहीं न आता, न जाता।"

मां सुनकर हैरान–परेशान हो गई। याद आया कि परसे का ठीया उधर कहीं होता था। वह आंगन के किनारे देखने लगी तो परसे ने बताया, "वो देख उधर, मेरा ठीया होता था। लड़कों को बथेरा समझाया कि मुए इसको तो रैहणे दो। पर कहां माने! अपणे काम से इतणी नफरत, जैसे ये बामण म्हारे से करते हैं। तोड़ दिया उसको। सारा समान बी पता नी कहां फेंक दिया। वहां अब लैटरींग बणा दी।"

कहते–कहते अंगीठी दोनों हाथों से ऊपर उठाकर हिला दी। अंगारे चमकने लगे। फिर उठकर भीतर चल दिया। मां ने जब उसकी आंखों में देखा था तो वे गीली थीं। शायद अपनी विरासत के यूं खो जाने से मन भर आया होगा। भीतर जाते उसने पट्टू के छोर से आंखें पोंछीं।

दरवाजे पर पांव रखते ही कुछ याद आया, वहीं से बोला, "तू मेरे लड़के से कहियो, वो कुछ कर देगा।"

मां की हालत देखने वाली थी। उसके न बैठे बनता था, न वहां से आते। कोई मां का चेहरा देखता तो पसीज जाता। नजर फिर ठीये की तरफ गई। याद करने लगी कि जब वह यहां आती तो भीतर बैठ जाती। गांव के और भी कितने लोग परसे के आसपास बैठे रहते। उनमें बामण, कनैत, कोली, चमार – सब होते। न किसी को छूत और न छोत। उस समय तो परसा चमार नहीं, एक बड़ा कारीगर होता। मास्टर, उस्ताद होता।

वह छोटी–सी लड़की फिर बाहर आई और भागती हुई शौचालय में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चली गई। तपाक् से दरवाजा बंद किया। शौच की बास का भभका हवा के झोंके के साथ मां की नाक में घुस गया। चादरू से मुंह–नाक ढक लिया। उठी और चल दी। सोचते हुए कि क्या करे, कहां जाए। मन में एक आस बची थी कि परसे का लड़का कुछ करेगा।

•

सूरज काफी चढ़ आया था। घर अकेला था। पशु भूखे–प्यासे होंगे। मां लम्बे–लम्बे कदम देने लगी। बस अड्डे पर पहुंची, तब तक दूकानें खुल गईं थीं। मां देखने लगी... चाय की दूकान, आटा–चावल की दूकान, कपड़े की दूकान, सिगरेट–बीड़ी की दूकान और नाई की दूकान। एक और दूकान पर नजर गई, जिसमें एक–दो छोटी मशीनें रखी थीं। वहां बैठे लड़के को अम्मा नहीं जानती थी। बाकी सभी तो उसी गांव–बेड़ के थे।

उधर देख ही रही थी कि कानों में आवाज पड़ी, "ताई कहां थी तड़के–तड़के?"

मुड़कर देखा तो बुधराम नाई था। झाड़ू लगाते उसने फिर कहा, "ताई! आ जा न बैठ, चाय का घूंट लगा ले।"

मां बैठना नहीं चाहती थी, पर सोचा कि बुधराम ही परसे के लड़के से बोलकर भैंस फिंकवा दे। वह अन्दर जाकर बैठ गई और जल्दी–जल्दी सारी बात बता दी। मां के चेहरे से काफी परेशानी झलक रही थी। बुधराम ने सारी बात सुनी तो हल्का–सा मुस्करा दिया, जैसे वह कोई समस्या ही न हो। उसने अपने बाएं हाथ का इशारा किया और मां को बताया कि बगल में ही उसकी दूकान है। झाड़ू बेंच के नीचे फेंका और बाहर निकल पड़ा। मां उसके पीछे–पीछे चल दी। दोनों दूकान पर पहुंचे। परसे के लड़के का नाम महेन्द्र था। मां को कुछ तसल्ली हुई। बताने का प्रयास भी किया था कि वह उसी के घर से आ रही है, पर महेन्द्र ने ध्यान ही न दिया। बुधराम ने ही मां को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। उसी ने बताया कि ताई की भैंस मर गई है। महेन्द्र ने मां का नाम पूछा और फिर कम्प्यूटर में कुछ ढूंढ़ने लग गया। मां कुर्सी से उचककर देखने लगी। स्क्रीन पर अक्षर भाग रहे थे। उसने अपनी घूमने वाली कुर्सी जब पीछे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घुमाई तो मां बैठ गई। वह बताने लगा, "माता जी, आपका नाम हमारे पास नहीं है। न ही पशुओं की लिस्ट। पंडतों–ठाकुरों ने तो पहले ही अपना रजिस्ट्रेशन करवा दिया है। आप भी करवा लो।"

मां की समझ में कुछ नहीं आया। आश्चर्य से बुधराम को देखने लगी। उसी ने मां को समझाया, ताई! देख उधर, गांव के जितने भी आदमी हैं, उनके नाम पशुओं के साथ लिखे हैं। वो देख मेरा बी नाम है (उंगली से बताने लगा)। जब कोई पशु मरता है या पैदा होता है, इसमें दर्ज हो जाता है। फीस लगती है उसकी। अगर तेरा नाम होता, मिनट में ई–मेल करके महेन्द्र शहर से दो–चार आदमियों को बुला देता और शाम तक तेरी भैंस ओबरे से बाहर।"

मां की चिन्ता बढ़ गई। हैरान–परेशान होकर पूछने लगी, "पर बुधराम, वो भैंस को कैसे फेंकेंगे?"

"ताई! वो लोग शहर से अपनी गाड़ी में आएंगे। तेरी भैंस को ओबरे से बाहर निकालेंगे। ले जाएंगे। उसे काटेंगे, पर फेंकेंगे नहीं जैसा म्हारे चमार करते हैं। मांस, हड्डियां, खाल सब अपने साथ लेते जाएंगे। न खेतों में गंदगी रही, न गिद्धों और कुत्तों का हुड़दंग।"

मां का सिर चकरा गया। कुछ पल्ले नहीं पड़ा। उठी और बाहर निकलते–निकलते एक नजर बुधराम पर डाली, दूसरी महेन्द्र और उसकी मशीन पर। अब क्या करे, कुछ समझ नहीं आया।

सड़क पर आकर मां ने उस दूकान की तरफ फिर देखा। बड़े–बड़े अक्षरों में दूकान का नाम लिखा था– एम.डॉटकॉम।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चश्मदीद

कोर्ट नम्बर एक। बाहर–भीतर और दिनों की अपेक्षा ज्यादा भीड़। खूब चहल–पहल। आगे की चार–पांच पंक्तियों की कुर्सियां काले कोटधारियों से भरी हुई। अभी भी कई वकील और दूसरे लोग भीतर आते और बीच–बीच में खाली कुर्सियों पर बैठ जाते। कई लोग कोर्ट हाल के दरवाजे के बाहर इस चाह में खड़े थे कि उन्हें भी भीतर जाने का मौका मिल जाए। सभी के मन में आज के मुकद्दमे को सुनने की तीव्र जिज्ञासा थी। अभिसाक्षी और प्रतिवादी पक्ष के वकील अपनी–अपनी जगह पर बैठे बहस की तैयारी में मगन दीख रहे थे।

जज महोदय जैसे ही भीतर पधारे, हॉल में बैठे सभी वकील और दूसरे लोग खड़े हो गए। न्यायगद्दी पर विराजमान होते हुए उन्होंने सभी का अभिवादन स्वीकार किया। उनका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक था। सिर के अधिकतर बाल काले थे। चेहरे पर गजब का तेज। हल्की मूंछें। आंखों पर नजर का चश्मा उनके व्यक्तित्व को और भी निखार रहा था। दोनों हाथों की उंगलियों में कई सोने की अंगूठियां जिनमें ग्रह निवारण के कीमती नग जिनसे साफ लगता कि जज साहब अपने भाग्य के प्रति कुछ अतिरिक्त रूप से सतर्क रहते हैं। उम्र पचास के आसपास, पर कोई अनुमान लगाने लगे तो चालीस से एक वर्ष भी ज्यादा न बता पाए।

रीडर ने मामले की फाइल उनके सामने प्रस्तुत की। जैसे ही उन्होंने केस का टाइटल पढ़ा, चेहरे के पूर्व भाव तब्दील होने लगे। मानो किसी विशेष स्वाद से चेहरे पर रंगत आ गई हो। अपने को गंभीर बनाए रखने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की दृष्टि से उन्होंने एक गहरी सांस लेते हुए एक साथ फाइल के कई पन्ने उलट–पलट दिए। फिर आंखों पर से चश्मा उतारा। भरी नजर न्यायालय–दीर्घा में डाली। पता नहीं क्यों आगे की कुर्सियों पर बैठे सभी वकीलों के चेहरे पर पसरे भाव को देखकर उन्हें लगा कि वे कोर्ट में न होकर किसी सरकस हाल में आए हैं और तमाशे का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। चश्मा पुनः आंखों पर चढ़ाया और केस आरम्भ करने का आदेश दिया।

चपड़ासी मुश्किल से लोगों को इधर–उधर हटाते दरवाजे तक गया और जोर से पुकारना शुरू किया–

कुमारी सुमना.. बनाम कैलाश... उर्फ काकू हाजर हो...!

उसकी आवाज बाहर कम, भीतर ज्यादा गूंजी। सभी की निगाहें दरवाजे की तरफ उठ गईं। ये नजरें साधारण नहीं थीं, न ही सहज। मन में उमड़ते–घुमड़ते कई विचारों के मिश्रित द्वंद्वों की तल्खी उनमें थी।

काकू बाहर से नहीं आया। वह मध्य में कहीं अपने विधायक पिता के पास बैठा था। शायद किसी की नजर उन पर नहीं गई। वह ऐसे उठकर चल दिया जैसे कोई पुरस्कार लेने मंच पर जा रहा हो। अपराधी–जैसे कोई भाव उसके चेहरे पर नहीं थे। माथे और कान पर झूलते बाल। छाती पर कमीज के दो बटन खुले हुए। भीतर पहनी बनियान के ऊपर से सोने की चेन बाहर निकली हुई। हल्की नीली जीन की पेंट और मोटे सिर वाले जूते, जिनकी खड़खड़ाहट कई पल दीर्घा में भीड़ और दीवारों से टकराती रही। चेहरे पर अजीब–सा नशा। लाल–डरावनी–सी आंखें। उच्छृंखलता और उद्दंडता जिनमें नाच रही थी।

जिस किसी ने उसको मन की आंखों से देखा, उसने जान लिया कि यह सब एक ओढ़ा हुआ बनावटी यथार्थ है... नंगे पहाड़ पर बर्फ जैसा... जिसका अस्तित्व सूरज निकलने तक बचा रहता है। या फिर दो–चार टुकड़े बादल आने तक... वे आए कि बर्फ की स्वर्णिम, श्वेत आभा उड़न–छू...। उसका विधायक पिता जो हाल में है... शायद पिता नहीं है। उसके भीतर बाप की सत्ता भी नहीं है। न तो उस जैसा कोई स्नेह और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
न अधिकार। होता तो जिस जुर्म के लिए बेटे पर मुकद्दमा चल रहा है, उसकी शर्म–हया तो चेहरे पर होती। मन–आंखों पर विधायक होने का आवरण जो चढ़ा है... राजनीति जो भीतर पसरी है नस–नस में... खून में घुली सदा प्रवाहित अफीम के नशे की तरह।

इस बीच टीन की छत पर जोर की टनटनाहट हुई। दरवाजे के साथ दीवार से नीचे बारीक मिट्टी झरती रही। कुछ देर छत पर बंदरों का एक दूसरे पर आक्रमण चलता रहा। एक बंदर खिड़की से भीतर घुसने लगा तो चपड़ासी ने उसे भगा दिया। ऐसा वहां रोज ही होता। अतः इसके सभी अभ्यस्त थे।

सभी ने काकू पर चलती–उड़ती–सी नजर डाली, लेकिन आंखें दहलीज पर गड़ी थीं... कुमारी सुमना के भीतर आने की राह पर।

•

सुमना के कानों में आवाज गर्म तेल की तरह पड़ी। अपना ही नाम खंजर की तरह मन में चुभ गया। लकड़ी के बेंच पर से ऐसे उठी मानो सांप छू गया हो। साथ उसका बापू भी खड़ा हो गया। पांव में एक अजीब–सी थरथराहट। कांपती टांगें... जैसे अब गिरा कि अब। कोई उसके मैले से कुर्ते और सदरी के बीच से हाथ डालकर छाती पर रखता तो जानता कि भीतर दिल मशीन की तरह धड़क रहा था। लाठी के सहारे उसने मुश्किल से अपने शरीर का संतुलन बनाया। कंधे पर झोला ठीक किया और भीड़ के मध्य रास्ता बनाते सुमना को सहारा देते भीतर ले गया। साथ दो महिलाएं भी थीं। भीतर सुमना का बापू। महिलाएं पीछे रह गई थीं। सुमना को चपड़ासी ने कटघरे तक पहुंचाया।

बूढ़े बाप ने कुर्सियों के मध्य एक जगह टटोली और बैठ गया। पीछे दोनों महिलाएं खड़ी हो गईं। किसी ने उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया।

कटघरे तक वकील और दूसरे लोग सुमना का आंखों ही आंखों में पीछा करते रहे। वहां पहुंचकर वह चुपचाप खड़ी हो गई। हॉल में बैठे लोगों की अनगिनत आंखें उस पर केंद्रित हो गई थीं। कई प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष बलात्कार के दृश्यों के साथ। जैसे वह कोई गांव की गरीब,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
असहाय और मासूम लड़की न होकर प्रदर्शन के लिए लाई गई कोई चीज हो... कठपुतली जैसी। एक क्षण में ही उन आंखों ने पता नहीं कितनी बार उसे निर्वसन कर दिया! समाज के उन न्याय–रक्षकों की आंखों में सिनेमा की तरह अनेकों दृश्य उमड़ रहे थे... जैसे वे किसी कोर्ट में नहीं बल्कि सिनेमा हाल में बैठे 'केवल बालिगों के लिए' फिल्म देख रहे हों।

जज महोदय ने एक सरसरी निगाह सुमना पर डाली। उन्हें लगा जैसे एक छोटा–सा गांव उस लड़की के साथ कटघरे में खड़ा हो गया हो। उलझे हुए बाल... जैसे कई महीनों से धोए ही न हों। कई लटें माथे से गालों पर गिरतीं–पड़तीं। शर्मसार आंखें... जैसे तमाम दुनिया की लज्जा उनमें समा गई हो। सिर पर ओढ़ी मैली–सी चुनरी। मुरझाया हुआ चेहरा। सूखे–फटे होंठ। पीड़ाओं से लदे–भरे। उन्हें मिट्टी और गोबर की गंध अपनी तरफ आती महसूस हुई... जैसे वे किसी न्यायगद्दी पर नहीं बल्कि गांव के किसी खेत की मुंडेर पर बैठे हों।

कार्यवाही शुरू हो गई। भीतर गहरा सन्नाटा पसर गया था। प्रतिवादी पक्ष का वकील अपनी जगह से उठा। लम्बा काला चोगा संभाला और सुमना के पास जाकर खड़ा हो गया।... परमदत्त सहाय नाम था उसका। उसकी चाल में एक अनोखी–सी कशिश थी, मानो वह मंच पर किसी फैशन शो की नुमाइश में आया हो। आंखों में अजीब–सा नशा। चेहरे पर बेढंगी–सी मुस्कान मानो किसी अश्लील दृश्य पर चलते–चलते नजर पड़ गई हो। बलात्कार और हत्या जैसे संगीन मामलों का माहिर वकील। अभियुक्तों को बरी करवाने की विशेषज्ञता। दूर–दूर तक उसे ऐसे मामलों में पैरवी के लिए बड़े लोग और राजनीतिज्ञ ले जाया करते क्योंकि उसकी जितनी फीस थी शायद ही कोई भला आदमी दे पाता। वह कानूनी दाव–पेंचों के साथ कई दूसरी तिकड़में भी भिड़ा लिया करता जिससे ऐसे मामले अपने पक्ष में करना उसके लिए दाएं हाथ का खेल हो जाता। जजों तक मुंह मांगी रकमें देने में भी वह न हिचकिचाता।

कोर्ट में बैठे सभी वकील और दूसरे लोग वर्तमान प्रभाव क्षेत्र में आने लगे थे। वे जानते थे कि जब वकील सहाय सुमना से पूछताछ करेंगे तो कई जीवंत रोमांचकारी दृश्य सामने उभरने लगेंगे। ऐसे क्षण बार–बार कहां आते हैं। हालांकि वे सभी इस सच्चाई से वाकिफ थे कि जब ऐसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अपराध होते हैं तो वे प्रत्यक्षदर्शियों के सामने नहीं होते। गांव या शहर के लोगों के सामने नहीं होते। लेकिन कानून तो गवाही मांगता है। सबूत मांगता है... इसीलिए एक बार फिर सुमना के साथ वही सब कुछ होगा लेकिन आज अकेले में नहीं... सभी के सामने... जज के सामने... वकीलों की मौजूदगी में... उसके अपने बापू के समक्ष... उसके कपड़े बारी–बारी उतारे जाएंगे... उसे निपट नंगा कर दिया जाएगा... जिस शर्म और लज्जा को वह बचपन से लेकर जवानी तक संभालती–सहेजती रही, उसकें चिथड़े–चिथड़े किए जाएंगे। आज जैसे उस कृत्य का भागीदार काकू न होकर बीसियों लोग होंगे... पर यह सब होगा कानून की सीमाओं में... कानून की मान्यताओं के बीच... अधिकृत तौर पर...।

और अब यही सबकुछ शुरू हो गया था। कितने अनोखे प्रश्न! अश्लील। बेबुनियाद। सुमना बेचारी सिर झुकाए खड़ी थी। चुपचाप। सिर का दुपट्टा आंखों पर से नीचे तक सरक आया था। आंखों से अविरल आंसुओं की धारा बहती जा रही थी। पर वकील सहाय के प्रश्नों की चौंध के बीच उसकी सिसकियां गुम होती गईं। उसने किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जैसे उसकी जुबान ही बंद हो गई थी। वह सोच रही थी कि काश! वह सीता होती तो धरती मां को पुकारती और वह फट जाती। उसमें समाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर देती। पर वह जानती है कि वह सुमना है। गरीब और असहाय हरिजन की बेटी। इकलौती।

कोई उसके बापू को कुर्सी के बीच उकड़ूं बैठे देखता तो जानता कि वह किस तरह एक जीती–जागती देह से मोटे पत्थर की तरह फर्श पर गड़ गया था।

वकील सहाय ने इस मामले को नया मोड़ दे दिया। चुनाव नजदीक थे। वकील की दलील थी कि कैलाश के पिता विधायक गणेशदत सत्तारूढ़ पार्टी के हैं, इसीलिए कुछ शरारती तत्वों ने कई विपक्षी नेताओं के झांसे में आकर उनकी छवि बिगाड़ने के लिए ही यह मामला घड़ा है। इसके लिए एक गंवार, असहाय और हरिजन की गरीब लड़की को ढाल बनाया गया है। जितने भी गवाह पेश किए गए, उन्होंने इस घटना के बारे में अनभिज्ञता जाहिर कर दी। केवल सुनी–सुनाई बातों पर ही उन्होंने गवाही दी। कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education, Kanpur
आश्चर्य था कि जिन लोगों ने इस मामले को चुनौती देकर कोर्ट तक पहुंचाया था, वही आज पीछे हट गए थे। कुछ महिलाएं और गांव के लोग चश्मदीद भी थे। इनमें जो कुछ प्रभावी लोग शामिल थे, उन्हें पार्टी की तरफ से कई पुरस्कार और ओहदे बांट दिए गए थे। मसलन जिस डॉक्टर ने सुमना की मेडिकल रिपोर्ट दी थी, उसे रिपोर्ट को बदलने के एवज मुख्य चिकित्सा अधिकारी बना दिया गया था। जिस पुलिस निरीक्षक ने चालान बदलकर कोर्ट में पेश किया, उसे पदोन्नत करके मुख्यमन्त्री की सुरक्षा टीम का इंचार्ज बना दिया गया। गांव की महिला मण्डल की प्रधान जिसने प्रारम्भ में इस मामले की पुरजोर आवाज उठाई, उसे चुप रहने के पुरस्कार बतौर जिला महिला कल्याण मोर्चे की महासचिव नियुक्त कर दिया गया था। और जो दो–चार दूसरे लोग इसमें शामिल थे, उन्हें भी उनकी हैसियत के मुताबिक दाना–पानी दे दिया गया था। जो एक–दो गांव की महिलाएं सुमना के साथ आती–जाती थीं, वे भी गवाही के दिन अपने–अपने मायके चली गई थीं।

सुमना कहीं नीचे धंसती चली जा रही थी। आंखें बंद किए हुए वह अपने साथ हुए कुकृत्य की चश्मदीद, उन दुर्भाग्यपूर्ण क्षणों में खो गई थी। उसके मस्तिष्क में वे दृश्य घूमने लगे थे।

•

कितना बुरा दिन था वह! गांव में महिला मण्डल के नए भवन का शिलान्यास विधायक को करना था। अगली बार तो वह अपने बेटे को टिकट दिलवाने के चक्कर में था। इसीलिए वह जहां जाता, अपने बेटे को भी साथ ले जाया करता। उस दिन भी वह साथ था। बेटे की कारगुजारियां अच्छी नहीं थीं। बाप तो बखूबी परिचित था। जानता था कि बेटा कितना होनहार है! पर अपने सिक्के को खोटा कौन कहे! बारहवीं भी न कर सका। जितने दिन स्कूल में काटे, मास्टरों की नाक में दम किए रहा। चार बार इम्तहान दिया, पर निकला ही नहीं। पिता ने उसके लिए एक पेट्रोल पम्प ले लिया था।

पहले सोचा था कि बेटे को खूब पढ़ा–लिखाकर डॉक्टर या अफसर बना देंगे। पर बीस–बाईस सालों तक जो बेटे की करतूतें रहीं, उससे उन्हें पूरा विश्वास हो गया था कि बेटा राजनीति में ही फिट होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पढ़ना–लिखना वैसे भी अब उन्हें बेवकूफी का काम लगने लगा था। खुद भी आठवीं फेल थे, पर राजनीति की सारी परीक्षाएं बखूबी पास करते गए। अब नजरें राज्यसभा पर लगी थीं।

सुमना के अम्मा–बापू उस दिन गांव में नहीं थे। घर में वह अकेली थी। पहले भी वह कितनी ही बार अकेली रही, पर कोई डर–डराव नहीं। अपना गांव। अपने लोग।... जलसा समाप्त हुआ। विधायक तो लौट गया, पर बेटा वहीं रहा। अब प्रधान उसकी आवभगत कैसे न करता! होने वाला विधायक जो ठहरा! सांझ हुई तो मन की बात प्रधान जी को बता दी। प्रधान जी को तो इंतजाम करना था। उसने सोचा–विचारा। पहली नजर सुमना के परिवार पर ही गई। वैसे भी गांव–बेड़ में ऊंची जात वालों की आंखें गरीब दलितों की जमीन और बहू–बेटी पर ही लगी रहती हैं। सोचा कि अपना न सही, विधायक के बेटे का ही भला हो जाए।

देर रात तक दोनों खूब खाते–पीते रहे और फिर सुमना के घर की तरफ हो लिए।

सुमना के पास एक किन्नौरी काला कुत्ता था। नाम था शेरू। उसका भय पूरे गांव में था। उसके डर से उनके घर के आसपास भी कोई पखला नहीं आ सकता था। हां, गांव–बेड़ के जिन लोगों का उनके घर बराबर आना–जाना रहता था, उन्हें शेरू कुछ नहीं कहता था। प्रधान भी उनमें एक था। वह जब कभी अकेली रहती, शेरू का बड़ा सहारा होता था। आज सांझ ढलते ही उसने उसे सांकल में बांध दिया था। गांव में कुछ दिनों से बाघ का डर हो गया था। गांव के एक–दो कुत्ते उसने मार खाए थे। कई पशु भी उसके शिकार हो गए थे।

सुमना का मन आज सुबह से ही उदास–उदास था। हल्की–हल्की बारिश भी हो रही थी। इसलिए वह कहीं घास–पत्ती के लिए भी नहीं गई थी। कई बार उसका मन किया कि वह जोर–जोर से रोए। इसी तरह सांझ हो गई। जब उसने दरवाजा बंद किया तो अचानक उसकी नजर पूर्व की तरफ चली गई। काले बादलों की अजीबोगरीब आकृतियां इस तरह बनी थीं जैसे वे बादल न होकर कोई डरावने जानवर हों। सुमना को वे हवा के तेज वेग के साथ अपनी ओर आती महसूस हुईं। उसने झटपट दरवाजा बंद किया। अभी मुड़ी ही थी कि उल्लू का बोलना सुनाई दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
वह एक पल के लिए ठिठक गई। अम्मा बताती थी कि उल्लू का बोलना अच्छा नहीं होता। किसी अनहोनी का संकेत वह अपनी बोलियों में पहले ही दे दिया करता है। अनहोनी... एकाएक बिजली इतने जोर से कड़की कि सुमना दीवार के साथ चिपक गई। ऐसा लगा जैसे घर के किसी कोने में ही गिरी हो। उसका कलेजा मुंह को आ गया था। वह बुरी तरह कांप रही थी। एकमात्र सहारा शेरू था। वह भागती उसके पास गई और उसके गले से लिपट गई। शेरू चीं–चीं की आवाज करते कभी मुंह तो कभी पंजा उसके शरीर में मारता। फिर दरवाजे की तरफ देखकर भौंकने लगता, जैसे बाहर कोई जानवर या पखला खड़ा हो।

प्रधान को यह मालूम था कि सुमना आज अकेली है। उसने जब आवाज लगाई तो वह सो चुकी थी। सुमना को नींद में ही आवाज सुनाई दी। वह हड़बड़ाकर उठ गई। प्रधान ने जब दो–तीन आवाजें एक साथ दीं तो सुमना उसे पहचान गई। बिस्तर से उठते–उठते उसने एक पल सोचा कि इस वक्त प्रधान को क्या काम होगा! उनींदी आंखों से उसने दरवाजा खोल दिया। वह तो उसकी इज्जत अपने बापू की तरह करती थी। डर की तो कोई बात ही न थी। लेकिन शेरू लगातार भौंके जा रहा था। सुमना उस पर गुस्सा हो रही थी कि परधान जैसे इज्जतदार आदमी पर वह भौंकता ही जा रहा है। उसके मन में एक पल के लिए यह ख्याल भी आया कि कहीं आंगन–पिछवाड़े बाघ ही तो न आया हो। पर उसे क्या पता था कि इस घने अंधेरे में वह बाघ कुत्ते के लिए नहीं बल्कि आदमी के रूप में उसे ही झपटने आया है।

दरवाजा खुलते ही विधायक का बेटा उस पर बाघ की तरह टूट पड़ा। सुमना को संभलने का मौका तक न मिला। वह उसे उठाकर भीतर ले गया। बादल फिर गरजे थे। इस बार की गर्जन अत्यन्त भयावह थी। उसी के साथ बारिश शुरू हो गई। तेज हवाएं चल रही थीं। दूर जंगलों में कहीं गीदड़ियां चीख रही थीं। गांव के किसी घर के आंगन से कुत्ते की एक लम्बी चीख सुमना के घर की दीवारों से टकराकर हवा के साथ कहीं उड़ गई। उल्लू उसके आंगन के पेड़ पर बैठकर तरह–तरह की आवाजें निकाल रहा था। सुमना चीखती–चिल्लाती रही, पर उस अंधेरी काली रात में कौन मदद करता! अब प्रधान की जीभ भी लार टपकाने लगी थी,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर सुमना का रोना–धोना उन्हें वहां से भागने को विवश कर गया।

उनका घर अकेले में था। उसके घर के ऊपर कुछ दूरी पर महिला मण्डल की प्रधान का घर था। बारिश थम गई थी। हवा चुप थी। उल्लू भी उड़कर कहीं दूर चला गया था। बादलों की वे डरावनी आकृतियां छितरा कर हवा के झोंकों के साथ पश्चिम की तरफ चली जा रही थीं। शेरू ने सांकल से अपने को आजाद करने की जी–जान कोशिश की, पर वह सफल न हो सका। पंजों से उसने फर्श तकरीबन आधे फुट से ज्यादा उखाड़ दिया था। सुमना के चिल्लाने की आवाज सबसे पहले महिला मण्डल की प्रधान ने ही सुनी। पहले तो उसे कुछ समझ नहीं आया। आंगन में आकर उसे सुमना के घर से किसी के चीखने की आवाज के साथ कुत्ते का भौंकना भी सुनाई पड़ा। उसने अपने बड़े बेटे को उठाया और सुमना के घर आ गए। आंगन में आए तो दरवाजा खुला देखकर हतप्रभ रह गए। भीतर का दृश्य डरावना था। शेरू के पंजों से खून बह रहा था। वह अभी भी खुलने के प्रयास में था। महिला मण्डल की प्रधान ने उसे खोलना चाहा, लेकिन उसके भयंकर रूप को देखकर वह हिम्मत न जुटा पाई। उसने भीतर के कमरे में सुमना की जब हालत देखी तो हैरान हो गई। मुश्किल से संभाला था सुमना को। दूसरे दिन बात आग की तरह फैल गई। महिला मण्डल की प्रधान नहीं चाहती थी कि केस दब जाए। वह एक तीर से दो शिकार करना चाहती थी।

सुमना के अम्मा–बापू जब लौटे तो बेटी की हालत देखकर दंग रह गए। उनकी एक ही तो बेटी थी। वह अपने आपको कोस रहे थे कि उन्होंने क्यों उसे अकेला छोड़ा। पर होनी को कौन टाल सकता था! सुमना का बापू इस मामले को वहीं पर खत्म करना चाहता था। अपनी गरीबी के कारण वह विधायक से कैसे लड़ता? पर महिला मण्डल की प्रधान तथा कुछ दूसरे लोगों ने उसकी बात नहीं मानी। इस अत्याचार के खिलाफ आगे तक लड़ने का संकल्प किया था। ताजी घटना थी इसीलिए पूरा गांव साथ हो गया। इस तरह एक विश्वास उस लुटे हुए घर और सुमना के बापू के दिल में भी जाग गया था कि इस पाप के लिए सजा मिलनी ही चाहिए।

इस मामले को पुलिस तक ले जाया गया। एफआईआर पुलिस को मजबूरन दर्ज तो करनी पड़ी, लेकिन उन्होंने कार्यवाही केवल कागजों पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही की और चालान कोर्ट में पेश कर दिया। सुमना को सरकार की ओर से एक सरकारी वकील भी दे दिया गया था।

सुमना चुपचाप कहीं अतीत में खोई रही। पक्ष, प्रतिपक्ष के बीच कितनी देर बहस चली, सुमना को नहीं पता। उसने जब भी कटघरे में अपने खड़े होने को महसूस किया तो लगता रहा कि वह निपट नंगी है। लोग, कानून की रक्षा करने वाले वकील और जज – सभी तमाशबीन हैं। उसने कटघरे के ऊपर की लकड़ी को पूरे जोर से पकड़ रखा था। इतने जोर से कि हाथों से खून बहने लगा था। उन्हें किसी ने नहीं देखा। विवश मन किसी ने महसूस नहीं किया। भीतर की पीड़ाओं को किसी ने न जाना।

•

अब फैसला होना था। विधायक और उसका बेटा प्रसन्न थे। वे तमाम लोग भी जो किसी–न–किसी तरह से उनके करीब थे। जिस तरह गवाहियां उनके पक्ष में हुईं, साफ था कि फैसला उन्हीं के हक में दिया जाना है।

...और उसी क्षण एक अप्रत्याशित घटना घटी। एक काला कुत्ता हांफता हुआ कोर्ट हॉल में पहुंचा। उसका इस तरह भीतर आना सभी को आश्चर्य में डाल गया। बाहर तो कई आवारा कुत्ते घूमते रहते हैं, लेकिन इस तरह कोई भीतर ही आ जाए तो अनहोनी जैसी बात थी। भीतर पहुंचते ही उसने सुमना की तरफ हामी भरी। सुमना ने सिर उठाया। उसे देखकर हैरान रह गई। अचानक मुंह से निकला... शेरू! वह नीचे उतरकर उसे जी भर प्यार करना चाहती थी। शेरू बावला–सा हो गया। उसकी तरफ उछलता, कूदता। कटघरे की लकड़ियों के बीच से ऊपर चढ़ता और पांव से उन्हें कुरेदता और अपने हाव–भाव से कुछ बोलता जैसे सुमना को सांत्वना दे रहा हो कि उसके साथ भले ही और कोई न हो लेकिन वह तो उसके साथ है। इस स्नेह और अपनेपन की भाषा केवल वही समझ सकती थी। बाकी लोगों के लिए वह एक परेशानी का कारण बन गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरे पल शेरू पीछे मुड़ा। उसकी आंखों में स्नेह की जगह खून उतर आया था। वह उसका दूसरा ही रूप था। किसी को पता न चला कि कैसे उसने दूसरे कटघरे में खड़े कैलाश के ऊपर छलांग लगा दी। ऊंचाई ज्यादा होने के कारण वह उस तक न पहुंच पाया। पहुंच जाता तो उसके लीथरे–लीथरे कर देता।

अब कोर्ट का परिदृश्य पूरी तरह बदल गया था। जो लोग कुर्सियों पर बैठे थे, वे खड़े हो गए। यहां तक कि जज महोदय भी आश्चर्य से खड़े होकर देखते रहे। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि इस स्थिति से कैसे निपटा जाए। शेरू ने अपने नाखूनों से नीचे बिछी दरी और कटघरे की लकड़ी को बुरी तरह से छील दिया। वह पीछे हटता और फिर कैलाश की तरफ उछल जाता।

सुमना ने ही इस स्थिति को संभाला था। उसने हल्की–सी डांट लगाई तो शेरू उसकी ओर आ गया। पर आंखों में आग और पंजों में आक्रोश पसर गया था।

तीन–चार सुरक्षाकर्मी हाथों में डंडे लेकर भीतर पहुंचे लेकिन जज साहब ने उन्हें रोक दिया। उनके अपनी सीट पर बैठते ही सभी अपनी–अपनी कुर्सियों पर बैठ गए।

कुत्ते की इन हरकतों को देखकर जज साहब की उत्सुकता जागी। उन्होंने सुमना से सीधा प्रश्न किया था, "कुत्ता तुम्हारा है क्या?"

हल्का का सिर हिलाकर उत्तर दिया था सुमना ने।

"जी..।"

"कितने सालों से तुम्हारे पास है?"

"जी... तीन सालों से।"

जज साहब कुछ देर चुप रहे। प्रतिवादी पक्ष का वकील कुछ कहने के लिए उठा था लेकिन जज ने उसे रोक दिया। उसे बैठना पड़ा।

कुत्ता इस बीच एक बार फिर कैलाश की तरफ लपका। उसके बाद भीड़ में बैठे उसके साथियों की तरफ भौंकता रहा। फिर पीछे कुर्सियों के बीच बैठे सुमना के बापू के पास चूं...चूं करता आया। दो–चार पल बैठा और पुनः सुमना के पास कटघरे के साथ बैठ गया।

"जब यह घटना घटी तो वह कहां था?"

जैसे ही वकील ने यह प्रश्न सुना, वह फिर खड़ा हो गया। जज ने फिर उसे बैठने को कहा। वकील का चेहरा उतर गया था। वह माथे पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से पसीना पोंछता हुआ बैठ गया। दूसरे कटघरे में खड़े विधायक के बेटे के हाल देखने वाले थे। जो कभी कोई बुरा–से–बुरा काम करते न घबराया हो, उसके लिए एक मामूली–सा कुत्ता बाघ बनकर भीतर चला आया था।

जज ने दोबारा वही सवाल सुमना से पूछा।

सुमना ने आंखें ज़मीन पर गड़ा ली थीं। कुछ देर पहले जो अतीत का आवरण छंट–सा गया था, उसने सुमना को दोबारा ढक लिया था लेकिन उसे उत्तर तो देना ही था।

"जी मैंने उसे बांध दिया था क्योंकि गांव में बाघ का डर था।"

जज साहब ने सुना तो कुछ देर गंभीर रहे। एक नजर दूसरे कटघरे में डाली। सोचा होगा कि जंगल के बाघ से कुत्ता तो बच गया, पर आदमीनुमा बाघ से वह अपने आपको न बचा सकी।

अब सुमना के सब्र का बांध टूट गया था। उसकी आंखें एकाएक बरस गईं। कोर्ट हाल सिसकियों से भर गया। भीतर उपस्थित सभी की आंखों में रोमांच और आश्चर्य की जगह नमी थी। तड़प थी। स्नेह था। दर्द था। अब सुमना किसी को अपनी बेटी, तो किसी को बहन की तरह लगने लगी थी।

प्रतिवादी का वकील घबरा गया। जज साहब कुछ देर चुपचाप कुछ सोचते रहे। फिर उन्होंने भीड़ पर नजर डाली। उनमें कैलाश का विधायक पिता भी बैठा था। दोनों की नजरें मिलीं। आंखों के इस मिलन के साथ ही फैसला अगली तारीख के लिए टाल दिया गया।

कुत्ता एक बार फिर कैलाश की तरफ लपका। सुमना ने उसे फिर झाड़ दी। उसे डर था कि सुरक्षाकर्मी कहीं उसे पीटकर घायल न कर दें।

जज साहब जैसे ही उठे अचानक कुत्ते ने भौंकते हुए उनकी तरफ़ छलांग लगाई लेकिन लकड़ी की दीवार ऊंची होने की वजह से जज साहब उसकी पहुंच से बहुत ऊपर थे। जज ने कुत्ते के आक्रमण पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की और चुपचाप निकल गए, लेकिन कुत्ता उधर देखकर भौंकता रहा। इस बार सुमना की डांट का भी उस पर कोई असर न हुआ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कालिख

शामा आंगन की मुंडेर से अपने बेटे मनु को आवाज दे रही है। मनु पता नहीं कहां खेलने में मस्त होगा! उसका कहीं अता–पता नहीं है। हांक की कहीं से कोई प्रतिक्रिया नहीं आती। गांव के लोगों के लिए शामा का इस तरह आवाज देना कोई नई बात नहीं। लेकिन आज उनके कानों में यह आवाज डाइनामाइट के ब्लास्टों की तरह पड़ी है। सभी के नाक–मुंह चढ़ गए हैं। सामने की पगडंडी से एक गाय बिदकती आ रही है। वह फूला पंडिताणी की है। पशुओं को चराकर ले आते वक्त कुलच्छणी रोज ही गौशाला में जाने के बजाय शामा के घर की तरफ रुख कर देती है। फूला उसी को बोलकर गाय को रुकवा देती थी। पर आज पारा गरम लगता है। मन की चिढ़ गाय पर कम, और शामा को देख ज्यादा हो रही है। उसी रफ्तार से पीछे डंडा लेकर भाग आती है। शामा भी परवाह नहीं करती। झटपट बीड़ी के दो–चार कश खींचती है। उंगलियों के बीच जब सेंक छूता है तो झट से नीचे फेंककर पैर से मसल देती है। पुनः हांक लगाती है मनु को, "ओ रे मनुआ। मनु ओए।"

वह आवाज नहीं सुनता तो वह गुस्से में गालियां बकने लगती है, "पता नी कोढ़ी किसके दरवाजे घुस्सा होगा? कमजात, हरामी कहीं का! मेरा लहू पीणे पैदा हुआ है। आणा तू घर। आज तेरी टांग नी तोड़ी तो मेरा नाम नी बोलणा।"

बड़बड़ाती हुई भीतर जाने लगी। अभी दरवाजे के पास ही पहुंची है कि फूला अपनी गाय को 'गोट' कर ले आई। गाय सीधी जाने के बजाय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शामा की तरफ मुड़ गई। इस आशा से कि पहले की तरह रोटी की पिन्नी या टुकड़ा मिल जाए। फूला तो गुस्से में थी ही। भीतर का गुस्सा गाय की पीठ पर उतरा। आठ–दस धर दिए। डंडा भी टूट गया। शामा जितने में भीतर जाकर रोटी का टुकड़ा लिए लौटी, गाय भाग ली। पीठ पर जहां –जहां भी मार पड़ी, लम्बी धारियां बन गई थीं। शामा दहलीज पर खड़ी–खड़ी देखती रही। करती भी क्या! गुस्से से दांत कटकटाती रही, मानो दर्द उसे ही हो रहा हो।

"पागल हो गई है बामणी। गौमाता को भी नी छोड़ती। थू तेरे को।" जोर से थूक दिया। रोटी के टुकड़े को इतने जोर से मसला कि चूरा –चूरा हो गया। उलटे हाथ छत पर फेंक दिया। खपरैल के बीच उसका चूरा जगह–जगह ठहर गया था। दो–तीन कौए आकर उन्हें चुगने लगे थे। भीतर खड़ी शामा काफी देर उनकी खटर–पटर सुनती रही। कुछ बारीक टुकड़े भीतर भी गिर गए। छत की तरफ देखा। खपरों के बोझ से एक–दो बांस की कड़ियां मुड़ गई थीं। कई जगह इतनी बची कि आसमान के तारे गिन लो। धुएं से काली–बदरंग होती छत। घास के लम्बे तिनकों में फंसा कीरा और उनसे लटकते मकड़ी के जाले। बरखा होती तो कई जगह से पानी टपकने लगता। एक–दो जगह तो मिट्टी की भीत में पानी से खराद–सी लग चुकी है। गारा–गोबर भी कितना पाथे शामा! एक तरफ लिपाई करे तो दूसरी जगह खरने लगती है। पता नहीं कब खपरे–बांस सिर पर आ जाएं। बाहर से आती रोशनी ने उन्हें ज्यादा डरावना बना दिया है। वह भागकर दरवाजा फ़ेर लेती है। भीतर सबकुछ हल्के अंधेरे में समा जाता है।

महज एक कमरे का घर है शामा का। पहले वह गौशाला थी। उसका दिल जानता है कि किस मुश्किल से सिर ढांपने लायक किया था। लोग बताते हैं कि उसमें जो गाय–भैंस बंधी रही, न कभी बोली और न ही अगले आसरे हुई। पर उसके तो एक बेटा हो गया। आज उसी के लिए पंचायत... कि मनु बेतुख्मी औलाद है....! याद आया तो जैसे सिर पर किसी ने ठंडे पानी का घड़ा उलट दिया हो। शरीर से प्राण ही निकलने लगे। शर्म से अकेली ही पानी–पानी। खड़े–खड़े चक्कर से आने लगे तो चूल्हे के पास बैठ गई। इस कड़ाके की धूप में इतनी सिरहन!

उसने चिमटा उठाया और राख को इधर–उधर करने लगी। दबे अंगारे जाग गए। वह निर्निमेष देखती रही और कहीं उन्हीं में खो गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जलते–बुझते अंगारे। बाहर से हवा के झोंके आते तो जुगनुओं की तरह चमकने लगते। उनका सेंक बढ़ जाता। चिमंटे से फिर उलटती–पलटती। कई पल छेड़ती रही तो टूटकर एक से कई–कई हो गए। इस होने–टूटने की क्रिया में उलझी न जाने कब तक यूं ही बैठी रही। कुछ भी सूझ नहीं रहा था। कभी लगता जैसे शरीर जलकर राख हो गया है। चूल्हे में राख उसी की है। हड्डियां गलकर आग के कतरों में चमक रही हैं।

भीतर भी कुछ उसी तरह जल–बुझ रहा था। सांस लेती तो लगता आग की लपटें निकल रही हैं। कलेजा मुंह को आ रहा है। शरीर में भयंकर जकड़न। पल–पल सूखता गला। तालू से चिपकती जीभ। कोशिश करती कि मुंह में गीलापन आ जाए, पर व्यर्थ। इतनी हिम्मत भी नहीं कि उठकर घड़े से पानी निकालकर पी ले।

•

धड़ाम् से दरवाजा खुला तो शामा चौंकी थी। चूल्हे पर गिरते–गिरते बची। सोचा कि मनु आया होगा। गुस्से में चिमटा उठा लिया। देखा तो पंचायत का चौकीदार था।

"तू आती क्यों नी शामा? कितणी देर से पंचायत तेरा इन्तज़ार कर रही है। उठ जा। म्हारे को तेरी ही पंची नी करनी है। और काम भी है।"

जैसे किसी ने कीचड़ का टोकरा सिर पर फेंक दिया हो। बैठे–बैठे दरवाजे की तरफ देखती रही। पंचायत का चौकीदार अभी भी यमदूत की तरह खड़ा था। दाहिना पैर दहलीज के बीच और हाथ दरवाजे की साखों पर। साफ था कि उसने दरवाजा पांव की ठोकर से खोला था।

बिना खड़खड़ाए या हांक दिए दरवाजा खोलना कोई नई बात नहीं थी। तकरीबन सभी उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करते जैसे वह इंसान नहीं, कोई चौराहे का ठीया हो। जिसका मन किया, दो घड़ी उठ–बैठ लिए। आराम फरमाया। अपना बोझा टिकाया या चौकड़ी जमाकर ताश खेलने लग गए। दारू–सुल्फा पीते लोट–पोट हो लिए या फिर भीत में ठूंसी कोई खूंटी पर कभी झोला लटकाया तो कभी कोट। कभी फटे–पुराने कपड़े। कभी सदरी तो कभी पायजामा। किसी रोज कुरता तो किसी रोज टोपी।

शर्म से फिर पानी–पानी। अतीत कहीं भीतर की टीस में गुम।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आछन्न। घुप्प अंधेरा, मानो कभी सूरज उगा ही न हो।

उसने उठने का प्रयास किया। शरीर इस तरह अकड़ गया था जैसे किसी ने रस्सी से बांध रखा हो। चिमटे का सहारा लेना पड़ा। भारी मन से उठी। उठते ही चौकीदार दरवाजे से हटा और रास्ते में तन गया। शामा ने एक–दो कदम आगे–पीछे दिए। दोनों बाजू झटकाए। कुछ खून का संचार हुआ। शरीर में हल्का–सा ढीलापन आया तो मुड़कर घड़े के पास गई और बैठ गई। टीन का डिब्बा खिसकाया और पानी उंड़ेलने लगी। छलाव संभला नहीं उससे। डिब्बा तो भरा, पर काफी पानी नीचे उलट गया। धार उसके पांव के बीच से दौड़ती चूल्हे में घुस गई। आग और पानी ने मिलकर एक डरावनी ध्वनि उत्पन्न की। ...छ्छ ...छा।

कमरा काले–सफेद धुएं से भर गया था। राख के कतरे सिर–माथे पर ऐसे बैठे जैसे किसी ने जानबूझकर पोत दिए हों। आंखें मिंच गईं। कुछ देर बाद जब आग–पानी का धुआं थमा तो उसने आंखें खोलने की कोशिश की। राख की किरचें बुरी तरह चुभ गईं। दो–चार दफा मुश्किल से पलकें झपकाईं तो चुभन कुछ हल्की हुई। कुरते के छोर से बाल, मुंह और आंखें पोंछीं। फिर कपड़े झाड़े। डिब्बे में भरे पानी के ऊपर भी राख की तह जम गई थी। वहीं से बाहर फेंका। चौकीदार थोड़ा बाएं न हटता तो सारा मुंह पर पड़ जाता। अचानक मुंह से निकला... रांड कहीं की! शुक्र है कि शामा ने सुना नहीं, वरना उसकी खैर नहीं थी। जिस स्थिति से वह गुजर रही थी, न जाने क्या कर देती!

दोबारा पानी उंड़ेला। पूरा डिब्बा खड़े गले पी गई। उठते–उठते सहजता के बजाय कुछ अटपटा–सा लगा। भीतर जैसे कुछ बुझ गया हो। फिर उसका सेंक पूरे शरीर की शिराओं में पसर गया। उसी तरह जैसे चूल्हे में पानी के जाते ही अंगारें उफने थे। एक सरसरी नजर चूल्हे में डाली। वह ठंडा हो गया था। बिल्कुल शमशान में बुझाई छाई की तरह। बुझे मन से दरवाजे तक आई। बाहर देखा। दोपहर पूरे यौवन पर थी। घर की छत, पेड़ों और घाटियों की सिमटती परछाईयां। आसपास की गौशालाओं से आती गोबर और पशुओं की गंध। गलगल के पेड़ से लटकता पौ। उस के आर–पार बैठी दो गौरैया और उनके तीन छोटे–छोटे बच्चे... अपनी चोंच पानी में डुबोती और बच्चों के मुंह में डाल देती। अचानक कुछ याद आया। वापिस लौटी और चूल्हे के साथ रखी छाबड़ी पर से स्टील की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
थाली हटा दी। मन को तसल्ली हो गई... मनु के लिए दो रोटियां रात की बची हैं। खुद तो आज कुछ खाया ही न था। कोने में रखा दराट उठाया, बूट लगाए और हड़बड़ी में बाहर निकल गई। एक–दो कदम दिए तो पीछे देखा। दरवाजा तो ओटा ही नहीं था। वापिस लौटी और शांगल चढ़ा दी। चौकीदार काफी आगे निकल गया था।

चलते–चलते शामा को महसूस हुआ कि आग के अंगारे भीतर चमकने लगे हैं। सेंक धीरे–धीरे बढ़ रहा है। पूरा शरीर धधकने लगा है। इतनी कसमसाहट कि आगे पांव रखे तो पीछे आ जाए। उसने माथे पर चू रहे पसीने की बूंदें उंगलियों से पोंछ दीं। चादरू के किनारे से माथा साफ किया। रास्ता कई घरों के आंगन–पिछवाड़े से होता हुआ स्कूल तक जाता था। आश्चर्य हुआ कि कहीं भी कोई आहट नहीं। न किसी के बतियाने की आवाज। न किसी बच्चे के खेलने या रोने का शोर... जैसे एक गहरा सन्नाटा गांव–बेड़ में पसर गया हो। कहीं कोई औरत दिखती भी तो मुंह फेर लेती। मर्द एक अजीब–सी हंसी हंस देते।

चाल आहिस्ता की। सांस फूल रही थी या दिल की धड़कनें बढ़ने लगी थीं – अन्तर नहीं कर पाई। सोचती रही कि पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ। वरना जब भी कोई मिलता या देख लेता तो झटपट अठारह काम बताने लग जाता। शामा सभी के बताए काम करती रहती। कभी किसी को मना नहीं करती। उनका चिक्कड़–गोबर फेंकती। भांडे–बर्तन मांजती। घास–पत्ती काटती, लाती। साल–फसल की कटाई में बराबर का हाथ बंटाती। हारी–बीमारी में साथ। सुख–दुःख में बराबर की भागीदारी। यानी जिसकी जो मदद हो पाती, किया करती। इसमें अपना स्वार्थ भी होता। हर घर से कुछ–न–कुछ मिल जाता। आई–चलाई चलती रहती। अपना पेट भर लेती।

•

अपनी छोटी–सी जिन्दगी में शामा ने शायद ही कभी सुख देखे हों। ब्याह क्या हुआ; पूरा जीवन ही अभिशाप बन गया। मां–बाप ने पांच भी नहीं पढ़ने दी। जैसे ही स्कूल से हटी, सिर पर ब्याह थोप दिया। उम्र भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ज्यादा नहीं थी। सोलह से एक–दो महीना कम ही रही होगी। हंसना–खेलना जाता रहा। चंचलता छिन गई। मासूमियत खो गई। मां–बाप की जिद के आगे एक न चली। चुपचाप उनके फैसले को एक ही घूंट में कड़वी दवा की तरह पी गई।

जिसके साथ शामा का ब्याह हुआ था, वह उम्र में कोई दस बरस बड़ा होगा। बचपन से ही खुराफाती दिमाग। मां–बाप स्कूल भेजते, पर वह खेत–जंगल में छिपकर दिन पूरा करता। कामकाज में बिल्कुल निठल्ला। मुंह से दूध की बास भी नहीं गई थी कि दारू–सुल्फे की लत लग गई। बुरे काम। उलटी संगत। झूठ बोलना तो उसकी रग–रग में बैठ गया था। बीस की उम्र तक पहुंचते–पहुंचते कद तो खूब बढ़ा, पर सूखकर कांटा रह गया। न कभी बाल बनाता। न नहाता। बढ़ी हुई दाढ़ी। गंदे नाखून। न ढंग के कपड़े। वह मां–बाप के लिए एक अच्छी–खासी मुसीबत बन गया था।

कोई कहता कि लड़का मानसिक रूप से बीमार है। कोई उस पर भूत–प्रेतों का असर बताता। उसकी बातें समझ से परे होतीं। कभी पाताल की बातें करता तो कभी आसमान की। कभी परियों की तो कभी भूत–प्रेतों की। सोने के कमरे में तो किसी को नहीं मानता था। घंटों दरवाजा बंद करके कुछ बड़बड़ाता रहता। जले धूप का धुआं कई बार दरवाजे–खिड़कियों से बाहर निकलता तो लगता कि भीतर आग लगी हो। एक–दो बार उसके बाप ने डांटना चाहा, पर उसकी लाल–डरावनी आंखें देखकर घबरा गया जैसे उलटा उसे ही मार देगा। एक दिन तो उसने किसी बात पर पहले बाप को बुरी तरह पीटा और फिर अपनी मां का सिर फोड़कर घर से भाग गया। एक अजीब–सा भय उस घर में पसर गया था।

किसी ने सलाह दी थी कि यदि उसकी शादी कर दी जाए तो उसे विक्षिप्तता से छुटकारा मिल सकता है। कई दिनों बाद घर लौटा तो बाप ने प्यार से समझा–बुझा कर शादी के लिए राजी कर लिया। जहां रिश्ता हुआ, उनसे सबकुछ छुपाए रखा। और शामा जैसी मासूम और भली लड़की के गले जैसे सांप पड़ गया हो।

शादी के बाद कुछ समय तक वह ठीक रहा। शामा का मन नई–नई दुल्हन के सपनों से भरता–सींचता चला गया। मायके का बिछोह भी भूलने लगी थी। लेकिन धीरे–धीरे कुछ दिनों बाद उसके पति के भीतर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का जानवर बाहर निकलने लगा। उसकी ऊल–जलूल हरकतों से शामा परिचित होने लगी थी। उसे बहुत तंग करने लगा। बेवजह मारता–पीटता। कई बार शामा के कपड़े तक फाड़ देता। ब्याह के जो गहने उसने चाव से रखे थे, उनमें से हर सप्ताह एक गहना गुम होता जाता। पहले बालियां, फिर गोजरू, उसके बाद चांदी की छाप और पायलें। फिर सोने का चाक, सुहाग की चूड़ियां और कुछ दिनों बाद उसके पहनने का एक–एक कपड़ा। शामा की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि क्या करे। एक दिन हिम्मत जुटाकर सास को सारी बातें बता दीं। और सास ने अपने पति के पास। सबकुछ जानते हुए भी दोष बहू पर ही मढ़ना शुरू कर दिया। उलटे आरोप लगाए गए कि वह कपड़े–गहने मायके ले गई है।

पति अब कई–कई दिनों तक घर भी नहीं आता था। कभी आया भी तो सारी–सारी रात जागता रहता। शामा को अपने कमरे में आना तक न मिलता। सोना भी बाहर पड़ता। वह सारी–सारी रात कुछ बड़बड़ाता रहता। धूप जलाए रखता। उलटे–सीधे करतब करता। उसके झोले में कई बार शराब की बोतलें, मरे हुए तीतर, मुर्गे और पशुओं की हड्डियां होतीं। सिर के बाल भी उलझे हुए डरावने हो गए थे। बेतरतीब दाढ़ी तो किसी झंखाड़ से कम न लगती।

शामा को किसी ने बताया था कि उसका पति कोई सिद्धि कर रहा है। दूसरे गांव में एक 'डागी' के पास जाता रहता है। वही उसका गुरु है। शामा बात की तह तक गई तो मालूम हुआ कि गुरु उनके परिवार का कोई पुराना दुश्मन है। किसी बदले की इच्छा से उसके पति को अपने चंगुल में फंसा रखा है लेकिन लाख कहने पर भी घर वालों ने कोई परवाह नहीं की।

एक दिन आधी रात को उसका पति हांफता–हांफता घर आया। शरीर तप रहा था। माथा सिंदूर से पुता था। सिर और दाढ़ी के बाल बीच –बीच से कटे हुए थे। आकर निढाल–सा गिर गया। झोला कंधे से लटक रहा था। शामा घबरा गई थी। सास–ससुर को जगा दिया। आसपास के लोग भी पहुंच गए। वह अचेत हो गया था। कुछ देर बाद सांसें जाती रहीं।

जब लोगों ने उसका झोला देखा तो हैरान रह गए। उसमें एक बच्चे का कटा सिर था जिसमें सिंदूर लिपटा था। मौलियों की डोरियां थीं। धूप था, कुछ सफेद सरसों के दाने थे और कुछ हड्डियों के टुकड़े। उसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौत से कहीं ज्यादा उसके कृत्य का भय सभी को सताने लगा था। किसी समझदार बुजुर्ग ने सलाह दी थी कि यह सारा सामान उसकी लाश के साथ इस सफाई के साथ बांधा जाए कि किसी को कानों–कान खबर तक न हो। ऐसा ही किया गया और सबकुछ लाश के साथ जला दिया गया।

दूसरे दिन पड़ोस के गांव से खबर आई कि पंडितों के घर से एक छोटे से बच्चे को बाघ उठाकर ले गया है।

शामा के हाल देखने वाले थे। उसी के पति ने ही उस मासूम बच्चे को मारा होगा। उसकी मौत से ज्यादा डर उसे बच्चे की हत्या से लग रहा था। अपने माता–पिता को कोसती, भगवान को भला–बुरा कहती कि उसे वह किन पापों की सजा दे रहा है!

उसका मन था, ससुराल में रहकर सास–ससुर की सेवा करे, लेकिन वह उसके नसीब में नहीं था। एक दिन अचानक बीमार पड़ गई। किसी ने बात तक न पूछी। उसी हालत में उसका ससुर उसे मायके छोड़ आया था।

शामा की हालत बहुत बिगड़ गई थी। मां–बाप देखकर हैरान–परेशान हो गए। फूल–सी बच्ची कांटे की तरह सूख गई थी। आंखें भीतर को धंसी हुईं जैसे दो विवरों में किसी ने कांच की गोलियां अटा रखी हों। होंठ कई जगह फटे हुए, जिनसे खून टपकने लगा था। चेहरा काली छाईयों से भरकर डरावना हो गया था। जब अस्पताल ले जाया गया तो पता चला कि उसे टीबी हो गई है। कई महीनों तक दाखिल रही। लम्बा ईलाज चलता रहा। ठीक हुई तो मायके ही रहने लगी।

जब तक मां–बाप का साया सिर पर रहा, शामा मजे में रही। पर उनके न रहने के बाद बुरे दिन फिर लौट आए। भावजों के ताने असहनीय होने लगे। भाईयों ने भी कोई परवाह न की। मायके में अब परायापन सालने लगा था। वह भीतर तक टूट गई थी। रात–रात भर न सोती। उठकर या तो आंगन में चली जाती या फिर खलिहान की मुंडेर पर बैठी रोती रहती और वहीं सो जाती।

•

शामा बेहद परेशान और निराश हो गई। जीने का कोई मकसद नजर नहीं आया। जीवन को समाप्त करने की ठान ली, लेकिन ससुराल वालों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का अन्याय आंखों में तैरता रहा। थोड़ी हिम्मत बांधी। अपना मन पत्थर का कर लिया। पास जो दो–चार कपड़े थे, उन्हें समेटा और बिना किसी को बताए–कहे ससुराल चली आई।

उसका अचानक लौटना ससुराल वालों के लिए किसी आफत से कम नहीं था। सभी को जैसे सांप सूंघ गया हो। किसी ने सीधे मुंह बात तक न की। लेकिन वे इतना जरूर जानते थे कि कानूनन उसे घर से निकालना आसान नहीं है। उन्होंने उसे तरह–तरह की यातनाएं देनी शुरू कर दीं, पर वह उनकी बेअदबी सहन करती गई। हिम्मत नहीं हारी। डटी रही। मजबूरन उन्हें शामा को एक–दो खेत देने पड़े। घर से बला टले, इसीलिए एक कमरा गौशाला में दे दिया। उसने कोई विरोध नहीं किया। सिर ढापने की जगह तो मिली। रात–दिन मेहनत की और अपने कमरे को भी रहने लायक बना दिया।

समस्या दो जून रोटी की थी। गांव की शर्म से कभी–कभार सास कुछ आटा–चावल दे जाती। लेकिन कितना गुजारा होता! शामा रात–दिन मेहनत–मजदूरी करने लगी। रोड़ी–पत्थर कूटती। उसी से रोटी–कपड़े जुटा लेती। कभी पैसे नहीं होते तो उधार के लिए दूकान में जाती। गांव में एक ही दूकान थी। लाला धारी सिंह बड़ी पहुंच वाला साहूकार था। गांव में जो भी बड़े नेता या अफसर आते, उसी के घर जमे रहते। प्रधान, पटवारी और मास्टरों का डेरा वहीं लगा रहता। वह बिना स्वार्थ के किसी को उधार न देता। शामा को देखता तो कुछ ज्यादा ही बघारने लग जाता। बे–तहजीब बन जाता। अश्लील हरकतों पर उतर आता। मजबूरन उसे सबकुछ सहन करना पड़ता।

एक दिन लाला ने शामा को सुझाया था कि वह प्रधान से कहकर विधवा पेंशन लगवा देगा। साथ घर बनाने के लिए भी कुछ सहायता मिल जाएगी। राशनकार्ड भी बन जाएगा। सस्ता और मुफ्त राशन भी ले सकेगी। इस आस में अब रोज प्रधान के घर के चक्कर काटने लगी थी।

कुछ दिनों बाद उसकी पेंशन लग गई थी। राशनकार्ड भी बन गया। घर बनाने के लिए भी पन्द्रह हजार रुपए मंजूर हो गए थे। ससुर को पता चला तो कान खड़े हो गए। कुछ ज्यादा ही स्नेह जताने लगा। आते–जाते हाल पूछ लेता। कभी दारू पीकर वहीं पड़ा रहता। कभी–कभार देवर भी चक्कर काट जाता।

घर बनाने का जिम्मा भी प्रधान ने ही लिया था। हालांकि वह उसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
धूर्तता से भली–प्रकार वाकिफ भी थी, लेकिन क्या करती ? किसी से काम तो करवाना ही था। उसका ससुर भी यही चाहता था। दो कमरों का घर तो बन गया, पर जो सामान लगाया इतना घटिया था कि मुश्किल से सात–आठ हजार लगे होंगे बाकी सारा पैसा शामा के घर के नाम उड़ाया गया था।

एक दिन प्रधान के साथ मन्दिर का पुजारी भी उसके घर आया था। हैरान रह गई थी वह। आते–जाते किसी बाहर की जाति से छू जाए तो दो बार नहा ले। शामा जैसी दलित विधवा के यहां!

वह समझने लगी थी कि कहीं कुछ साफ नहीं है। सभी के मन खोट से भरे हैं। न कोई नेता, न प्रधान। न पंडित, न ठाकुर। न मास्टर और न पटवारी। अपनों की तो बात दूर! रिश्ते महज छलावा–दिखावा। कोई किसी का नहीं। अपने–अपने स्वार्थ। अपने–अपने काम। इनके धंधे चलते ही गरीबों का गला काटकर हैं। औरत मिल जाए तो न देवता का डर, न धर्म की परवाह। न जाति, न कोई छू–छेड़। आठ–आठ बहू–बेटियों वाले खूसट भी साले भांग–दारू पीकर कहीं भी कुत्ते की तरह मुंह मारते फिरते हैं।

जैसे–कैसे नए घर की लिपाई की। उसे रहने योग्य बनाया, लेकिन पहली ही बरसात में उसकी एक दीवार गिर गई। मदद के लिए सभी से गुहार लगाई, पर किसी ने साथ नहीं दिया। कई बरसातें उस पर पड़ीं और घर कई जगह से गिर गया था। ससुराल वालों ने तो शामा को गौशाला से निकालने के भी बहुत प्रयत्न किए, पर उसने हिम्मत बांधे रखी और वहां से नहीं गई।

•

गांव में जब भनक लगी कि शामा पेट से है तो सभी के कान खड़े हो गए। वह जब बाहर आती, पानी–पनिहार जाती तो छोटे से बड़ों तक उसकी चाल–ढाल देखते रहते। सभी की आंख उसके पेट पर टिक जाती। धीरे–धीरे पेट कोख से बाहर आने लगा। गांवों वालों का शक सच में बदल गया। ससुराल वालों ने तो तूफान खड़ा कर दिया था। गांव–बेड़ के लोगों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए वह कुलच्छणी हो गई थी। पर शामा कान मूंदे रहती। आंख बंद कर लेती। लोगों की खरी–खोटी सुनते–सुनते वह थक गई थी। कई बार मन किया कि पहाड़ी से कूदकर जान दे दे, लेकिन हिम्मत नहीं हुई। पेट में पल रहे जीव के साथ–साथ मन का स्नेह भी पलता–बढ़ता गया। एक आस जग गई... अकेलेपन से निस्तार। भविष्य का सहारा... और शामा की आंखें अपनी ही गोद भराई में बिछ गईं। नौ महीनों बाद जब बच्चा बाहर आया तो लड़का था। गांव की औरतों ने ही सबकुछ भुलाकर उसे संभाला था।

बच्चा पलने–बढ़ने लगा। लोग उसकी शक्ल गांव के छोकरे–छल्लों से मिलाते रहते। कोई कुछ कहता तो कोई कुछ। पर सही–सही अनुमान न लगा पाते। शामा के ससुराल वालों के लिए एक नई मुसीबत खड़ी हो गई थी। ससुर जानता था कि यदि बच्चा पंचायत के रजिस्टर में चढ़ गया तो पूरे हिस्से का वारिस बन जाएगा। शामा ने इतनी दूर कभी सोचा भी न था।

तीन–चार साल आंखों–आंखों में गुजर गए। शामा को पता ही न चला। साथ–साथ उसके सपने भी जवान होते गए। एक दिन बच्चे को लेकर प्राइमरी स्कूल के हैडमास्टर के पास चली गई। दाखिला दिलवाना था। हैडमास्टर ने सारे कागज पूरे किए। पिता का नाम पूछा तो शामा झेंप गई। लेकिन दूसरे ही पल संभली। पति का नाम लिखवा लिया। बच्चा दाखिल हो गया। लेकिन दूसरे दिन हैडमास्टर ने उसे स्कूल बुलाकर बताया कि बच्चे के बाप का नाम गलत लिखवाया है। ससुर ने शिकायत की थी कि बच्चा उसके पति के मरने के कई सालों बाद हुआ है। हैडमास्टर के लिए समस्या खड़ी हो गई थी। शामा खून का घूंट पीकर रह गई। आंखों में बसे सपने उड़ गए। उनमें खोई भागते–दौड़ते कितनी दूर निकल गई थी वह कि अपना अतीत ही भूल गई। ...अब बेटा पढ़ नहीं सकेगा। जहां भी जाएगा, सभी बाप का नाम पूछेंगे। वह क्या करे? कहां जाए? किसके पास दुखड़ा रोए। छाती पर सांप लोटने लगे। कलेजा दहल गया। अनमने मन से घर चली आई।

बात स्कूल के आंगन तक ही सीमित नहीं रही थी। ससुर ने एक और मुसीबत खड़ी कर दी। पंचायत में दावा कर दिया था कि इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बदचलन औरत ने कुल पर कलंक पोत दिया है। इतनी हिम्मत कि किसी ऐरे–गैरे की औलाद को उनके वंश पर मढ़ दे। अब न केवल बच्चे का दाखिला रद्द करने का सवाल था, परन्तु शामा को गांव से बेदखल करने की भी अपील की गई थी। मामला प्राइमरी स्कूल से शुरू हुआ था इसीलिए पंचायत वहीं बुलाई गई।

•

स्कूल के प्रांगण तक पहुंचते–पहुंचते शामा ने अपनी पूरी जिन्दगी पढ़ ली। कदमों से नाप ली। आज सचमुच अथाह अकेलापन महसूस हो रहा था मानो उसे किसी बियाबान में फेंक दिया गया हो। जहां न कोई पगडंडी है, न ठांव। न धूप न छांव। न कोई सहारा न आसरा। कोई भी जंगली जानवर झपटकर नोच दें। शरीर के रेशे–रेशे कर दे। लेकिन अब जाए कहां? क्या पता आज का दिन गांव में आखिरी दिन ही हो!

मन में कई तरह के ख्याल आते रहे। बिजली की तरह कौंधे। उस कौंध ने भीतर की आग को हवा दे दी। वह अंगारे उसी तरह प्रखर होने लगे जिस तरह चूल्हे में हवा के स्पर्श से प्रचंड हो जाते थे। पसीने की बूंदें माथे से सरकती गालों तक आईं तो चादरू से उन्हें इत्मीनान से पोंछ दिया।

स्कूल के प्रांगण तक छः–सात सीढ़ियां थीं। चढ़ते हुए कानों में एक शोर घुस गया। लोग आपस में बतिया रहे थे। बीच–बीच में कोई ठहाका लगाता तो शामा के कानों में गर्म तेल की बूंदों की मानिंद पड़ जाता। पांव जमीन में धंसने लगे। ऊपर चढ़ने की कोशिश में वह एक–दो बार गिरते–गिरते बची थी।

उलटे पांव पीछे उतरी। दीवाल के सहारे खड़ी हो गई। शोर बढ़ता गया। कानों में उंगलियां डालीं। लगा कि बाहर से कहीं अधिक वह शोर भीतर पसरा है। उंगलियां हटा लीं। चारों तरफ देखा। देखती चली गई। फिर आसमान की ओर पश्चिम से आते बादलों के काले टोले। उनकी तरह–तरह की बनती–बिगड़ती डरावनी आकृतियां। बीच में दौड़ता–भागता सूरज। बादल राहू बनने लगे जैसे अभी निगला कि अभी। पल भर यह खेल चलता रहा लेकिन पकड़ से छूटता चला गया। जहां–कहीं आर–पार खेतों–घाटियों में छाया के टुकड़े पसरे हुए थे, वहां अब धूप का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साम्राज्य था। शामा ने उसे अपने भीतर समेट लिया।

एक सांस में सीढ़ियां चढ़ गई। उसे देखते ही आंगन में सन्नाटा पसर गया। न कोई बतियाहट न कोई हरकत। न शोर न ठहाके। जैसे समय ठहर गया हो। शामा ने आंखों–आंखों में मैदान का मुआयना किया। गांव–बेड़ उमड़ आई थी। ऐसे लोग भी भीड़ में थे जिन्हें कभी देखा न था। औरतें। जवान। बूढ़े और बच्चे। जैसे कोई बड़ा तमाशा होने वाला हो।

प्रधान ने शामा के चेहरे पर नजर डाली। डरावना चेहरा। आंखों में उमड़ता एक तूफान। छातियां मैले से कुरते के बीच पेट पर ढुलकती हुई जैसे कोई जिन्दा लाश हो। हालांकि वह अभी काफी पीछे थी लेकिन उसकी परछाईं इतनी लम्बी हो गई थी कि भीड़ को चीरती प्रधान तक पहुंच गई। पता नहीं क्या हुआ! वह किसी अज्ञात भय से सिहरा और खड़ा हो गया। ससुर ने बैठे–बैठे गर्दन टेढ़ी की तो शामा से नजर न मिला सका। वह चलती रही... प्रधान बैठ तो गया, पर मन की दुरूहता चेहरे पर उतर आई। उस तरफ किसी का ध्यान नहीं गया।

भीड़ के बीच पहुंचते–पहुंचते शामा के मन का रहा–सहा भय विलुप्त हो गया। पुनः नजर चारों तरफ घुमाई। लोग दूर–दूर तक बैठे थे। स्कूल के बरामदे में। पेड़ों और झाड़ियों की छाया में। जैसे यहां किसी देव–जातर का आयोजन हो या विधायक, मन्त्री आने वाला हो। अचानक मैदान के पूर्व से हवा का तेज अंधड़ आया। बीच में पहुंचा। एक वर्तुल बनाया। ढेरों मिट्टी और घास–पत्ते अपने साथ समेटे घराट की तरह घूमा और भीड़ पर बिछ गया। प्रधान के साथ कई जाने–माने लोगों के मुंह मिट्टी से पुत गए। घास के तिनके बालों से लेकर कपड़ों पर चिपक गए। शामा ने देखा तो हंसी निकल आई। चादरू से मुंह ओट लिया। वर्तुल इतना तेज था कि लोगों के आस–पास सोए कुत्ते भी डरकर भौंकने लगे थे।

कौवों का एक दल कहीं से आया और स्कूल की छत पर बैठ गया। एक–आध ने कांव–कांव की, फिर चुप हो गए। कई कुत्ते इधर–उधर दौड़ते दिखे। शायद सभी ने यह भ्रम पाल लिया था कि आज यहां कोई धाम या देवता का भंडारा हो रहा होगा।

शामा पंचों के सामने आकर खड़ी हो गई। इधर–उधर देखा। एक जगह खाली थी। वहां उसका ससुर बैठा था। दाएं बैठ गई। उठने को हुआ तो बाजू पकड़कर बिठा दिया। दराट बिल्कुल सामने रखा। उसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तो जैसे सांस ही बंद हो गई। प्राणों पर बीतती नजर आई। कभी दराट देखता तो कभी कुर्सी पर बैठे प्रधान का मुंह। वह सिकुड़ने लगा था। जैसे बांहें टांगों से चिपक गई हों। होंठ–मुंह सूखने लगे। कई पल चुप्पी रही। किसी ने कोई बात नहीं की।

शामा ने मन को बांधा। पक्का किया। बोलने की पहल भी खुद ही कर दी, "मुझे यहां क्यों बुलाया है?"

सभी एक–दूसरे का मुंह ताकते रहे।

प्रधान ने भीतर की क्षुब्धता मुश्किल से रोकी। खीजकर बोला, "तेरा ससुर बोलता है तैने अपने बच्चे के बाप का नाम गलत लिखाया है।"

वह फिर से हंस दी। हंसती चली गई। जोर से ठहाका लगाया तो स्कूल की छत पर बैठा कौवों का दल उड़ गया। हंसी के मायने किसी को समझ नहीं आए, परन्तु प्रधान झुंझला गया जैसे कोई झंझावात सिर पर बैठ गया हो।

"तो आप मेरे ससुर को ही पूछ लेते कि बाप का नाम क्या लिखाणा चाहिए?"

कनखियों से ससुर को देखा। वह थोड़ा आगे सरका और खड़ा हो गया। कांपती जबान से बोलने लगा, "प्रधान जी, मेरा लड़का तो कभी का मर गया। ये रौंडा तो कई साल बाद पैदा हुआ।"

"मेरे बच्चे को गाली मत देणा रामदत्त...।" शामा ने ससुर की लिहाज छोड़कर सीधे नाम लेकर चेतावनी दी। एक जोर का तमाचा जैसे मुंह पर पड़ गया हो। वह सकपका गया।

कहते–कहते शामा की आंखों में खून उतर आया। हाथ दराट पर चला गया। खड़े–खड़े उसके ससुर की टांगें कांपे जा रही थीं।

प्रधान ने बात संभाली।

"रामदत्त, यह तेरा आंगन–द्वार नहीं है। सलीके से बोल जो बोलना है।"

प्रधान तो उसी की तरफदारी में था। दूसरे पंच भी। उन्हें भी सत्य कहां दिख रहा था! पेट में गया दारू और जेब में ठूंसे पैसे आज सिर चढ़ कर बोल रहे थे।

ससुर ने हाथ जोड़ दिए।

"मैं क्या बोलूं प्रधान जी? आप तो खुद जानते हैं। इंसाफ तो आपको ही करना है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहकर शामा से काफी दूर जाकर बैठ गया।

प्रधान कुर्सी पर बैठा हल्का–सा आगे को तन गया।

"देख शामा! पूरा गांव–परगना जानता है कि तेरा पति कब का मर गया है। उसका नाम कैसे तू लिखवा सकती है! पंचायत में तेरे को सच बोलना पड़ेगा, नहीं तो तेरे को पंचायत बेदखल कर देगी। सोच ले।"

प्रधान बोल तो गया, लेकिन इतने भर शब्द बोलते–बोलते माथा और मुंह पसीने से तर हो गया।

"तो आपको इस बच्चे के बाप का सही नाम लिखणा है...?"

शामा ने अपने परिदाह का निवारण भीतर–ही–भीतर किया। आंखों और चेहरे पर निरपेक्षता भर आई। दराट उठाया और खड़ी हो गई। पंच हल्के–से बिलबिलाए। लोगों ने कान खोल दिए।

"क्यों मास्टर जी ?"

हैडमास्टर की तरफ रुख किया था उसने। वह कुर्सी पर सिर झुकाए बैठा था। सामने रखी छोटी मेज। उस पर एक हाजरी रजिस्टर। स्याही का दवात और होल्डर। जैसे वे चीजें मास्टर का मजाक उड़ा रही हों।

"तो सोचते क्या हो? उठाओ होल्डर और लिखो बच्चे के बाप के नाम।"

'बच्चे के बाप के नाम' शब्द सुनकर कईयों की हवा उड़ गई। वह हैडमास्टर के साथ खड़ी हो गई थी।

शामा की पहली नजर प्रधान पर थी। प्रधान हेकड़ी में कुछ समझ न पाया। बात समझ आई तो चेहरा ऐसे उतरा जैसे सौ जूते पड़ गए हों। शर्म से पानी–पानी। न बैठते बना, न उठते। भीतर से जर्जर। अस्त–व्यस्त। मानो किसी सीधी पगडंडी से आते बाड़ में फंस गया हो। अपमान की सिलवटें चेहरे पर उभर आईं। बुरी तरह घबरा गया प्रधान। गंजे सिर पर जो कुछ बाल थे, खड़े हो गए। शक्ल ऐसी बनी जैसे अफीमची का नशा टूट गया हो। दो–चार बार बिना हिले–डुले आंख की पुतलियां घुमाईं। दाएं हाथ से एक–दो बार सिर खुजलाया। माथे–मुंह पर उग आए पसीने को पोंछना चाहा, पर हिम्मत नहीं जुटी। कुर्सी के पीछे से अपना बैग सरकाया और बिल्ली के पांव खिसक लिया। सबकी आंखें पीछा करती रहीं, लेकिन शामा ने टोक दिया, "प्रधान जी, अपनी मोहर तो लेते जाइए।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह रुक गया। हड़बड़ी में सदरी की जेबें टटोलीं। उलटे पांव ऐसे हटा कि कोई अभी सिर पर डंडा जड़ देगा। मेज पर रखी मुहर उठाई और भाग लिया। पंचों की हालत देखने वाली थी।

दूसरी नजर मन्दिर के पुजारी पर टिका दी। सभी स्तब्ध रह गए। सिर पर से अचानक टोपी गिर गई। संभाल तो ली, पर पहन न पाया। सदरी की जेब में ठूंस दी। हाथ तालू पर गया। चोटी को इस तरह उंगलियों में फंसाकर घुमाता रहा मानो उखाड़कर फेंक देगा। हवा ने लम्बे बालों को बेतरतीबी से फैला दिया। पल भर में चेहरा पसीने से तर हो गया। माथे पर लगाया सिंदूर का तिलक ऐसे धुला कि गाल, नाक और होंठ रंग गए। कंधे पर रखे परने से पसीना पोंछा तो पूरा मुंह लाल हो गया। शामा की आंख अभी तक उसी पर थी। पुजारी की शक्ल देखकर कई लोग हंस दिए। हंसी मन को नश्तर की तरह घोंप गई। धोती पकड़ी और टेढ़ा–टेढ़ा खिसक लिया। नंगे पांव। चप्पल पहनने तक की होश भी न रही। भागते–भागते हाथ जनेऊ पर पड़ा। पता नहीं क्यों उसे कान पर लटका दिया।

तीसरी नजर में गांव का दूकानदार था। उसके मन का चोर पहले ही जाग गया था। सिर झुकाए जमीन में गड़ता गया। होंठों में बीड़ी फंसी रह गई। बिना कश लिए। होंठ जले भी होंगे, पर जलन से तीखी मिट्टी में मिलती इज्जत की आग थी जिसने बुरी तरह भीतर तक जला दिया था। साहूकारी की ठीस पल भर में उड़न–छू हो गई। जिन्दा लाश की तरह कुर्सी पर लटका रहा।

अब शामा ने पटवारी की तरफ देखा। ज़मीन का भगवान। हवाईयां उड़ गईं। सरकारी नौकरी और गांव–परगने में अफसरी का रोब जाता रहा। जमीन में उगी दूब के बीच इस तरह नजरें गड़ाईं जैसे जमाबंदी–ततीमा बनाते लट्ठे के नंबरों को पढ़ रहा हो। लड़खड़ाता हुआ उठा और सिर झुकाए खिसक लिया।

शामा का ससुर जमीन में धंसता जा रहा था। नजरें बचाकर खिसकना चाहा, लेकिन शामा ने रोक दिया।

"ससुर जी, अभी नाम पूरे नहीं हुए..."

एक घृणित नजर ससुर की तरफ दी। हल्की–सी सरसराहट हुई। शामा ने देखा कि उसके पाजामे के बीच से पेशाब की बूंदें जमीन पर गिर रही हैं। सिर झुका हुआ। टोपी खिसककर माथे पर टंग गई थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धीरे–धीरे स्कूल का प्रांगण खाली हो गया। सभी बेजुबान होकर जा रहे थे जैसे इज्जत लुट गई हो।

हैडमास्टर ने रजिस्टर खोला। पन्ने पलटे और होल्डर का निब जोर से दवात में डुबो दिया। स्याही झाड़ी और बच्चे के बाप का पहला नाम काट दिया। नया नाम लिखा – मनुदत्त पुत्र श्रीमती शामा देवी।

शामा ने आते–आते पीछे देखा। ससुर अभी भी बुत की तरह खड़ा था जैसे ज़मीन फटने का इंतजार कर रहा हो। मन में कड़वाहट भर गई। थूकना चाहा, पर ऐसा न कर सकी।... जब स्कूल के मैदान की सीढ़ियां उतरीं तो लगा कि वह किसी काजल की कोठरी से बाहर निकल आई है।

लोग बताते हैं कि रामदत्त अंधेरा होने तक उसी तरह खड़ा था।

•

जब तक हैडमास्टर स्कूल में रहा, बच्चे के बाप की जगह उसकी मां का नाम चलता गया। बदलने के बाद दूसरा हैडमास्टर आया। उसने जब रजिस्टर देखा तो एक बच्चे के पिता का नाम 'श्रीमती शामा देवी' पढ़कर खूब हंसा। एक–दो गाली पहले हैडमास्टर की नालायकी को दीं, फिर बड़े सलीके से उस नाम को दुरुस्त कर दिया... 'श्री शाम देव'।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां पढ़ती है

कई महीनों बाद गांव आया हूं। मां वहां अकेली रहती है। आज घर का दरवाज़ा खुला है। वरना ऐन तड़के दरवाजा ओटकर मां बाहर का काम निपटाने चली जाती है। सुबह का सारा वक्त गौशाला में बीतता है। पशुओं को घास–पत्ती देते। गाय दूहते। गोबर फेंकते।

इस समय भी मां भीतर नहीं है। मैं उसके कमरे में चला आया हूं। सूरज निकलते ही पहली किरण उसके कमरे में पड़ती है। आज किरणों के साथ मैं हूं। कमरा जितना अपना लगता है, उतना ही अकेला भी है। तरह–तरह की चीजों से भरा हुआ। उसी तरह जैसे उजास भीतर भर जाया करता है। ऊपर लकड़ी की छत में जगह–जगह मकड़ी के जाले हैं। नीचे की ओर झूलते। उनमें कई मरी हुई मक्खियां उलझी–फंसी हैं। यही हाल दीवारों का भी है। कई जगह जालों पर कीरा जमा हुआ है।

जगह–जगह सामान बिखरा पड़ा है। एक भी चीज तरतीब से नहीं है। दरवाजे से भीतर आते दाईं ओर दूध बिलाने का घड़ा रखा है। और उस पर एक मैला–सा कपड़ा है। मां जब चूल्हे के पास से दूध बिला के फारिग होती है तो इसे यहां ले आती है। बाईं तरफ एक टोकरा है। उसमें भेड़ की अन–कती ऊन भरी है। उसकी तहों के ऊपर कुछ थींगे हुए ऊन के फाहे हैं। एक किनारे तकली रखी है। एक कोने में खजूर की पत्तियां बिखरी पड़ी हैं। बीच में कई बुनी हुई खजूर की पट्टियां हैं। दूसरे कोने में छोटी–सी पुरानी मेज। उस पर टेलीविजन रखा है। सिरहाने के साथ मैले से कपड़े में ढका एक कनस्तर, जिस पर टेलीफोन है। बिजली के बल्ब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का रंग बदरंग हो गया है। उस पर कीरे ने पूरी तरह अधिकार जमा लिया है।

मां के सिरहाने ऊपर की ओर भीत पर एक कील में लकड़ी का चकौटा टंगा है। उस पर ढिबरी रखी है। छत तक धुएं ने एक लम्बी लकीर बना दी है। बिजली चली जाने पर मां इसे जला लिया करती होंगी। कमरे में बीड़ी की बास पसरी है। चारपाई के नीचे देखता हूं तो वहां भी कई–कुछ चीजें बिखरी हैं। अधबुझी बीड़ी के टुकड़े। दियासिलाई की जली तिल्लियां। एक खजूर के पटड़े पर सूखा अनारदाना। कुछ आंवले। आठ–दस अखरोट। पांच अनछीली पकी हुई मक्कियां। एक दूसरे में उनके सिरे एक डोरी से बंधे हैं। नई फसल की मक्कियां देवता के लिए रखी होंगी। दो–चार गठड़ियां जिनमें कई किस्म की दालें हैं। इतनी चीजें मां के साथ रहती हैं। उससे जुड़ी हैं। उसकी साथी–संगी हैं। लेकिन मैं इन सबके बीच उस कमरे में पखला–सा अकेला बैठा हूं। वे जैसे मुझे पहचानने का प्रयास कर रही हों। कभी लगता है कि वे सभी मेरा उपहास उड़ा रही हों। मां... घर... आंगन... द्वार... खेत... खलिहान... ज़मीन... जायदाद... सब मेरे हैं, पर मैं आज इनसे कितना दूर चला गया हूं!

सूरज घर की छत के कोने से कुछ आगे सरक गया है। किरणें सिमटती हुई आंगन में चली गई हैं। कमरे के उजाले को अपने साथ लेती हुई... सुबह की बेला में ही अंधकार का अहसास होने लगा है। यह अंधेरा बाहर से कहीं ज्यादा मेरे भीतर पसरा है। हालांकि मैं मां के कमरे में हूं। उसके बिस्तर पर बैठा स्नेह की गंध में भीग गया हूं, लेकिन बरसों घर से बाहर रहने का अहसास उस स्नेह को मन तक नहीं पहुंचने देता।

याद ही नहीं रहा कि मेरे हाथों में किताबों का एक पैकेट भी है। इन नई पुस्तकों को मैं मां को भेंट करने लाया हूं। आज तक एक भी पुस्तक छपने के बाद उसे नहीं दे पाया। न ही कभी पुस्तक विमोचन समारोहों में उसे बुला ही पाया। जब भी कोई किताब आई है, मैंने उसे राज्यपाल या मुख्यमन्त्री से ही रिलीज करवाया है। यह जानते हुए भी कि उन लोगों का साहित्य से कुछ लेना–देना नहीं। बिल्कुल उसी तरह जैसे मंचों से गरीबी हटाने के नारे लगाने वालों का गरीबों से कोई लेना–देना नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
होता। कागजों पर गांव और उसके परिवेश की सोंधी खुशबू बिखेरने वाले हम लेखकों का जैसे वहां की गोबर–मिट्टी से कोई वास्ता नहीं होता। यानी पल भर के लिए एक औपचारिक–सा छलावा। एक दिखावा भर। इससे ज्यादा और कुछ नहीं।

•

ऐसा भी नहीं था कि मां को बुलाना नहीं चाहता था या उसकी यादें उस समय मेरे साथ न होतीं। लेकिन कई डर मन में घर किए रहते। सोचा करता कि आज का माहौल बिल्कुल अलग तरह का है।

मां कैसे इन बड़े लोगों के बीच अपने को एडजस्ट कर पाएगी। सबसे पहले तो उसका बस में बैठना ही किसी मुसीबत से कम नहीं। बैठते ही उसकी तबीयत खराब हो जाएगी। उल्टियां करने लगेगी। थोड़ा आराम मिलेगा तो महज कनखियों से अधर–उधर देख झटपट जेब से बीड़ी–माचिस निकाल लेगी और शॉल की ओट में झटपट सुलगाकर पीने लग जाएगी। एक–दो दम लेते ही खांसी ऐसे शुरू होगी कि प्राण अभी गए कि अभी।

जैसे–कैसे समारोह में पहुंचेगी तो लोगों की नजरें उस पर बराबर लगी रहेंगी। बिना प्रेस किए कपड़े, प्लास्टिक के जूते उपहास का सबब बनने लगेंगे। फिर उसके मुंह से बीड़ी की बास आती रहेगी। उसके बाल भी ठीक तरह से नहीं होंगे। हालांकि शॉल सिर पर ओढ़ी होगी, पर काले–सफेद बालों की आपस में उलझी लड़ियां नीचे तक लटकी दिखाई देती रहेंगी। उनमें घास के तिनके और सूखी पत्तियां फंसी नजर आएंगी ही। जैसे ही लोगों को मालूम होगा कि मेरी मां आई है तो वे बार–बार उसके पास बधाई देने जाएंगे। उससे बातें करना चाहेंगे। कई कुछ पूछने लगेंगे। लेखक और पत्रकार बंधु तो अपनी जिज्ञासु बातों से मां को कुरेदेंगे भी। फिर पता नहीं मां उनसे किस तरह बतियाएगी! क्या–कुछ उलटा–सीधा बोल देगी! बातें करते–करते उन्हें खांसी आ गई तो सबकुछ किरकिरा जाएगा। और अगर कहीं उन्हें बीड़ी की तलब हो आई तो झट से सुलगाकर वहीं पीनी शुरू कर देगी।... जलपान शुरू होगा तो छुरी–कांटे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से तो मां खा नहीं सकेगी। खाएगी भी तो सभी का ध्यान उसके हाथों पर अवश्य जाएगा। गांव में घास–पत्ती काटते, गोबर फेंकते, दूध बिलोते, लकड़ियां काटते, चूल्हे में रोटी सेंकते हाथ बवाईयों से भरे होंगे... उनसे गोबर–मिट्टी की बास आएगी। भले ही लोग मुंह पर कुछ न बोलें, पर बातें तो बनाएंगे ही... कि इतने बड़े लेखक की मां ऐसी है। निपट गंवार...। यह सबकुछ सहन भी कर लूंगा, फिर बच्चों की खरी–खोटी सुननी पड़ेगी।

•

इन स्मृतियों में खोए–खोए मां के बिस्तर पर लेट जाता हूं। ऐसा लगता है कि मेरा बचपन लौट आया है। उस चारपाई पर मुझे यूं लगने लगा है जैसे मां की गोद में सोया हूं। ...पलने में मां मुझे झुला रही है... यह सुख और स्नेह बरसों बाद मिला है। मन कर रहा है कि यहीं सोया रहूं... कभी उठूं ही नहीं।

अपने ऊपर आश्चर्य हो रहा है कि मेरी रचनाओं में गांव है, वहां का पूरा अंचल है। गरीब लोग हैं। खेत–खलिहान हैं। मां है। उसका स्नेह है, लेकिन उन वास्तविकताओं से खुद कितना दूर चला गया हूं! कोसों दूर! मां के बिस्तर पर लेटा अपने भीतर के लेखक को ढूंढ़ने लगता हूं, पर वह कहीं नहीं है। उसके कई चेहरे हैं। या उन चेहरों पर कई तरह के मुखौटों की तहें चिपकी पड़ी हैं। अपने को उस शहरी परिवेश और अलीट सोसाइटी में ऊंचा दिखाने के लिए। नाम, प्रतिष्ठा कमाने के लिए... लोगों की वाहवाह लूटने के लिए। पर उस उत्कर्ष का सही मायनों में मेरे भीतर के आदमी से जैसे कोई संबंध ही न रहा हो। अनायास फिर एक ओर रखी अपनी किताबों पर हाथ जाता है। उनका स्पर्श पुनः उसी उत्कर्ष पर ले जाता है। क्या हुआ मां को नहीं बुलाया तो...! चलता है, सबकुछ चलता है। हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं, फिर क्यों उन रूढ़ियों का बोझ अपने कन्धो पर ढोए चलें। गांव–पहाड़, गोबर–मिट्टी, खेत–खलिहान कागजों की पीठ पर उगते अच्छे लगते हैं, पर वास्तविक जीवन में तो नरक हैं... नरक... फिर मैं तो मां का सम्मान करने ही आया हूं। इधर तो ऐसे भी लेखक हैं जो या तो मां–बाप से अलग हो गए हैं या उन्होंने उन्हें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
किसी वृद्धाश्रम के हवाले कर दिया है। मैं मां के चरणों में इन पुस्तकों को रखकर उससे आशीर्वाद लूंगा... पश्चाताप करूंगा... वह खुश होगी कि उसका बेटा कितना बड़ा आदमी बन गया है! लेखक है। वे पुस्तकें जैसे मेरे अंह को और भी भव्य बनाए जा रही हों।

•

यही सब सोचते–विचारते सहसा मां के सिरहाने पर हाथ जाता है। कुछ चुभता हुआ–सा महसूस होता है। मैं लेटे–लेटे दायां हाथ पीछे करके सिरहाने के नीचे डालता हूं। चौंक जाता हूं। हड़बड़ी में उठता हूं और सिरहाने को एक तरफ हटा देता हूं। कोई किताब है। बाहर खींचता हूं तो स्तब्ध रह जाता हूं। आंखें उसके आवरण पर धंसती चली जाती हैं। मेरी सांस रुकने लगी है। जिस्म का सारा खून जैसे शिराओं में जम गया है। यह मेरी ही नई पुस्तक है। पागलों की तरह सिरहाने की तरफ के खिंदड़ों की तहों को हटाता हूं और उसके नीचे पड़ी सभी किताबों को बाहर खींच लेता हूं... सभी मेरी हैं।... भ्रम होता है कि कहीं अतीत में विचरते हुए... कहीं मैंने ही अपना पैकेट वहां तो नहीं रख दिया था। पर वह पूर्ववत् था। मेरे ही पास पड़ा हुआ। उसे खोलता हूं। जो पुस्तकें मैं लाया हूं, वे सभी उसी में हैं। मां के सिरहाने तो उसकी दूसरी प्रतियां हैं।

पहली पुस्तक हाथ में लेता हूं। उसे उलटता–पलटता हूं। उसके भीतर पृष्ठों में जगह–जगह घास के तिनके और कुम्बर फंसे हैं। पतझड़ का मौसम कमरे में समाने लगता है।

सोचता हूं कि मां जब घास काटने घासणी में जाती होंगी तो वहां बैठकर उसके पन्नों को उलटा–पलटा करती होंगी।

दूसरी पुस्तक उठाता हूं। उसे देखने लगता हूं। उसके पन्नों से सरसों के फूलों की भीनी–भीनी खुशबू आने लगती है। ...पन्नों को उलटता–पलटता हूं... कई जगह नन्हें पीले फूलों की पंखुरियां चिपकी हैं। एक–आध गेहूं की बाली भी है। मेरा मन बसन्त हो जाता है।

...मां जब खेतों में साग चुगने जाती होगी तो बैठकर पहले बीड़ी सुलगाकर अपनी थकान मिटाती होगी और उसके बाद किताब के वर्कों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को देखती–बदलती रहती होगी।

अब तीसरी किताब हाथ में लेता हूं। यह मेरा उपन्यास है। उसके भीतर से रात की रानी की खुशबू आ रही है और कमरे में फैलने लगी है। अनायास ही नजर आंगन के उस पार चली जाती है। वहां रात की रानी का पौधा है। कितना बड़ा हो गया है! उसकी टहनियां चारों तरफ बिखरी हैं। मन बहुत पीछे चला जाता है। गर्मियों की रातें जब चांदनी से नहाई होतीं तो मां अक्सर मुझे गोद में लिए यहां बैठा करती। कई कहानियां सुनाती। ....किताब के पृष्ठों के बीच रात की रानी के फूल पड़े हैं।

...मां इस किताब को चांदनी रातों में वहां बैठकर देखा करती होगी।

चौथी पुस्तक में आटे और लस्सी की सुगन्ध रची–बसी है। पृष्ठों पर जगह–जगह आटे सने हाथों की उंगलियों के निशान हैं। कहीं–कहीं मक्खन की चिल्हट ने अक्षरों को मिटा दिया है।

...मां रोटियां पकाते या फिर दूध बिलोते इसे निहारती–अवलोकती रहती होगी।

पांचवीं कृति अब मेरे हाथ में है। उसके पन्नों से घने अन्धेरे की गंध आने लगती है। उसमें बीड़ी की बास घुल–मिल गई है। पुस्तक के वर्कों को देखता–पलटता हूं। कई जगह अक्षर धुल गए हैं। बीच–बीच में जली हुई बीड़ी की राख भी लगी है। एक जगह मरा हुआ जुगनू चिपक गया है।

...शायद उसे मां घनी रात को बिस्तर पर हाथ में लिए वांचती होगी। मेरी याद आने पर रो लेती होगी और फिर देर रात तक यूं ही बैठी बीड़ी पीती रहती होगी।

अब छठी पुस्तक सिरहाने के नीचे से खींचता हूं। मन अस्थिर होने लगा है। भीतर बौखलाहट होने लगी है। माथे से पसीना चू रहा है। उस किताब के भीतर पिता की कई पुरानी तस्वीरें हैं। उनमें कहीं मां है तो कहीं मैं हूं।

...मां अपने इस लेखक बेटे के वैभव और उत्कर्ष को पिता के साथ स्मृतियों में बांट लिया करती होगी।

उसे किनारे रखकर सिरहाने में फिर कुछ ढूंढ़ने लगता हूं। बिस्तर की तहों में एक और किताब मिलती है। उसे निकालता हूं। वह सातवीं पुस्तक है। देखता हूं तो आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। यह नई किताब है जिसका विमोचन सप्ताह पूर्व ही हुआ है। उसके वर्कों से गोबर की गन्ध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ रही है। बाहर–भीतर कई जगह गोबर सने हाथों के निशान पड़े हैं। एक–दो जगह भेड़ की सफेद ऊन के रेशे भी चिपके हैं।

...मां उसे गौशाला के आंगन में पशुओं के बीच बैठकर देख लिया करती होगी।

•

आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई हैं। याद नहीं आता कि अपने जीवन में कभी इतना रोया होऊं। मेरे भीतर का समस्त वैभव, उत्कर्ष, बड़े बने रहने का दंभ, बूंद–बूंद मां के बिस्तर पर झरने लगा है। मैं जैसे उस बिस्तर की तहों में खटमल की तरह घुसता–धंसता चला जा रहा हूं। मेरा रोंआ–रोंआ अचरज और शर्मिंदगी से भर गया है। सिर टांगों के बीच धंसता जा रहा है। इस दीनता–हीनता की स्थिति के बावजूद उस रोने का कोई सुख मुझे अधिक गिरने नहीं देता। ऐसा लगने लगता है कि मां के कमरे की वे सभी चीजें मेरे अंतस में अगाध स्नेह और ममता का सागर उंड़ेलती चली जा रही हों। सामान्य और सहज होने में मेरी भरपूर मदद करती चली जा रही हों। मैं अपने को संभालता हूं। अचरज होता है कि मन अब हल्का हो गया है। बिल्कुल उसी तरह जैसे बचपन में किसी जिद में रोते–रोते मां की गोद में सो जाया करता और जब उठता तो बिल्कुल सहज होता।

तभी किसी की आवाज भीतर के सन्नाटे को तोड़ देती है।

"दादी! दादी! ...अखबार।"

मां इस समय गोबर फेंक रही है। आवाज सुनते ही झटपट टोकरा नीचे रख देती है। डाकिए के हाथ से अखबार छीन लिया है। मैं बिस्तर पर से उठकर दरवाजे की ओट से सबकुछ देखने लगता हूं। वह अमरू डाकिया है। उसका घर हमारे घर से कुछ दूरी पर है। वह बराबर मां के पास आता–जाता रहता है।

सारी बातें समझ आने लगी हैं। मां अखबार देख रही है और डाकिया बीच के पृष्ठों में कुछ मां को दिखा रहा है। मां उस अखबार को भीतर ले जाकर कहीं गौशाला में छुपा देती है और पूर्ववत् गोबर फेंकने लग जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं मां के बिस्तर पर बिखरी किताबों को समेटने लगता हूं और उसी तरह उनके सिरहाने रख देता हूं। अपनी किताबों का पैकेट उठाकर बाहर निकल जाता हूं। लग रहा है कि कई मनों बोझ किसी ने मेरे सिर पर लाद दिया हो।

...मां अब बाहर का काम निपटाकर भीतर आ रही है। ...मैं बिल्ली के से दबे पांवों वहां से खिसक लेता हूं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लाल होता दरख़्त

सुबह का सूरज मुन्नी के दरवाजे बेरोक–टोक आता है। अब तक वह उठ जाती है। हाथ–मुंह धो लेती है। सूरज से पहले जागना उसका नियम है। अलसायापन उसकी फितरत में नहीं। यह बात उसे विरासत में मिली है। अम्मा उजास होने तक अठारह काम निपटा लेती है। इसमें मुख्य काम गाय–भैंस का दुहना और उन्हें घास–पत्ती देना है। मुन्नी जब भी उठती है, वह अम्मा को चूल्हे के पास दूध बिलोते देखती है। बापू कभी जाग जाते हैं तो कभी देर तक सोए रहते हैं। ऐन तड़के वह कुछ काम नहीं करते। काठ के पटड़े पर बैठे तम्बाकू पीते रहना और कुछ–न–कुछ बड़बड़ाना उनकी आदत है। मुन्नी को भुरके की सुड़क–सुड़क और बापू की बड़बहाहट में कोई फर्क नहीं लगता।

मुन्नी को सुबह का सूरज खूब भला लगता है। टुकड़े–टुकड़े धूप। दूर पार घाटियों से आती। खेतों–खलिहानों, गांवों के नए–पुराने घरों और पगडंडियों में ठहरती। लोगों, पशु–पक्षियों को जगाती–उठाती। फिजां में कई तरह के रंग भरती... और जैसे धूप की इन सुनहरी किरणों ने मुन्नी के मन में एक घर बना लिया हो। उसका घर खेतों की ढलान पर है। सीढ़ीनुमा खेत नीचे उतरते–उतरते एक पहाड़ी नदी के छोर पर पहुंचते हैं। वहां से पार ऊपर उठती कई छोटी–बड़ी धारें हैं जो हमेशा घास और चीड़ों के छितराये वृक्षों से सनी रहती हैं। सूरज मुन्नी की दहलीज पर इन्हीं के बीच से झांकता और उतरता है।... और इन्हीं क्षणों को वह बटोर लेती है... सिर पर दुपट्टा ओढ़े... आंगन में आकर दोनों हाथों से सूर्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भगवान को प्रणाम करती है।

अब कांसे के लोटे को उठाकर उसे राख से मांजती है। पानी भरती है। उसमें दो–चार दाने चावल डालना वह नहीं भूलती। लोटा वह हाथ की उंगलियों के पोरों में नहीं पकड़ती। समझती है कि इस तरह बर्तन केवल पाखाना जाते हुए पकड़ा जाता है। लोटे को बाएं हाथ की हथेली पर सटाकर उसे दाएं हाथ की हथेली से ढक लेती है। पीपल भगवान को पानी देना हर सुबह उसका पहला काम है।

•

पीपल भगवान... पीपल का जवान होता वृक्ष मुन्नी के लिए भगवान समान है। मथरू यानि मुनिया के बापू ने बड़े बेटे की तरह उसे पाला है। अपनी ज़मीन की हदों में पीपल का उगना घर में भाग जागना है। मथरू कई बार यह बात दोहरा लेता है, घर में और गांव–बेड़ के लोगों के पास। मुन्नी ने कई बार सुना है।

"म्हारी जमीन में पीपल का जमणा कोई पिछले जनम के संस्कार हैं। भई बाहर जात होते मरने देते। बामणों के घर में जन्म लेने का कुछ तो फायदा होना ही चाहिए।"

गांव का कोई स्याणा उसकी बात का समर्थन कर देता है।

"तू ठीक बोलेया रे मथरू। बड़ा भाग वाला है तू। देखणा तेरे घर में किसी बात की कमी नईं रहेगी। बस नीम–धरम नी गंवाणा। पाणी देते रैणा, नागा देखदा करदा।"

और जब कोई बुजुर्ग तुलसी के ब्याह की बात करता है तो जैसे मथरू आसमान में उड़ने लगा हो।

"तेरी बात मानते हैं बई पंडत। तुलसी का ब्याह बेटी की तरह किया। पर सच बोलूं तो म्हारी बरादरी में ऊत जम गए सब। बस कमाणे पर जोर। तैं तो मथरू म्हारी बी नाक राख दी। सोच लेणा तीन बेटियां जमी थीं।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुलसी का ब्याह[1] मथरू ने खूब धूम–धड़ाम से किया था। पर मुन्नी उस समय पैदा नही हुई थी। उसने यह बात अम्मा से सुनी थी। पर मिट्टी के गमले में हरी–हरी तुलसी की डालियां 'ससुराल' के घर उसने देखी हैं। वह कई बार दिन को उसके घर चली जाती है। पहले नृसिंह देवता[2] को मन्दिर में जाकर माथा टेकती है और फिर बाहर आकर तुलसी को। मन्दिर के बाहर दो–तीन वैसे ही गमले और भी हैं। उन्हें भी ब्याहकर वहां लाया गया है। पर उसे अपने आंगन से ब्याही तुलसी प्यारी लगती है। बहिना जैसी। वह मन्दिर की सीढ़ियों पर बैठी उसके पत्तों को सहलाती रहती है। उन्हें खूब पानी देकर सींचती है। उसे वहां बैठे देख कई बार पुजारी काका खांसते हुए वहां चले आते हैं। दोहरा लेते हैं वही बात, "मुनिया देख लो अपणी तुलसी। तू तो जमी ही न थी तेस बेला। क्या शादी रचाई थी मथरू ने। गांव–बेड़ तो थी ही, पर सारा परगणा बी था। पूरी दो धामें देई थी बई। खूब खर्च किया था। मानते हैं बात। तेरा बापू मुन्नी बड़ा धरम–करम वाला है।"

मुन्नी बापू की तारीफ में रम जाती है। उसके चेहरे पर नादान–सी मुस्कान पुजारी काका को भली लगती है। उठकर पास आ जाता है और उसके गालों को खूब चूमता है। मुन्नी को यह स्नेह खूब जंचता है। पुजारी काका उसके बापू से कहीं बड़े हैं। घर में मुन्नी स्नेह से वंचित है। उसके अम्मा–बापू ने इस तरह कभी उसे प्यार नहीं किया। जब से उसने होश संभाला है, बस कामकाजी होने की सलाहें मिली हैं।

"बेटी पराए घर का धन है। उसे घर का सारा काम आना चाहिए।"

इसलिए इस छोटी–सी उम्र में मुन्नी हर काम में आगे है। दूध वह बिलोती है। मक्की–गेहूं की रोटियां वह बनाती है। पानी–पनिहार, घास–पत्ती वह करती है। गाय–भैंस दुहती है। चक्की पीसती है यहां तक कि हाट–घराट भी आती–जाती है। उसका मन आज भी स्कूल जाने को करता है, पर बापू नहीं मानते। कहते हैं बेटी को पढ़ाकर क्या करना है, उसे दूसरे के घर ही तो जाना है। तीसरी तक उसे स्कूल जाने दिया था। फिर हटा लिया। मां हमेशा मथरू को डांटती थी कि मुन्नी को बिगाड़ो मत। स्कूल में ठारा घरों के लड़के–लड़कियां होते हैं। हमारी मुन्नी अब उनके बीच बैठेगी। रोटी–पाणी करेगी। और बापू भी हां में हां मिला लेते और इस कारण तीसरी से ही उसे हटा दिया। मुन्नी को याद है जब वह अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्लास में अव्वल आई थी। मास्टरों ने कितना प्यार किया था! कितनी शाबासी दी थी!

उसका मौन पुजारी काका तोड़ते हैं, "तुम्हारा पीपल बड़ा हो गया है मुनिया। तेरा बापू बोलता था कि उसका अगले बरस ब्याह कर देगा। तू भी तो बड़ी हो गई है... ब्याहणे लायक।"

प्यार से पुजारी काका उसके गालों को थपथपा देते हैं।

पीपल का ब्याह[3]। उसका अपना ब्याह। शायद तुलसी के ब्याह जैसा होगा। मुन्नी के लिए यह पीपल और तुलसी जैसा ही है। मुन्नी सोचती हुई घर लौट आती है।

•

मथरू की दो बेटियां हैं। बड़ी का विवाह 'तुलसी' के ब्याह से पहले कर दिया है। मुन्नी बहुत बाद पैदा हुई है। दोनों ब्याह का कर्ज मथरू के ऊपर है। मुन्नी जब अम्मा के साथ खेतों में काम करने या घास–पत्ती लाने जाती है तो अम्मा कई बार मुन्नी को बताती रहती है कि ये खेत भी म्हारा है वो खेत भी म्हारा है... वह घासणी भी म्हारी ही है। पर उनसे घास –पत्ती अम्मा नहीं काटती तो मुन्नी पूछ लेती है।

"अम्मा, ये म्हारे हैं तो हम इनसे घास–पत्ती क्यों नहीं काटते?"

अम्मा गहरी सांस लेती है और दुःखी मन से मुन्नी को समझाती है कि ये खेत और घासणी साहूकारों के पास रैहण हैं। तेरे बापू ने कमली और 'तुलसी' ब्याहणे के लिए कर्जा लिया था।

•

एक जमाना था जब मथरू की जमींदारी खूब चलती थी। उसके बाप–दादाओं ने खूब खेती कमाकर छोड़ी थी। ज़मीन में इतना अनाज हुआ करता कि कभी बाहर से घर में राशन नहीं खरीदना पड़ता। बिरादरी में यही बात सरीकों को अखरती थी। उन्हें उसके लहलहाते हुए खेत फूटी आंख नहीं सुहाते।

गांव में उसके टब्बर के आठ–दस टोल हैं। उनमें एक–दो की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साहूकारी परगने भर में चलती है। इसके अलावा चार–पांच घर बाहर की जाति वालों के हैं। उनकी भी अलग–अलग बिरादरियां हैं। साहूकारों ने इन लोगों की ज़मीनें भी किसी–न–किसी बहाने अपने पास रेहन रख ली हैं। अब ये लोग दोनों तरफ से नंगे हैं। काम से भी और खेत से भी। वक्त बुरा आ गया है। महंगाई बहुत है। ध्याड़ी से भी कितना मिलता है! लूण–तेल का गुजारा ही नहीं होता। मथरू के हाल भी वैसे ही हो गए हैं। अब एक खेत बचा है जिसमें साल भर के दाने मुश्किल से मिल पाते हैं। पूरा चार बीघे सात बिसवे का खेत। दो छोटी–छोटी घासणियां हैं।

मथरू की रोजी–रोटी पहले पंडताई से ही चलती थी। गांव–परगने में कई जजमान थे, पर उसके टब्बर के ही भाईयों ने उन्हें काट दिया है। अब पुरोहिती वे खुद करते हैं। कथा–करम, शादी–ब्याह खुद पढ़ते हैं। जन्म–मरण खुद करवाते हैं। मथरू का इस बात को लेकर कई बार झगड़ा हो लिया है कि उन्होंने जबरदस्ती उसकी जजमानी छीनी है। पर उसकी कौन सुनता है! उसकी घरवाली समझाती रहती है कि भगवान पर भरोसा किया करो। इस फालतू के झगड़े से क्या लाभ? मरने दो इन सालों को! भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं। हमारा छोटा–सा परिवार है। अभी बेटी भी ब्याहणी है। सुख–शांति से रहो।

पर मथरू सुख–शांति से कैसे रह सकता है? परिवार पालना है। रेहन खेत वापिस लेने हैं। बेटी जवान हो रही है। पीपल का ब्याह करना है। खर्च ही खर्च हैं। अब वह कभी सड़क पर ध्याड़ी लगा लेता है तो कभी जंगलायत में काम कर लिया करता है। वहां से भी उसे बीच–बीच में हटा लेते हैं। उसकी कोई सिफारिश नहीं है। वह सुनता है कि सड़कों पर और जंगलायत महकमे में भी अब 'अप्रोच' से रखते हैं। उसे कौन जानता है? वह किससे कहेगा? बस जो भी काम मिलता है, उसे कर लिया करता है। लेकिन बाहर की जाति वालों की तरह हर कोई काम तो नहीं कर सकता न! ये लोग तो गांव–परगने के जमींदारों के पास भी काम करके अपना गुजारा कर लेते हैं। पर वह तो पंडत है। ब्राह्मण है। ऊंची जात है। उसकी इज्जत–परतीत है। वह हर कोई काम कैसे कर सकता है! यह सोचकर कई–कई दिनों वह घर में ही बैठा रहता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मथरू महीने में एक–दो बार नृसिंह देवता के मन्दिर जाकर 'तुलसी' की सुख–सांद पूछ लिया करता है। उसे खूब पानी से सींचता है। देवता के मन्दिर में पूजा करता है। आज भी वह मन्दिर गया है। गमले में तुलसी की डालियां खूब हरी–भरी हैं जैसे देवता ने अपनी इसी 'दुल्हन' को सिर–माथे रखा हो। खूब प्यार किया हो। गांवों के दूसरे पंडितों ने भी यहां तुलसी ब्याही है, पर वे इतनी जवान नहीं लगतीं। कई तो सूख गई हैं। मथरू जानता है कि तुलसी की डालियों का कमजोर होना या सूख जाना अच्छा नहीं है। जरूर कोई–न–कोई खोट ब्याहणे में रहा होगा। या फिर देवता की उन पर कृपादृष्टि कम हो रही होगी। अपने बारे में सोचता है तो भीतर–ही–भीतर गर्वीला हो जाता है। बिरादरी में सिर इज्जत से उठता नजर आता है। अभी वह सीढ़ियों में यह सोच ही रहा होता है कि पुजारी काका दिखाई पड़ते हैं। मथरू पैरी–पावणा करता है।

"कैसा है रे तू मथरू?"

"बस तुम्हारी कृपा है दींवा' जी।"

"बैठ–बैठ। पटड़ा लाता हूं। तम्बाकू का तो बई तू पैहले से शौकीन रैया है। ल्याता हूं भर के।"

और पुजारी काका भीतर चले जाते हैं। उनका कमरा मन्दिर के पिछवाड़े है। बरसों से देवता की सेवा–चाकरी में यहीं रह रहे हैं। पहले मथरू भी देवता की कारदारी में शामिल था, पर अब नहीं है। लेकिन हर पंची–पंचायत में शामिल रहना उसका नियम है। अपनी बिरादरी की उपेक्षाओं की वजह से ही उसने कारदारी त्यागी है।

उसका ध्यान पीछे चला जाता है। बरसों पहले यह मन्दिर क्या–से–क्या था। उसके बाप–दादा सुनाया करते थे कि देवता यहां स्वयं प्रकट हुए थे। गांव में रह रहे एक जूते गांठने वाले परिवार की गाय किसी जमाने में यहां आकर कई–कई घंटों चरती थी। वह गाय दूसरे पशुओं की तरह दूर–पार चरने नहीं जाती थी। जब शाम को गाय की मालकिन उसे दुहने लगती तो उसके थन सूखे होते मानो किसी ने निचोड़कर दूध पिया हो। वह इसके लिए ग्वाले को खूब डांटती कि वह दिन को सूई गाय का दूध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पी जाता है लेकिन ग्वाला सच्चे मन से कहता कि उसे इसके बारे में कुछ पता नहीं है।

एक दिन गाय की मालकिन और मालिक चुपके से ग्वाले के पीछे–पीछे चल दिए और एक झाड़ी के पीछे छिपे रहे। गाय चरती–चरती जुब्बड़ में एक जगह खड़ी हो गई। उन्होंने देखा कि उसके थनों का दूध स्वतः ही गिरने लगा जैसे कुछ चीज ज़मीन के नीचे से थनों को निचोड़ रही हो। उनकी हैरानी की सीमा नहीं रही। वे दोनों भागते–भागते गांव आए और सभी को इकट्ठा करके ले आए। सभी ने इस दृश्य को देखा। निर्णय हुआ कि जुब्बड़ को खोदा जाए। पहले सभी घबराते रहे। पुजारी काका के किसी बुजुर्ग ने पहले कुदाली पकड़कर खुदाई शुरू की थी। वह खोदता चला गया। तीन–चार फुट गहरा खोदने के बाद कुदाली किसी ठोस चीज से टकराई और वह मूर्छित–सा हो गया। कुदाली हाथ से छूट गई। हाजिर लोगों ने ज़मीन के नीचे किसी के कराहने की आवाज सुनी। नजदीक जाकर देखा तो एक गोल पत्थर की पिंडी दिखाई दी जिससे खून की धारा बह रही थी। किसी को कुछ नहीं सूझ रहा था कि क्या करे। तभी गाय के मालिक ने अपने सिर का साफा खोला और पिंडी के ऊपर लपेट दिया। कराहना बंद हो गया। लेकिन दूसरे क्षण ही देवता की छाया उन दोनों में आ गई। यानि खुदाई करने वाले और साफा बांधने वाले पर। खूब खेल हुई। फिर गांव वालों को देवता ने बताया था कि वह 'नृसिंह देवता' है। यहां बसना चाहता है। उसका मन्दिर इस जगह बनना चाहिए। देवता ने यह भी बताया कि मन्दिर के लिए वह दूसरे दिन जगह चुनेगा।

दूसरे दिन जब लोग वहां आए तो देखा कि पिंडी के चारों ओर चींटियों ने एक गोल दायरा बना लिया है। इसका मतलब था कि इतनी जगह पर मन्दिर बनेगा... और मन्दिर बन गया। मथरू को याद है कि ब्राह्मणों के साथ–साथ बाहर की बिरादरी को भी पहले–पहल मन्दिर में बराबर इज्जत दी जाती थी। परंतु अब वह बात नहीं है। हरिजनों का मन्दिर के भीतर जाना बंद है। यह नियम पंडतों–ठाकुरों ने बड़ी बाद में बनाए होंगे। पर बाहर की बिरादरी के घर से एक 'दींवा' जरूर है। पंची–पंचायत में पुजारी काका के साथ वह भी 'हिंगरता'[5] है।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

•

पुजारी काका आ रहे थे। एक हाथ में पटड़ा है और दूसरे हाथ में कांसे का हुक्का। मथरू ने इस हुक्के में कितनी बार चिलम पीने का आनंद लिया है। अब कहां बांस का भुरका और किधर कांसे का हुक्का! बात ही निराली है। मथरू कई बार सोचता है कि एक हुक्का और ले ले। उसके पास पुराना था भी। पर जरूरतें चीजों को रहने कहां देती हैं! तुलसी के ब्याह के दौरान बेचना पड़ा। कई और पुरानी चीजें भी दे दी थीं।

"ले बैठ मथरू और चिलम पी ले।"

दोनों बैठ जाते हैं। तभी पुजारी बात छेड़ देता है।

"कल मुन्नी बी आई थी। ब्याहणे लायक हो गई है। देख मथरू, जमाना खराब आ गया है। जल्दी–जल्दी हाथ पीले कर दे उसके। मैं तो बोलता हूं तू दोनों की शादी एक साथ कर दे। पीपल बी तो बड़ा हो गया है। उसका बी तो ब्याह करना है।"

"गूरड़... गूरड़..."

यानी कई पल मथरू हुक्का सुड़कता रहा।

पुजारी काका ने ही चुप्पी तोड़ी थी।

"कोई रिश्ता आया कि नहीं? तू बोले तो मैं गल चलाऊं। मेरी नजर में एक–दो जगह हैं जहां बात बण सकती है।"

मथरू कुछ नहीं बोला। सिर से स्वीकृति दे दी।

जानता है दोनों काम करने तो हैं ही, पर करेगा कैसे? पल्ले में फूटी कौड़ी नहीं है। पर गांव–बेड़ में बंद मुट्ठी कैसे खोले! हुक्का काका की तरफ सरकाकर चल देता है।

•

कुछ देर पहले तुलसी को देखकर जो गर्व भीतर था, वह टूटता–सा लग रहा है। पांव जैसे धरती पर नहीं टिक रहे। पुजारी काका की नजरें पीछा करती हुई लगती हैं। मन में डर है कि काका ने भीतर की बात टोह तो नहीं ली है। अब मथरू ब्राह्मण है। बिरादरी की ठीस तो रहेगी ही। बाहर वालों की तरह अपनी गरीबी तो जगह–जगह नहीं बखाणेगा। सोचते–सोचते पता ही नहीं चला कब वह घर पहुंच गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुन्नी और पीपल का ब्याह... दो बड़ी जिम्मेदारियां मथरू पर पड़ गईं। पुजारी काका ने उसे जैसे नींद से जगाया है। ऐसा भी नहीं कि पहले से उसे इसकी चिंता न रही हो परंतु आज वह ज्यादा परेशान है। बेटी और पीपल अपने ऊपर से निकलते नजर आ रहे हैं।

चुपचाप चूल्हे के पास बैठा देखकर मुन्नी की मां पूछ लेती है, "क्या हुआ जी, तबीयत तो ठीक है न!"

"ठीक है... ठीक है। तू अपणा काम कर...।" चिढ़कर बोलता है मथरू। मुन्नी की मां मर्द की आदत जानती है।

चूल्हे में जलती लकड़ियां आंवदे के नीचे सरकाकर मुन्नी की मां ऊपर रखे तम्बिए के पानी को उंगली से छूती है।

"पाणी तप गया है जी। हाथ–पैर धोकर धूप–बत्ती करी लो।"

यह कहते हुए वह डबरा मथरू की तरफ सरकाकर उसमें गर्म पानी उंड़ेल देती है। मथरू भीत[6] के साथ ढांसना लगाकर दोनों पांव गर्म पानी में डाल देता है। मुन्नी की मां नजदीक खिसककर खुद पांव धोने के लिए कहती है, पर मथरू अपने पांव खुद मलने लग जाता है। वह हाथ में लगे पानी को चादरू से पोंछती है।

ऐसा रोज ही होता है जब मथरू पांव धोने लगता है, उसकी घर वाली चाहती है अपने मर्द के पांव धोए, पर मथरू की आदत है कि उसने घर वाली से पांव कभी नहीं धुलाए।

पांव धोने के बाद मथरू धूप–बत्ती करता है और लौटकर चूल्हे के पास बैठ जाता है। मुन्नी कहीं आंगन में 'लाली' के बच्चों के साथ खेल रही है। लाली उसकी बकरी है। हाल ही में उसने दो बच्चे जाये हैं। मुन्नी के लिए दो साथी मिल गए हैं। वह उनके साथ खेलती–कूदती रहती है।

मुन्नी की मां मथरू का चेहरा निहारती है। इससे पहले कि फिर कुछ पूछे, अब मथरू ही बात छेड़ देता है।

"पुजारी काका मुन्नी और पीपल की गल कर रहे थे, पर...?"

वह रुक जाता है। भूरका खींचकर कटोरी से सूखी राख चूल्हे में झाड़ता है। मुन्नी की मां अपनी बगल में पड़े तम्बाकू के डिब्बे को उसकी तरफ सरका देती है।

"ठीक बोलते थे वो। मुन्नी ब्याहणे लायक है। कई जगह से आ रहे हैं रिश्ते। कल दीवां जी री घरवाली भी बोल रही थी कि उनकी बिरादरी में कोई लड़का है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ठीक है... ठीक है... पर पीपल बी कितणा बड़ा हो गया है! पैले उसका भी तो कुछ सोचणा है। उसका भी ब्याह हो जाता तो..."

मुन्नी की मां को शायद यह बात नहीं भाई है।

"जी... मेरी गल मानो तो पैले मुन्नी रा सोचो। बथेरी थी एक तुलसी जो हमने ब्याह दी है... एक पीपल रह भी जाएगा तो कोई आफत नी आणे लगी। ...आपणा घर बी देखणा हो। सरीक तो क्या नी बोलदे। पर किसी ने आज तक कोई मदद–मदाद की? बड़ी मुन्नी होर तुलसी के ब्याह में ही सारे खेत चले गए। अब जो एक–आध बचा है, से भी जाणा है।"

मथरू को घरवाली की यह सीख कुछ जंची नहीं। तेवर चढ़ गए।

"तेरा दिमाग तो टकाणे नी है लाड़ी। तेरे को क्या पता कि शास्त्र क्या चीज है! गांव–परगणे में है कोई इतना भाग वाला जिसकी खेती में पीपल जमा हो...।"

वह कुछ आगे कहती, मुन्नी भीतर आ गई है। वह नहीं चाहते कोई बात मुन्नी के सामने करें। नादान है, पर समझती सबकुछ है। पर मथरू की घरवाली मर्द की बातों से परेशान हो गई है। मुन्नी भीतर नहीं आती तो दो–चार और सुना देती। मन ही मन सोच रही है।

परात लेकर उसमें आटा डालकर गूंथने लगती है। आटा तैयार होता है तो चूल्हे पर तवा रखकर रोटियां बनाने लग जाती है। मुन्नी बापू के दाईं ओर बैठकर रोटियां सेंकने लगी है।

मुन्नी की मां के लिए बेटी पहले है। वह सोचती है कि तुलसी और पीपल इस घर में भाग जगाने नहीं बल्कि उनका नाश करने जमे हैं। दो बेटियों के ब्याह ही करने होते तो न तो इतना कर्जा सिर पर होता, न डोरु –घासणी रैहन होते। रैहन क्या, बिक ही गए हैं! कभी पैसा तो दिया नहीं जाएगा। उलटा फिर ऊपर कर्जा ही होना है। वह जानती है मर्द के पास खेत रेहन रखने के सिवा दूसरा चारा भी क्या है!

•

मथरू की रातें हराम हो गई हैं। रात को जब उसकी नींद टूटती है तो वह अचानक उठ जाता है। बिस्तर पर बैठा–बैठा इधर–उधर दियासलाई टटोलता रहता है। जब उसे नहीं मिलती तो चूल्हे की तरफ सरक जाता है। पठाई में चिमटा ढूंढ़ता है। हाथ लगाता है तो उसे उठाकर चूल्हे में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शाम की दबाई आग में से एक अंगारा निकालकर फूंक मारता है। खांसी आ जाती है। कई पल खांसता रहता है। सहज होता है तो अंगारों में फूंक मारने लगता है। जैसे ही सांसें अंगारे से टकराती हैं, भीतर की चीजें दिखने लगती हैं। ढिबरी निकालता है और उसकी बाती चिमटे में पकड़े अंगारे के बीच सटा देता है। फिर फूंक मारता है, ढिबरी जल जाती है। सिरहाने भुरका पड़ा है। खींचता है। चिलम भरता है। फिर बिस्तर पर जाकर भीत का ढांसना लगाए सुड़कने लग जाता है।

अचानक उसकी नजरें कुछ दूर सोई मुन्नी के मुख पर पड़ती हैं। वह गहरी नींद में सोई है। मथरू देखता है ढिबरी का प्रकाश उसके चेहरे पर सिमट गया है। दो–चार सिर के बाल उसके गालों पर बिखरे हैं। मथरू ने इस तरह मुन्नी को कभी नहीं देखा है। उसका भोलापन, उसका निखरता यौवन, रूप–रंग... ब्याह के लायक हो रहे हैं। उसे लग रहा है कि मुन्नी पल–पल बड़ी होने लगी है। तम्बाकू पीते वह न जाने क्या–क्या सोचे जा रहा है। वह सोच ही सकता है। महंगाई का जमाना है। कोई रोजगार होता तो भी बात बन जाती।

उसे अपनी बिरादरी के गंगू की याद आ रही है। पिछले दिनों धूमधाम से ब्याह रचाया था। खूब दाज[7] दिया था। पर फिर भी ससुराल वालों की नाक–भौंहें चढ़ी हुई थीं। शायद कुछ नगदी की मांग कर रहे होंगे। बिरादरी बड़ी है... हाथ–पैर भी जोड़े नहीं जा सकते। मन मानता है कि अपनी इज्जत–परतीत पहली है। बेटी की जिम्मेदारी पहली है। पीपल का ब्याह महापुन है... बची ज़मीन भी चली जाएगी तो क्या, अपनी चीज है। फिर उम्र भर कमाना ही है। जैसे–कैसे रेहन छुड़ा लूंगा।

मन इन आशाओं के समंदर में डूबने लगता है। ढिबरी बुझा देता है। चिलम अभी सुलग रही है। वह अंधेरे में भुरके को पकड़े कश लेता जा रहा है। भुरके की गुड़गुड़ाहट अंधेरे में कुछ अजीब–सी लग रही है जैसे वह बेसुरा, बेतुका शोर उसके भीतर हो रहा हो। वह कटोरी उतारता है और चिलम सुलगाने के लिए फूंक मारने लगता है। सांसें जब अंगारों से टकराती हैं तो फिर एक अजीब–सा उजाला क्षण भर के लिए सारे कमरे में फैल जाता है... उस उजाले में फिर मुन्नी का वही चेहरा जगमगाता है। भीतर एक कसक–सी उठती है। यह दर्द बड़ा है। जिसकी बेटियां होती हैं, इस दर्द की चुभन वही जान सकता है। ऊपर से बिरादरी की टीस है। बेटी उत्तरदायित्व है, जिम्मेदारी है... बोझ है और पीपल धर्म है। संस्कार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है। मथरू दोनों के बीच गोते लगा रहा है। सोच रहा है बेटी का ब्याह अच्छे से नहीं हुआ तो बिरादरी में नाक कटेगी। पीपल बिन–ब्याहा रहा तो लोग बोलेंगे – मथरू बामण नहीं, बाहर जात का...

•

पुजारी काका ने बेटी का रिश्ता तय करा दिया है। अब मुन्नी पर बंदिशें लग गई हैं। रोक–टोक लग गई है। उसे अम्मा अकेले नहीं जाने देती। यहां तक कि गाय–बकरी को जंगल–पानी भी खुद कराती है। घास–पत्ती को उसे अकेला नहीं भेजती। मुन्नी का बेड़ के बच्चों के साथ खेलना भी बंद हो गया है। वह कई बार खेलने की जिद करती है, पर मां डांट देती है। सारी बातें उसकी समझ से परे हैं। उसे भनक लग गई कि उसका ब्याह हो रहा है। लेकिन ब्याह के मायने उसके लिए 'समुंदर के खेल'– जैसा है। तुलसी के विवाह जैसा है। वह आंगन में चुपचाप बैठी रहती है या फिर कमरे में पीछे खिड़की के बीच जहां से वह अपने एकमात्र बचे खेत को कई–कई पल निहारती रहती है।

उसे जी भर नींद भी नहीं आती। कारण अम्मा और बापू हैं। जबसे उस पर रोक–टोक लगी है, वह उन दोनों को परेशान देखती है। चिंता में देखती है। इसलिए हमेशा टोह में रहती है कि उनकी कुछ बातें सुने। पर वे दोनों इससे बचते हैं।

•

आज मुन्नी बहुत पहले सो गई है। झूठमूठ की नींद का बहाना किया है। उसकी उत्सुकता अम्मा–बापू की बातें सुनने की है। वह अधिक–से–अधिक जानना चाहती है। चूल्हे के पास वे दोनों बैठे हैं। उनके साथ फिर वही चिंताएं हैं। मायूसियां हैं। जिम्मेदारियों को निपटाने की जल्दबाजी है। मुन्नी की अम्मा बात शुरू करती है तो मथरू एक नजर मुन्नी की तरफ दे लेता है। मुन्नी ने पट्टू से सिर ढांप लिया है। निश्चिंत होता है कि वह सो गई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"गरधारी के घर गए थे कुछ काम बणा कि नहीं।"

गहरी सांस लेता है मथरू। कुछ कहते हुए सांस फूल रही है। मुंह को खून चढ़ने लगा है।

"दे देगा पैसे। बोलता है बड़ा खेत नाम लिखवा दे।"

"और चारा भी क्या है म्हारे पास? कुछ–न–कुछ तो करना ही है।"

मथरू को घरवाली की बात अपनी मर्दानी पर हथोड़े की चोट लगती है। अपनी नालायकी दिखती है। वह किसी काम का नहीं है... खेती दे–देकर ब्याह हो रहे हैं। इसमें अपनी कमाई कहां है। पर ध्याड़ी से शादी–ब्याह तो नहीं हो सकते हैं। अब कर्जा तो सूरज–चांद के पास भी है। वह तो इंसान है। सोचता है, एक बेटा ही होता तो बड़ा सहारा हो जाता। .बेटियां तो पराया धन हैं।

मुन्नी की मां जानती है कि मर्द को बात चुभ गई है। पर सच्चाई से कौन मुंह मोड़ सकता है! बात बदलकर सहारा देने लगती है, "देखो जी। आपणी खेती है। किसके बाप का कुछ नहीं है। शरम होती है मांगणे की। आपणी चीज के पैसे लेणे हैं। और फिर हम अभी तो खाणे–कमाणे लायक हैं। ये जिम्मेदारियां निपट जाएंगी ना बी निपटेंगी तो हमने कौण से अब पूत ब्याहणे हैं।"

अक्ल की बात की है मुन्नी की अम्मा ने। मथरू को सहारा मिल गया है। बात ठीक है। जगह–ज़मीन किस काम की है अगर इज्जत–परतीत से न रहा गया। पर मन में जो खेत देने का दर्द है, वह मुखरित हो जाता है। आंखें अनायास ही छलछला जाती हैं। भुरके की नड़ी से आठ–दस कश एक साथ खींचता है मथरू।

"मुन्नी की अम्मा! अब खेती देणे को मन नी करता। पैले जो रैहन दिए थे कहां छुड़ाए गए? एक ही तो खेत बचा है, कैसे–कैसे कमाया था! ऐसा खेत भला गांव–बेड़ में है किसी के पास?"

रुआंसी आवाज हो गई है मथरू की। मुन्नी की मां की भी आंखें भर गई हैं। वह पठाई की तरफ मुंह करके आंखों का छलछलाता पानी अपने चादरू से पोंछ रही है। भीतर एक सन्नाटा छा गया है। मुन्नी ने पट्टू उंगलियों से इतने जोर से भींच रखा है कि वह फट गया है। उसने अम्मा–बापू को इस तरह आंखें भरे कभी नहीं देखा है। मन करता है उठकर उनकी गोदी में जोर–जोर से रोये, पर कुछ नहीं कर पाती। उसकी आंखों से भी बरसात होने लगी है। बिस्तर भीग रहा है, पर उसका

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दर्द कौन जानेगा! और उसके मायने भी क्या है!

मथरू चुप्पी तोड़ता है।

"पर मुन्नी के हाथ पीले करके बड़ा बोझ उतर जाएगा सिर से। साथ पीपल का सुधार बी हो जाएगा।"

मुन्नी बोझ भी है उन पर? यह सुनती है तो कलेजा बाहर को आने लगता है। बात समझ में आ रही है। सबकुछ उसी की वजह से है। खेत उसके कारण बिक रहा है। वह इस घर में जमी न होती तो अच्छा था। उसे अपने ऊपर ग्लानि आ रही है। वही उस घर की परेशानियों की जड़ है। कुलच्छणी है वह। दूसरा वह पीपल है जिसे रोज पानी दे–देकर पाला है। मन करता है सुबह उसे जड़ से काट आए... न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। पर उसका अपना क्या होगा...?

•

सुबह उठी मुन्नी का चेहरा कोई देखता तो जानता कि घर के दर्द कैसे उसके मुंह और उनींदी आंखों में समा गए हैं। हालांकि वह ब्याह का मतलब नहीं जानती। उसके लिए तुलसी हो या पीपल या फिर वह खुद, सभी का ब्याह एक जैसा है। पर खेत देकर बेटी का ब्याह उसे जंच नहीं रहा है।

सूरज पहले की तरह उस–पार से चला आया है। वही सुनहरापन है। वही लालिमा है। अनूठा उजास है। लहलहाते खेत हैं। हिलती–डुलती डालियां हैं। पक्षियों की चहचाहटें हैं। पर मुन्नी का मन अंधेरा है, फिर बाहर कैसे उजाला हो सकता है! उसने आज हाथ–मुंह भी नहीं धोए हैं। बाहर आकर दहलीज पर से न सूरज को हाथ जोड़े हैं। और लोटा भी नहीं मांजा है। जैसे–तैसे पकड़कर पानी भर लिया है और बाहर निकल गई है। आंगन से निकलती हुई खेतों–पगडंडियों से जाती हुई वह पीपल के पास पहुंचती है। उसका ध्यान पूर्व की ओर चला जाता है। सुनहरे बादलों की ओट से सूरज अलसाया–सा लग रहा है। उसकी किरणें भी सुनहरी ही हैं। पीपल के पत्तों पर बैठी वह उन्हें भी लालित्य से भर देती है। मुन्नी निहार रही है। उसे लगता है यह लालित्य उसके भीतर तक रिसता चला जा रहा है। वह पीपल के वृक्ष को बड़े चाव से देखती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इससे पहले इस तरह कभी नहीं देखा। उसका यह अंदाज उसे भाने लगा है। मानो मुन्नी को देखकर वह मुस्करा रहा हो। पत्ते दूसरे पत्तों को स्पर्श करते हैं तो उनकी सरसराहटें मुन्नी के भीतर एक कसक पैदा कर देती हैं। उसका उनींदापन चला गया है। भीतर वही चंचलता है। अनायास मुंह से निकलता है, "तेरा ब्याह हो रहा है... ब्याह!"

कुछ सोचती है। पर बापू इसको सकपाल में बिठाएंगे कैसे? यह सोचकर जोर से हंस देती है... और हंसते हुए पानी का लोटा उसके तन पर उंड़ेल देती है। वापिस मुड़ती है। कहती है, "मेरा ब्याह बी हो रहा है पीपल जी।"

शायद वह कहना चाह रही होगी कि उसके ब्याह के बाद उसे कौन पानी देगा?

एक भरी नजर से फिर पीपल को देखती है। पत्तों की सरसराहट एक मधुर संगीत पैदा कर रही है। हवा के झोंके उस संगीत को मुन्नी के कानों में उंड़ेल देते हैं। भीतर लालिमा और संगीत की मृदुलता एक अनोखा आनंद पैदा कर देती है। ...पीपल उसे पहले से भला लगने लगा है।

•

वह घर के पास पहुंचती है तो गांव की औरतों को अपने घर के आंगन में आती देखती है। उसके ब्याह की तैयारियां शुरू हो गई हैं। उसने सुना है उसकी ससुराल से आज लोग आएंगे इसलिए सुबह से ही घर की लीप –लिपाई होने लगी है।

वह भीतर नहीं आती। लोटा 'स्पील' पर रखकर घर के पीछे चली जाती है। यह वही खेत है जिसके सौदे से मुन्नी का ब्याह होना है। उसमें बापू ने सरसों बोई है। सरसों फूल रही है। कितना बड़ा खेत है! दूर–दूर तक पीले फूलों का जैसे गलीचा बिछ गया हो। वह खेत के बीच चली जाती है। एक फूल के ऊपर बैठा छोटा–सा पंछी[8] उसे आकर्षित करता है। उसे पकड़ लेती है। हथेली पर रखती है। फिर दाहिने हाथ की तर्जनी के पोर पर बिठा देती है। उंगली को सीधा आकाश की तरफ करके कहने लगती है, "उड़... उड़ पंछिआ पास कि फैल... उड़... उड़...।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और पंछी सचमुच उड़ जाता है। मुन्नी आश्चर्यचकित। यह कैसे उड़ गया? क्यों उड़ गया? स्कूल तो कई बरस पहले छोड़ दिया है। उसे याद है जब इम्तहान देने के बाद परिणामों का समय निकट आता था तो वह भी दूसरे बच्चों के साथ सरसों के खेत में चली जाती। पंछियों को उंगलियों पर बिठाया करती। पूछती, "उड़... उड़ पंछिआ... पास कि फैल ... उड़... उड़!"

जिसका उड़ जाता, वह सचमुच पास और जिसके हाथ की उंगली में चुपचाप बैठा रहता तो वह सच का फेल।

वह स्कूल भी नहीं जाती। कोई इम्तहान भी नहीं दिया है। फिर पंछी ने झूठ कैसे बोला है! क्या जो कुछ हो रहा है वह भी एक इम्तहान है! पर उसमें वह कैसे पास होगी। बेटी तो गऊ है। मां–बाप जहां को हांकें, चल देगी।

मुन्नी को ससुराल से सगाई का जोड़ा मिल गया है। बात पक्की हो गई है। मुन्नी और पीपल दोनों के लिए मुहूर्त्त निश्चित हो गया है। मुन्नी से सप्ताह के पहले पीपल का ब्याह हो जाएगा। मुन्नी के बापू ने 'सूणी' की डाली भी देख ली है। उसे ही दुल्हन के रूप में पीपल को ब्याहना है।

मुन्नी अब सूरज निकलने का भी इंतजार नहीं करती। जैसे उठी, वैसे ही पानी भरकर चल देती है। पर पहले की तरह वह तत्काल नहीं लौटती। अब काफी देर पीपल के पास बैठी रहती है। उसे जी भर देखा करती है। पत्तों को सहलाया करती है। तने को स्पर्श करती हुई उसे कभी बांहों में भरने का प्रयास भी करती है।

आज शाम उसने सुना है कि कल बापू खेत का सौदा पक्का कर देगा। गरधारी का नौकर कुछ कागज बापू को थमा गया था। उसी पर बापू को अंगूठा लगाना है। मुन्नी परेशान है। सुबह और रात के मध्य फासला ही कितना है। रात भर उसे नींद नहीं आती। उसने देखा है कि बापू कई बार उठकर देर तक भुरका सुड़कते रहते हैं। अंधेरे में उसकी गुड़गुड़ाहट डरावना शोर पैदा कर रही है जैसे बरसाती नदी–नाले भरे हुए बाढ़ ले आते हैं। अम्मा–बापू को खेत जाने का बहुत दुःख है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज सुबह मुन्नी सबसे पहले उठ गई है। दरोठी से सगाई का जोड़ा आहिस्ता से निकालकर अपनी चुनरी की ओट में छिपा लेती है। लोटा लेकर झटपट पानी भरती है और दबे पांव चल देती है। दूर–दूर पूर्व की पहाड़ियों–घाटियों पर सोए बादलों में लालिमा भर रही है। सूरज उग रहा है। पीपल उसे दूल्हे जैसा सजा–धजा लग रहा है। वह सिर उठाकर पहले जैसा उसे नहीं देख पाती। पानी का लोटा चबूतरे पर रखकर झाड़ियों के पीछे जाती है। नया जोड़ा पहनती है। उसमें कंघी है। शीशा है। चूड़ियां हैं। सिंदूर की डिबिया है। मां से सीखा है ब्याहता औरतें कैसे रहती हैं। चूड़ियां पहन लेती है। बालों में कंघी कर लेती है। शीशे में अपने चेहरे को देखती है तो देखती रह जाती है। नई चुनरी ओढ़ती है। माथे पर से आगे सरकाती है– हल्का–सा घूंघट बन गया है। फिर शीशे में इस रूप को देखती है... शर्मा जाती है। फिर ख्याल आता है, बापू ने गरधारी को कागज देने हैं। खेत का सौदा होना है। घबरा जाती है। शीशा, कंघी और सिंदूर की डिबिया पुराने कपड़ों के बीच रखती है और पुरानी चुनरी में उनकी गठरी बांध देती है।

दबे पांव पीपल की तरफ आती है मुन्नी। इधर–उधर देखती... जायजा लेती... चोर मन है। घबराहटें हैं। जल्दबाजी है। कपड़े की गठरी में से फिर सिंदूर की डिबिया निकालती है। पीपल की एक टहनी को अपनी तरफ खींचती है। उसके एक पत्ते पर सारा सिंदूर उंड़ेल देती है और उस पत्ते की टहनी को फिर अपनी मांग में सिंदूर भरने को जैसे मजबूर कर देती है। उसे लगता है यह टहनी या पत्ते नहीं हैं, पीपल है। उस दरख्त के अपने हाथ हैं। उन्हीं हाथों ने उसकी मांग भर दी है। अब लोटा उठाती है। पहले जैसी चंचलता मन में नहीं है। केवल पानी भर देने का उत्तरदायित्व नहीं है। अम्मा–बापू की आज्ञा नहीं है। श्रद्धा है। विश्वास है। विजय है। वह पंछी याद आ रहा है; जैसे कह रहा हो– 'मुन्नी, तू पास हो गई है'। शर्माती–लजाती चाव से पीपल को पानी देती है मुन्नी। फिर लोटा एक तरफ रखकर आदर से सिर पीपल के तने से सटा लेती है। दुल्हन का पहला प्रणाम है। माथा टेकते–टेकते उसकी आंख भर आई है। उठती है। थोड़ा दूर आ जाती है। खुले मन से अब पीपल को देखती है। सुनहरी किरणों की लालिमा ने उस दरख्त को लाल कर दिया है। यह लालित्य मुन्नी के भीतर भी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

•

मुन्नी लौट गई है। ब्याहता मुन्नी। दुल्हन मुन्नी। बापू और खेत के लिए दाव पर लगती मुन्नी। उसके लिए ब्याह मांग भरना भर है। सोच रही है, बापू का बोझ ख़त्म हुआ। मुन्नी का भी और पीपल का भी। वह बापू के जाने से पहले पहुंचना चाहती है।

आंगन की मुंडेर पर आकर ठिठक गई है। भीतर से खांसते बापू बाहर निकल रहे हैं। उनके सिर पर कितने बोझ हैं! मन पर बोझ हैं। एक कंधे पर झोला है। उस पर पट्टू की बुक्कल है। दाहिने हाथ में लाठी है और बाएं हाथ में कागजों का पुलिंदा है। दहलीज से निकलते बापू की अचानक नजर मुन्नी पर पड़ती है। ठिठक जाते हैं। कौन लड़की है! दुल्हन जैसी आंगन में आई है– पहचान नहीं पाते। पीछे अम्मा खड़ी है। बापू आगे बढ़ रहे हैं। मुन्नी शर्माती–घबराती आगे आ रही है। दोनों आमने–सामने हैं। जैसे ही पहचानते हैं पांव के नीचे से जमीन खिसकने लगती है। आसमान टूटता महसूस होता है। सांसें कहीं गले में अटक रही हैं। चारों तरफ अंधेरा है। इससे पूर्व कि कुछ शब्द जुटाता... पूछता... चीखतां–चिल्लाता... एक आत्मविश्वास से मुन्नी बापू के पांव पर पड़ती है, "बापू, मैंने ब्याह कर लिया है।"

मथरू के हाथ से कागजों का पुलिंदा गिर जाता है।

संदर्भ

1. पहाड़ी अंचल में आज भी तुलसी के विवाह की परंपरा है। लोक–विश्वास है कि तुलसी को आंगन में लगाने का अधिकार 'ब्राह्मणों' को ही है और वही इस डाली का विवाह कर सकते हैं। आंगन की तुलसी का विवाह पूर्ण संस्कारों सहित बेटी के विवाह जैसा होता है। विशेषकर जिस गांव में लोकदेवता 'नृसिंह या नारसिंह' देवता का मन्दिर है वहां लोग तुलसी का विवाह परंपरानुसार इस देवता के साथ करते हैं। गमले में उगाई तुलसी को दुल्हन की तरह इस विवाह में देवता के मन्दिर में छोड़ देते हैं... इसे बड़ा धर्म और पुण्य माना जाता है।
2. एक लोकदेवता जिससे तुलसी की डाली का विवाह होता है।
3. पहाड़ी अंचलों में भी प्राचीन परंपरानुसार पीपल का विवाह आज भी एक बेटे की तरह होता है। वैसे ब्राह्मण लोग ही इसके भी अधिकारी माने जाते हैं लेकिन यदि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाहरी बिरादरी में भी उनकी ज़मीन में कहीं पीपल कुदरती पैदा हो जाए तो वह भी विवाह कर लेते हैं। पीपल का विवाह एक मादा फूल की बेल से किया जाता है जिसका लोकनाम 'सूणी' है। इस बेल को ब्याहकर पीपल के तने के साथ ज़मीन में लगा देते हैं।

4. 'दींवा' देवता के चेले को कहते हैं जिस पर देवता की छाया आ जाती है। कई जगह इसे गूर भी कहते हैं।
5. हिमाचल के कुछ जिलों में 'हिंगरना' देवता की छाया को कहते हैं। यानि जिस दींवे/गूर पर देवता आ जाता है और जो कंपन होती है उसे 'हिंगरना' कहा जाता है।
6. चूल्हे के पास की वह जगह जहां लकड़ियां या दूसरा सामान रखा जाता है।
7. दाज, दहेज का अपभ्रंशित रूप है। स्वेच्छा से जो कुछ लड़की को विवाह के दौरान दिया जाता है, उसे दाज कहा जाता है।
8. यह पक्षीनुमा कीड़ा 'तोता' कहलाता है जो गेहूं/सरसों की बालियों पर बैठा रहता है। इसके पंख रंगीन होते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेती हैं। कथाकार ने अपने गल्प में आम देहाती जीवन की नव-समाजवादी और अनिंद्यय छवियों को अपने पूर्ववर्ती कथाकारों की लीक से आगे बढ़ाया है और इस दृष्टि से इन कहानियों की अपनी एक अलग पहचान हिन्दी साहित्य के कथा-संसार में नजर आती है। इन कहानियों की मटगंध और साफगोबयानी हिन्दी के जागरूक पाठकों ने पहले भी महसूस की है और अब भी करेंगे।

हमें यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि आधार ने हरनोट के तीन कहानी संग्रह 'दारोश तथा अन्य कहानियां', 'जीनकाठी तथा अन्य कहानियां', 'मिट्टी के लोग' और एक उपन्यास 'हिडिम्ब' प्रकाशित किया है, जिन्हें पाठकों का अपार स्नेह मिला है और आलोचकों ने इन कृतियों का गंभीरता से विवेचन भी किया है। इसी का परिणाम है कि आधार प्रकाशन द्वारा प्रकाशित उनकी सभी पुस्तकों के दो से अधिक संस्करण छप चुके हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एस.आर. हरनोट

जन्म : हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला की पिछड़ी पंचायत व गांव चनावग में 22 जनवरी, 1955 को।

शिक्षा : बी.ए. (ऑनर्ज़), एम.ए. (हिन्दी), पत्रकारिता, लोक सम्पर्क एवं प्रचार-प्रसार में उपाधि पत्र।

प्रकाशित कृतियां :

छः कहानी संग्रह - 'पंजा', 'आकाशबेल', 'पीठ पर पहाड़', 'दारोश तथा अन्य कहानियां', 'जीनकाठी तथा अन्य कहानियां' और 'मिट्टी के लोग'।

उपन्यास - 'हिडिम्ब'।

अंग्रेजी कहानी संग्रह - 'माफिया' (सरोज वशिष्ठ द्वारा अनुवादित)।

हिमाचल की संस्कृति और जनजीवन पर चार पुस्तकें - हिमाचल के मंदिर और उनसे जुड़ी लोककथाएं, यात्रा - किन्नौर, स्पिति, लाहुल और मणिमहेश पर सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक यात्राएं, हिमाचल की कहानी, हिमाचल एट ए ग्लांस (संयुक्त कार्य)।

अन्य : कई महत्त्वपूर्ण संपादित संग्रहों में कहानियां संकलित। अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, कन्नड़ और पंजाबी में कई कहानियां अनूदित। कई कहानियों का नाट्य रूपान्तरण और मंचन। फोटोग्राफी में विशेष रूचि और कई छायाचित्र प्रदर्शनियों के आयोजन। हिन्दी साहित्य की लघु पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार में सक्रिय सहयोग। कहानी 'दारोश' पर दिल्ली दूरदर्शन द्वारा इंडियन क्लासिक्स सीरीज़ के तहत फिल्म का निर्माण। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय सहित कई अन्य विश्वविद्यालयों में कहानियों और उपन्यास पर शोध। कई विश्वविद्यालयों के बी.ए., एम.फिल. और पीएच.डी. पाठ्यक्रमों में कहानियां शामिल।

सम्मान : अन्तरराष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान, पाखी द्वारा जे.सी जोशी शब्द साधक जनप्रिय लेखक सम्मान, हिमाचल राज्य अकादमी पुरस्कार, हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा पर्यटन और साहित्य सम्मान। विभिन्न निजी संस्थानों द्वारा साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित।

सम्प्रति : हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम, रिट्ज एनैक्सी, शिमला-171001 में उप महाप्रबन्धक के पद पर कार्यरत।

आवास : ओम भवन, मोरले बैंक इस्टेट, निगम विहार, शिमला-2, हि.प्र.।

फोन : 0177-2625092, मो. : 98165 66611

Email : s_r_harnot@rediffmail.com

आधार प्रकाशन प्रा. लि.

एससीएफ 267, सेक्टर 16

ई-मेल aad_har_prakashan@yahoo.com

al Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by I